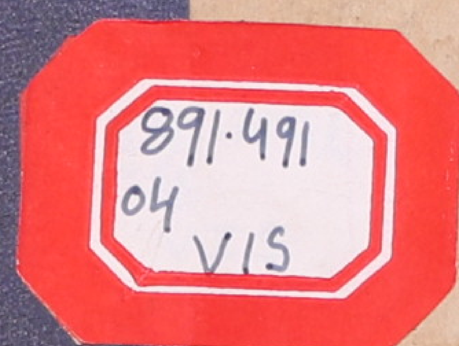
मगही संस्कार-गीत

सम्पादक

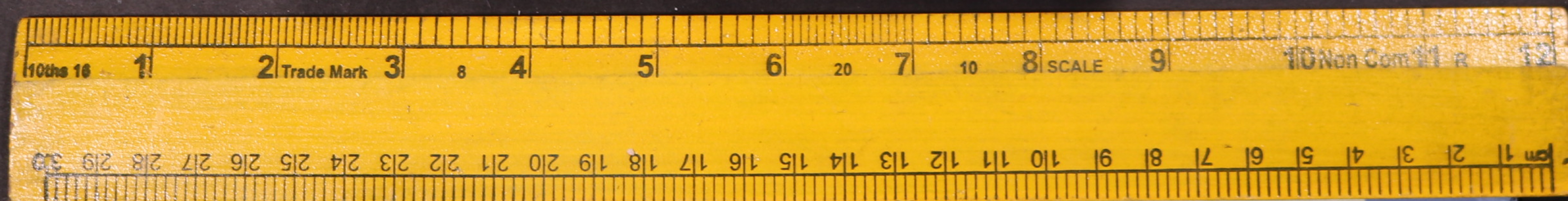
डॉ० विश्वनाथप्रसाद

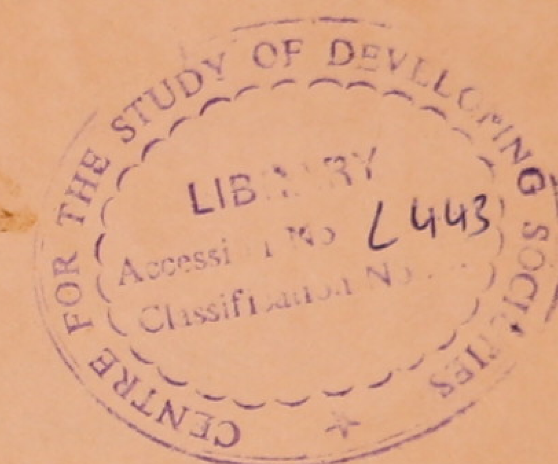




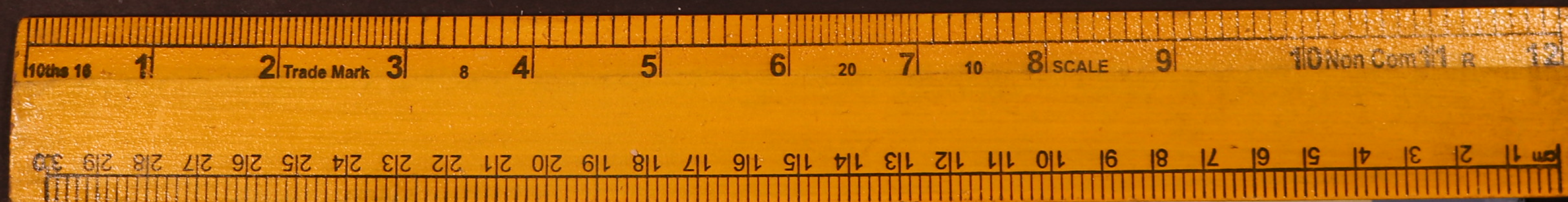
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना




CENTRE FOR THE STUDY OF DEVELOPING SOCIETIES
LIBRARY
L443



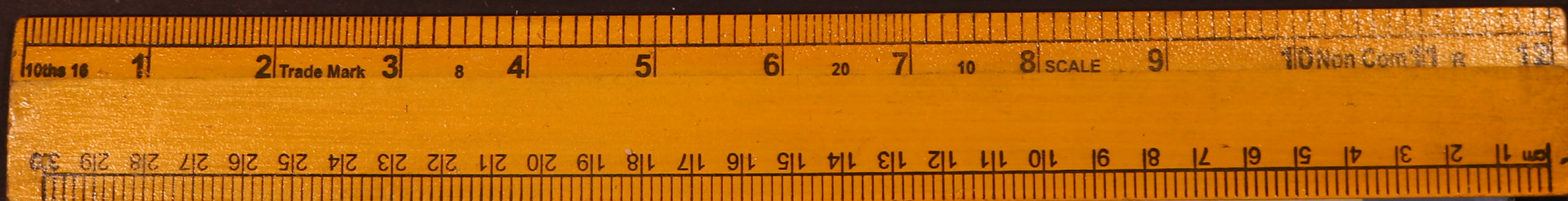


मगही संस्कार-गीत

सम्पादक

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना



प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-४

विक्रमाब्द २०१९; शकाब्द १८८४; खृष्टाब्द १९६२

सजिल्द मूल्य : ६.५० न० पै० मात्र

मुद्रक
नागरी प्रकाशन प्रा० लि० द्वारा
युगान्तर प्रेस, पटना-४

समर्पण

लोकवाणी की सरस्वती-रूपिणी मगही-क्षेत्र की उन अगणित
पढ़ी-लिखी तथा अनपढ़ माताओं, बहनों, बहुओं और
बेटियों को, जो देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति
की इस परम्परागत चिर-संचित सम्पत्ति की सच्ची
स्वामिनी हैं और जिनके मानस और
कंठों की अमृतोपम मधुरता में इन
मंगलमय गीतों की उमड़ती हुई
अजस्र रस-धारा का मूल-
स्रोत अन्तर्निहित है।

—विश्वनाथ प्रसाद

वक्तव्य

प्रस्तुत पुस्तक—'मगही संस्कार-गीत' को प्रकाशित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। परिषद् के मूल उद्देश्यों में लोकभाषाओं के विकास और उन्नयन के लिए प्रयास करना भी एक मुख्य उद्देश्य है और इसकी पूर्त्ति के लिए परिषद् का लोकभाषा-विभाग सचेष्ट है। मैथिली, मगही, भोजपुरी, अंगिका आदि लोकभाषाओं के गीतों का संकलन इस विभाग में पर्याप्त हो चुका है, उसी संकलन से चुनकर मगही लोकभाषा के वे गीत, जो जन्म से मृत्यु-पर्यन्त के विविध संस्कारों के अवसर पर गाये जाते हैं, इस संग्रह में रखे गये हैं।

इन गीतों का, भाषा और भाव की दृष्टि से, निरीक्षण-परीक्षण एवं सम्पादन का कार्य भाषाशास्त्र के पारखी विद्वान् तथा लोकभाषा के मर्मज्ञ डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने जिस तन्मयता से किया है, उसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी ही समझी जायगी। सुधी सम्पादक ने अपनी महत्त्वपूर्ण 'प्रस्तावना' में लोकभाषा-सम्बन्धी ज्ञान का जो विश्लेषणात्मक परिचय दिया है, वह भी अत्यन्त ही उपादेय है। पटना-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के वर्त्तमान अध्यक्ष डॉ० शिवनन्दन प्रसाद ने इन गीतों का समुचित संस्कार किया है। हम सर्वान्तःकरण से उक्त दोनों महानुभावों का आभार स्वीकार करते हैं।

विभागीय शोध-सहायकों में श्रीराधावल्लभ शर्मा तथा श्रीश्रुतिदेव शास्त्री ने इस ग्रन्थ के प्रणयन में विशेष परिश्रम एवं लगन का परिचय दिया है और आद्योपान्त इसकी रूपरेखा तथा पांडुलिपि तैयार करने में अथक अध्यवसाय से काम लिया है। हम अपने इन दोनों सहायकों के प्रति भी विशेष रूप से आभारी हैं। इस संग्रह में आये हुए गीतों में जहाँ-जहाँ ठेठ मगही शब्दों के अर्थ तथा मूल शब्द की व्युत्पत्ति का प्रश्न उठा, वहाँ-वहाँ हमारे प्रकाशन-विभाग के पं० श्रीहवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने अथक परिश्रम एवं अध्यवसाय तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया है। परिषद् उनकी इस विशिष्ट सेवा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में, कई अनिवार्य कारणों से, आशातीत विलम्ब हुआ, जिसके लिए हमें खेद है। विश्वास है, परिषद् के अन्य प्रकाशनों की तरह पाठकों में इसका समादर होगा।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, २०१६ वि०

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
संचालक

विषय-सूची



निवेदन

बिहार-सरकार के शिक्षा-विभाग के तत्त्वावधान में स्थापित बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के जन्मकाल से ही हमारे निर्देशन-निरीक्षण में बिहार के लोक-साहित्य और लोक-भाषाओं के वैज्ञानिक अनुसंधान-अनुशीलन का कार्य चलता रहा। हमारी योजना के अनुसार प्रारम्भ में संग्रह-कार्य के लिए छह कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति की गई, जिनमें से चार तो मैथिली, मगही, भोजपुरी और संताली क्षेत्रों में प्रचलित सामग्री के संकलन के कार्य में लगाये गये और दो हमारी देखरेख में संगृहीत सामग्री के अध्ययन, विश्लेषण और वर्गीकरण के कार्य में। इन सभी कार्यकर्त्ताओं को हमने अपने साथ रखकर कार्य-प्रणाली में विधिवत् प्रशिक्षित किया। फिर, योजनानुसार संग्रहकर्त्ताओं को गाँवों में बिखरी अलिखित सामग्री के संकलन के लिए निर्धारित क्षेत्रों में भेजा गया। पर कुछ समय के उपरान्त *सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निशिखावृताः* के अनुसार इनकी कार्य-प्रगति से पर्याप्त संतोष न होने के कारण वैतनिक संग्रहकर्ताओं द्वारा संग्रह का कार्य बंद कर देना पड़ा। मगही के संग्रहकर्त्ता को तो दो-चार महीनों बाद ही कार्यमुक्त कर देना पड़ा था। इसके उपरान्त लोक-साहित्य में रुचि रखनेवाले कुछ उत्साही व्यक्तियों द्वारा ही निश्चित पारिश्रमिक पर संग्रह का कार्य प्रारंभ किया गया। ये लोग हमारे निर्देश-पत्र के अनुसार ही काम करते थे। इस प्रणाली से संग्रह-कार्य में आशाप्रद प्रगति हुई। अबतक विभिन्न क्षेत्रों की प्रचुर सामग्री संकलित हो चुकी है। इस सामग्री के निरीक्षण-परीक्षण का कार्य निर्दिष्ट वैज्ञानिक ढंग से होता रहा है। प्रत्येक उपलब्ध सामग्री की जाँच यथाविधि कर लेने के बाद ही उसे संग्रह के लिए स्वीकृत किया जाता है। वही गीत संग्रहणीय समझे जाते हैं, जो परंपरा से केवल श्रुति के आधार पर जनकण्ठ में चले आ रहे हैं। इसके विपरीत उन आधुनिक गीतों को, जिनके छंद और लय तो परंपरागत गीतों के समान ही होते हैं, परन्तु जो वस्तुतः लोक-परंपरा तथा हमारी प्रामाणिकता की कसौटी पर खरे नहीं सिद्ध होते, उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता। कभी-कभी तो सौ पृष्ठों की सामग्री का अध्ययन और तुलनात्मक निरीक्षण कर लेने के उपरांत उसमें से सत्तर-पचहत्तर पृष्ठों को छाँट देना पड़ता है और केवल पचीस-तीस पृष्ठों की सामग्री, जो संग्रहणीय प्रमाणित होती है, को विभागीय संग्रह के लिए स्वीकार किया जाता है। नई सामग्री की प्राप्ति तथा प्राप्त सामग्री के अध्ययन और परीक्षण का कार्य दिन-दिन बढ़ता जा रहा है।

प्रारंभ में कृषि-कोश की सामग्री के संग्रह और संपादन की ओर ही विशेष ध्यान दिया गया। उसका प्रथम खण्ड तो प्रकाशित भी हो चुका है, पर उसके साथ ही हमने

मगही संस्कार-गीतों के संग्रह, संकलन और संपादन का कार्य भी आरंभ कर दिया था। विभाग में सभी क्षेत्रों से पर्याप्त सामग्री संकलित हो चुकी थी। परंतु हमने सबसे पहले मगही के लोकगीतों के संपादन में हाथ लगाये; क्योंकि मगही भाषा या लोक-साहित्य के सम्बन्ध में अबतक एक भी प्रामाणिक ग्रंथ का प्रकाशन नहीं हुआ था। इस अभाव की पूर्ति के लिए हमने प्रथम-प्रथम लोक-जीवन के मूलभूत संस्कारों से संबद्ध लोकगीतों का ही संपादन प्रारंभ किया। ये गीत जन-जीवन के अभिन्न अंग हैं। अभी तक विभिन्न प्रदेशों और क्षेत्रों के लोकगीतों के जितने भी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमें से केवल संस्कार-गीतों का एकनिष्ठ संग्रह एक भी नहीं है। इस संग्रह में हमने विभिन्न संस्कारों के संबंध में आवश्यक टिप्पणी भी दे दी है, जिससे उनके सामाजिक पक्ष का भी परिचय हो सके।

लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग का कार्य हमारे निर्देशन में आरंभ से अगस्त १९५८ ई० तक चलता रहा। इस बीच में कुल मिलाकर ११७५७ लोकगीतों, २२ गाथा-गीतों और ९ लोकनाट्यों और लोकनृत्यों का संग्रह-कार्य हुआ। संग्रह के गीतों को हमने निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया है—

१. संस्कार-गीत—जैसे : ब्याह, कोहबर, बेटी-बिदाई, समझवनी, जेवनार, गाली, मुंडन, जनेऊ, सोहर आदि।

२. गाथा-गीत—जैसे : राजा भरथरी (भर्तृहरि), ढोलन, सरवन, लोरिकायन, विजयमल आदि के गीत।

३. ऋतु-गीत—जैसे : फगुआ या होली, चैता, कजरी, चउमासा, बारहमासा आदि।

४. व्यवसाय-गीत—जैसे : रोपनी और सोहनी के गीत, धोबियों के गीत, कोल्हू के गीत, जाँते के गीत (जँतसार) आदि।

५. व्रतोत्सव या पर्व-गीत—जैसे : तीज, जिउतिया (जीवत्पुत्रिका व्रत), छठ, कुल्हिया आदि के गीत।

६. भजन या स्तुति-गीत—जैसे : प्रभाती, शीतला माता के गीत, ग्राम-देवताओं के गीत, अन्य पूजा के गीत, निर्गुण आदि।

७. लीला-गीत—जैसे : झूमर, झूले के गीत, डोमकछ, जोगीड़ा आदि। इन गीतों में नृत्य, नाट्य और संवाद का भी समावेश रहता है।

८. वर्गीय गीत—जैसे : बिरहा, पँवरिया के गीत आदि। ये गीत कुछ विशेष वर्गों में ही प्रचलित पाये जाते हैं।

९. जोग, टोना और मान के गीत—जैसे : साँप का विष झाड़ने का गीत, भूत-प्रेत झाड़ने के गीत।

१०. विशिष्ट गीत—जैसे : पिड़िया के गीत, पानी माँगने के गीत आदि।

११. लोरियाँ—जैसे : 'आउ रे निंदिया निनर बन से', 'आरे आव, बारे आव', 'घुघुआ माना' आदि।

१२. बालक्रीडा-गीत—जैसे : 'ओका बोका तीन तड़ोका', 'आटा-पाटा दही चटाका', कबड्डी के पहाड़े आदि।

१३. तीर्थ-गीत—जैसे : जगन्नाथपुरी, गंगाजी आदि के गीत।

१४. सामयिक गीत—जैसे : रेलगाड़ी-सम्बन्धी, नये आभूषण-सम्बन्धी, खादी, चरखा, गांधीजी, राष्ट्रीय आन्दोलन तथा सामाजिक विषय-सम्बन्धी गीत।

यह वर्गीकरण बिहार के तत्कालीन शिक्षा-मन्त्री श्रद्धेय आचार्य बदरीनाथ वर्मा, मित्रवर श्रीलक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', श्रीजगदीशचन्द्र माथुर, आइ० सी० एस्० और राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह को बहुत पसन्द आया और आपलोगों ने ही मुझे इसके अनुसार कार्य प्रारम्भ करने की प्रेरणा दी। आप सबके प्रति श्रद्धापूर्वक कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

तदनुसार, विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न वर्गों के गीतों का संग्रह प्रारम्भ किया गया। प्रायः सभी वर्गों के गीत हमें पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुए। आज से दस वर्ष पहले जब हमने इन वर्गों और शीर्षकों का निर्धारण किया था, तब उस समय ये नाम नये-से जँचते थे; पर बाद में इस वर्गीकरण का अनुसरण लोक-वार्ता-साहित्य के अनेक अनुसन्धित्सुओं द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

संग्रहकर्त्ताओं के लिए आवश्यक निर्देश

अपने संग्रहकर्त्ताओं के लिए हमने निम्नलिखित निर्देश निर्धारित किये थे—

१. जन-साधारण या समाज के विभिन्न वर्गों में प्रचलित परम्परागत गीतों का ही संग्रह करना होगा।

२. समाज के जिस वर्ग को लें, उसके स्तर, विविध भेद, व्यापार, गुण, रीति-रिवाज तथा रहन-सहन का भी संक्षिप्त परिचय देना होगा।

३. गीतों के जो शब्द जिस रूप में व्यवहृत हों, उन्हें ठीक उसी रूप में लिखना होगा। उन्हें साहित्यिक रूप देने के लिए किसी प्रकार का फेर-बदल या संशोधन कदापि नहीं करना होगा।

४. गीतों के प्रसंग का भी उल्लेख कर देना होगा।

५. भोजपुरी, मगही, मैथिली, नागपुरिया आदि जिस क्षेत्र से भी संग्रह किया जाय, उसका उल्लेख करना होगा और स्थान, जिला, सब-डिवीजन आदि का नाम भी देना होगा।

६. जिस व्यक्ति से गीत प्राप्त किया जाय, उसके नाम, अवस्था, वर्ग, सामाजिक स्तर, धर्म, सम्प्रदाय, वृत्ति या पेशा आदि सभी बातों का उल्लेख करना होगा।

७. कार्यकर्त्ताओं को जिन व्यक्तियों या वर्गों के बीच काम करना होगा, उनके प्रति अपनी सेवा, सहानुभूति और सद्भाव के द्वारा उनमें बिलकुल घुलमिल जाने की चेष्टा करनी होगी, जिससे उनकी पूरी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त हो सके और संग्रह-कार्य के महत्त्व के विषय में उनके हृदय में विश्वास और दिलचस्पी पैदा हो सके।

इन गीतों का संकलन समाज के सभी वर्गों से किया गया है। कुछ गीत ऐसे भी हैं, जो समाज-विशेष में ही प्रचलित हैं। जैसे—मुस्लिम-संस्कारों से सम्बद्ध गीत। इसी प्रकार मृत्यु-संस्कार-सम्बन्धी गीत भी कुछ सीमित वर्ग में ही मृत्यु के उपरान्त गाये जाते हैं।

जो गीत पहले किसी संग्रह में प्रकाशित हो चुके हैं, उन्हें छोड़कर हमने यथासम्भव ऐसे ही गीतों को संग्रह में स्थान दिया है, जो अभी तक अप्रकाशित रहे हैं।

प्रयत्न करने पर भी कुछ क्षेत्रों से हमें गीत प्राप्त नहीं हो सके। निश्चय ही इन अनुपलब्ध गीतों में से कई बहुत सुन्दर और सरस होंगे। फिर भी, क्रम-क्रम से हमारे पास इतने अच्छे-अच्छे गीत आ गये कि संग्रह में देने के लिए बहुत सावधानी से उन्हें छाँटना पड़ा। हमें कई गीतों के विविध क्षेत्रों से विविध रूप भी प्राप्त हुए, उनमें जो रूप अधिक पूर्ण प्रतीत हुए, उन्हीं को संग्रह के लिए चुना गया है। ऐसे भी उदाहरण देखने में आये कि किसी गीत की कुछ पंक्तियाँ एक क्षेत्र में मिलीं, तो कुछ और पंक्तियाँ दूसरे क्षेत्र में। इस प्रकार के गीतों की प्राप्त सामग्री को बड़ी सतर्कता से मिलाकर उनका पूरा ढाँचा खड़ा किया जा सका है।

हमारे विभागीय संग्रह के लिए प्राप्त गीतों की पर्याप्त संख्या के बावजूद देखा गया कि कुछ विशेष विधियों से सम्बद्ध गीत हमें नहीं मिल सके हैं। इस प्रकार के गीतों को इस संग्रह में देने के लिए हमें अपने विभागीय अनुसन्धान-सहायकों को कई बार गाँवों में भेजना पड़ा और लोक-गीतों की जानकारी रखनेवाली कई बहनों से भी सहायता लेनी पड़ी। गीतों को प्राप्त करने में जो कठिनाइयाँ होती हैं, उनके सम्बन्ध में यहाँ हमें कुछ कहना नहीं है; क्योंकि लोक-साहित्य का कोई भी संग्रहकर्त्ता उनसे अपरिचित नहीं होगा।

हमने इस संग्रह में गीतों को मगही के विभिन्न भाषा-रूपों की दृष्टि से नहीं, वरन् संस्कारों के ही अनुसार स्थान दिया है। जो गीत जिस रूप में प्राप्त हुए हैं, उन्हें उसी रूप में हमने प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। पाठशोध की आवश्यकता वहीं पड़ी है, जहाँ किसी गीत का कोई अंश बिलकुल निरर्थक-सा प्रतीत हुआ है। ऐसे स्थलों में कुछ अन्य क्षेत्र से जो सार्थक रूप प्राप्त हुए हैं, उनका ग्रहण करना अधिक उचित प्रतीत हुआ है। किसी गीत के जहाँ कई मौखिक पाठान्तर मिले हैं, वहाँ उनका निर्देश पाद-टिप्पणी में कर दिया गया है।

प्रायः गीतों में ह्रस्व के स्थान में दीर्घ और दीर्घ के स्थान में ह्रस्व का उच्चारण होता है। जैसे—

नऽ देबो, हे ननद, पीया के अरजल हे।

यहाँ 'पिया' के स्थान में 'पीया' उच्चारण किया जाता है। ऐसे स्थलों में हमने यथासम्भव गीत के उच्चारणानुसार ही वर्ण-विन्यास रखा है।

इस संग्रह में बाईं ओर के पृष्ठ पर मूल रूप में गीत और दाहिनी ओर के पृष्ठ पर उनके अर्थ पद-क्रमानुसार दिये गये थे; परन्तु मुद्रण के समय देखा गया कि इस क्रम से पृष्ठ-संख्या बहुत बढ़ जायगी और पुस्तक बृहदाकार हो जायगी। इसलिए, अर्थवाले आवश्यक अंश को संक्षिप्त रूप देकर पाद-टिप्पणियों के साथ सम्मिलित कर देना प्रकाशन की दृष्टि से सम्प्रति अधिक वांछनीय समझा गया और निश्चय किया गया कि अर्थवाले अंश को अखंडित रूप में पीछे सुविधाजनक प्रकाशित किया जा सकेगा। ठेठ मगही शब्दों के अर्थ भी पाद-टिप्पणी में ही दिये गये हैं।

जिन गीतों में कई अध्याहार या औपचारिक तथा आनुष्ठानिक विशेषताएँ हैं, उनके प्रारम्भ में ऊपर ही आवश्यक परिचयात्मक विवरण दे दिये गये हैं, जिससे उनके अर्थ का ग्रहण करने में कठिनाई न हो। पाद-टिप्पणियों में शब्दार्थ, व्युत्पत्ति आदि भी दे दिये गये हैं। गीतों के गाने में यथास्थान परिवार के लोगों के तथा अन्यान्य सम्बन्धियों के नाम भी लिये जाते हैं। ऐसे स्थलों में इस संग्रह के गीतों के मूल में कवन तथा अर्थ में अमुक शब्द का प्रयोग किया गया है। ये दोनों शब्द यथास्थान 'इटैलिक्स' में दिये हुए हैं।

परिषद् के लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग का कार्य हमारे निर्देशन में जब चल रहा था, तब हमें कई बार बीच-बीच में 'स्कूल ऑफ् लिंग्विस्टिक्स' के कार्य के लिए पूना चला जाना पड़ा और सन् १९५५-५६ ई० में वहाँ डेकन कॉलेज के पोस्ट-ग्रेजुएट ऐंड रिसर्च इन्स्टिट्यूट में 'रॉक फेलर फाउण्डेशन,' (यू० एस्० ए०) के तत्त्वावधान में भाषाविज्ञान के प्रथम विज़िटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य-निरत रहना पड़ा। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में हमें आगरा-विश्वविद्यालय के हिन्दी तथा भाषाविज्ञान-विद्यापीठ के कार्य के लिए भी बहुधा आगरा आना पड़ता था। फिर भी, अवैतनिक रूप में 'लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग' के कार्य की देखरेख मैं यथासंभव करता रहा। इस प्रकार, लगातार आठ वर्षों तक इस विभाग के संचालन और निर्देशन का भार हमारे ऊपर रहा। अतएव, इसकी कार्यवाहियों और कार्यकर्त्ताओं से हमारा घनिष्ठ व्यक्तिगत सम्बन्ध-सा जुड़ गया। अपने समस्त कार्य-काल में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्कालीन सुयोग्य संचालक आदरणीय श्रीशिवपूजन सहायजी का सहयोग और प्रोत्साहन मुझे सदा प्राप्त होता रहा। उनकी सहृदयता, साधुता और पाण्डित्य की प्रशंसा करके अघा पाना मेरे लिए संभव नहीं है। उनके कार्यकाल के उपरान्त परिषद् के संचालन के दायित्व को सर्वश्री वैद्यनाथ पांडेय, एम्० ए०, और फिर उनके बाद डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' ने बड़ी कुशलता और योग्यता से सँभाला। 'माधव' जी तो अब परिषद् के काम में रम-से गये हैं। आपने संपादन के शेष कार्य तथा संग्रह की भूमिका को पूरा करने के लिए हमें पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान कीं, जिसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं।

इसके अतिरिक्त परिषद् के वर्त्तमान सभापति श्रीसत्येन्द्रनारायण सिंह तथा संचालक-मंडल के अध्यक्ष न्यायमूर्त्ति श्रीसतीशचन्द्र मिश्र के भी हम कृतज्ञ हैं, जिनके सुझावों से हमने लाभ उठाया है। प्रकाशन में परिषद् के प्रकाशनाधिकारी श्रीअनूपलाल मंडल और श्रीहवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' साहित्याचार्य का भी सक्रिय सहयोग हमें मिला है। हिन्दी में लोकवार्त्ता-साहित्य के अग्रदूत और प्रसिद्ध विद्वान् पुण्य-स्मृति पं० रामनरेश त्रिपाठी, विद्वद्वर श्रीकृष्णानंद गुप्त, श्रद्धेय राहुल सांकृत्यायन तथा पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी' से बहुमूल्य सुझाव, पथ-प्रदर्शन और उत्साहवर्धन का लाभ भी हमें पत्राचार अथवा व्यक्तिगत संपर्कों द्वारा होता रहा। इसके लिए आप सबके प्रति सादर आभार प्रकट करना हमारा कर्त्तव्य है।

लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग के सहायक श्रीराधावल्लभ शर्मा, साहित्यालंकार इस इस कार्य में प्रारंभ से ही हमारा साथ देते रहे हैं। हमारे दूसरे सहायक श्रीश्रुतिदेव शास्त्री, पालि-न्याय-साहित्याचार्य, व्याकरणशास्त्री, प्रभाकर भी इसमें तत्परता से हमारी सहायता करते रहे हैं। आप दोनों ही हमारे साथ पूना भी गये और वहाँ 'स्कूल ऑफ् लिंग्विस्टिक्स' में

प्रशिक्षण प्राप्त किये। हमारी कार्य-प्रणालियों से आपलोगों से अधिक और कौन अवगत होगा ? आप दोनों को इस कार्य में दायें-बायें हाथ की तरह हम अपना अभिन्न अंग मानते हैं। हमारे सारे निर्देशों के पालन में निरंतर निरत आप दोनों ने अपनी असाधारण प्रगतिशीलता तथा तत्परता से हमें बराबर प्रभावित किया है। आप दोनों का हमें सदा भरोसा रहा है और रहेगा। हमारे प्रिय शिष्य श्रीविक्रमादित्य मिश्र, एम्० ए०, साहित्यरत्न का भी सहयोग हमें सुलभ था। उन्हें हमने विशेष रूप से गाथा-गीतों के संग्रह और अध्ययन में प्रवृत्त किया है। इस कार्य में वे बड़े चाव से लग गये हैं।

संग्रह के कार्य में मुझे विशेष रूप से निम्नलिखित महानुभावों से सहायता मिली है—

१. श्रीश्रीकान्त शास्त्री, एम्० ए०; नारायणपुर, एकंगरसराय पूर्वी पटना)।

पटना के रहनेवाले विद्वान् हैं। आप बहुत दिनों से लोकगीतों का संग्रह कर रहे थे। मगही क्षेत्र से लोक-भाषा और लोक-साहित्य की बहुमूल्य सामग्री आपसे परिषद् को प्राप्त हुई है। आप सदा हमारा हाथ बँटाते रहे हैं। इधर आप विधिवत् मगही भाषा के विषय में वैज्ञानिक अनुसन्धान कर रहे हैं।

२. श्रीमती संपत्ति अर्याणी, एम्० ए०, जहानाबाद (गया)। वर्त्तमान पता—दीवान मुहल्ला, पटना सिटी।

आप इस समय पटना साइंस-कालेज के हिन्दी-विभाग तथा पटना-विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग में प्राध्यापिका हैं। मगही लोक-साहित्य तथा लोक-भाषा के अध्ययन तथा अनुशीलन में आपकी विशेष रुचि है। आपने तत्संबंधी कई पाण्डित्यपूर्ण लेख प्रकाशित किये हैं। इस संग्रह के लिए आपने कई गीत दिये हैं तथा उनका राग-निर्धारण करने में भी हमारी मदद की है। एक सुयोग्य शिष्या के नाते आपकी सराहना में हम अपनी ही सराहना समझते हैं।

३. श्रीमती पुष्पा अर्याणी, एम्० ए०, पटना सिटी।

आप श्रीमती संपत्ति अर्याणी की छोटी बहन हैं। आप भी हमारी शिष्या रही हैं और इस समय आकाशवाणी के पटना केन्द्र के चौपाल तथा अन्य कार्यक्रमों की कुशल कलाकार हैं। हमारे लिए पटना नगर के मुस्लिम परिवारों से मुस्लिम संस्कार-गीतों का संग्रह आपने ही किया है। कुछ अन्य विशिष्ट गीतों को भी प्राप्त करने में आपकी सहायता से हमने लाभ उठाया है।

४. श्रीउमाशंकर बी० ए०; शाहपुर, दाऊदपुर, दानापुर (पटना)।

आपने मगही के दानापुर-क्षेत्र से २६४ गीतों का संग्रह करके हमारी सहायता की थी। इनमें कई गीत औपचारिक तथा आनुष्ठानिक महत्त्व के थे, जिनको कई ग्रामवासी परिवारों से आपने प्राप्त किया था। ब्याह के अवसर पर गाये जानेवाले कठौती पर के गीत आपसे ही हमें उपलब्ध हुए थे। ये गीत मगह के ही कुछ भागों में प्रचलित हैं। भोजपुरी या मैथिली क्षेत्र में इनका प्रचलन नहीं है। अपने विद्यार्थियों में लोक-साहित्य की सामग्री के संकलन में उमाशंकरजी के समान तत्परता और लगन हमने विरलों में ही पाई है।

५. श्रीमती मदनमोहिनीशरण, बी० ए०, पटना।

आप हमारे पूज्य अग्रज और अपने देश के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० रघुनाथशरण, एम्० बी०, एम्० आर० सी० पी० (लंदन) की धर्मपत्नी और हमारी पूजनीया भाभी हैं। हमारे विशेष अनुरोध से आपने अपने घर की नौकरानियों से कुछ सुन्दर गीतों का संग्रह करके हमें दिया था। ये गीत हमारी दृष्टि में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं; क्योंकि इनकी पद-योजना विशेष सावधानी से अंकित की गई है और जिस वर्ग से ये गीत लिये गये हैं, उनकी वाणी का अविकृत प्रतिनिधित्व करते हैं।

आपलोगों के अतिरिक्त निम्नलिखित सज्जनों से भी हमें संग्रह-कार्य में सहायता मिली है—

६. श्रीलाला लखनलाल, बिहार (पटना)।
७. श्रीहरिप्रकाश, सोहसराय (पटना)।
८. श्रीकृष्णदेवनारायण, सोहसराय (पटना)।
९. श्रीसत्यनारायण प्रसाद सिंह, चिन्तामणिचक, मोकामा (पटना)।

संग्रह के गीतों की भाषा की प्रामाणिकता तथा उनके अर्थ की जाँच करने में हमने अपने सहयोगी प्रिय डॉ० शिवनंदनप्रसाद, एम्० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, पटना-विश्वविद्यालय से बहुमूल्य सहायता प्राप्त की है। आप स्वयं मगही-भाषी हैं। संग्रह की भाषा के संबंध में आपने बहुत महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये हैं, जिनका हमने इस संग्रह में सधन्यवाद समावेश किया है। इस सम्बन्ध में हमें श्रीकपिलदेव सिंह, एम्० ए०, प्राध्यापक, बी० एन्० कॉलेज, पटना, से भी अनल्प सहायता मिली है।

सम्पादन-कार्य में हमें अपने प्रिय बन्धु तथा लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ० सत्येन्द्र से समय-समय पर अमूल्य सुझाव और सक्रिय सहयोग मिलते रहे हैं। उनका कृतज्ञता-पूर्वक उल्लेख न करना हमारे लिए असम्भव है।

संग्रह की अनेक जटिलताओं, संस्कारों के अनेक दुर्ज्ञेय पक्षों तथा अर्थ की अनेक बाधाओं और सूक्ष्म उपलब्धियों के लिए हमने बार-बार अपनी पूज्यचरण माता श्रीमती शारदा देवी तथा अपनी जीवन-संगिनी श्रीमती शांतिलताप्रसाद से महत्त्वपूर्ण निर्देश प्राप्त किये हैं। इस संग्रह के लिए विशेष रूप से तैयार किया हुआ कोहबर का चित्र भी हमारी माताजी की ही कृति है। आपलोगों के ममतापूर्ण इस सहयोग का उल्लेख करके हम स्वयं एक कृतज्ञतापूर्ण गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

पटना से आगरा आ जाने के कुछ समय बाद लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग के कार्याधिकार को अपने सुयोग्य बंधु प्रो० श्रीनलिनविलोचन शर्मा, एम्० ए०, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, पटना-विश्वविद्यालय को सौंपकर हमें बहुत सुख हुआ था; क्योंकि अपने बाद इस काम के लिए अभिरुचि, ज्ञान और अनुभव सभी दृष्टियों से हम उन्हीं को उपयुक्त समझते थे। परन्तु हाय ! काल की कराल गति का क्या कहा जाय ! *जाकी यहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना है।* नलिनजी को खोकर हमने अपने आगे का एक प्रकाश-स्तम्भ खो दिया !

कृषि-कोश के प्रथम-खंड का प्रकाशन और दूसरे भाग का संपादन प्रायः पूरा कर लेने के बाद हम यह आसरा लगाये बैठे थे कि जो फसलें हमने वर्षों के परिश्रम से

इकट्ठी की थीं, उनका नलिनजी सदुपयोग करेंगे तथा उसकी राशि में उत्तरोत्तर वृद्धि करेंगे। हमें यह देखकर सन्तोष होता था कि इस दिशा में उन्होंने ठोस कदम उठाया था। हमारे अनुसंधान-सहायकों ने हमारे निर्देशानुसार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लोक-साहित्य-सम्बन्धी लगभग पाँच सौ निबन्धों की एक सूची आवश्यक विवरणों-सहित तैयार की थी। उसका 'लोक-साहित्य : आकर-साहित्य-सूची' के नाम से परिषद् ने प्रकाशन कराया। इसके अतिरिक्त विभाग में अबतक की संगृहीत सामग्री को सहेजकर दो और उपयोगी प्रकाशन किये गये—'लोककथा-कोश' और दूसरा 'लोकगाथा-परिचय'। इस प्रकार हमारे विभाग ने अबतक जो कार्य किये थे, उन्हें विद्वज्जनों और अनुसंधित्सुओं के समक्ष प्रस्तुत करके नलिनजी ने हमारी और हमारे शोध-सहायकों की सेवाओं तथा विभाग के अबतक के संपन्न कार्यों की सार्थकता और उपादेयता सिद्ध कर दी थी।

परिषद् में लोकभाषा-अनुसंधान-विभाग का आयोजन प्रारंभ करने में हमारा मुख्य लक्ष्य यही था कि इसके द्वारा लोक-साहित्य के विद्यार्थियों और अनुसंधायकों के लिए वैज्ञानिक ढंग से संगृहीत एक ऐसा प्रामाणिक और समृद्ध संग्रह प्रस्तुत किया जा सके, जिसका देश-विदेश के सभी कार्यकर्त्ता उपयोग कर सकें। विभिन्न विश्वविद्यालयों के अनेक छात्र हमारे संग्रह से समुचित लाभ उठा चुके हैं। उपर्युक्त प्रकाशनों से निस्संदेह उन्हें अपने अध्ययन और अनुसंधान में और भी अधिक सहायता प्राप्त होगी। लोक-साहित्य के विवेचन और हिन्दी तथा हिन्दीतर क्षेत्र की लोक-कथाओं और लोक-भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए इस प्रकार के प्रकाशनों का असाधारण महत्त्व है।

उपर्युक्त महानुभावों के अतिरिक्त हमें अपने अनेक अन्य गुरुजनों, मित्रों, छात्रों और हितैषियों से आशंसा, सहयोग और समर्थन प्राप्त हुए हैं। उन सबके प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

आप सबकी छत्रच्छाया न रहती, तो इस मग में हमारे पग ही कैसे बढ़ते। सचमुच ही विधि-विधान का यह एक विचित्र विपाक ही प्रतीत होता है! बचपन में पूज्य पिताजी ने विशेष रूप से हमें अँगरेजी की अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध किया। पर, हमारा मन झुक पड़ा संस्कृत के अध्ययन की ओर और प्राध्यापक भी हुए, तो प्रारंभ में संस्कृत का ही। पर संस्कृत के भी पंडित बनने से रहे! बरबस राष्ट्रवाणी हिन्दी ने अपनी ओर खींच लिया, परन्तु इतना भाग्यशाली कहाँ कि उसकी भी कुछ मनोनुकूल सेवा की योग्यता पा सकते। आगे, बढ़े तो काव्य की सरसता से सर्वथा वंचित होकर जा पहुँचे भाषा-विज्ञान की नपी-तुली प्रयोगशाला में, जहाँ शोध-प्रणाली के लिए एकमात्र प्रामाणिक आधार पाया, अपनी ही उस वाणी में, जिसकी मधुधारा को पूजनीया माँ के स्तन्य के साथ ही हमने प्राप्त किया था। फिर, जब लोकभाषा और साहित्य में कुछ काम करने की बारी आई, तब पाँव बढ़ चले भोजपुरी से पृथक् मगही के क्षेत्र में! यों मगही हमारी दृष्टि में भोजपुरी से बहुत भिन्न नहीं है, उसकी सगी बहन ही है। इस प्रकार, माँ नहीं तो मौसी ही सही, जो माँ के समान ही प्यारी होती है। जीवन के पूरे तीस वर्ष उसी के घर-बार में हमने बिताये हैं। उसकी मिसरी, कानों में ही नहीं, जैसे ज़बान में भी घुलमिल गई है, उसने हमारा मन मोह लिया है।

इस विषय में सोचते हैं, तो कुछ अजीब विडंबना-जैसी मालूम होती है। बचपन में घर में जब कभी माँ-बहनों को गाते हुए सुनते थे, तो न जाने क्यों हमें अच्छा नहीं लगता था। उनकी आवाज रुलाई-जैसी जान पड़ती थी और एक अज्ञात करुणा के प्रवाह में हम बह चलते थे। स्वयं रो पड़ते थे। बाद में हिन्दी पढ़ने लगे, तो भारतेन्दु की यह पंक्ति सामने आई—

तजि ग्राम कविता सुकवि जन की अमृत बानी सब कहैं।

पुनः संस्कृत पढ़ते समय काव्य-शास्त्र के बड़े-बड़े ग्रन्थों में ग्राम्य दोष के विवेचन पढ़े। कौन जानता था, उस समय का भूल-भरम का यह मन अन्ततः इन गँवारू गीतों का ही वशीभूत होकर रहेगा।

इन गीतों में जन-जीवन की सच्ची झाँकी है, गार्हस्थ्य का निर्मल दर्पण है, भारतीय संस्कृति की सुनहरी शृंखला है, काव्य का सहज सरस सौंदर्य है, भाषा का बहता नीर है, समाज और लोकाचार का सजीव इतिहास है, नर-नारियों के मनोभावों और सुख-दुःख की अनुभूतियों की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक भंगिमाएँ हैं तथा नृवंश-विज्ञान की उपयोगी सामग्री भी है। जिनकी जिस पक्ष में रुचि हो, उसका स्वाद लें।

इस प्रसंग में हमें रूपगोस्वामी की एक उक्ति का स्मरण हो रहा है, जिसमें कृष्ण ने राधा से कहा है—

तवात्र परिमृग्यता क्वचन लक्ष्मसाक्षादियम्
मयात्वमुपसादिता सकललोकलक्ष्मीरसि।
यथा जगति चञ्चता चणकमुष्टिसम्पत्तये
जनेन पतिता पुरः कनकवृष्टिरासाद्यते॥

कृष्णचंद्रजी चले थे पद-चिह्नों की खोज करने, पर सौभाग्यवश अचानक मिल गईं, उन्हें स्वयं राधा रानी ही। हमारी भी ठीक यही दशा है। हम चले तो थे माता सरस्वती की खोज में, ज्ञान-ग्रन्थों के विस्तीर्ण धूलि-कणों में पड़े हुए उसके कुछ पद-चिह्नों को ढूँढ़ने; पर जैसे चने के दो दानों की खोज करनेवाले किसी भूखे-प्यासे दरिद्र भिखारी को सोने की बूँदों की वृष्टि मिल जाय, वैसे ही हमारा भी भाग्य जगा और इन मगही लोकगीतों के इस संसार में आकर हमें प्राप्त हो गई स्वयं वाणी की रानी वरदा देवी शारदा ही। जय हो, लोक-पथ की इस सरस्वती की जय हो!

केन्द्रीय हिन्दी-निदेशालय
शिक्षा-मंत्रालय, भारत-सरकार
नई दिल्ली
होलिकोत्सव, वि० सं० २०१८

विश्वनाथप्रसाद

प्रस्तावना

'सा मागधी मूलभाषा।'

मगही नाम मागधी से व्युत्पन्न है। मागधी शाखा के अन्तर्गत मगही के अतिरिक्त भोजपुरी, मैथिली, बँगला, असमी और उड़िया—ये भाषाएँ सम्मिलित हैं। इनमें भोजपुरी, मगही और मैथिली के लिए ग्रियर्सन ने अपने भाषा-सर्वेक्षण (लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ् इंडिया) में बिहारी नाम का प्रयोग किया है। यह एक नया कल्पित नाम है। जैसे उन्होंने राजस्थान की बोलियों के लिए एक नया नाम गढ़ा था—'राजस्थानी, वैसे ही बिहार की बोलियों के लिए 'बिहारी' नाम रख दिया था। अतएव, जिस अर्थ में महाराष्ट्र की भाषा को 'मराठी', गुजरात की भाषा को 'गुजराती,' बंगाल की भाषा को 'बँगला' और उड़ीसा की भाषा को 'ओड़िया' कहते हैं, उस अर्थ में भाषार्थक 'बिहारी' शब्द को नहीं ग्रहण किया जा सकता। 'बिहारी' कोई एक भाषा या बोली नहीं, किन्तु उपर्युक्त तीनों भाषाओं का बोधक शब्द है। इसके अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि इन तीनों भाषाओं की सीमा बिहार में ही सीमित नहीं है। इनमें से भोजपुरी-भाषा-क्षेत्र का एक बहुत बड़ा भाग उत्तर-प्रदेश में है। इसी प्रकार, मगही-भाषी क्षेत्र का एक भाग (मानभूम का कुरमाली-भाषी अंश) अभी हाल में बंगाल में मिला लिया गया है। मैथिली-क्षेत्र के भी कुछ अंश बंगाल और नेपाल में सम्मिलित हैं। वस्तुतः, ग्रियर्सन ने बिहार में इन बोलियों के विस्तार-प्राधान्य तथा इनमें जो एक विशिष्ट और घनिष्ठ समरूपता है; इन्हीं आधारों पर उनका यह एक समान नामकरण कर दिया था। इन बोलियों या भाषाओं की यह व्यापक समानता उन्हें एक ओर बँगला से पृथक् करती है और दूसरी ओर अवधी तथा अन्य पश्चिमी बोलियों से भी भिन्न और विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। इन समानताओं को अभिव्यक्त करने के लिए, इनकी ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए 'बिहारी' निस्संदेह एक सार्थक संज्ञा है।

इस दृष्टि से 'बिहारी' उत्तर में हिमालय की तराई से दक्षिण में छोटानागपुर पठार तक और पूरब में बंगाल की सीमा से पश्चिम में मध्यप्रदेश के सरगुजा तथा उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद, फैजाबाद और बस्ती जिले के पूरब तक बोली जाती है। इस प्रकार, 'बिहारी' भाषा के पूरब में बँगला, दक्षिण में ओड़िया, पश्चिम में छत्तीसगढ़ी, बघेली और अवधी, जो हिन्दी की मध्यदेशीय उपभाषाएँ हैं और उत्तर में नेपाली बोली जाती है।

इस सीमा के अन्दर इस भाषा के साथ-साथ आदिवासियों में संताली, मुंडारी, हो, खड़िया, कोरकु और भूमिज आग्नेय या निषाद-कुल की और ओराँव या कुड़ुख तथा मालतो द्रविड-कुल की हैं।



'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ् इंडिया' के अनुसार 'बिहारी' बोलियों के बोलनेवालों की संख्या इस प्रकार है—

मैथिली— १, ०२, ६३, ३५७
मगही— ६५, ०४, ८१७
भोजपुरी—२, ०४, १२, ६०८

कुल जोड़—३, ७१, ८०, ७८२

ये आँकड़े सन् १८६१ ई० की जन-गणना पर आधृत हैं। तब से अबतक जनसंख्या में जो वृद्धि हुई है, उसके अनुपात से इनके बोलनेवालों की संख्या में भी वृद्धि का अंदाज लगाया जा सकता है। इन बोलियों में इन पड़ोस की कोल और द्रविड भाषाओं के भी प्रचुर प्रभाव हैं। ये हिन्दी-प्रदेश के पूरबी अंचल की अंतिम उपभाषाएँ हैं। भारतीय संविधान में 'बिहारी' भाषा-क्षेत्र को हिन्दी-प्रदेश के अन्तर्गत ही रखा गया है। पूरब में इनके आगे बँगला का क्षेत्र प्रारंभ हो जाता है, दक्षिण में उड़िया का और उत्तर में नेपाली तथा नेवारी का। बिहार की इन बोलियों की भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए हमने एक विशेष मानचित्र तैयार किया है, जो इस पुस्तक के आरंभ में दिया जा रहा है। उसमें मगही के क्षेत्र को पृथक् रंग में दिखाया गया है, जिससे मगही के विस्तार, परिसीमा आदि का परिचय अनायास हो सकेगा।

मगही का क्षेत्र और जनसंख्या

मगही का क्षेत्रफल लगभग साढ़े चौदह हजार वर्गमील है। यह प्रधानतया पटना, गया और हजारीबाग के कुछ भागों में तथा राँची की तलहटी के कुछ अंशों में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त पलामू के पूरबी भाग तथा पूरब में मुँगेर जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भागों में भी इसका व्यवहार होता है। दक्षिण में सिंहभूम तथा सराइकेला और खरसवाँ तक तथा राँची-पठार के पूरब मानभूम में पूरबी मगही के रूप में इसका प्रचलन है। कुरमाली या कुड़माली इसका एक भेद है तथा खोट्टा में भी इसका निश्चित रूप पाया जाता है। प्रदेश के नये विभाजन के बाद मानभूम (पुरुलिया) के कुरमाली-भाषी कुछ क्षेत्र अब बंगाल (मानभूम, मयूरभंज और बामरा) की सीमा में जा पड़े हैं। लगभग पाँच लाख कुरमाली तथा मुचियाली मगही बोलनेवालों को भी सम्मिलित कर लिया जाय, तो इस समय मगही बोलनेवालों की संख्या कम-से-कम पचहत्तर लाख आँकी जा सकती है।

सीमा—मगही के उत्तर में गंगा-पार पश्चिमी मैथिली (वज्जिका) तथा सारन जिले के पूरबी भाग में भोजपुरी बोली जाती है। पश्चिम में शाहाबाद और पलामू जिले का भोजपुरी-भाषी क्षेत्र है। उत्तर-पूरब तथा पूरब में मुँगेर, भागलपुर और संतालपरगने की छिकाछिकी (अंगिका) का और दक्षिण-पूरब की ओर पुरुलिया और सिंहभूम में कुरमाली, मुचियाली मगही, खोट्टा बँगला-मिश्रित मगही तथा कुछ अन्य बिहारी बोलियों का व्यवहार होता है। संताल, मुंडा, उराँव आदि आर्येतर बोलियों के बोलनेवाले तथा सरगुजा इलाके के निवासी भी एक प्रकार की मगही का व्यवहार करते हैं। दक्षिण में राँची-पठार की





सदानी भोजपुरी का प्रयोग होता है तथा उसके और दक्षिण संताली, उराँव और मुंडा बोलियों का।

ऐतिहासिक पृष्ठाधार

प्राचीन मगध-राज्य की सीमा उत्तर में गंगा, पश्चिम में वाराणसी (कर्मनाशा नदी तक), पूरब में हिरण्य पर्वत या मुँगेर और दक्षिण में कर्ण, सुवर्ण या सिंहभूम तक विस्तीर्ण थी। हुएनसांग ने (६२६-४५ ई०) इसके लिए मो-किए-तो शब्द का व्यवहार किया है[1] और इसका क्षेत्रफल ५००० ली० या ८३३ वर्गमील बताया है।[2] इस विवरण के अनुसार इस सीमा के अन्तर्गत पटना जिला तो सम्पूर्ण और गया जिले के उत्तरी भाग के अंश समाविष्ट होते हैं।

भारतीय इतिहास में मगध का अग्रगण्य स्थान रहा है। उसका प्राचीन इतिहास बड़ा महत्त्वपूर्ण और रोचक है। शतपथब्राह्मण (१, ४, १-१४-१७) में इस बात का उल्लेख है कि विदेघ माथव और उनके पुरोहित गौतम राहुगण के वैश्वानर प्रज्वलित अग्नि का अनुसरण करते हुए सदानीरा (गंडक) नदी के पूरबी तट पर आ बसे थे। इसमें विदेह, मगध आदि पूरबी प्रदेशों में यज्ञप्रधान आर्य सभ्यता के प्रवेश का पता चला है। इसके पहले मगध में असंस्कृत मुंडा, कोल आदि जंगली जातियों का निवास था। इसी कारण ऋग्वेद में इस प्रदेश की निन्दा की गई है और इसे घृणाबोधक 'कीकट' नाम से अभिहित किया गया है—

> किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावः
> नाशिरं दुह्रे न जपन्ति धर्म्यम्।
> आनोभर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं
> मघवन् रन्धयाने॥ —ऋग्वेद, ३-५३-१४

यास्क ने निरुक्त में कीकट शब्द की व्याख्या भी की है —कीकटानाम् देशोऽनार्य-विशेषः। कीकटाः किंकृताः। किं क्रियाभिरिति प्रेप्सा वा। अर्थात्, कीकट-देशवासी क्रियाहीन थे, खेती नहीं करते थे। केवल गाय पाला करते थे। याग, यज्ञ, होमादि नहीं करते थे और नास्तिक थे। वे 'नैचाशाख', अर्थात् नीची शाखा या वर्ग के थे। उनका राजा प्रमगन्द भी निन्दनीय था। वायुपुराण में मगध को ही कीकट बताया है और प्रसिद्ध टीकाकार श्रीधर ने गया से इसका समीकरण किया है।

मगध का व्युत्पत्तिगत अर्थ 'मग'—सूद को धारण करनेवाला बताया गया है। अथर्ववेद-संहिता में गान्धारेभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मागधेभ्यः (५-२२-५-१४)—इस मन्त्र में तक्मन् (ज्वर) से कहा गया है कि वह इन देशों में चला जाय। अथर्ववेद के १५वें कांड में मागध को व्रात्यों का घनिष्ठ मित्र कहा गया है। लाट्यायन श्रौतसूत्र (७, ६, २८) में व्रात्यधन का दान हीन ब्राह्मण या मगध के ब्राह्मण (ब्रह्मबंधु) को ही

---

१. दे० सैमुएल बील, बुद्धिस्ट रेकर्ड्स ऑफ् दि वेस्टर्न वर्ल्ड, पृ० ८२।

२. जूलियन, हुएनसांग, पृ० ४०६।

देने का निर्देश किया गया है। पंचविशब्राह्मण में (१७-४) व्रात्यों का विशद वर्णन है। उसमें कहा गया है कि वे अदीक्षित होते हुए भी 'दीक्षितावाच्' बोल सकते थे। वे कठिन शब्दों का सुगम उच्चारण भी करते थे। प्राकृत में संयुक्त वर्णों का जो सरलीकरण हो गया था, सम्भवतः यहाँ उसी का संकेत है। तैत्तिरीयब्राह्मण (३, ४, १, १) में उल्लेख है कि मगध के लोग अपनी तेज आवाज के लिए प्रसिद्ध थे। ऐतरेय आरण्यक में उन्हें गायक बताया गया है, जिससे बाद में मागध का अर्थ ही हो गया गवैया। ब्रह्मपुराण में उल्लेख है कि सम्राट् पृथु ने अपनी प्रशंसा में गाये हुए मागध के गान से प्रसन्न होकर उसे मगध-प्रदेश दे दिया था। मनुसंहिता में मागधों को भ्रमणशील गायक और वाणिज्य में संलग्न कहा गया है। हालाँकि, पंचविंशब्राह्मण[1] में कहा गया है कि वे कृषि और वाणिज्य नहीं करते थे और घुमंतू जीवन (*व्रतति अटति इति व्रात्यः*) व्यतीत करते थे। मनुसंहिता (१०, २२ और ४७) तथा गौतमधर्मशास्त्र (४, १७) ने मागध का अर्थ मगध का निवासी नहीं, वरन् वैश्य जाति के पुरुष और क्षत्रिय स्त्री से उत्पन्न वर्णसंकर किया है और लिच्छवियों तथा मल्लों को राजन्य व्रात्यों की ही सन्तान बताया है। मनु ने भी सामान्य रूप से संस्कारहीन मनुष्यों के लिए भी व्रात्य शब्द का ही प्रयोग किया है। इन सभी उल्लेखों से स्पष्ट है कि मगध के व्रात्य वैदिक संस्कारों से वंचित थे और इन्हें क्रमशः आर्य-संस्कृति में दीक्षित करने का प्रयत्न किया जा रहा था। रामायण और महाभारत में भी मगध और मागधों के अनेक उल्लेख मिलते हैं। वसिष्ठ ने सुमन्त को धार्मिक राजाओं को निमंत्रित करने को कहा था, जिनमें मगध के राजा भी थे, जो सभी शास्त्रों में प्रवीण थे (आदिकांड, १३वाँ सर्ग)। दशरथ ने कैकेयी के कोप को शान्त करने के प्रयत्न में उन्हें मगध में बनी चीजों का उपहार देने का निवेदन किया था। परवर्त्ती साहित्य भी मगध के वर्णनों से अशून्य है। कालिदास ने रघुवंश (१-३१) में रघु के पिता दिलीप के मगध-नरेश की कन्या सुदक्षिणा से विवाह का वर्णन किया है। परन्तु, पुराणों तथा काव्यों में मगध-सम्बन्धी सबसे समृद्ध वर्णन बृहद्रथ-वंश के सम्राट् जरासन्ध का ही है। महाभारत में जरासन्ध के पराक्रम का विस्तृत वर्णन है। उसकी दो पुत्रियों का विवाह कंस से हुआ था और कंस-वध के उपरान्त उसने अपनी तेईस अक्षौहिणी सेना के साथ मथुरा पर आक्रमण किया था और उत्तर भारत के बहुत-से राजाओं को परास्त करके अपनी राजधानी गिरिव्रज या राजगृह में एक शिव-मन्दिर में बलिदान के लिए बन्द कर रखा था। उसीके आतंक से कृष्ण को मथुरा छोड़कर द्वारका जा बसना पड़ा था। जरासन्ध के वध के उपरान्त कृष्ण ने कैद में पड़े हुए राजाओं को मुक्त किया। आदिपर्व में (६, ७, ५, ४) जरासन्ध को असुरों का सम्राट् कहा गया है। जरासन्ध के वंशजों ने लगभग एक हजार वर्ष तक मगध पर शासन किया। इस प्रकार, मगध में चिरकाल तक आसुरी और अवैदिक भावनाओं का प्राधान्य रहा। सम्भवतः, इसी कारण वेदविधि-विरोधी बौद्धधर्म को फूलने-फलने का सर्वोत्तम क्षेत्र मगध में ही मिला और कदाचित् इन्हीं कारणों से मगध चिरकाल से अपवित्र स्थान माना जाता रहा। लोकभाषा में भी मगध को भदेस (भद्दा या बुरा देश) कहा जाता है।

---

१. न हि ब्रह्मचर्यं चरन्ति न कृषिं न वाणिज्यम्। —पंचविंशब्राह्मण, १७-१-२।

बृहद्रथ-वंश के बाद १६२ वर्षों तक शिशुनाग-वंश के बारह राजाओं का राज्य चलता रहा। भगवान् बुद्ध के समसामयिक बिम्बिसार इसी वंश के थे। इस वंश के अंतिम राजा महानन्दिन् थे। शूद्रा से उत्पन्न उनके पुत्र महापद्मनन्द ने मगध में शूद्र राज्य की स्थापना की। नन्द के आठ पुत्रों ने सौ वर्षों तक मगध पर शासन किया। उनका उन्मूलन कौटिल्य के द्वारा हुआ, जिन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध का सम्राट् बनाया।

भगवान् बुद्ध ने इसी प्रदेश के गया-क्षेत्र में बोधि-तत्त्व प्राप्त किया। सारिपुत्र और मोद्गलायन इसी भूमि के गौरव के प्रतीक थे। शिशुनागवंशी अजातशत्रु ने पाटलिपुत्र नगर की स्थापना करके उसी को राजधानी बनाया था, जो मौर्यकाल में आकर केवल मगध का ही नहीं, वरन् सारे देश के केन्द्रीय शासन की राजधानी बन गया। चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक के राज्यकाल में यह प्रदेश बौद्धधर्म और विश्व-संस्कृति का केन्द्रस्थल बन गया। ईरान का दारा और विश्वविजयी सिकन्दर को मगध के पराक्रम से अभिभूत होकर निराश लौट जाना पड़ा था और सेल्यूकस को कन्यादान करके सन्धि करनी पड़ी थी। ग्रीस का राजदूत मेगास्थनीज यहाँ आकर रहा था और उसका विवरण देश की तत्कालीन गरिमा का बड़ा सुन्दर चित्र प्रस्तुत करता है। चाणक्य ने अपने विख्यात अर्थशास्त्र की रचना यहीं की थी। भगवान् बुद्ध का शान्ति और अहिंसा का सन्देश लेकर यहीं से अनेक मेधावी विद्वान् और विचारक दूर-दूर के विदेशों में गये और उन्हें भारतीय संस्कृति से विमंडित किया। अशोक के समय मगध-राज्य का विस्तार दक्षिण में उड़ीसा तथा कृष्णा नदी तक तथा उत्तर-पश्चिम में गान्धार (अफगानिस्तान) तक जा पहुँचा था।

मौर्यों के बाद शुंगों का राज्य स्थापित हुआ। शुंग-सम्राट् पुष्यमित्र के राज्य-काल में ही पतंजलि हुए थे। वे यहीं परीक्षित हुए थे। विद्या-केन्द्र के रूप में पाटलिपुत्र की प्रसिद्धि के विषय में राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा में लिखा है—

श्रूयते च पाटलिपुत्रे शास्त्रकारपरीक्षा।
अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनिपिङ्गलाविह व्याडिः।
वररुचिपतञ्जली इह परीक्षिताः ख्यातिमुपजग्मुः॥

वर्ष, उपवर्ष, पाणिनि, पतंजलि आदि यहाँ विद्यार्थी के रूप में आये थे। ये सभी यहीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर प्रसिद्ध पंडित कहलाये। पाणिनि उपवर्ष के ही शिष्य थे। शुंगों के बाद गुप्त-साम्राज्य की स्थापना हुई। प्राचीन भारतीय इतिहास के उस स्वर्णयुग का निर्माण यहीं के धूलि-कणों से हुआ था। पाटलिपुत्र उस समय भी भारतीय साहित्य, संस्कृति और कला का प्रधान केन्द्र था। यहाँ का नालन्दा-महाविहार देश-देशान्तर के विद्वानों के लिए अध्ययन का अनुपम केन्द्र बन गया था। हुएनसांग ने इस विश्वविद्यालय का विशद वर्णन किया है।

पाल-राजाओं के राज्यकाल में इस प्रदेश का प्रधान नगर नालन्दा-महाविहार के निकट ओदन्तपुरी (बिहार) बन गया था। आठवीं शताब्दी के पालवंश के अधिष्ठाता गोपाल ने उदन्तपुर या ओदन्तपुरी में भी एक विहार या विद्या-केन्द्र की स्थापना की। यह स्थान पटना से लगभग ४० मील दक्षिण में है। वहीं बूढ़े राजा गोविन्दपाल को परास्त करके बख्तियार खिलजी ने ११९१ ई० में मुस्लिम-राज्य की स्थापना की। मुस्लिम-

राज्यकाल में बिहार ही मगध-प्रदेश की राजधानी रहा और बौद्धमठों तथा विहारों की
प्रचुरता होने के कारण इस सारे प्रदेश का नाम बिहार पड़ गया। संस्कृत-काव्यों में प्रदेश के
अर्थ में बिहार शब्द का प्रयोग पहले-पहल नैषधीयचरित में मिलता है—*चमूचरास्तस्य*
नृपस्य सादिनो विहारदेशं........ (नैषध, सर्ग, १)। अँगरेजी राज्य के अन्तर्गत
सन् १८६५ ई० तक पटना जिला तथा गया के उत्तरी भाग को सम्मिलित करके 'बिहार जिला'
और गया के दक्षिण तथा हजारीबाग के कुछ हिस्सों को मिलाकर 'रामगढ़ जिला' नाम
दिया गया था। इस क्षेत्र में मगही का जो रूप प्रचलित है, उसे 'रमगढ़िया' कहते हैं,
हालाँकि ग्रियर्सन ने उसके लिए 'कुर्मियाल' शब्द का प्रयोग किया है।
उपर्युक्त ऐतिहासिक विवरण से यह स्पष्ट होगा कि मागधी क्षेत्र चिरकाल से देश-
विदेश की संस्कृतियों का एक पवित्र संगम बना हुआ है। यही स्थान भगवान् बुद्ध की
तपोभूमि और उनके विशाल व्यापक कर्मक्षेत्र और धर्मक्षेत्र का केन्द्र था। इसका प्रभाव
यहाँ की भाषा पर भी पड़ा। किसी प्रचलित देशभाषा को साहित्यिक मान्यता प्रथम-प्रथम
यहीं प्राप्त हुई। बुद्धदेव ने यहीं की भाषा को अपने विश्वविश्रुत सन्देशों के प्रचार का
माध्यम बनाया। फलतः, यहीं की भाषा को देववाणी संस्कृत से भी बढ़कर उच्चतम मर्यादा—
'मूलभाषा' होने का गौरव प्राप्त हुआ—

सा मागधी मूलभाषा नरायाआदिकप्पिका।
ब्राह्मणा चस्सुतालापा सम्बुद्धा चापि भासि रे॥—कच्चान

अर्थात्, यही मागधी वह मूलभाषा है, जिसमें आदिकाल के मनुष्य, ब्राह्मण और उन सम्बुद्ध जनों ने भी, जिन्होंने इसके पहले कोई शब्द सुना ही नहीं था, पहले-पहल बोलना आरंभ किया। महावंश में (चूलवंश ३७, २३०, २४२, ४) में भी इसकी पुष्टि की गई है—*सब्बेसां मूलभासाय मागधाय निरुत्तिया।*

विनयपिटक में इस संबंध में एक रोचक कथा दी हुई है। तथागत से अमेल और उतेल नाम के उनके दो ब्राह्मण-शिष्यों ने प्रस्ताव किया कि वे उनके वचनों को छंद या वेदवाणी संस्कृत में लिखना चाहते हैं; क्योंकि भिन्न-भिन्न जातियों, कुलों और गोत्रों के लोगों द्वारा भिन्न-भिन्न बोलियों में उच्चरित होने से वे विद्रूप होते जा रहे हैं। बुद्धदेव ने आदेश दिया कि मेरे वचनों को छंद में कभी न प्रस्तुत करना। जो ऐसा करेगा, वह पाप का भागी होगा। बुद्ध का निर्देश था—*अनुजानामि भिक्खवे सकायि निरुत्तिया बुद्धवचनमं सरिमापुनितु।* अर्थात्, मेरे वचनों को लोग अपनी ही भाषा में ग्रहण करें। इससे स्पष्ट है कि भगवान् बुद्ध संस्कृत को छोड़कर देशभाषा के मध्यम से ही धर्मप्रचार करना चाहते थे। यह 'अपनी भाषा' या देशभाषा मागधी ही हो सकती थी। यों बुद्धदेव स्वयं कोसल-प्रदेश के थे, पर उनके कार्यक्षेत्र का केन्द्र मगध-प्रदेश ही था। उनके समय में कोसल और मगध में ही दो राज्य शक्तिशाली थे। इसलिए, संभव है कि मूल बुद्ध-वचनों में मागधी के साथ कोसली का भी कुछ मिश्रण हो। पर, बुद्ध ने 'अपनी भाषा' से मागधी का ही ग्रहण किया है। बुद्धघोष ने इसका यही अर्थ-ग्रहण किया है और प्राचीन बौद्ध धर्मग्रंथों और त्रिपटिकों में जिस पालि भाषा का प्रयोग हुआ है, उसमें मागधी निरुक्ति, व्याहार या व्याहति कहा है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा के अन्तर्गत पहली प्राकृत के रूप तथा उसके भेदों का पता हमें प्राचीन बौद्धग्रन्थों की पालि तथा अशोक की धर्मलिपियों से ही मिल पाता है।

बाद के व्याकरण-ग्रन्थों तथा उदाहरणों में शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी आदि विविध प्राकृतों के लक्षण मिलते हैं। उनसे मिलान करने पर प्राचीन बौद्धग्रन्थों की पालि में मागधी की अपेक्षा मध्यदेशीय शौरसेनी का प्रभाव अधिक दिखाई पड़ता है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पालि-ग्रन्थों में साहित्यिक प्रयोजन के लिए जिस मूल मागधी भाषा का प्रयोग हुआ था,[1] वह सम्भवतः तत्कालीन बोलचाल की मागधी का आकार ग्रहण करती हुई सांस्कृतिक भाषा के रूप में विकास प्राप्त कर गई थी और उसके देशव्यापी प्रयोग के कारण उसमें विभिन्न मध्यदेशीय बोलियों के रूप भी प्रचुरता से सन्निविष्ट हो गये थे। किसी विस्तीर्ण सांस्कृतिक भाषा के लिए यह प्रवृत्ति सहज स्वाभाविक है। प्राकृतों का तुलनात्मक अध्ययन करके प्रसिद्ध भाषाशास्त्री हॉर्नले महोदय इस परिणाम पर पहुँचे थे कि उस समय उत्तर भारत में जो भाषाएँ बोली जाती थीं, उन्हें दो समुदायों में रखा जा सकता है—एक तो शौरसेनी-समुदाय और दूसरा मागधी-समुदाय। ग्रियर्सन भी उससे इस विषय में सहमत थे। मगध-प्रदेश की जो ऐतिहासिक पीठिका ऊपर प्रस्तुत की गई है, उसे देखते हुए यह अनायास ही अनुमान किया जा सकता है कि देश की शक्ति और संस्कृति के इस केन्द्र में मागधी का जो एक केन्द्रीय रूप विकसित हुआ था, वह स्थानीय भाषा का परिमार्जित और परिनिष्ठित रूप ही होगा, जिसमें दर्पणवत् शौरसेनी-समुदाय की तत्कालीन स्थानीय बोलियों का भी प्रभाव प्रतिबिम्बित था।

वस्तुतः, पालि शब्द संस्कृत 'पंक्ति' से व्युत्पन्न है—पंक्ति > पन्ति > पत्ति > पट्टि > पाटी (जो अब भी पंक्ति के अर्थ में व्यवहृत है) वा पल्लि > पालि। पहले बौद्धधर्म के हीनयान-सम्प्रदाय अथवा थेरवाद के मूलग्रन्थों के लिए विशेषकर त्रिपिटक की मूल पंक्तियों के लिए ही इस शब्द का प्रयोग होता था। बाद में यह भाषा के अर्थ में व्यवहृत होने लगा। कुछ विद्वानों ने पाटलिपुत्र का, जो ग्रीक नाम पालिपोथ्र है, उसके प्रथमांश में व्यवहृत 'पालि' से इस नाम का सम्बन्ध जोड़कर उसे पाटलिपुत्र की (पाटलि > पालि) भाषा के अर्थ में ग्रहण किया है। परम्परागत प्रसिद्धि है कि अशोक के पुत्र राजकुमार महेन्द्र ही बौद्ध धर्मग्रन्थों को सिंहल ले गये थे। वे थे तो पाटलिपुत्र के, पर उनकी बाल्यावस्था उज्जैन में ही बीती थी और वहीं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा हुई थी। इसलिए, उन्होंने जिस रूप में त्रिपिटक का अध्ययन किया होगा और जिस रूप में उसे सिंहल ले गये होंगे, उसमें मध्यदेश की भाषा का प्राधान्य होना स्वाभाविक था। पर, सिंहलवासियों ने उसे मागधी भाषा का ही स्वरूप समझा; क्योंकि महेन्द्र मगध के ही थे। इसके अतिरिक्त इसके भी प्रमाण मिलते हैं कि प्रारम्भिक संग्रह मागधी में ही हुआ होगा; क्योंकि मध्यदेशीय भाषा के साथ ही पालि में भी पुरिसकारे, सुवे, भिक्खवे आदि जैसे अनेक मागधी रूप भी मिलते हैं। इसलिए, यह कथन चिन्त्य है

---

[1]. अशोक के भाब्रू-अभिलेख में उद्धृत बुद्धवचन प्राच्यभाषा में ही है।

कि पालि-भाषा का मगध-देश से कोई सम्बन्ध नहीं।[1] सिंहल से पालिग्रन्थ ब्रह्मदेश (बर्मा) और स्याम में गये, जहाँ अब भी पालि धार्मिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। उसके कई शब्द उनकी वर्त्तमान भाषाओं में ग्रहण किये गये हैं। जहाँतक शिलालेखों का प्रश्न है, हम देखते हैं कि अशोक के शिलालेखों में मानसेरा, जौगढ़ और धौली के लेखों की भाषा में बहुत कुछ समानता है और दूसरी ओर शहबाजगढ़ी और गिरनार के लेखों की भाषा में भी कई समान लक्षण पाये जाते हैं। गिरनार के अभिलेख में तो संस्कृत का प्रभाव भी कम नहीं है। उनकी भाषा का आधार-रूप मध्यदेशीय नहीं, वरन् मगधदेशीय पूर्वी प्राकृत ही प्रतीत होता है, जिसमें स्थानीय बोलियों के मिश्रण के कारण दो या तीन भेद पूर्वी, पश्चिमी और पश्चिमोत्तरी हो गये थे।

अशोक के अभिलेखों की भाषा मूलतः अशोक की राजभाषा मागधी ही रही होगी, जो जनसाधारण की तत्कालीन बोलचाल की भाषा से कुछ भिन्न, उसका परिमार्जि तऔर परिनिष्ठित रूप रही होगी। मागधी का वह रूप सम्भवतः मध्यदेश में भी आसानी से समझ लिया जाता था। उसी में अभिलेखों के लेखकों और उत्कीर्णकर्त्ताओं ने अपनी रुचि, योग्यता अथवा तत्तत् स्थानों के निवासियों के कुछ प्रचलित प्रयोगों का मिश्रण करके और इस प्रकार उन्हें उनके लिए अधिक बोधगम्य बनाकर लिपिबद्ध किया था। यूरोप में चौथी शताब्दी ईस्वी-सन् के शिलालेखों की लैटिन भाषा साहित्यिक भाषा से बहुत भिन्न पाई जाती है। उसी प्रकार अपने यहाँ के अभिलेखों की प्राकृतों, साहित्य (नाटकों) की प्राकृतों तथा बोलचाल की प्राकृतों के बीच भी अन्तर रहे होंगे।

परन्तु, उन बोलचाल की प्राकृतों का वास्तविक रूप क्या रहा होगा, इसे जान पाने का आज कोई साधन नहीं। बाद के व्याकरण-ग्रन्थों में, नाटकों में अथवा प्राकृत लेखकों की रचनाओं में शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी आदि के जो उदाहरण हमें मिलते हैं, वे भी कल्पित या कृत्रिम रूप मात्र ही हैं। उनमें भी तत्कालीन भाषा के साहित्यिक और परिनिष्ठित रूप ही मिलते हैं, जो बहुत कुछ अंशों में व्यापक हो चुके थे और प्रादेशिक बोलियों के प्रचलित तथा वास्तविक रूप-भेदों के परिचायक नहीं थे। उनका महत्त्व इसी में है कि भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं के सम्बन्ध में सामान्य रूप से उस समय जो मत प्रचलित थे, केवल उन्हीं के कुछ आभास हमें उनसे मिलते हैं, परन्तु बोलचाल की भाषाओं के हू-ब-हू नमूने नहीं। इसलिए, उनके आधार पर आधुनिक बोलियों के ऐतिहासिक विकास-क्रम का निरूपण करना कठिन ही नहीं, एक प्रकार से असम्भव-सा है। इसके अतिरिक्त इन प्रदेशों की सीमाओं के बीच किसी भौगोलिक अवरोध के अभाव के कारण तथा बार-बार राजनीतिक सीमाओं के परिवर्त्तन, जनसमूह के स्थानान्तरण, एक ही जाति के अन्तर्गत अन्तःप्रान्तीय वैवाहिक सम्बन्धों, तीर्थ-यात्रियों, साधु-संन्यासियों, सैनिकों, व्यापारियों आदि के आवागमन तथा यातायात और सांस्कृतिक सम्पर्कों के फलस्वरूप प्रादेशिक बोलियों में मिश्रण की प्रक्रिया भी शताब्दियों से चलती रही है। ऐसी दशा में साहित्यिक प्राकृतों से आधुनिक प्रादेशिक अथवा जनपदीय बोलियों के विकास को समझने के

१. दे० डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्यभाषाएँ और हिन्दी, प्रथम संस्करण, १९५४, पृ० ९८।

बजाय, यदि हम बोलियों का ही सूक्ष्म अध्ययन करें, प्राचीन प्राकृतों के स्वरूपों की रूपरेखाएँ निर्धारित करने का प्रयास करें, तो वह अधिक सार्थक होगा।[1]

जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि मागधी-समुदाय की सबसे प्रमुख बोली मगही ही है। इसके अतिरिक्त भोजपुरी, मैथिली, बँगला आसामी या असमिया और उड़िया भी मागधी प्राकृत तथा मागधी अपभ्रंश से ही व्युत्पन्न है और मागधी-समुदाय के अन्तर्गत ही आती है, जो उनके कई सामान्य लक्षणों से प्रभावित हैं। अंग, वंग, कलिंग, कामरूप (असम) और प्राग्ज्योतिष (त्रिपुरा और मणिपुर) बहुत समय तक एक ही राजनीतिक प्रभुत्व के अन्तर्गत भी रहे। इसलिए, इन प्रदेशों की भाषाओं में समता होना स्वाभाविक ही है।

प्राचीनकाल में मागधी की इतनी प्रतिष्ठा रहने पर भी वर्त्तमान मगही बोली मगह क्षेत्र में उतना आदर नहीं पा सकी, इसके कई कारण हैं। जैसा ऊपर निर्देश किया जा चुका है कि वैदिक काल से ही मगध-देश असंस्कृत समझा जाता था। बौद्ध संपर्क के कारण यह हीनता की भावना और भी दृढ हो गई। संस्कृत नाटकों में मागधी हीन चरित्रों की ही भाषा के रूप में स्वीकार की गई।

मागधी राक्षसादेः स्यात् इति भरतोक्तेः। आदिग्रहणेन शकारधीवरादीनामपि ग्रहणादत्रैषां मागध्युक्तिः।[2]

बारहवीं शताब्दी तक के मगध-प्रदेश का नालंदा-महाविहार तथा विक्रमशिला देश-विदेश के विद्वानों का संगम-स्थल था। सातवीं से बारहवीं शताब्दी के बीच यहीं सरहपा आदि वज्रयानी सिद्धों के साहित्य का निर्माण हुआ, जिसे लेकर वे पीछे तिब्बत चले गये और भोट भाषा में उनके अनुवाद हुए। सिद्धों की भाषा में बँगला के विद्वानों ने बँगला का आदि रूप, असम के विद्वानों ने असमिया का, उड़ीसा के विद्वानों ने उड़िया का और मैथिली के विद्वानों ने मैथिली का समझा। ऐसा इन पूरबी भाषाओं के साम्य के ही कारण संभव हुआ है। सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि उस समय इनके स्थानीय रूपों में आज की अपेक्षा और कम अन्तर रहे होंगे। इसलिए, इन ग्रंथों के अनेक प्रयोगों में से इनमें से किसी एक या अन्य से कुछ रूप या विकास के लक्षण ढूँढ़ निकालना सहज ही संभव है। परन्तु, सबसे अधिक ध्यान देने की जो बात है, वह यह है कि इन सिद्ध-ग्रंथों में से अधिकांश बिहार के प्रसिद्ध विद्यापीठ नालन्दा और विक्रमशिला में ही लिखे गये थे और इनके बहुतेरे लेखक इन्हीं क्षेत्रों के निवासी थे। इसलिए, इस अनुमान में निश्चय ही विशेष बल आ जाता है कि उन लोगों की आधारभूत भाषा उस समय की प्रचलित मागधी या मगही का ही कोई रूप रही होगी। उसी की नींव पर उन लोगों ने अपनी रचनाओं में पश्चिमी अपभ्रंशों के आदर्शीकृत रूपों तथा पार्श्ववर्त्ती पश्चिमी प्रदेशों के प्रचलित रूपों का निधड़क मिश्रण करके एक ऐसी साहित्यिक शैली का विकास किया, जिसके माध्यम से वे

१. (क) इस सम्बन्ध में देखिए डॉ० विश्वनाथ प्रसाद : कृषि-कोश, प्रथम-खंड, प्रस्तावना, १९५९ ई०, पृ० २१।
(ख) डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्यभाषाएँ और हिन्दी; १९५४ ई०, पृ० ९८।

२. अभिज्ञानशाकुन्तल, राघवभट्ट-कृत अर्थद्योतिका टीका। सं० एन्० बी० गोडबोले, निर्णयसागर प्रेस, बंबई, नवम संस्करण।

अपने विचारों को अधिक विस्तीर्ण जनवर्ग तक पहुँचा सकते थे और उन्हें प्रभावित कर सकते थे। फलतः, एक ही रचना के दर्पण में अनेक रूपों की झलक दिखाई पड़ती है। वास्तव में, हिन्दी इसी प्रकार के स्वाभाविक और यादृच्छिक मिश्रणों का परिणाम है, जिसके प्राचीनतम नमूनों का साक्ष्य हमें सिद्ध-साहित्य में मिलता है।

स्वर्गीय डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल तथा म० पं० राहुल सांकृत्यायन ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इन सिद्ध-कृतियों में हिन्दी के उद्गम और विकास की ओर तथा इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि इनके द्वारा हिन्दी-भाषा और साहित्य का आदिकाल प्रामाणिक रूप से पीछे हटकर सातवीं शताब्दी ईसवी में जा पहुँचता है। अभी हाल में राहुलजी ने सिद्धों की भाषा का उज्जयिनी की मध्यदेशीय भाषा से संबंध जोड़ने का जो प्रयास किया है, वह भी उनकी व्यापक केन्द्रीय प्रवृत्ति का ही निदर्शक है। इन रचनाओं में से जो सबसे पुरानी हैं, उनमें भी हिन्दी के साथ उनके भाषा-साम्य को प्रकट करनेवाली ऐसी बहुतेरी पंक्तियाँ हैं: जैसे, *जहि मण पवण ण संचरइ* आदि: जो एक स्वर या एक व्यंजन के परिवर्त्तन-मात्र से (इस उदाहरण में केवल 'ण' के स्थान में 'न' और 'जहि' के 'अ' के स्थान में 'ए') बहुत परवर्त्ती काल की विकसित हिन्दी के रूप में परिणत हो जाती हैं।[1] राहुलजी ने अपनी 'हिन्दी-काव्यधारा' में सिद्ध कवियों की थोड़ी-सी चुनी हुई रचनाओं के नमूनों की जो हिन्दी छाया दी है, उनकी ओर एक नजर डालने से भी इस बात की पुष्टि के प्रमाण मिल जायेंगे। वे तिब्बत से सिद्ध-साहित्य की जो हस्तलिखित प्रतियाँ ले आये थे, उनमें कई ऐसे विशेष लक्षणवाले रूप मिलते हैं, जो शास्त्री, बागची और शहीदुल्ला के संस्करणों में दिये हुए रूपों से भिन्न हैं और मगही तथा हिन्दी रूपों से अधिक सामीप्य और सादृश्य प्रदर्शित करते हैं। ये तिब्बती हस्तलिखित प्रतियाँ[2] कुटिलाक्षरों में लिखी हुई हैं, जो ९वीं से १३वीं शताब्दी तक प्रचलित थे और नेपाली हस्त-लेखों से अधिक प्राचीन तथा भाषाई अध्ययन के लिए अधिक प्रामाणिक हैं। सिद्ध-साहित्य में हिन्दी या मागधी-हिन्दी भाषा और साहित्य के उद्गम-स्रोत के अस्तित्व के पक्ष में जो सबसे अधिक विश्वसनीय प्रमाण दिया जा सकता है, वह यह है कि उनमें जो साहित्य-रूप और छन्द प्रयुक्त हुए हैं, विशेषकर दोहा, पद्धरि[3] और पद, उनकी परम्पराएँ हिन्दी में ही सुरक्षित और विकसित पाई जाती हैं तथा उनके रागात्मक तत्त्व बँगला और उड़िया की अपेक्षा हिन्दी ध्वनियों के अधिक अनुरूप हैं। इसके अतिरिक्त कई ऐसे रूप भी हैं, जो स्पष्टतः मगही या बिहारी रूप हैं; जैसे, भूतकालिक इल प्रत्ययान्त 'पढ़िल', 'बुड़िल', भविष्यत् के उत्तम पुरुष में जाइब, खाइब, घरे-घरे, एत्थ, एथु (< अत्र), जे, जवे (जब), तवे (तब), अइसे, कइसन, कइसनि, मातेल (मत) आदि। मूर्धन्य ण के साथ-ही-साथ 'न' वाले रूप भी मिलते हैं, जैसे णहि और न, नाहिं आदि। हिन्दी के दन्त्य

---

१. 'जहि' या ह्रस्व एकारान्त 'जेहि' शब्द से ही तुलसी ने अपने रामचरितमानस का श्रीगणेश किया है। मिलाइए--'जेहि सुमिरत सिधि होय'।

२. तिब्बती हस्तलेखों पर आधृत सरहपा की कृतियों का राहुलजी द्वारा सम्पादित एक संस्करण बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना से प्रकाशित हुआ है।

३. मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य में पद्धरियों का विकास चौपाई के रूप में हुआ।

'स' वाले तद्भव रूपों के अनेक उदाहरण बतिस, परवस, चौसठ, सुभासुभ आदि शब्दों में मिलते हैं। भाषा के रूपों के अध्ययन से यह भी प्रकट होता है कि इस काल में विश्लेषणात्मक प्रवृत्तियाँ निश्चित रूप से प्रारंभ हो गई थीं। संज्ञा, विशेषण और कृदन्त के अविभक्तिक रूपों के ऐसे बहुतेरे उदाहरण मिलते हैं, जो विशेषणवत् प्रयुक्त होते हुए भी अपने रूपों में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार कोई परिवर्त्तन नहीं प्रदर्शित करते। यह अपभ्रंश की अवस्था से हिन्दी की उत्पत्ति और विकास का एक स्पष्ट भेदक लक्षण है।

ये सिद्ध कवि बौद्धधर्म के वज्रयान-सम्प्रदाय के थे, जो सहजयान की एक शाखा था और इन्होंने महासुखवाद तथा शून्यवाद के दार्शनिक सिद्धान्तों का एक सन्धानात्मक तथा रहस्यात्मक शैली में प्रचार किया, जिसे 'सन्धा भाषा' (अर्थात्, खोज की भाषा) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

बिहारी भाषाओं में कुछ बातों में भोजपुरी की अपेक्षा मगही और मैथिली के बीच अधिक साम्य पाया जाता है। उधर भोजपुरी का कई बातों में अवधी से साम्य है। यह उसकी कोसली और मागधी क्षेत्र के बीच की भौगोलिक स्थिति के भी अनुरूप ही है। व्याकरण-ग्रन्थों में मागधी प्राकृत के जो लक्षण दिये गये हैं, उनके अनुसार उसमें अन्त्य 'अ' का 'ए', 'स' का 'ष', 'ज' का 'य' और 'र' का 'ल' हो जाता है। पुरुषोत्तमदेव के प्राकृतानुशासन में भी मागधी के लक्षण दिये हुए हैं। उसमें आक्षेप या निरादर के अर्थ में सम्बोधन में 'आ' के व्यवहार का उल्लेख है। शाकारी, चांडाली और शाबरी को उसमें मागधी की ही विभाषा बताया गया है और शाकारी में 'क्ष' के स्थान में 'क्ख' के व्यवहार तथा शब्दान्त में प्रायः स्वार्थे 'क' के व्यवहार का निर्देश किया है।[1] कालिदास की शकुन्तला में पंचम अंक में धीवर की उक्ति में एक श्लोक आया है—

शहजे किल जे विणिन्दिदे णहु शे कम्म विवज्जणीअए।
पशुमालणकम्मदालुणे अणुकम्पामिदुकेपि शोत्तिए॥

इसमें 'ज' का 'य' तो नहीं हुआ है, पर 'अ' का 'ए', 'स' का 'श' और 'र' का 'ल' हुआ है।[2] इसके अतिरिक्त 'न' का 'ण' प्रयोग हुआ है।

'स' के 'श' और 'क्ष' के 'क्ख' हो जाने का लक्षण बँगला में तो मिलता है, पर मगही या अन्य बिहारी भाषाओं में नहीं मिलता। आधुनिक मगही में एकारान्त रूप पाये जाते हैं। इसमें स्वार्थे क (अ) प्रत्यान्त या कुत्सार्थक आ प्रत्यान्त रूप भी मिलते हैं। पर, उपर्युक्त लक्षणों के प्रतिकूल 'ण' के स्थान में 'न', 'य' के स्थान में 'ज', 'श' के स्थान में 'स' और 'ल' के स्थान में प्रायः 'र' ही मिलता है। जैसे—

प्रणाम	>	परनाम	शृगाल	>	सियार
कल्याण	>	कल्यान	उज्ज्वल	>	उज्जर
गुण	>	गुन	फल	>	फर

---

१. पुरुषोत्तम देव : प्राकृतानुशासन (सं० जे० एन्० एच्० ढोलसी, पेरिस, १९३७, अध्याय १३-१५)।

२. सूत्र—'रसोर्लशौ' तथा 'अत एत्स्यात्'।

यश	>	जस	गाली	>	गारी
यः	>	जे	थाली	>	थारी
शोभा	>	सोभा	जलना	>	जरल
विशेष	>	बिसेस	फलना	>	फरल

पर कुछ शब्दों में 'ल' की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। जैसे,—जन्म > जलम (मगही), मन्दिर > मन्दिल।

शब्द के आदि के 'य' और 'व' बिहारी बोलियों में 'ज' और 'ब' हो जाते हैं। यही प्रवृत्ति बँगला में भी पाई जाती है।

'ल' ध्वनि के सम्बन्ध में एक बात जरूर है कि मागधी-समुदाय की भाषाओं और बोलियों के क्रियापदों में अल् प्रत्यान्त रूपों की बहुलता है। भूतकालिक कृदन्त के रूपों में, क्रियार्थक संज्ञा के रूप में तथा कुछ वर्तमान के रूपों में भी (जैसे, देखिला), जहाँ हिन्दी-क्षेत्र की अन्य बोलियों में आकारान्त या ओकारान्त रूप मिलते हैं, वहाँ भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका, वज्जिका, बँगला आदि में 'अल्' प्रत्ययवाले रूप।[1] जैसे, हिं०—रहा, व्रज—रह्यौ, पर भोज०—रहल्, मग०—रहलक्, बँ०—रॅहिलो।

बिहारी भाषाओं में भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान सम्भाव्य भूत और सम्भाव्य वर्त्तमान ये पाँच काल ऐसे हैं, जो कृदन्तीय रूप से बनते हैं। हिन्दी में केवल सम्भाव्य वर्त्तमान तथा उसी का एक भेद विधि के रूप में मिलता है, जो कृदन्तीय है और जिसमें 'गा' जोड़कर भविष्यत् का रूप बनता है। हिन्दी में भूतकालिक सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के साथ जो 'ने' परसर्ग लगता है, वह बिहारी बोलियों में नहीं लगता। उधर पंजाबी में तो इसकी अतिशयता है। इसी प्रकार हिन्दी में जहाँ सकर्मक क्रियाओं के लिंग और वचन कर्त्ता के अनुसार बदलते हैं, वहाँ बिहारी में बँगला, उड़िया के समान सर्वत्र कर्त्तरि प्रयोग ही चलते हैं, कर्मणि प्रयोग नहीं। बिहारी बोलियों में संज्ञा शब्दों के चार रूप पाये जाते हैं। लघुरूप, ह्रस्वरूप, दीर्घरूप तथा गुणरूप। जैसे—

लघु	ह्रस्व	दीर्घ	गुण
घोड़	घोड़ा	घोड़वा	घोड़उआ
भात्	भात	भतवा	भतउआ
साध	साधु	सधुआ	सधुअवा
—	बेटी	बेटिया	बेटियवा
—	माली	मलिया	मलियवा

इनमें यहाँ सबके ह्रस्वरूप नहीं मिलते हैं। दीर्घान्त रूप की प्रवृत्ति मगही में विशेष रूप से पाई जाती है। जैसे—घर, घरा, घरवा; कान, काना; भात, भत्ता/भाता, भता; दाल, दला; हाथ, हत्था/हाथा; गाँव, गामा।

गया जिले में आकारान्त रूपों का प्रयोग अधिक होता है। जैसे—भाता खा हियो। दाला न खयबो। इनमें लघुरूप तथा दीर्घ सामान्य अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। कुछ शब्दों के

[1] मराठी में भी अल् वाले रूप मिलते हैं।

लघुरूप कुछ लोकोक्तियों में ही पाये जाते हैं। जैसे—घोड़—'घीव देत घोड़ नरियाय'। दीर्घतर रूपों में इन अर्थों की और अतिशयता रहती है। दीर्घ या दीर्घतर रूप निश्चयार्थक निर्देश या विशेषार्थक अथवा कुत्सा के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

लिंग-भेद का प्रचलन भी बिहारी में हिन्दी की अपेक्षा कम है। जैसे--उत्तम-पुरुष की क्रिया तथा सम्बन्ध के साथ लिंगभेद नहीं होता। निर्जीव पदार्थबोधक संज्ञापद तथा विशेषणों के साथ भी लिंगभेद आवश्यक नहीं माना जाता। मगही में तो मध्यम-पुरुष में भी लिंग का व्यवहार नहीं होता है। जैसे--भात खयमे बेटा ? (भात खाओगे, बेटा !), भात खयमे बेटी ? (भात खाओगी, बेटी !)। किन्तु, भोजपुरी में क्रियापद में यह लिंगभेद होता है। जैसे--खइबऽ (खाओगे)। खइबू (खाओगी)।

बिहारी की विशेषता में उसकी ध्वनियों के रागात्मक तत्त्व भी उल्लेखनीय हैं। कई ध्वनि-राग तो ऐसे हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। बिहारी शब्दों के उच्चारण के लिए इनका थोड़ा परिचय अपेक्षित है। उदाहरण के लिए एक लिखित रूप लीजिए—'देखल'।

बिहारी में यह विभिन्न रागों में उच्चरित होकर तीन विभिन्न अर्थों का द्योतक है—

देख् लऽ—देख लो।
देख लऽ—तुमने देखा।
देखल्—देखा हुआ।

पदान्त के 'अ' का उच्चारण बिहारी में कुछ स्थितियों में होता है, इसे समझाने के लिए ग्रियर्सन ने बहुत प्रयत्न किया है।[1] पर, ध्वनि-विज्ञान की प्रणाली के बिना उसका ठीक-ठीक वर्णन कठिन था। इस ध्वनि-संकेत के लिए नागरी लिपि में 'ऽ' इस चिह्न का प्रयोग होता है।

ध्वनियों में भी बिहारी बोलियों की 'अ' ध्वनि में थोड़ी वर्त्तुलता आ जाती है। खासकर मैथिली तथा अंगिका में। भोजपुरी के दीर्घ 'अ' में भी थोड़ी वर्त्तुलता की प्रवृत्ति पाई जाती है। बिहारी बोलियों के कुछ क्रियारूपों में तथा 'न', 'त' आदि कुछ अव्ययों के साथ अन्त्य 'अ' का प्रयोग होता है। उसके द्योतन के लिए 'ऽ' इस चिह्न का प्रयोग इस संग्रह में किया गया है। जैसे—चलऽ, दऽ, नऽ, तऽ आदि। अन्यथा, हिन्दी-क्षेत्र की अन्य बोलियों और गुजराती, मराठी, बँगला की तरह बिहारी बोलियों में भी शब्दान्त के 'अ' का उच्चारण नहीं होता और अन्तिम व्यंजन हलन्तवत् उच्चरित होता है। जैसे—कमल्, बात्, हाथ्, लोग् आदि।

'अ' का एक अति ह्रस्वरूप भी हिन्दी के समान बिहारी बोलियों में प्रयुक्त होता है, जो प्रायः अर्धश्रुत होता है। इसे ग्रियर्सन ने 'अश्रुत स्वर' कहा है। यथा—चरवाहा, धुरछक। इनमें 'र' के 'अ' का ह्रस्व उच्चारण बहुत कम होता है। यह एक ऐसा 'अ' है, जो द्रुतगति के भाषण में शून्यवत् मूल्य ग्रहण कर लेता है। मन्द गति के भाषण में या गाने में उसकी स्थिति स्पष्ट रहती है। गाने में तो उसका विलम्बित उच्चारण भी होता है।

[1] ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया, जिल्द १, भाग १, १९२७ ई०; जिल्द ५, भाग २, १९०३ ई०।

समासान्तर्गत शब्दों के अन्तिम 'अ' का ह्रस्व उच्चारण होता है। जैसे—जलपान, दाल-भात।

शब्द के अन्त में ह्रस्व 'इ', 'उ' की ध्वनियाँ बिहारी बोलियों में फुसफुसाहट का रूप ग्रहण कर लेती हैं। जैसे—जाडु। परन्तु, गाने में पूर्णतः सघोष रूप में उच्चरित होती हैं और ताल-मात्रा की आवश्यकता के अनुसार विलम्बित भी हो जाती हैं।

बिहारी में ह्रस्व 'ए' तथा ह्रस्व 'ओ' का भी प्रयोग होता है। ये ह्रस्व ध्वनियाँ बँगला में भी पाई जाती हैं। पर, हिन्दी में इनके स्थान में प्रायः 'इ' और 'उ' का व्यवहार होता है। जैसे—

बिहारी	हिन्दी
बेटिया	बिटिया
भेजवावल	भिजवाना
देखावल	दिखाना
ओरहन	उलाहना
धोलाई	धुलाई
दोहाइ	दुहाई
सोनहला	सुनहला

बिहारी बोलियों की मात्रा-व्यवस्था के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण नियम यह है कि खा, जा आदि कुछ दीर्घ युक्ताक्षरों की धातुओं को छोड़कर किसी शब्द के अन्तिम स्थान से दो स्थान पूर्व का कोई अक्षर दीर्घरूप में नहीं टिक सकता, उसका ह्रस्वीकरण हो जाता है। ऊपर के उदाहरणों में 'ए' और 'ओ' का जो ह्रस्व उच्चारण होता है, वह इसी नियम के द्वारा नियंत्रित है। दीर्घ आ, ई और ऊ का भी ह्रस्वीकरण हो जाता है। जैसे—आदमी, आसमान, पीतर से पितरिया, भीतर से भितरिया, जूता से जुतवा, पूछ से पुछार।

भोजपुरी का वर्णन करते हुए ग्रियर्सन ने इस रागात्मक विशेषता का निर्देश 'ह्रस्व उपधापूर्व का नियम' कहकर किया है।

इसके अनुसार बिहारी बोलियों में 'औ' और 'ऐ' का भी ह्रस्वीकरण हो जाता है। जैसे—मैनवा, गौरैया आदि।

इसका भी संकेत कर देना उचित होगा कि ऐ [ै] और औ [ौ] द्वारा सांकेतिक सन्ध्यक्षर स्वरों का प्रयोग बिहारी में प्रायः द्रुतगति के उच्चारण में ही होता है। अन्यथा, इनके स्थान में प्रायः 'अइ' और 'अउ' इन स्वरानुक्रमों का अथवा 'अय्' और 'अव्' इन श्रुत्यात्मक अनुक्रमों का व्यवहार होता है, जैसे—चइत, बयल, अदउरी, सउरी, जवन, कवन आदि। संग्रह में इन्हीं रूपों का व्यवहार किया गया है, पर संग्रहकर्त्ताओं ने जहाँ द्रुतगति के उच्चारण के कारण सन्ध्यक्षर स्वरों का व्यवहार किया है, वहाँ उनमें परिवर्त्तन नहीं किया गया है।

इस संग्रह में उपर्युक्त स्थानगत ह्रस्व 'आ', 'ऐ' या 'औ' रूपों के लिए किसी पृथक् चिह्न का प्रयोग नहीं किया गया है, वरन् बिहारी बोलियों के जो रूप सामान्यतः प्रचलित हैं, वही दिये गये हैं; क्योंकि इस स्वर-प्रक्रिया के नियम से अभिज्ञ हो जाने पर उन्हीं मात्रा-चिह्नों से निर्दिष्ट स्थानों में इस रागात्मक तत्त्व का आप-ही-आप बोध हो जाता है।[1]

उपर्युक्त विशेषताओं का निर्देश यहाँ इस प्रयोजन से किया गया है कि हम बिहारी भाषाओं और बोलियों के उस एकत्व या समरूपिता के तत्त्व को समझ लें, जो एक ओर उन्हें बँगला से और दूसरी ओर पश्चिमी बोलियों से पृथक् विशिष्टता प्रदान करता है। साथ ही, यह भी सत्य है कि एक ओर यदि बँगला आदि पूर्वी बोलियों से उनका सम्बन्ध जुड़ता है, तो दूसरी ओर अनेक बातों में हिन्दी-क्षेत्र की बोलियों से। खासकर उनकी ध्वनियाँ, शब्दावली, संज्ञा-शब्दों के रूप, परसर्ग, क्रियाओं के भी कई रूप तथा अन्तर्निहित ढाँचा और प्रकृति हिन्दी के ही अधिक निकट हैं।

बँगला से साम्य के कारण बिहारी बोलियों में एक ओर यदि मैथिली कवि विद्यापति की रचनाएँ बँगला काव्य-समृद्धि में सम्मिलित की गईं, तो दूसरी ओर मगही और भोजपुरी के कबीर, धरमदास आदि जैसे अनेक निरगुनिया कवियों की बानी हिन्दी-काव्य के अंग मानी गई। वस्तुतः, विभिन्न बोलियों के बोलनेवाले जन-वर्ग को किसी एक सामान्य भाषा-भाषी जन-समुदाय के अन्तर्गत समाविष्ट करने के तीन मुख्य आधार हैं—

१. समान व्याकरण तथा सामान्य रूप-रचना में बहुत अन्तर का अभाव।
२. पारस्परिक सुबोधता।
३. सामान्य सौन्दर्य-भावना की मूलभूत भावनाओं और अभिरुचि की समानता, जिनसे किसी भाषा के आन्तरिक रूप का निर्माण होता है।

विचार किया जाय, तो बिहारी बोलियों का व्याकरण तथा उनकी रूप-रचना के अनेक मौलिक तत्त्व हिन्दी के एकरूपी न होते हुए भी समरूपी हैं। अभी हिन्दी के परिनिष्ठित व्यापक रूपों के साथ उनके विभिन्न स्थानीय रूपों का सम्बन्ध निर्दिष्ट किया जा सकता है। पारस्परिक सुबोधता का सम्बन्ध हिन्दी तथा हिन्दी-क्षेत्र की अन्यान्य बोलियों से उनका इतना अधिक है कि एक-दूसरे की जानपदीय बोली को न जानते हुए भी आसानी से समझ जाते हैं।[2] यही बात बँगला, असमिया या उड़िया के सम्बन्ध में नहीं कही जा सकती। इसी पारस्परिक सुबोधता के कारण सूर, तुलसी, मीराँ, कबीर, विद्यापति इन सबकी रचनाएँ एक समान रुचि और अवबोध के साथ बिहारी-क्षेत्र में पढ़ी जाती हैं। पं० रामनरेश त्रिपाठी ने कविता-कौमुदी के पाँचवें भाग में ग्रामगीतों का संग्रह किया, तो इसी साम्य के आधार पर उसमें कम-से-कम एक तिहाई गीत बिहारी बोलियों के ही सम्मिलित किये गये।

---

१. दे० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद : कृषि-कोश, प्रस्तावना, पृ० २१ से २५ तक, बि० रा० भा० परिषद्, पटना, १९५६ ई०।
२. मैंने देखा है कि मेरे मित्र प्रो० हरिमोहन झा की लिखी हुई मैथिली पुस्तक 'प्रणम्य देवता' तथा 'खट्टर काकाक तरंग' को डॉ० बाबूराम सक्सेना और उनके परिवार के सभी लोग आद्योपान्त बिना किसी कठिनाई के पढ़ गये और समझ गये।

उनमें मगही गीतों की संख्या भी कम नहीं है। पच्छिमी और पूर्वी लोकगीतों से उनका घनिष्ठ रूपात्मक तथा रागात्मक साम्य है। बहुत-से सोहर, विवाह आदि के गीत ऐसे हैं, जो थोड़े-से स्थानीय भाषागत भेद करके समस्त बिहार और हिन्दी-क्षेत्र में गाये जाते हैं। प्रतिवर्ष विवाह के दिनों में बिहार के विभिन्न बोलियों के क्षेत्रों के दुलहे-दुलहिनों की आपस में शादियाँ होती हैं तथा उनमें बहुतेरों की शादियाँ बिहार के बाहर उत्तरप्रदेश के हिन्दी-क्षेत्र की विविध जनपदीय बोलियों के केन्द्रों में होती हैं, पर उनमें विचारों के आदान-प्रदान में तनिक भी कठिनाई नहीं होती और दुलहिन कुछ ही दिनों में अपने पति के परिवार की भाषा में दीक्षित हो जाती है। भावनात्मक एकता की तो कुछ पूछना ही नहीं है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से विभिन्न बोलियों के कुछ गीत प्रस्तुत किये जाते हैं। इनमें भाषागत थोड़ी-सी भिन्नता को छोड़कर सभी दृष्टियों से एकरूपता पाई जाती है।

बिहार की प्रमुख बोलियों—मगही, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका और वज्जिका में इतना अधिक साम्य है कि प्रायः एक ही गीत थोड़े-बहुत परिवर्त्तनों के साथ सभी बोलियों में चलता है। उदाहरण के लिए, मटकोर के अवसर पर गाये जानेवाले 'कोइलर' वाले इस प्रसिद्ध गीत को लें। यह गीत समस्त बिहार-प्रदेश में मटकोर के अवसर पर गाया जाता है—

मगही रूप

कवन बन रहल हे कोइलर, कवन बने जाय।
कवन रइया दुअरवा हे कोइलर उछहल जाय॥

इसी में थोड़ा परिवर्त्तन करके उसका मैथिली रूप इस प्रकार प्रचलित है—

मैथिली रूप

कोन बन रहल हे कोइलरि, कोन बने जाय।
कोन रइया दुअरवा हे कोइलरि उछहल जाय॥

इस गीत का भोजपुरी रूप भी केवल थोड़े परिवर्त्तनों के साथ जनवर्ग में प्रचलित है—

भोजपुरी रूप

कवना बने रहलु हे कोइलर, कवना बने जाय।
कवन रइया दुअरिया हे कोइलर, उछहल जाय॥

इस प्रकार कुछ अन्य गीतों के भी यहाँ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

मगही रूप

रामचन्दर चललन बियाहन, रिमझिम बाजन हे।
रिसिया के खबरी जनाऊँ, कहाँ दल उतरत हे॥

मैथिली रूप

रामचन्दर चललन्हि बियाहन, रुनुझुनु बाजन हे।
आहे रिखियहिं खबरी जनाउ, कतय दल उतरत हे॥

भोजपुरी रूप

रामचन्दर चललन बियाहन, रिमीझिमी बाजन हे।
रिसिअनि खबरी जनाव, कहाँ दल उतरत हे॥

सिन्दूर-दान का भी एक गीत उदाहरण के लिए प्रस्तुत है—

मगही रूप

कहवाँ के सेनुरिया सेनुर बेचे आयल हे।
कहवाँ के बर कामिल सेनुर बेसाहल हे॥

अंगिका रूप

कहाँ केरा सेनुरिया सेनुर बेचे आयल हे।
कहँमा के सुन्दर कामिनी सेनुर बेसाहय हे॥

इन थोड़े-से उदाहरणों से ही यह समझा जा सकता है कि बिहार की इन बोलियों में कितना अधिक अभेद है तथा ये गीत किस प्रकार समस्त बिहार की सम्पत्ति हैं और बिहार ही क्या, इनमें से कई गीत तो बिहार के बाहर अवध, ब्रज, राजस्थान आदि प्रदेशों में थोड़े-बहुत भाषागत भेदों के साथ प्रचलित हैं। इस तरह के गीत हमारी भाषाई और भावात्मक एकता के प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए इस मार्मिक गीत को आप लें—

भोजपुरी रूप

छापक पेड़ छिउलिया त पतवन गहवर हो।
ताहि तर ठाढ़ी हरिनियाँ त मन अति अनमन हो॥
चरत चरत हरिनवाँ त हरिनि से पूछे ले हो।
हरिनी, की तोर चरहा झुरान कि पानी बिनु मुरझेलू हो॥

अवधी रूप

छापक पेड़ छिउलिया तपत बन गहबर हो।
रामा, तेहि तर ठाढ़ि हरिनियाँ मन अति अनमनि॥
चरइत चरत हरिनवा त हरिनी से पूछइ हो।
हरिनी कि तोर चरहा झुरान न पानी बिन मुरझिउ॥

मगही क्षेत्र में यह गीत ठीक इसी रूप में तो नहीं मिलता, पर इसका जो थोड़ा परिवर्त्तित रूप है, वह यहाँ उद्धृत किया जाता है—

हरना जे खाड़ा हइ बबूर तरे, अउरो बबूर तरे हे।
ललना हरनी के हेर हकइ बाट, हरनी नहीं लउकत हे॥
हरनी के अँखिया बड़े-बड़े, नयनमा से नीर झरे हे।
आझु हकइ राजाजी के छठिया, बेआधा बन बिचरइ हे॥

मगही, मैथिली, अंगिका, वज्जिका और भोजपुरी के अनेक नये-पुराने साहित्यकारों और कवियों ने हिन्दी-साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। अंगिका भाषा-भाषी श्रीदिनकर, वज्जिका भाषा-भाषी श्रीबेनीपुरी, भोजपुरी भाषा-भाषी श्री राजा राधिकारमण-

प्रसाद सिंह, श्रीशिवपूजनसहाय और श्रीमनोरंजन तथा मगही भाषा-भाषी श्रीमोहनलाल महतो 'वियोगी' आदि की देन आधुनिक हिन्दी साहित्य-देवता के श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ अंगीकृत उपादानों में गिनी जाती हैं। छोटानागपुर के सुदूर भागों में भाषा-सर्वेक्षण करते हुए मैंने देखा कि मगही की कुरमाली और बँगला से प्रभावित खोट्टा के बोलनेवाले अशिक्षित वर्ग के लोग अपनी बौद्धिक और सामाजिक प्रेरणाओं और आकांक्षाओं को उच्च स्तर पर व्यक्त करने के लिए अपनी-अपनी स्थानीय बोलियाँ बोलते-बोलते तुरत आप-ही-आप अनायास किसी-न-किसी प्रकार के हिन्दी-भाषण में प्रवृत्त हो जाते थे। यह सहज द्विभाषी प्रवृत्ति भाषा-साम्य और पारस्परिक सुबोधता का ही प्रमाण है।

इस प्रसंग में मेरा यह भी लक्ष्य रहा है कि मगही की ध्वनिगत तथा रूपगत विशेषताओं का संकेत करता चलूँ, जिससे संग्रह के पाठकों को इस सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी हो सके। पूर्वपीठिका के रूप में मगध-प्रदेश के इतिहास की जो झाँकी ऊपर प्रस्तुत की गई है, उससे यह प्रकट होता है कि शताब्दियों से यह स्थान समस्त देश का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र रहा। फलतः, यहाँ की भाषा भी प्रारम्भ से ही एक व्यापक केन्द्रीय रूप ग्रहण करने को उन्मुख रही। आज की मगही में भी हम कुछ ऐसी विशेषताएँ पाते हैं। प्रमाणस्वरूप, मगही के वर्त्तमानकालिक अन्यपुरुष सहायक क्रिया का रूप 'हे' है, जो मागधी-समुदाय की अन्य बोलियों के 'बाटे' या 'बा' या 'बॅटे' और 'अछि', 'छै' से भिन्न हिन्दी 'है' के अनुरूप है। जैसे—*उ कर सकऽ हे, एकर ई कारन हे, ई बुझा हे, हमनी के इहे बतावल जाहे, लगऽ हे, होवऽ हे।* यह 'हे' भारत-यूरोपीय 'अस्' से व्युत्पन्न है, जबकि भोजपुरी--'बाटे' या 'बा' और बँगला 'बॅटे' √वृत्--वर्त्तते से तथा उड़िया 'अछ', मैथिली 'अछि', 'छै' √क्षि से। उसी प्रकार मगही सहायक क्रिया 'हथ्' रूप भी 'अस्' से व्युत्पन्न है। जैसे--मगही में--'*ढेर निरगुनिया कबि हथन*', '*पूछऽ हथ*', '*कहऽ हथ*' आदि हिन्दी 'था' के अनुरूप है। इनके अतिरिक्त प्रथम पुरुष का 'ही', 'हिकैं', 'हइ', 'हउ'; बहुवचन में--'ही', 'हहो', 'हई', 'हऊ' तथा मध्यम पुरुष में 'हे', 'हहीं', 'ह' ('हो' के अर्थ में, जैसे--का करऽ ह) आदि रूप 'अस्' से ही सम्बद्ध हैं। डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने हिन्दी को था, है, गा वाली भाषा कहा है। इस प्रकार यदि सहायक क्रिया 'है' के आधार पर बोलियों का वर्गीकरण किया जाय, तो मगही हिन्दी के 'है'—समुदाय के अन्तर्गत जायगी।

अन्य बोलियों के समान मगही के भी अनेक रूप हैं। यह समझना भूल है कि 'समस्त मगही क्षेत्र में मगही का एक ही रूप प्रचलित है और इसमें कहीं अन्तर नहीं पड़ता है।'[1] और जिलों की बात छोड़ दीजिए, केवल पटना जिले में मगही के कम-से-कम पाँच भेद व्यवहृत हैं। जैसे—

टाल-क्षेत्र—कहो हथिन/हथुन	—	कहते हैं।
तरियानी—कहऽ हथिन/हखुन	—	,,

१. दे० डॉ० उदयनारायण तिवारी : भोजपुरी भाषा और साहित्य, उपोद्घात, पृ० २१७, बि०रा०भा० परिषद्, पटना, १९५४ ई०।

जल्ला—कहऽ होवऽ	—	कहता हूँ।
पश्चिमी पटना—कहित हियो	—	,,
पूर्वी पटना—कहऽ हियो	—	,,

यों व्यावहारिक दृष्टि से ये सूक्ष्म भेद नगण्य हैं, पर ध्वनि-विज्ञान तथा रूप-विज्ञान की दृष्टि से इनका भी सूक्ष्म अध्ययन किया जा सकता है।

पटना, गया और मुँगेर की मगही में स्वभावतः अधिक अन्तर पाया जाता है। पटना से पश्चिम की ओर और औरंगाबाद की सीमा पर के गाँवों में मगही पर भोजपुरी का अथवा भोजपुरी पर मगही का प्रभाव पाया जाता है। उधर पूरब की ओर बाढ़ के आसपास अंगिका का मिश्रण है। पटना जिले की बोली में क्रिया-पदों के साथ 'खिन' और गया जिले की बोली में 'थू' की अधिकता पाई जाती है। पटना में जहाँ 'गेलइ', वहाँ गया में 'गेल'। इस प्रकार के कई छोटे-मोटे रूपात्मक तथा ध्वनिगत भेद पाये जाते हैं।

संग्रह में हमें जिस क्षेत्र से गीत जिस रूप में प्राप्त हुए हैं, उन्हें उसी रूप में रहने दिया है। इसी कारण कुछ गीतों में जहाँ 'जनम' रूप मिलेगा, वहाँ कुछ अन्य में 'जलम' रूप। ऐसी ही दोलायमान प्रवृत्ति प्रायः ड़/र में पाई जाती है। जैसे, ओझड़हट/ओझरहट। कुछ में 'कहवाँ' रूप मिलेगा और कुछ में 'कहमा'। पटना, बरबिघा आदि स्थानों में 'कहमा' रूप अधिक प्रचलित है। किन्तु, गया, जहानाबाद आदि स्थानों में 'कहवाँ' रूप अधिक व्यवहृत होता है। स्थानीय भेद के अनुसार क्रिया-प्रत्ययों में भी 'ब' और 'म' का विकल्प हुआ करता है। जैसे—जायब/जायम' खायब/खायम आदि।

बिहारी में किसी शब्द के अन्त में दो या दो से अधिक अक्षरों के पूर्व का अनुस्वार अर्धानुनासिक रूप में परिणत हो जाता है। यथा—अँटल, अँगेड़िया, अँकुर, अँकरियाइल।

संस्कृत के अनुस्वारयुक्त तत्सम शब्द यदि दो अक्षरोंवाले हों, तो बिहारी के तद्भव रूप में उन शब्दों के पंचमवर्ण के पूर्व 'अ' स्वर दीर्घ और अनुनासिक हो जाता है। यथा—पंक से पाँक, 'वंट' से बाँट, 'षंड' से 'साँड़'।

अनुस्वार अथवा पंचम वर्ण में यदि तृतीय या चतुर्थ वर्ण का संयोग हो, तो बिहारी में ऐसे शब्दों के चार रूप सम्भव हैं—पंचम के साथ पंचम, अर्धानुनासिक के साथ मात्रा-समतोलन के नियमानुसार दीर्घीकरण अथवा दीर्घीकरण के साथ पंचम वर्ण का व्यवहार। चतुर्थ वर्ण अनुनासिक के साथ तो अपने असली रूप में रहता है, अन्यथा 'ह' के साथ संयुक्त होकर महाप्राण नासिक ध्वनि के रूप में परिणत हो जाता है। जैसे—

अनुस्वार अथवा पंचम और तृतीय या चतुर्थ के संयुक्त रूप	द्वित्व या नासिक महाप्राण	अर्धानुनासिक	नासिक
लंबा/लम्बा	लम्मा	लाँबा	लामा
खंभा/खम्भा	खम्हा	खाँभा	खाम्हा
कंधा/कन्धा	कन्हा	काँधा	कान्हा

मगही में 'व' और 'ब' का विकल्प भी काफी पाया जाता है, जैसे—घोड़वा/। घोड़बा, सेनुरवा/सेनुरबा, लगावहु/लगाबहु। गया में 'वा' वाला रूप अधिक प्रचलित है, पर अन्यत्र 'बा' वाला रूप अधिक प्रयुक्त होता है।

इसी प्रकार के स्थानीय विकल्प अन्य बोलियों में भी पाये जाते हैं। जैसे—भोजपुरी—नोट/लोट, लँगोट/नँगोट; बँगला—लख्खी/नक्खी आदि।

'य' और 'व' श्रुति के व्यवहार के विषय में और बिहारी बोलियों के समान मगही में भी विकल्प पाया जाता है।[1] जैसे—आएल/आयल, फुलाएल/फुलायल, पएलकइ/पयलकइ, बजएलकइ/बजयलकइ आदि।

आदर और अनादर-सूचक प्रयोग में भी स्थानीय भेद होते हैं। जैसे—'हमनी' और 'हमनी सभ' के स्थान में कहीं 'हमरन्हीं', 'हमनीन', 'हमनीन्ह' और 'हमरन्हीन'। इसी प्रकार 'तुहनी' और 'तुहनी सभ' के स्थान में 'तोहनी', 'तुहँनीन' आदि। ये रूप प्रायः अशिक्षित तथा निम्न स्तर के जनवर्ग में ही प्रचलित हैं।

मगही में तथा अन्य बिहारी बोलियों में भी क्रियापद में समाज के चार स्तरों के अन्तर का निर्देश होता है—

क. आदर-सूचक समान स्तर—रोटी खैबऽ? दूध पीबऽ हो बाबू?
ख. अनादर-सूचक अवर स्तर—रोटी खैभे हरिया? (खैबे—पश्चिमी)
ग. प्रत्यक्षार्थक आदृत स्तर—रोटी खइबाऽ, दूध पीबा बउआ?
घ. प्रत्यक्षार्थक विशेष आदृत स्तर—दाल-भात खायल जायत? अपने दूध पीथिन हजूर! अपने दूध पियल जाय।

भोजपुरी में भी 'रोटी खइबऽ', 'रोटी खइबे', 'रोटी खाइब', 'रोटी खाइल जाई' का प्रयोग होता है। हिन्दी में इन अर्थों का द्योतन क्रियापदों के एकवचन, बहुवचन तथा भावे या कर्मणि प्रयोग के द्वारा किया जाता है। जैसे—(तुम) रोटी खाओगे? (तू) रोटी खायगा? (आप) रोटी खायेंगे? रोटी खाई जायगी? चला जायगा? कुछ कहा जाय आदि। हिन्दी में ये कर्मणि या भावे प्रयोगवाले रूप बिहारी बोलियों के क्षेत्र में ही अधिकतर व्यवहृत होते हैं।

क्रियापदों में आदर-अनादर के इस सामाजिक पक्ष का निर्देश केवल कर्त्ता द्वारा ही नियंत्रित होता है, ऐसी बात नहीं है। मगही में कर्म के सामाजिक स्तर के अनुसार भी क्रिया के रूप में परिवर्त्तन होता है—जैसे, दाल-भात खायल जायत?

यही बात मैथिली में भी पाई जाती है, पर भोजपुरी में कर्म के अनुसार क्रिया के रूप में अन्तर नहीं पड़ता। जैसे—रोटी खाइल जाई?, दूध पीअल जाई?

सम्बन्धकारक के व्यवहार में भेदक पक्ष के स्तर और वचन के अनुसार भोजपुरी में क्रियापद में अन्तर के दृष्टान्त मिलते हैं। जैसे, भोज०—उनकर (आदर) बोखार उतर गलहिन। ओकर (अनादर) बोखार उतर गलहिस। ओहनी के (अनादर बहुवचन) बोखार उतर गलहिस।

---

१. दे० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद : कृषि-कोश (वही), पृ० २४।

इन थोड़े-से सामान्य नियमों के विवरण के बाद मगही का एक संक्षिप्त व्याकरण प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे मगही के संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के रूपों का अपेक्षित सामान्य ज्ञान हो सकेगा।

मगही व्याकरण

संज्ञा—मगही संज्ञा के भी प्रायः तीन रूप मिलते हैं—

१. मूल रूप, २. वर्द्धित रूप, ३. विस्तारित रूप। यथा—

मूल	वर्द्धित	विस्तारित
घोरा	घोरवा	घोरौवा
माली	मलिया	मलियवा

अंत्य स्वरहीन और अंत्य स्वरयुक्त मूल के भी दो रूप होते हैं—निर्बल तथा सबल। जैसे—निर्बल—घोड़, लोह, मीट, तीत आदि। सबल—घोड़ा, लोहा, मीठा, तीता आदि।

वचन—मगही में अन्त के दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके तथा—'न' संयुक्त करके, बहुवचन के रूप सम्पन्न होते हैं। यथा—घोड़ा; घोड़वा, ब० व०—घोड़न, घोड़वन, घर—ब० व०—घरन। इसके अतिरिक्त एकवचन में समूह-निर्देशक संज्ञा 'सब' तथा 'लोग' संयुक्त करके भी यौगिक बहुवचन के रूप बनते हैं—यथा घरसब, राजा लोग।

कारक—मगही में करण तथा अधिकरण कारक 'एँ' तथा 'ए' संयुक्त करके सम्पन्न होते हैं। इन कारकों के रूप में आकारान्त के 'आ' का लोप हो जाता है तथा अन्त्य 'ई' और 'ऊ' ह्रस्व हो जाते हैं। यथा—घोड़ा, घोड़ें (घोड़े के द्वारा); घोड़े (घोरे) (घोड़े में); फल—फलें, फलवे, फले; माली, मलिए, मालिए। इनके बहुवचन के रूप प्रायः नहीं होते।

अन्य कारकों के रूप कर्त्ता तथा तिर्यक् के रूपों में अनुसर्ग जोड़कर सम्पन्न होते हैं। यथा—कर्म तथा सम्बन्ध—के; करण तथा अपादान—से, सें, सतीं; सम्प्रदान—ला, लेल्, खातिर, लागी; अधिकरण—मे, में, मों; सम्बन्ध—क्, के, केर्। 'क्' के पूर्व का स्वर ह्रस्व हो जाता है। यथा,—घोड़क् (घोड़े का); व्यंजनांत संज्ञा-पदों के सम्बन्ध के रूपों में एक 'अ' भी संयुक्त हो जाता है। यथा—फलक (फल का)।

लिंग—विशेषण में लिंगानुसार परिवर्त्तन नहीं होता।

तिर्यक् रूप—स्वरान्त संज्ञापदों के तिर्यक् और कर्त्ता के रूप एक ही होते हैं, किन्तु व्यंजनांत संज्ञापदों के कर्त्ता तथा तिर्यक् के रूप भी कभी-कभी एक ही होते हैं और कभी-कभी तिर्यक् के रूप 'ए' लगाकर सिद्ध होते हैं। यथा—घर के अथवा घरे के (घर का)।

लकारांत क्रियाविशेष्य-पद (Verbal Nouns)—इनके तिर्यक् रूप 'ला' जोड़कर बनाते हैं। यथा—देखल् (देखते हुए); तिर्यक्—देखला। अन्य क्रियाविशेष्य-पदों के रूप, व्यंजनांत संज्ञापदों की भाँति ही चलते हैं।

सर्वनाम

	मैं		तू		स्वयं	यह	वह
	आदर-रहित	आदर-सहित	आदर-रहित	आदर-सहित			
एकवचन कर्त्ता	०, हम	हम	तू, तों	तों, अपने	अपने	ई	ऊ
तिर्यक्	मोरा, हमरा	हमरा	तोरा	तोहरा, अपने	अपने, अपना	ऍह्	ओह
सम्बन्ध	मोर, मोरा (स्त्रीलिंग) मोरी	हम्मर्, हमरे	तोर्, तोरा (स्त्रीलिंग) तोरी	तोहार, तोहरा तोहरे, अपने के	अप्पन्	एक-र्, ऍह-केर् आदि	ओकर्, ओहके आदि
बहुवचन कर्त्ता	हमनी	हमनी, हमरनी	तोहनी	तोहरनी, अपने	अपने सब्	ई	ऊ
तिर्यक्	हमनी	हमनी, हमरनी	तोहनी	तोहरनी, अपने	अपने सब्	उन्ह्	इन्ह्

हिन्दी मगही	जो जे	सो से	कौन के	क्या का, की	कोई केउ
एकवचन कर्त्ता	जे, जौन्	से, तौन्	के, को, कौन्	का, की, कौंछी, कौंची	केउ, कोई, काहु, केहु
तिर्यक्	जेह्	तेह्	केह्	काहे	केकरो, कौनों
सम्बन्ध	जेकर् जेहके	तेकर् तेहके	केकर् केहके	'का' का प्रयोग पटना के दक्षिण-पूर्व में होता है; किन्तु गया जिले में कौंछी—कउची, कौंची — व्यवहृत होता है।	हिन्दी 'कुछ' के लिए मगही में 'कुछु', 'कुच्छो' अथवा कुच्छुओ का प्रयोग होता है। इसके तिर्यक् रूप नहीं होते।
बहुवचन कर्त्ता	जे जिन्हकनी	से तिन्हकनी	के किन्हकनी		
तिर्यक्	जिन्ह्	तिन्ह्	किन्ह्		

ऊपर के तिर्यक्, बहुवचन के रूप, कर्त्ता में भी व्यवहृत होते हैं। तिर्यक् बहुवचन के बहुत रूप होते हैं। आगे उत्तमपुरुष सर्वनाम के रूप दिये जाते हैं। यथा—हमनिन्ह्, हमरन्हि, हमरन्ह्। इसकी वर्त्तनी (Spelling) में अंतर भी पड़ता है। यथा—हमनिन् आदि।

ई से इन्हन्ह्, इन्हनी, इखनिन्, अखनी, ऐखनी, इन्हकन्ही, इन्हका आदि रूप बनते हैं।

इसी प्रकार ऊ, जे, से, तथा के, से भी रूप बनते हैं। इनकी वर्त्तनी में भी अंतर मिलता है।

तिर्यक् सम्बन्ध—सम्बन्ध 'कर्' के तिर्यक् रूप 'करा' हो जाते हैं। इस प्रकार एकर्; ऐकरा; ओकर्, ओकरा; जेकर्, जेकरा आदि रूप होते हैं। अनुसर्ग लगाकर इनके भी तिर्यक् के रूप सिद्ध होते हैं।

क—सहायक क्रियाएँ

वर्त्तमान—मैं हूँ आदि ।

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	ही[१]	—	हीं[२]	—
२	हें[३]	हहिन्[४]	ह[५]	हहुन्[६]
३	है[७]	हहिन्[८]	हैं[९]	हइन्[१०]

वैकल्पिक रूप

१. हकी, हिकूँ; २. हिऐ; ३. हँ, हे, है, हहीं, हकीं, (स्त्री०) ही, हीं; ४. हकिन्; ५. हहू, हहो, हहूँ; ६. हखुन; ७. ह, हे, हो, हँ, हस्, हकै, हहीं; ८. हखिन्, (स्त्री०) हखिन्, हखिनी ; ९. हथ, हथी; १०. हथिन्, (स्त्री०) हथिन्, हथिनी ।

अतीत—मैं था आदि ।

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	हलूँ[१]	—	हलीं[२]	—
२	हलें[३]	हलहिन्	हल[४]	हलहुन्
३	हल्[५]	हलहिन्[६]	हलन्[७]	हलथिन्[८]

वैकल्पिक रूप

१. हली; २. हलिऐ; ३. हलँ, हले, हलहीं, हला; (स्त्री०) हली, हलीं; ४. हलह, हलहू, हलहो, हलहूँ; ५. हलै, हलहीं; (स्त्री०) हलीं; ६. हलखिन्; (स्त्री०) हलखिन्, हलखिनी; ७. हलथी; (स्त्री०) हलिन् ; ८. (स्त्री०) हलथिन् हलथिनी ।

ख—सकर्मक क्रिया

देखब्, देखना, [√देख्] ।

क्रियाविशेष्य-पद—१. देखब्, तिर्यक् नहीं होता ।
२. देखल्, तिर्यक्—देखला ।
३. देख्, तिर्यक्—देखे ।

कृदन्तीय रूप, वर्त्तमान—देखित्, देखत्, देखैत्, (स्त्री०) ती, तिर्यक्—ते;
अतीत—देखल्; (स्त्री०) ली, तिर्यक्—ले ।

असमापिका—देखके या देखकर् ।

साधारण वर्त्तमान—मैं देखता हूँ; वर्त्तमान (संभाव्य)—(यदि) मैं देखूँ

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	देखूँ[१]	—	देखीं[२]	—
२	देख[३]	देखहिन्	देख[४]	देखहुन्
३	देखै[५]	देखहिन्[६]	देखथ[७]	देखथिन्[८]

वैकल्पिक रूप

१. देखी; २. देखिऐ; ३. देखें, देखँ, देखे, देखहीं; (स्त्री०) देखी, देखीं, देखू; ४. देखह, देखहू, देखहो, देखहूँ; ५. देखे, देखस; ६. देखखिन्, (स्त्री०) देखखिन्, देखखिनी; ७. देखीं, देखिय; ८. देखिन्, देखथिन्; (स्त्री०) देखथिन्, देखथिनी ।

अतीत—मैंने देखा

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	देखलूँ[१]	—	देखलीं[२]	—
२	देखलें[३]	देखलहिन्	देखल[४]	देखलहुन्
३	देखलक्[५]	देखलकन्[६]	देखलथी	देखलथिन्[७]

वैकल्पिक रूप

१. देखली; २. देखलिऐ; ३. देखले, देखलँ, देखलहीं; (स्त्री०) देखली, देखलीं, देखलू; ४. देखलह, देखलहू, देखलहो, देखलहूँ; ५. देख कै, देखल कै; (स्त्री०) देखली; ६. देखलन्, देखलखिन्; (स्त्री०) देखलिन्, देखलकिन्, देखखिन्, देखलखिनी; ७. देखलहिन्, देखलकथिन्; (स्त्री०) देखथिन्, देखलथिनी ।



भविष्यत्—मैं देखूँगा [प्रथम प्रकार]					द्वितीय प्रकार			
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	देखब[1]	—	देखबै	—	—	—	—	—
२	देखबें[2]	देखबहिन्	देखब[3]	देखबहुन्	—	—	देखिह[1]	—
३	—	—	—	—	देखीं, देखत्[2]	देखतहिन्[3]	देखिहें, देखतन्[4]	देखतथिन्[5]

वैकल्पिक रूप

१. देखवौं, देखबौं; (स्त्री०) देखबी; २. देखबँ, देखबे, देखबा, देखबहीं; (स्त्री०) देखबी, देखबीं, देखबू; ३. देखबह, देखबहू,—हो,—हूँ।

वैकल्पिक रूप

१. देखिहह् ; २. देखतै; ३. देखहिन्, देखखिन्; (स्त्री०) देखखिन्, देखखनी; ४. देखत-थी; (स्त्री०) देखतिन्; ५. देखतथीन, देखतथिनी।

द्रष्टव्य : आज्ञा अथवा विधिक्रिया एवं साधारण वर्त्तमान के रूप एक ही होते हैं। निश्चयार्थक के रूप—देखबहू, देखिह तथा देखी।

संभाव्य अतीत—(यदि) मैं देखे होता आदि।

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	देखैतूँ[1]	—	देखैतीं	—
२	देखैतें	देखैतहिन्	देखैत	देखैतहुन्
३	देखैत्	देखैतहिन्	देखैत	देखैतथिन्

१. अथवा देखतूँ या देखितूँ और इसी प्रकार अन्य रूप भी। इन सभी रूपों के साथ हल् प्रत्यय भी संयुक्त किया जा सकता है। यथा—देखैतूँहल्। सहायक क्रिया के अतीतकाल के रूपों की भाँति ही इसके भी वैकल्पिक रूप होते हैं।

घटमान, 'मैंने देखा है' के रूप, अतीत में, है, हे, ह अथवा हा संयुक्त करके सम्पन्न होते हैं। यथा—देखलूँ है, मैंने देखा है; घटमान अतीत—'मैंने देखा था' आदि रूप 'हल्' अथवा 'हलै' संयुक्त करके सम्पन्न होते हैं।

अनिश्चित वर्त्तमान—मैं देखता हूँ—देखही अथवा देखेही, इसी प्रकार सहायक के रूप की सहायता से अन्य रूप भी बनते हैं। निश्चित अतीत—मैंने देखा—देखहलूँ या देखेहलूँ, और इसी प्रकार अन्य रूप भी सम्पन्न होते हैं।

निश्चित वर्त्तमान—मैं देख रहा हूँ—देखैत्, (देखित् या देखत)—हीं। इसी प्रकार अन्य रूप भी चलते हैं।

मैं देख रहा था—देखैत् (आदि) हलूँ; इसी प्रकार अन्य रूप भी चलते हैं।

अकर्मक क्रिया—इनके अतीत के रूप भिन्न होते हैं। ये 'हलूँ' की भाँति चलते हैं, देखलूँ की भाँति नहीं। यथा—वह गिरा—गिरल्। इसी प्रकार 'मैं गिरा हूँ', गिरलूँ है।

आकारान्त धातुएँ—पाएँब, (पाना) वर्त्तमान कृदंतीय रूप पावत्, पाइत्।

	साधारण वर्त्तमान	भविष्यत्	अतीत	सम्भाव्य अतीत
१	पाइँ या पाऔं	पाएँब	पौलूँ या पैलूँ	पौतूँ या पैतूँ
२	पाव्	पैब् या पाब्	पौल् या पैल्	पौत् या पैत्
३	पावथ्	पाई, पाइत्	पौलक् या पैलक्	पावत् या पाइत्

'औ' वाले रूप, यथा—पौलूँ, पौतूँ आदि केवल सकर्मक क्रियाओं में प्रयुक्त होते हैं। खाएब् (खाना) इसका अपवाद है; क्योंकि इनमें ये रूप नहीं आते।

(ग) अनियमित क्रियापद

जाएब् (जाना)	अतीत कृदन्तीय	गेल
करब् (करना)	,, ,,	कैल्
मरब् (मरना)	,, ,,	मुइल् या मूअल्
देब् (देना)	,, ,,	देल् या दिहल्
लेब् (लेना)	,, ,,	लेल् या लिहल्
होएँब् (होना)	,, ,,	होल् , होइल् या भेल

मगही का आधुनिक साहित्य

सिद्ध-साहित्य के बाद मगही में लिखित साहित्य की कोई परम्परा नहीं पाई जाती है। मागधी प्राकृत या अपभ्रंश के ग्रंथों का भी अभाव ही है। संभव है, नालन्दा-महाविहार के समृद्ध पुस्तकालय की भस्मीभूत ग्रन्थ-राशि में मागधी के भी ग्रन्थ नष्ट हो गये हों। मगही में आधुनिक साहित्य की पृथक् परम्परा के अभाव का कारण मगध-निवासियों की देशव्यापी केन्द्रीय प्रवृत्ति है, जो उसके सुदीर्घ समृद्ध इतिहास की देन है। इसी को मगही के लेखकों ने अपनी सांस्कृतिक तथा साहित्यिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का प्रधान माध्यम बनाये रखा। दूसरी संभावना यह भी है कि जिस समय प्रादेशिक भाषाएँ नये रूप में ढल रही थीं और उनके साहित्य का निर्माण प्रारम्भ हुआ था, उस समय पूर्व की राजनीतिक क्रियाशीलता मगध से उठकर कन्नौज, मिथिला और लखनावती में केन्द्रित हो रही थी। यही कारण है कि गहड़वाड़ों, कर्नाटों और सेनों के वंशधर क्रमशः पूरबी हिन्दी, मैथिली और बँगला के पोषक बन सके और वे प्रादेशिक भाषाएँ समृद्ध हो सकीं। जबकि मगही को कोई वास्तविक पोषक-पालक नहीं मिला, कोई दृढ राज्याश्रय नहीं मिला और इसका उर्वर स्रोत सूख गया। आठवीं सदी से चौदहवीं सदी तक सभी प्रादेशिक भाषाएँ अपने आरम्भिक रूप में समृद्ध-सम्पन्न हो गई थीं। यदि कदाचित् इस अवधि में सन्तों ने मगही में कुछ लिखा भी हो, तो या तो काल-कवलित हो गया अथवा विदेशी आक्रमणों के कारण ध्वस्त हो गया। बारहवीं सदी से भारतीय भूमि पर मुसलमानों का जो अत्याचार-अनाचार रहा और जिसके चलते यहाँ की संस्कृति-सभ्यता पर जो वज्रपात हुआ है, वह सभी को ज्ञात है। इसके बाद भी मगध की भूमि पर मुस्लिम-शासकों के जो प्रतिनिधि शासन करते रहे, वे मगही के बजाय, उर्दू और देहलवी हिन्दी के पोषक रहे। फलतः, मगही लोकभाषा के रूप में ही जीवित रह सकी और इसका साहित्य नहीं बन सका।

अठारहवीं सदी में ईसाई मिशनरियों ने इस लोकभाषा में कुछ छिटपुट काम किये हैं और यह पता लगता है कि बाइबिल के कुछ अंश का अनुवाद मगही में हुआ था। किन्तु, प्रमाणभूत कोई पुस्तक दृष्टिपथ में नहीं आई है। इधर पता लगा है कि पलामू के किसी चेरो राजा का १७८४ ई० का मगही में लिखित एक डकुमेंट डालटेनगंज के जिला कोर्ट के रेकर्ड-रूम में विद्यमान है। यह सूचना हमें पटना-विश्वविद्यालय के इतिहास-विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० रामशरण शर्मा की कृपा से प्राप्त हुई है।

उन्नसवीं सदी में अँगरेज विद्वानों ने लोकभाषाओं के अध्ययन में अथक परिश्रम किया। उसी क्रम में मगही के विषय में भी कुछ अध्ययन-मनन हुआ। फलस्वरूप, श्रीग्रियर्सन ने 'दि सेवेन ग्रामर्स ऑफ् बिहारी लैंग्वेजेज' में मगही-व्याकरण का अध्ययन प्रस्तुत किया था। इसके अतिरिक्त श्रीग्रियर्सन ने 'बिहार पीजेंट लाइफ' और 'ए डिक्शनरी ऑफ् बिहारी लैंग्वेजेज (प्रथम खंड) में दूसरी बिहारी भाषाओं के साथ मगही शब्दों का भी संकलन किया था। इसके बाद श्रीकेलॉग ने 'मगही व्याकरण' लिखा था, जो अब प्राप्य नहीं है। ७० पृष्ठों का एक अन्य मगही व्याकरण भी प्रकाशित हुआ था। इन तथोक्त सामग्री तथा 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ् इंडिया', (जिल्द १, भाग १; जिल्द ५, भाग २) में उल्लिखित सामग्री के अतिरिक्त मगही भाषा की कोई दूसरी सामग्री उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के आरम्भ में नहीं प्राप्त हो सकी।

अप्रकाशित रचनाओं के क्रम में सौ वर्ष पूर्व के श्रीबोधीदास और दूसरे पाँच साधुओं की वाणियों के हस्तलिखित संग्रह का पता लगा है।

गया के नवादा सबडिवीजन में एक धोबी-रचित 'रामायण' प्रसिद्ध हो चुकी है एवं गया के पास के एक कुम्हार की कृति 'रामायण' भी हस्तलिखित रूप में मिली है।

इनके अतिरिक्त धनी धरमदासजी की शब्दावली में मगही के कुछ पद मिलते हैं। यह शब्दावली बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई है। सालिमपुर (पटना) के बदरीदास, जहानाबाद के चन्दनदास और अमरितदास ने मगही-साहित्य के उन्नयन में पर्याप्त योगदान किया है। कवि भिखेखानन्द और खंगबहादुर की कविताएँ प्रसिद्ध हो चुकी हैं, किन्तु प्रकाशित रचना दुर्लभ है। बाबा कादमदास, सोहंगदास, बाबा हेमनाथदास आदि सन्तों के पद लोक-जीवन में व्याप्त हो गये हैं। बिलारी (पटना) के महन्त बाबा कासीदास द्वारा रचित 'खेमराजभूषण' नामक पुस्तक की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। इन्होंने मगही में कुण्डलियाँ और छन्दोबद्ध कविताओं की रचना की है।

श्रीजन हरिनाथ की 'ललित रामायण', 'ललित भागवत' तथा फुटकर पद बहुत प्रसिद्ध एवं लोगों के कंठगत हो चुके हैं। इनकी रचनाओं का प्रसार-प्रचार मगही-क्षेत्र में बहुलता से मिलता है। नवादा के मुख्तार श्रीजयनाथपति ने 'सुनीति' और 'फूलबहादुर' के नाम से दो उपन्यास लिखे थे। ये दोनों यत्र-तत्र अब भी प्राप्य हैं। इनकी किसी अन्य रचना का पता अभी तक नहीं मिला है। हाँ, मुख्तार साहब ने श्रीमहावीरसिंह के साथ मिलकर 'मगही मुहावरे और बुझौवल' प्रकाशित कराया था। पटना के एडवोकेट स्व० श्रीकृष्णदेव प्रसादजी ने 'चाँद और जगउनी' तथा इसी प्रकार के बहुत-से मगही गीत लिखे थे। इन्होंने बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के वार्षिक अधिवेशन (सन् १९५२ ई०) के अवसर पर 'मगही भाषा और साहित्य' पर निबन्ध पाठ भी किया था, जो परिषद् के 'पंचदश लोकभाषा-निबन्धावली के नाम से प्रकाशित संग्रह में संगृहीत है।

आधुनिक काल में मगही भाषा और साहित्य पर पूर्वापेक्षया अधिक कार्य हुआ है और हो रहा है। वर्त्तमान काल में पं० श्रीकान्त शास्त्री इस भाषा-साहित्य के उन्नयन में बहुत दत्तचित्त हैं। उन्होंने मगही भाषा के व्याकरण के ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक भाषाविज्ञानीय विषय पर अपना शोध-निबन्ध तैयार किया है। इसी प्रकार, प्राध्यापिका श्रीमती सम्पत्ति अर्याणी ने 'मगही भाषा के व्याकरण' पर ही अपना शोध-निबन्ध प्रस्तुत किया है।

श्रीयुगेश्वर पाण्डेय ने 'मगही भाषा और साहित्य' पर हिन्दू-विश्वविद्यालय, वाराणसी में अपना शोध-प्रबन्ध उपस्थापित किया है।

श्रीरामप्रसाद शर्मा 'पुण्डरीक' की 'पुण्डरीक-रत्नावली' तथा 'गीता' और 'मेघदूत' के अनुवाद प्रचार-प्रसार पा चुके हैं। श्रीराजेन्द्रसिंह 'यौधेय' का 'मगही वैयाकरण', पं० श्रीकान्त शास्त्री का 'नयागाँव' (नाटक), श्रीरामसिंहासन 'विद्यार्थी' का 'जगरना', श्रीसुरेश दूबे 'सरस' का 'निहोरा' और श्रीश्रीधरपाठक का 'शिवनौचारी' (कविता-संग्रह) प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

वर्त्तमान काल के दो दशकों में 'तरुण-तपस्वी', 'मागधी', 'मगही', 'महान् मगध' और विहान' नाम से चार पत्रिकाएँ निकलीं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से बहुत-से लेखक सामने आये और मगही भाषा का साहित्य-भांडार विविध उपकरणों से भरने लगा।

आधुनिक मगही-कविता के लिए सर्वश्री कृष्णदेव प्रसाद, श्रीकान्त शास्त्री, रामनरेश पाठक, रामगोपाल शर्मा 'रुद्र', हंसकुमार तिवारी, गोवर्धनप्रसाद 'सदय', रामचन्द्रशर्मा 'किशोर', प्रो० रामनन्दन, सुरेश दूबे 'सरस', प्रो० जगदीशनारायण चौबे, कामेश्वर शर्मा 'नयन', सुरेन्द्र-प्रसाद 'तरुण', हरिश्चन्द्र 'प्रियदर्शी', योगेश, यौधेय, विद्यार्थी, गोबरगनेस, श्यामनन्दन शास्त्री, लक्ष्मणप्रसाद 'दीन', सरयूप्रसाद 'करुण', यमुनाप्रसाद शर्मा 'ज्वाला', पार्वतीरानी सिन्हा, धर्मशीला देवी 'शशिकला' आदि कवि पहली और दूसरी पाँत में गिने जा रहे हैं।

कथाकारों में सर्वश्री राधाकृष्ण, तारकेश्वर भारती, जयेन्द्र, रामनरेश पाठक, श्रीमती पुष्पा अर्याणी, रवीन्द्रकुमार, सुरेशप्रसाद सिन्हा 'दीन', शिवेश्वरप्रसाद अम्बष्ठ आदि अपनी प्रशस्त कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

वैयक्तिक निबन्धकारों में डॉ० शिवनन्दनप्रसाद और प्रो० रामनन्दन के नाम उल्लेख्य हैं। पं० श्रीकान्त शास्त्री द्वारा रचित कई नाटक, प्रो० रामनन्दन के 'खइनी' और 'कौमुदी-महोत्सव', प्रो० वीरेन्द्रप्रसाद सिंह 'विप्लव' का 'थारी परसाल हइ' (एकांकी), श्रीउदय का 'सेनुरादान', प्रो० शत्रुघ्नप्रसाद शर्मा का 'गुरुदक्षिणा', श्रीमुन्नीप्रसाद के 'कुबेर के भण्डार', और 'ओकील के परवाना तक' एवं श्रीशम्भुनाथ जायसवाल का 'चलनी दुसलक बढ़नी के' (प्रहसन) ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इनके अतिरिक्त श्रीभिक्षु जगदीश काश्यप, श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद सिन्हा, डॉ० नर्मदेश्वर प्रसाद, श्रीमोहनलाल महतो 'वियोगी', पं० श्रीरामनारायण शास्त्री, प्रो० कपिलदेव सिंह, श्रीनागेश्वर प्रसाद, श्रीयुगेश्वर पाण्डेय, श्रीलक्ष्मण प्रसाद 'दीन', श्रीप्रियदर्शी आदि के नाम स्फुट लेखों के लिए प्रसिद्ध हो चुके हैं। श्रीरामसिंहासन 'विद्यार्थी' ने 'मगही के आधुनिक कवि' नामक पुस्तक का सम्पादन किया है, जो अभी अप्रकाशित है। इस पुस्तक में ग्यारह कवियों की कविताओं का संग्रह है।

पत्रिकाओं के सम्पादन के लिए सर्वश्री पं० श्रीकान्त शास्त्री, शिवाराम योगी (ठाकुर रामबालक सिंह), श्रीगोपाल मिश्र 'केसरी', श्रीरामवृक्ष सिंह 'दिव्य' और प्रो० रामनन्दन के नाम सम्मानपूर्वक लिये जायेंगे। इनमें पं० श्रीकान्त शास्त्री प्रायः सभी पत्रों से संबद्ध रहे हैं।

प्राप्य-अप्राप्य मगही साहित्य का यहाँ संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। विस्तृत विवरण के लिए 'बृहत् हिन्दी-साहित्य का इतिहास' (षोडश भाग) तथा 'मगही', 'विहान' आदि पत्रिकाओं की फाइलें देखनी चाहिए।

संस्कार

संस्कार ही भारतीय जीवन की आधार-शिला है। शास्त्रों में उनका शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक गुणाधान की प्रक्रिया के रूप में ही ग्रहण किया गया है। *संस्कुर्वन्त्यनेन इति संस्कारः (सम्+कृ+घञ्)*। उनके द्वारा प्रकृत जन्मजात शरीर में प्राकृत भावों को हटाकर उनके स्थान में अच्छे गुणों का आधान किया जाता है और इस प्रकार तन और मन दोनों को अभिनव रूप में सुशोभित किया जाता है।[1] जैसे सोने या चाँदी के मूल द्रव्य को आग में तपाकर उनका संस्कार किया जाता है, जिससे उनका चमत्कृत धातु-पिंड प्रकट हो जाता है, वैसे ही जन्मगत तथा गर्भजनित जो अपदार्थ होते हैं, उन्हें दूर करने के लिए मानव-जीवन में भी संस्कारों की कल्पना की गई है, जिससे शरीर और मन दोनों ही विधूतपाप्मा हो सकें। संस्कारों द्वारा ही मनुष्य जन्मजात शूद्रत्व या जड पशुत्व से ऊपर उठकर द्विजत्व अथवा शिष्ट मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। संस्कारों का विधान इसी दृष्टि से किया गया है।[2]

विवाह, ब्रह्मचर्य और अंत्येष्टि-संस्कार के उल्लेख हमें वैदिक साहित्य से ही मिलने लगते हैं; परन्तु उनकी विशेष चर्चा श्रौतसूत्रों और गृह्यसूत्रों में ही पाई जाती है। गृह्य-सूत्रों में विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, वेदाध्ययन और समावर्त्तन का निर्विशेष रूप से विधान किया गया है। गृह्यसूत्रों के अनन्तर धर्मसूत्रों में संस्कारों का विस्तृत विवेचन मिलता है। गृह्यसूत्रों में संस्कारों की पद्धति और विधान है और धर्मसूत्रों में उनके सामाजिक पक्ष का विवेचन है। इनके बाद मनु, याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियों में संस्कारों का विस्तारपूर्वक निरूपण हुआ है और सामाजिक दृष्टि से उनकी महत्ता प्रतिपादित की गई है। स्मृतियों के युग में ये संस्कार प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपरिहार्य हो चुके थे। यदि किसी कारणवश किसी व्यक्ति के जीवन में ये संस्कार अविहित रह गये, तो वह प्रायश्चित्त का भागी होता था अथवा ऐसा न करने पर व्रात्य वा समाज से बहिष्कृत माना जाता था। आज के प्रचलित प्रायः सभी संस्कार स्मृतियों तथा परवर्त्ती निबन्ध-ग्रन्थों के आधार पर प्रतिष्ठित हैं। परन्तु, इनकी संख्या के सम्बन्ध में उनमें भेद पाया जाता है। आश्वलायन गृह्यसूत्र में केवल ११ संस्कार दिये गये हैं। याज्ञवल्क्य ने केवल बारह संस्कारों का निरूपण किया है। पारस्कर गृह्यसूत्र तथा मनुस्मृति में इनकी संख्या तेरह दी गई है। महाभारत के वनपर्व में भी केवल तेरह

---

१. (क) संस्कारो नाम स भवति, यस्मिञ्जायते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिदर्थस्य।
—शाबरभाष्य, जैमिनीय न्यायमाला, ३-१-३।
(ख) योग्यतां चादधानाः क्रियाः संस्कारा इत्युच्यन्ते। —तन्त्रवार्त्तिक।
(ग) संस्कारो हि नाम गुणाधानेन वा स्याद् दोषापनयनेन वा। —वेदान्तसूत्र, शाङ्करभाष्य, १-१-४।

२. गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौडमौञ्जीनिबन्धनैः।
गार्भिकं बैजिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते॥ —मनुस्मृति, पृ० ८२।
वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च॥ —मनु० २।२६, २७।

संस्कारों की गणना की गई है।[१] इसके विपरीत गौतम ने दैवयज्ञों को सम्मिलित करके कुल ४८ संस्कारों का उल्लेख किया है। आजकल जो षोडश संस्कारों की परम्परा प्रचलित है, उनका निरूपण हमें व्यासस्मृति में मिलता है। जातूकर्ण्य ने भी षोडश संस्कार ही दिये हैं, पर उनकी सूची व्यास की सूची से कुछ भिन्न है। बाद, आर्यसमाज में भी स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा षोडश संस्कार ही ग्रहण किये गये और पं० भीमसेन शर्मा के कर्म-कलाप में भी सोलह संस्कारों का ही वर्णन है।[२]

सूरसागर में भी निम्नलिखित षोडश संस्कारों का उल्लेख है—गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकरण, कर्णभेद, उपनयन, वेदारंभ, समावर्त्तन, विवाह, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

मध्यकालीन निबन्धों तथा स्मृतियों के टीका-ग्रन्थों में पुराणों को ही उपजीव्य बनाया गया है। क्योंकि, पुराणों में भी संस्कारों के विधान मिलते हैं।

इनके अतिरिक्त स्मृतियों तथा गृह्यसूत्रों में कुछ ऐसी प्रथाओं और परम्परा-प्राप्त रीतियों के भी संकेत मिलते हैं, जो संस्कारों के रूप में परिगणित न होते हुए भी उन्हीं के साथ जुड़ी हुई हैं। ये अशास्त्रीय रीति-प्रथाएँ भी समाज में चिरकाल से चली आ रही थीं और इनमें से कुछ तो काल-स्थानकृत मानी जा सकती हैं और कुछ वंश-शाखाकृत। आश्वलायन गृह्यसूत्र में स्पष्ट उल्लेख है—

अथ खलूच्चावचा जनपदधर्मा—
ग्रामधर्माश्च तान् विवाहे प्रतीयाते।

इसी प्रकार, आपस्तम्ब-धर्मसूत्र में भी कहा गया है—*यत् स्त्रिय आहुस्तत्कुर्युः।*

इस प्रकार, संस्कार के दो पक्ष हमारे सामने आते हैं—एक शास्त्रीय पक्ष और दूसरा लोकपक्ष। शास्त्रीय पक्ष के कई विधान अब लुप्त-से हो चुके हैं। उदाहरणार्थ, गर्भाधान का विधान अब नहीं होता। इसी प्रकार पुंसवन और सीमंतोन्नयन के संस्कार भी अब नहीं होते। जातकर्म-संस्कार में भी बहुत परिवर्त्तन हो चुके हैं। जन्म के बाद छठे दिन छठी-पूजा का प्रचलन अवश्य है, जो जातकर्म का अवशेष है। अन्नप्राशन और निष्क्रमण संस्कार स्थान-स्थान पर थोड़े-बहुत भेद के साथ सम्पन्न किये जाते हैं। चौल, उपनयन, वेदारम्भ और समावर्त्तन—ये सभी संस्कार, नाटक की लीला के समान, मगही तथा बिहार के दूसरे क्षेत्रों में भी आजकल प्रायः एक ही दिन और एक ही मंडप में सम्पन्न कर दिये जाते हैं। फिर भी, अधिकतर उसी दिन सायंकाल या दूसरे दिन विवाह-संस्कार सम्पन्न होता है। यह इन शास्त्रीय संस्कारों के ह्रास का ही एक निदर्शन है। फिर भी, इनकी विधियाँ शास्त्र-निर्दिष्ट मंत्रों के साथ सम्पन्न की जाती हैं।

चूडाकर्म या मुंडन प्रथम, तृतीय या पञ्चम वर्ष में कभी पृथक् और कभी उपनयन के साथ ही सम्पन्न किया जाता है। ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ लोग अपने बच्चों की

१. मङ्गलानि च सर्वाणि कौमाराणि त्रयोदश।
जातकर्म्मादिकास्तस्य क्रियाश्चक्रे महामुनिः॥ —वनपर्व, २२६-१३।

२. विभिन्न स्मृति-ग्रन्थों में दिये गये संस्कारों की एक तुलनात्मक सूची प्रस्तुत प्रस्तावना के पृष्ठ ३३ और ३४ पर द्रष्टव्य। —सं०

मनौती मानकर किसी तीर्थस्थान में चूडाकर्म या मुंडन सम्पन्न करते हैं। वहाँ कोई विधि नहीं होती है, केवल बाल काटकर संकल्प करके तीर्थपुरोहित को दक्षिणा दी जाती है। बाल को काटकर शिशु की फुआ और बहन के आँचल में रखा जाता है, जिसे 'लापर लेओल' कहते हैं। इस कार्य के लिए फुआ, बहन आदि को पुरस्कार भी मिलते हैं।

गोदान या केशान्त का विधान अब नहीं है, किन्तु गाँवों में अभी ऐसा होता है कि पहले-पहल किशोर की दाढ़ी-मूँछ बनवाने पर नाई अपना पारितोषिक लेता है। वह प्रायः बाछा, बछिया या गाय की माँग करता है और लेता भी है। न मिलने पर सामर्थ्य के अनुसार अन्न, वस्त्र, नकद द्रव्यादि से भी सन्तोष कर लेता है। किन्तु, अब यह भी लुप्त होता जा रहा है। जैसे-जैसे समाज का संयुक्त परिवार लुप्त होता जा रहा है, वैसे-वैसे ये विधि-संस्कार भी लुप्त होते जा रहे हैं।

विवाह के कृत्यों में मधुपर्क, संकल्प, गोत्रोच्चारण, भाँवर (लाजाहोम, शिलारोहण, सप्तपदी) इन शास्त्रीय विधियों के अतिरिक्त सिन्दूरदान और चुमावन मुख्य हैं। इस प्रकार की जो लौकिक रीतियाँ मगही क्षेत्र में प्रचलित हैं तथा सूत्र और स्मृति-ग्रन्थों में विभिन्न संस्कारों के जो उल्लेख हुए हैं, उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है :

सूत्र और स्मृति-ग्रन्थों में संस्कारों का विवरण

आश्वलायन-गृह्यसूत्र	पारस्कर-गृह्यसूत्र	बौधायन-गृह्यसूत्र	वाराह-गृह्यसूत्र	वैखानस-गृह्यसूत्र
१. विवाह	१. विवाह	१. विवाह	१. जातकर्म	१. ऋतुसङ्गमन
२. गर्भाधान	२. गर्भाधान	२. गर्भाधान	२. नामकरण	२. गर्भाधान
३. पुंसवन	३. पुंसवन	३. पुंसवन	३. दन्तोद्गमन	३. सीमन्त
४. सीमन्तोन्नयन	४. सीमन्तोन्नयन	४. सीमन्तोन्नयन	४. अन्नप्राशन	४. विष्णुबलि
५. जातकर्म	५. जातकर्म	५. जातकर्म	५. चूडाकरण	५. जातकर्म
६. नामकरण	६. नामकरण	६. नामकरण	६. उपनयन	६. उत्थान
७. चूडाकरण	७. निष्क्रमण	७. उपनिष्क्रमण	७. वेदव्रत	७. नामकरण
८. अन्नप्राशन	८. अन्नप्राशन	८. अन्नप्राशन	८. गोदान	८. अन्नप्राशन
९. उपनयन	९. चूडाकरण	९. चूडाकरण	९. समावर्त्तन	९. प्रवासगमन
१०. समावर्त्तन	१०. उपनयन	१०. कर्णवेध (गृह्यशेष)	१०. विवाह	१०. पिण्डवर्धन
११. अन्त्येष्टि	११. केशान्त	११. उपनयन	११. गर्भाधान	११. चौलक
	१२. समावर्त्तन	१२. समावर्त्तन	१२. पुंसवन	१२. उपनयन
	१३. अन्त्येष्टि	१३. पितृमेध	१३. सीमन्तोन्नयन	१३. पारायण
				१४. व्रतबन्ध-विसर्ग
				१५. उपाकर्म
				१६. उत्सर्जन
				१७. समावर्त्तन
				१८. पाणिग्रहण

गौतम-धर्मसूत्र

१. गर्भाधान
२. पुंसवन
३. सीमन्तोन्नयन
४. जातकर्म
५. नामकरण
६. अन्नप्राशन
७. चौल
८. उपनयन
९-१२. चार वेदव्रत
१३. स्नान
१४. सहधर्मचारिणी-संयोग
१५-१९. पञ्चमहायज्ञ
२०-२६. अष्टक, पार्वण, श्राद्ध, श्रावणी, आग्रहायणी, चैत्री, आश्वयुजी, (सप्त पाकयज्ञ)
२७-३३. अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, दर्शपौर्ण-मास्य, चातुर्मास्य, आग्रायणेष्टि, निरूढ-पशुबन्ध, सौत्रामणि (सप्त हविर्यज्ञ)
३४-४०. अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम—(सप्त सोमयज्ञ)

मनुस्मृति

१. गर्भाधान
२. पुंसवन
३. सीमन्तोन्नयन
४. जातकर्म
५. नामधेय
६. निष्क्रमण
७. अन्नप्राशन
८. चूडाकर्म
९. उपनयन अथवा मौञ्जीबन्धन
१०. केशान्त
११. समावर्त्तन
१२. विवाह
१३. श्मशान

व्यासस्मृत

१. गर्भाधन
२. पुंसवन
३. सीमन्त
४. जातकर्म
५. नामक्रिया
६. निष्क्रमण
७. अन्नप्राशन
८. वपनक्रिया
९. कर्णवेध
१०. व्रतादेश
११. वेदारम्भ
१२. केशान्त
१३. स्नान
१४. उद्वाह
१५. विवाहाग्नि-परिग्रह
१६. त्रेताग्नि-संग्रह

मगही क्षेत्र की वैवाहिक उपविधियाँ

मगही क्षेत्र में निम्नलिखित क्रम से वैवाहिक उपविधियाँ सम्पन्न होती हैं। इनमें से प्रायः सभी उपविधियों के साथ-साथ उनसे सम्बद्ध लोकगीत गाये जाते हैं।

गणना—विवाह के पहले लड़के-लड़की की जन्मपत्रियों के आधार पर नक्षत्रों के मिलान के लिए होडाचक्रानुकूल एक विशेष प्रकार की गिनती की जाती है, जिसे लोग गणना कहते हैं। वर-वधू, दोनों के नक्षत्रों की गणना बैठने पर ही विवाह की बातचीत चलती है। गणना के अवसर पर कोई विशेष गीत तो नहीं गाया जाता, परन्तु गीतों में इसका उल्लेख मिलता है।

छेंका या रोका—वैवाहिक सम्बन्ध के प्रस्ताव को निश्चयात्मक रूप देने के लिए कन्यापक्ष की ओर से लड़के के हाथ में कुछ रुपये, पान, कसैली, हल्दी, दूब आदि मांगलिक द्रव्य दिये जाते हैं। 'छेंका' के गीत सगुन या तिलक के गीतों की तरह होते हैं।

तिलक या लगन—तिलक की विधि के बाद ही वैवाहिक कृत्यों का शुभ आरम्भ होता है। लड़की-पक्षवाले निश्चित शुभ तिथि को लड़के के घर जाकर उसका तिलक करते हैं तथा उसे विधिपूर्वक रुपये तथा उपहारादि देते हैं। इसी को तिलक, लगन या चढ़ौना कहा जाता है। तिलक के समय या उसके बाद 'लग्नपत्री' लिखी जाती है और धान-हल्दी बँटती है। लग्नपत्री में वैवाहिक कार्यक्रम तथा अन्यान्य विधियों के मुहूर्त्त लिखे रहते हैं।

मँटकोर या माँटी-कोड़ाई—माँटी-कोड़ाई विवाह का प्रथम चरण है। इसी दिन से वर-वधू को उबटन लगाना शुरू किया जाता है। वर-वधू अपने-अपने घर संयम-नियम से रहते हैं। उस दिन स्त्रियाँ रात में घर के पास के कुएँ या जलाशय के किनारे मिट्टी कोड़ने जाती हैं। उसी मिट्टी को कलश के नीचे रखा जाता है तथा उसमें कुछ और मिट्टी मिलाकर लगन का चूल्हा बनाया जाता है, जिसपर लावा भूना जाता है। उसी लावे से विवाह के समय 'लाजा-हवन' होता है। माँटी कोड़ने के समय गीत गाये जाते हैं और मिट्टी कोड़नेवाली का नाम ले-लेकर गालियाँ भी गाई जाती हैं।

मँड़वा-छपरा—माँटी-कोड़ाई के बाद मंडप छाया जाता है। मंडप छाने में लगन के गीत गाये जाते हैं। रात में 'हल्दी-कलसा' होता है, जिसमें वर के घर वर को और कन्या के घर कन्या को हल्दी लगाई जाती है।

दाल-सेराई—दाल-सेराई का मतलब है—एक दिन का विश्राम। इस दिन स्त्रियाँ देवता को पूजती हैं और कुल के व्यवहार करती हैं।

घिउढारी—मातृपूजा के बाद यह विधि सम्पन्न की जाती है। इसमें गौरी-गणेश तथा सप्तमातृकाओं की पूजा करके सात कुश-पिंजुलियों पर अथवा नये बने हुए पीढ़े पर सिन्दूर की सात लम्बी पंक्तियाँ बनाकर वर और वधू के माता-पिता अपने-अपने घर मन्त्रोच्चार के साथ घी गिराते हैं। घी की यह धारा तीन जगह—गृहदेवता के पास, गृहदेवता के घर के बाहर और मंडप में गिराई जाती है। इसे पद्धतियों में *वसोर्धारा* या *घृतमातृका* का नाम दिया गया है। लेकिन, लौकिक विधि में तथा इस शास्त्रीय विधि में स्थानभेद के कारण कुछ अन्तर भी पाया जाता है। इस अवसर पर घिउढारी के गीत गाये जाते हैं। यह विधि लड़के या लड़की के विवाह के पहले तथा लड़के के जनेऊ के पहले होती है। परन्तु, जिस लड़के का जनेऊ विवाह के पहले ही हो चुका रहता है, उसके विवाह के पहले घिउढारी की विधि आवश्यक नहीं है।

संझा-पराती—वैवाहिक कार्यक्रम जबतक चलता रहता है, तबतक नित्य सुबह-शाम स्त्रियाँ गृहदेवता के पूजा-घर के दरवाजे पर पंक्तिबद्ध होकर देवताओं के गीत गाती हैं, इसे 'संझा-पराती' कहते हैं।

पहुरामा—प्रायः सभी जातियों में विवाह के पहले कुल-देवता की पूजा की जाती है, इसे कुछ जातियों में 'पहुरामा' कहते हैं।

नहछुर—बरात प्रस्थान करने के समय वर की कानी उँगली को नाइन द्वारा नहरनी से थोड़ा-सा काटकर उसके खून को एक मिट्टी के पात्र में जल के साथ मिलाकर

वधू के पास ले जाया जाता है। इससे स्नेह जोड़ने की रस्म पूरी की जाती है; पर कहीं-कहीं केवल नाखून काटे जाते हैं और स्नेह जोड़ने के लिए लड़के के नहान का पानी ले जाते हैं। कहीं-कहीं विवाह के दूसरे दिन यह विधि सम्पन्न की जाती है।

खारखूर-छोड़ाई—बरात-प्रस्थान के समय वर को धोबिन द्वारा नहलाने की एक विशेष विधि।

इमली-घोंटाई—यह विधि लड़की और लड़के दोनों के यहाँ होती है। इमली लड़की और लड़के का मामा घोंटाता है। इसमें मंडप में लगे हुए आम की टहनी से पाँच पत्ते लेकर मामा लड़की या लड़के के सिर पर से ओंइछ करके उसके मुँह के पास ले जाता है। वह उस पत्ते के पीछे के डंठल को काटकर पत्ते को नीचे गिरा देता/ती है। इस प्रकार, पाँचों पत्तों के डंठलों को काट लेने के बाद वह उसे माँ की अञ्जलि में गिरा देता/ती है। फिर मामा अपनी बहन की अञ्जलि में जल भर देता है, जिसे वह अपने होठों से छुलाकर गिरा देती है। ऐसा पाँच बार किया जाता है। फिर, माँ लड़के/लड़की को तथा अपनी बहन को रुपये और वस्त्रादि उपहार में देता है। लड़की के यहाँ बरात लगकर जब जनवासे चली जाती है, तब नहान के बाद इमली-घोंटाई होती है और लड़के के यहाँ बरात के प्रस्थान करने के पहले होती है। लड़की की माँ इस विधि में लड़की को विदा करने के प्रसंग के कारण रो पड़ती है। यह दृश्य बड़ा कारुणिक होता है। साथ-ही-साथ इस अवसर पर लड़की या लड़के की फुआ आदि स्त्रियाँ मामा के मुँह में दही लगाकर उसके साथ मजाक करती हैं और गालियाँ गाती हैं।

बरात-निमंत्रण—बरात के गाँव के बाहर पहुँचने पर एक पत्री देकर बरात को आमंत्रित करना।

द्वारपूजा विवाह के पहले बरात के दरवाजे लगने पर वर का विधिवत् मन्त्रोच्चारण-सहित स्वागत और पूजा की जाती है। इस अवसर पर स्त्रियाँ मंगल-गीत गाती हैं।

खरखुर चुनना—यह एक विशेष विधि है। इसमें वर को खर चुनना पड़ता है। दरवाजे से मड़वे तक खर छितरा दिया जाता है। दुलहा उसे चुनता जाता है।

धुआँ-पानी—यह बरात के जनवासे लौट जाने पर बरातियों के लिए एक घड़े में पानी और शरबत भेजने की विधि है। साथ ही, कुल और जाति की प्रथा और सामर्थ्य के अनुकूल बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू आदि भी भेजे जाते हैं।

कन्या-निरीक्षण—विवाह के पूर्व वर-पक्ष के लोगों के साथ वर के बड़े भाई यानी कन्या के जेठ कन्या के घर जाकर मंडप में कन्या को देखते हैं और उसे वस्त्र, आभूषणादि अर्पित करने की विधि सम्पन्न करते हैं। इसे 'गुरहत्थी' भी कहते हैं। इस अवसर पर गुरहत्थी के गीत गाये जाते हैं तथा वर के बड़े भाई के प्रति गालियाँ भी गाई जाती हैं।

अठमँगरा—आठ व्यक्तियों के द्वारा, जिनमें वर भी सम्मिलित रहता है—लगन के धान को ओखल में मूसल से कूटने की एक विधि। वर के हाथ में बाँधे जानेवाले कंगन में इसके कुछ चावलों को भी बाँध दिया जाता है।

लावा-छिंटाई—विवाह में लाजा-हवन के समय लड़की का भाई लावा छींटता है। भाँवर फिरने के पहले लावा छींटने की विधि सम्पन्न की जाती है। लड़की का भाई लावा सुपली में रखकर छींटता है।

भँउरी – लड़की का भाई दुलहे की गरदन में गमछा बाँधकर उसे सात बार मंडप की परिक्रमा कराता है। यह 'सप्तपदी' की शास्त्रीय विधि का ही अंग है।

सेनुरदान—वर द्वारा वधू के सिर में प्रथम बार विधिपूर्वक सिन्दूर देने की विधि। सन से सिन्दूर उठाकर वर वधू के सिर पर डालता है। 'सुमङ्गली' की शास्त्रीय विधि के बाद ही इसे सम्पन्न किया जाता है।

चुमावन—वर या कन्या दोनों को मण्डप में बैठा दिया जाता है और उसकी अंजलि में अरवा चावल या सोने की अँगूठी अथवा सोने की कोई चीज रख दी जाती है। उसमें से दोनों चुटकियों से चावल लेकर स्त्रियाँ वर या कन्या के दोनों पैरों, घुटनों और कंधों का स्पर्श करके अंत में ओंइँछ कर सिर पर गिरा देती हैं। यह क्रिया पाँच बार करके एक महिला हट जाती है और दूसरी-तीसरी बारी-बारी से आकर उसी प्रकार इस विधि को सम्पन्न करती है। इस विधि को केवल सधवा स्त्रियाँ, जो सम्बन्धिनी या पास-पड़ोस की होती हैं, सम्पन्न करती हैं। तिलक, हल्दी, सिन्दूर-दान, कोहबर में जाने के बाद तथा प्रायः अन्य प्रत्येक प्रमुख विधि के अन्त में यह विधि सम्पन्न की जाती है।

कोहबर—विवाह के बाद वर-वधू को एक घर में ले जाकर पूजन कराने की विधि। इसी घर में वर-वधू का प्रथम मिलन भी होता है। इसके महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इसके विषय में एक सचित्र विवरण दिया जा रहा है।[१]

महफिल—विवाह के बाद वर-कन्या के सभी सम्बन्धी एकत्र बैठते हैं और उत्सव-आनन्द मनाते हैं।

समधी-मिलन—महफिल में वर-कन्या के पिता और अभिभावक परस्पर एक-दूसरे का आलिंगन करते हैं। दोनों समधियों के इस मिलन को 'समधी-मिलन' कहते हैं।

पनफेरी – समधी-मिलन के समय दोनों समधी अपने हृदय के प्रतीक-स्वरूप एक-दूसरे को पान का अदल-बदल करते हैं।

मथझका—इस रस्म में विवाह के बाद लड़की को उपहार दिया जाता है। श्वशुर आदि बहू को मथझक्का के अवसर पर जेवर तथा कपड़े देते हैं।

डोमकछ—विवाह के लिए बरात के प्रस्थान कर जाने पर वर के घर पर स्त्रियों द्वारा उसी रात में गान के साथ-साथ नृत्य, संवाद और नाट्य का अभिनय करना।

दुआर-छेंकाई—विवाह के उपरांत वर के अपने घर लौटने पर बहन के द्वारा दान के लिए दरवाजा छेंका जाता है। दुआर-छेंकाई की विधि वधू के घर भी होती है। वहाँ कोहबर में जाते समय साली दरवाजा छेंकती है।

---

१. द्रष्टव्य : परिशिष्ट—'कोहबर और छठी'

दही-बड़ेरी—दुलहे के घर पर कोहबर में दुलहे का बड़ा भाई 'दही-बड़ेरी' का कृत्य करता है। इसमें दही के मथने को बड़ेरी, अर्थात् छाजन के बीच की लकड़ी में लगाना पड़ता है। कहीं-कहीं बरी पारने की भी विधि होती है और उस अवसर पर भी गीत गाये जाते हैं।

चउठारी—विवाह के बाद चौथे दिन की एक विशेष विधि। इस दिन हल के पालो पर वर-वधू को खड़ा करके स्नान कराया जाता है तथा ढकनी आदि फोड़ने की विधि होती है।

दसहरा—विवाह के बाद दसवें दिन की एक विशेष विधि। इस दिन वैवाहिक कार्यक्रम समाप्त हो जाता है।

पुछारी—इसे कहीं-कहीं कलेवा या बहुरसत भी कहते हैं। वधू के वर-गृह चले जाने पर कन्या के माता-पिता की ओर से कुशल-क्षेम की जिज्ञासा के लिए भेजी गई स्वागत-सामग्री। इसमें वधू का छोटा भाई या कोई दूसरा सम्बन्धी साथ जाता है। वधू की ओर से जाने पर बदले में वर की ओर से भी पुछारी भेजी जाती है।

संस्कारों का लोकतात्त्विक रूप

इन विविध विधि-विधानों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि गिनती या महत्त्व में संस्कारों का लोक-पक्ष आज उनके शास्त्रीय पक्ष से कम प्रभावशाली नहीं है। शास्त्रीय पक्ष तो पुरोहित द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। वेदों तथा स्मृतियों या धर्मशास्त्रों में निरूपित विधि के अनुसार पुरोहित संस्कारों में विविध मंत्र-पाठ और यज्ञानुष्ठान कराते हैं। पर, आज शास्त्रीय क्षेत्र की विविध विधियों में भी अनेक लोक-तत्त्व सम्मिलित हो गये हैं। सामान्यतः इस पौरोहित्य-पक्ष में पुरुष की प्रधानता रहती है। परन्तु, जैसा कि आपस्तम्ब-धर्मसूत्र में कहा गया है, उनका लोकतात्त्विक पक्ष मुख्यतः स्त्रियों द्वारा ही सम्पन्न होता है। इसका विधि-विधान पौरोहित्य-कर्म से कहीं अधिक जटिल होता है। इसी विधि-विधान के अन्तर्गत संस्कारविषयक गीत आते हैं। ये गीत स्त्रियों द्वारा ही गाये जाते हैं।

सामान्यतः, देखने में तो लगता है कि अन्तिम संस्कार (अर्थात् मृत्यु-सम्बन्धी संस्कार) को छोड़कर समस्त संस्कारों के गीत उत्सव का उमंगमय वातावरण प्रस्तुत करने के लिए ही गाये जाते हैं। इन गीतों से वाद्यों के साथ मंगल-गान गूँज उठते हैं, जिससे घर ही नहीं, पास-पड़ोस भी आनन्द का अनुभव करते हैं।

यह भी ध्यान देने की बात है कि यह मंगल-गान केवल ऊपरी मंगल-गान नहीं। यह स्वतः अनुष्ठान का ही एक अंग है—समस्त अनुष्ठान के व्यक्तित्व का एक पहलू। मंगल-गान आदिकाल से ही मनुष्य के जीवन के अभिन्न अंग हैं। अपने देश में सभी गृह-वार्त्ताओं के अनुसार संस्कार के अनुष्ठानों के बहुत-से गीतों में कुछ तो अवश्य ऐसे होते हैं, जिन्हें गाना अनिवार्य होता है। चाहे जैसे भी हो, मन्त्रोच्चार के समान ही उन्हें तो गाना पड़ता है। उन्हें गाने से मंगल की भावना जाग्रत् होती है, और उसके माहात्म्य-रूप में सुख और समृद्धि मिलने का विश्वास होता है। उन्हें न गाने से अमंगल और अनिष्ट की भावना पैदा होती है।

इन गीतों में मंत्र-जैसा ही भाव और प्रभाव निहित रहता है। वस्तुतः, ये गीत स्त्रियों के घरू अनुष्ठानों के लिए मंत्र ही हैं। उसी आस्था से गीत गाये जाते हैं।

धर्मशास्त्रों के द्वारा वर्णित षोडश संस्कारों में लोक ने केवल कुछ संस्कारों को ही विशेष महत्त्व दिया है। इनमें से तीन संस्कारों को सर्वोपरि माना गया है। ये हैं—१. जन्म, २. विवाह तथा ३. मृत्यु। जैसा ऊपर संकेत किया गया है, मृत्यु-संस्कार अनुष्ठान की दृष्टि से शेष दो से कम महत्त्वपूर्ण नहीं[1]; किन्तु इस संस्कार के साथ शोक का भाव इतना गहरा रहता है कि 'गीत' सामान्यतः प्रस्फुटित नहीं हो पाता। गृह्यसूत्र, धर्मशास्त्र और स्मृति-ग्रन्थों में भी अन्त्येष्टि-संस्कार को भी सामान्यतः छोड़ ही दिया गया है। गौतम के अड़तालीस संस्कारों की लम्बी सूची में भी इसे स्थान नहीं मिला है। कदाचित्, इसलिए कि यह अशुभ है। फिर भी, मनु, याज्ञवल्क्य और जातूकर्ण्य ने इसे भी संस्कारों में सम्मिलित किया है। वैतरणीदान, चितारोहण, अग्निसंस्कार, दशगात्र, एकोद्दिष्ट, पार्वण और सपिण्डी-करण, ये सभी अन्त्येष्टि-क्रिया की विधियाँ समंत्रक सम्पन्न होती हैं। परन्तु मृत्यु-संस्कार से सम्बद्ध लोकगीत बहुत कम मिलते हैं। हाँ, मृत्यु और दशगात्र-एकोद्दिष्ट के दिन स्त्रियाँ फूट-फूटकर रोती हैं और वह रोना कुछ उद्‌गारों के साथ लययुक्त होता है, फिर भी उसे गीत तो नहीं कह सकते हैं। हाँ, पंजाब आदि कुछ पश्चिमी भागों में मृत्यु के बाद दस दिनों तक स्यापा गाने का प्रचलन अवश्य है। वहाँ पेशेवर स्त्रियाँ मृत व्यक्ति के संबंधी के घर के आगे या चौपाल में गोल घेरा बनाकर छाती और जाँघों पर एक साथ लयात्मक ढंग से थाप लगाती हुई मृत व्यक्ति का नाम लेकर गाती हैं। बिहार में मृत्यु से सम्बद्ध गीत केवल कुछ विशेष वर्गों में ही मिलते हैं और, ये गीत भी उस अर्थ में लोकगीत नहीं कहे जा सकते, जिस अर्थ में अन्य संस्कार-संबंधी गीत हैं। शिवनारायणी सम्प्रदाय के चमारों में मृत्यु के उपरान्त जबतक शवयात्रा की तैयारी होती रहती है, तबतक सम्मिलित स्वर में निर्गुण के गीत गाये जाते हैं। उनके यहाँ प्रायः शिवनारायणकृत 'संतविलास' नामक पुस्तक के गीत गाये जाते हैं और उनके साथ प्रायः बाजे भी बजाये जाते हैं। शवयात्रा इसी गान और बाजों से प्रारंभ की जाती है। इस संग्रह में मृत्यु-संस्कार से सम्बद्ध जो गीत दिये गये हैं, वे संतों के ही हैं। कबीर का नाम और छाप प्रायः प्रत्येक गीत में है और निर्वेद ही इनका मुख्य स्थायी भाव है। वैकुण्ठ इन गीतों में ससुराल का प्रतीक है। जान पड़ता है, जैसे ये गीत आत्मा की ही ओर से गाये जाते हैं। आत्मा कहती है कि हे सखी, अब मैं फिर मनुष्य का शरीर नहीं धारण करूँगी।

परन्तु, इन मृत्यु-गीतों के अतिरिक्त लोक-संस्कारों या समस्त घरू वार्त्ता या घरू अनुष्ठान इसी उद्देश्य से किये जाते हैं कि जीवन में आनेवाले अमंगलों, संकटों और दुःखों का निवारण हो। मृत्यु भी तो एक संकट है ही—एक भयंकर संकट। इसका भय आरम्भ से ही व्याप्त रहता है। अतः, मृत्यु के साथ परलोक-कल्याण की ओर दृष्टि जाती है।

---

१. वेदों में मृत्यु-सम्बन्धी कुछ ऋचाएँ आई हैं; जैसे, ऋग्वेद १०।१४।७ तथा १०।१४।६।

जन्म और विवाह ये दो अवसर स्थूल रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं—वस्तुतः एक कार्य है तो दूसरा कारण। अतः, इन दोनों अवसरों पर लोक-मानस विविध सुख और आनन्द के भावों से ही आन्दोलित नहीं होता, विविध आशंकाओं और भयों से भी दोलायमान होता है—आनन्द वर्त्तमान के लिए, आशंका और भय भविष्य के लिए। अतः, इन दोनों अनुष्ठानों के आनन्द-कृत्यों को लोक-मानस ने साथ-ही-साथ भविष्य की आशंकाओं को प्रतिबद्ध करने के अनुष्ठान के रूप में भी ढाल दिया है।

यही कारण है कि संस्कार-विषयक इन लोकगीतों की पृष्ठभूमि विवेक-चेतन-पूर्ण मानस (Pre-conscious Psyche) से संयुक्त रहती है। इस मनःस्थिति के जो रूप हमें मिलते हैं, वे ये हैं—

१. टुनिहाई मानस – (Magic Psyche) दो प्रकार—
   (अ) सहानुभूतिक (Sympathetic)
   (आ) अंगांगी (Contigious)

२. प्रहेलिका (Riddle)

इस दृष्टि से देखने पर 'मंगल-गान' की भावना स्वयं एक टोना है। जिसका सिद्धान्त होगा—'आज यदि आनन्द-मंगल होगा, तो इस अवसर की परम्परा में वह सदा ही बना रहेगा।' यह सामान्य सहानुभूतिक टोने का ही तो रूपान्तर है।

इन गीतों में ऐसे अवसरों पर किये जानेवाले कृत्यों, अनुष्ठानों तथा नेगों का उल्लेख रहता है। वह उल्लेख या गणना केवल इसीलिए इन गीतों में नहीं कराई जाती कि शुभ अवसर पर किये जानेवाले अनुष्ठानों का स्मरण बना रहे, वरन् इसमें भी टोने का कुछ भाव रहता है। अपने पूर्वजों ने जो अनुष्ठान किये, वे ही मानसिक बिम्ब के द्वारा ठीक वैसे ही किये जाते हैं, और उस प्रकार पूर्वज-परम्परा से सम्बन्ध जोड़कर पूर्वजों के पुण्य-प्रताप के फल की भी आकांक्षा की जाती है।

किसी-किसी गीत में एक ही नेग या आचार का उल्लेख होता है, और उसे करने के लिए एक के बाद एक नातेदार का नाम लेकर उसे दुहराया जाता है। यह अंगांगी टोने का ही एक रूप है। नाम नामी से अभिन्न है। नाम उस व्यक्ति को वश में करने का एक मन्त्र भी है। इस प्रकार नाम लेकर नामी से भी मनसा वह अनुष्ठान करा लिया जाता है। वह व्यक्ति अपने मन में कैसा ही भाव क्यों न रखता हो, गीत के आह्वान से उसका योग प्राप्त कर लिया जाता है। इस अंगांगी प्रक्रिया में उसके सम्मिलित रहने का भाव निश्चय ही लक्षित होता है।

इसी प्रकार, नेग देने-लेने में एक झगड़ा और खींच-तान का वर्णन गीतों में आता है। ननद भाभी से झगड़ रही है कि मैं नेग में बेसर लूँगी। भाभी नहीं दे रही है। घर के सब लोग उसकी खुशामद कर रहे हैं। पर, भाभी कब देने की। उसके मन में गाँठ-सी बँध गई है। वह नहीं देगी, नहीं देगी। हठ कर रही है। आखिर ननद कुछ ऐसी बात बोल देती है कि भाभी को विवश होकर उसे देना ही पड़ता है। इस प्रकार, अन्त में सब उलझनें सुलझ जाती हैं। ननद प्रसन्न, भाभी प्रसन्न, सभी प्रसन्न।

प्रायः तो ऐसा होता है कि बेचारी ननद फिर माँगी हुई चीज को लेती भी नहीं। लगता है कि वह बे-बात का झगड़ा ठान बैठी थी। यों कभी-कभी नेग स्वीकार भी कर लेती है। पर, चाहे जो भी हो, यह समस्त रूप 'प्रहेलिका' का-सा लगता है। किसी बात पर अड़ जाने से गाँठ-सी जो पड़ी दिखाई देती है, यही प्रहेलिका की जटिलता है। बहुत-से यत्न किये जाते हैं। सब विफल रहते हैं। एक के सामान्य प्रयत्न से गाँठ खुल जाती है। सिर्फ गाँठ ही तो थी, वह खुल गई—प्रहेलिका बूझ ली गई। यह प्रहेलिका जिस आनुष्ठानिक अर्थ में पहले आती थी, आज भी आती है। इसके मानसिक रूप की सामान्य मूल भावना यही है कि गृह-सम्बन्धों में जो असामान्य और दुर्गम स्थितियाँ भविष्य में कभी आ पड़ें, वे इस गाँठ के खुलने की भाँति ही आगे भी हँसी-खुशी के साथ खुल जायँ।

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि ये लोक-गीत संस्कारों के ही अनिवार्य अंग नहीं, वरन् संस्कारों की ही भाँति जीवन के भी अनिवार्य अंग हैं। यही कारण है कि ये सभी क्षेत्रों और जनपदों में प्रचलित मिलते हैं।

इस संग्रह के मगही संस्कार-गीत निम्नलिखित संस्कारों से सम्बद्ध हैं —

१. जन्म-सम्बन्धी,
२. मुंडन-सम्बन्धी,
३. जनेऊ-सम्बन्धी,
४. विवाह-सम्बन्धी और
५. कुछ मृत्यु-सम्बन्धी भी।

यह स्पष्ट है कि इन सभी गीतों में जन्म और विवाह-विषयक गीत सबसे अधिक हैं। इन दोनों संस्कारों के विधि-विधान भी अनेक हैं और इन सबके अपने-अपने विशेष गीत हैं। जैसा ऊपर बताया जा चुका है, ये दोनों संस्कार ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और सबसे अधिक मार्मिक भावनाओं से संपृक्त हैं। अतः, ऐसे अवसरों पर भावों का स्रोत फूट पड़ता है, जो अपनी अभिव्यक्ति के लिए गीतों के रूप धारण कर लेते हैं। किन्तु, साथ-ही-साथ ये संस्कार जटिल भी बहुत होते हैं। इनमें अनेक अनुष्ठान होते हैं, और ये कई-कई दिन तक चलते रहते हैं।

जन्म को ही लिया जाय, तो विदित होगा कि इस उत्सव का आरम्भ एक प्रकार से प्रसव-पीडा के अवसर से ही होता है। प्रसव-पीडा, पुत्र-पुत्री-जन्म, नार-काटना, प्रथम स्नान, नामकरण आदि के कई प्रसंग इस उत्सव में आते हैं। घरू वार्त्ता में तो स्त्रियों के लिए और भी कितने ही टोने-टोटके-जैसे अनुष्ठान आते हैं।

जन्म के अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं, वे सोहर कहलाते हैं। वस्तुतः, जन्म से सम्बन्ध रखनेवाले प्रायः सभी गीत *सोहर* ही कहलाते हैं।

जन्मोत्सव के गीतों में *सामान्य* और *विशेष* दो प्रकार मिलते हैं। *सामान्य* में जिन विषयों का समावेश है, वे हैं—(१) प्रसव-पीडा और तद्विषयक मनोभाव, (२) पुत्र-जन्म का आनन्द और तद्विषयक मनोभाव, (३) जन्म के अवसर पर नेग आदि के लिए ननद, डगरिन आदि से झगड़ा, (४) आनन्द-बधाई आदि। *विशेष* कोटि के गीत में राम या कृष्ण, सीता या रुक्मिणी को आश्रित कर जन्म-सम्बन्धी कोई बात कही गई है। पुत्र की

कामना भी गीतों का विषय बनी है। इस विषय का एक गीत विशेष ध्यान आकृष्ट
करता है। वह रुक्मिणी की सन्तान कामना-सम्बन्धी है। रुक्मिणी के भाग्य में सन्तान
नहीं लिखी थी। सन्तान की चाह में वे गंगा, विष्णु, शिव सभी के पास जाती हैं। एक के
बाद एक देवता अपनी असमर्थता प्रकट करता है, और दूसरे देवता का नाम बता देता है
कि वह कदाचित् पुत्र दे सके, तो भले ही दे सके। इस प्रकार, अन्त में शिव के बताये
ब्रह्माजी के पास रुक्मिणीजी पहुँचीं। भाग्य को उलट-पुलटकर देखा, तो बताया कि
भाग्य में सन्तान या सम्पत्ति लिखी ही नहीं। किन्तु, फिर भी ब्रह्माजी ने जन्म लेने के लिए
बालक को बुलाया और अपनी जाँघ पर बैठाकर उससे कहा कि जाओ, छठी तक के लिए
पृथ्वी पर चले जाओ।

बालक ने कहा—नहीं मुझे दुःख होगा। माँ को, पिता को। सबको दुःख होगा।
मैं नहीं जाऊँगा।

फिर ब्रह्माजी ने उसे बुलाया। जाँघ पर विठाया। कहा—अच्छा विवाह तक रहना
फिर लौट आना।

बालक ने फिर भी अनिच्छा प्रकट की। अब तो दुःखी होनेवालों की मण्डली में
गृहिणी की संख्या और बढ़ गई। दुःख बढ़ ही गया।

बालक को ब्रह्माजी ने फिर बुलाया। जाँघ पर विठाया और कहा—जाओ, तुम्हें
अजर-अमर किया। तुम अवतार लो।

व्रज में तथा अन्यत्र पूरब में भी एक बाँझ की या पुत्राभिलाषिणी स्त्री की कुछ
ऐसी ही करुण कथा मिलती है। वह तो गंगाजी में डूबने को प्रस्तुत है। परन्तु, उसमें
और इस मगही गीत में यह अन्तर है कि इसमें केवल अपुत्रत्व की वेदना और पुत्र-
कामना की ही भावना नहीं है। यह मूलतः चिरंजीवत्व का आशीर्वाद-मंत्र है। इसमें क्रमशः
सभी देवताओं का बहाने से आवाहन है, और अन्त में 'ब्रह्मा और बालक' के कथानक से
उसे अमरत्व अथवा चिरंजीवत्व का आशीर्वाद दिलाया गया है। जैसे, माता की आतुर
आत्मा पुत्र की याचना लेकर देवयात्रा को चल पड़ी है और फल में पुत्र ही नहीं, पुत्र के
लिए दीर्घायुष्य का वरदान भी लेकर लौटी है।

गीत का समस्त वातावरण जिन भावनाओं से स्पन्दित है, वह सहज मानवी है और
सहज ही दिव्य भी। गीत का प्रत्येक शब्द मंत्र-शक्ति से परिपूर्ण प्रतीत होता है।
बालक को अवतरित होते देख जो माँ इस गीत के शब्दों को सुनेगी, वह मन में कितनी न
आश्वस्त होगी। लोक-मानस की कल्याण-भूमि का समस्त वातावरण यहाँ इस गीत के
द्वारा प्रस्फुरित हो रहा है। 'जीवेम शरदः शतम्' का वैदिक आश्वासन कैसी अद्भुत
आस्था के साथ इसमें प्रतिध्वनित हो रहा है।

इस समस्त गीत का सम्बन्ध रुक्मिणी से जोड़ा गया है। पर, कृष्ण-पत्नी
रुक्मिणी से ही इसका सम्बन्ध है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः, रुक्मिणी के सम्बन्ध
में इसमें और कोई ऐसे संकेत नहीं, जिनसे कृष्ण से सम्बन्ध विदित हो। वह देवताओं के
पास पहुँच सकती है, यह अवश्य प्रतीत होता है। यहाँ वस्तुतः 'रुक्मिणी' का नाममात्र है,
पर यह साधारणीकृत रूप में किसी भी स्त्री का नाम हो सकता है। इसमें एक महत्त्वपूर्ण

लोक-मानसिकता झलक रही है। लोक-मानस सामान्य-विशेष में कोई अन्तर नहीं करना चाहता। अतः, सामान्य को तो विशेष रूप दे दिया करता है, और विशेष को सामान्य। उक्त गीत में समस्त वस्तु किसी भी पुत्राकांक्षिणी स्त्री के विषय में कही जा सकती है। अतः, वस्तु सामान्य है, ऐसा मानना होगा। इस वस्तु को रुक्मिणी से संयुक्त कर दिया गया—इससे सामान्य वस्तु को इस नाम के कारण वैशिष्ट्य मिल गया। अब जहाँ वस्तु को वैशिष्ट्य मिला, वहीं वैशिष्ट्यबोधक 'रुक्मिणी' सामान्य हो गई, सामान्य वस्तु के कारण। गीतों में राम-कृष्ण, कौसल्या, यशोदा तथा ऐसे अन्य विशिष्ट, ख्यातवृत्त और अलौकिक नामों के साथ इस प्रकार का प्रयोग मिलता है।

ऐसे दिव्य, अदिव्य या दिव्यादिव्य नामों के प्रयोग के अतिरिक्त लोक-गीतों में नाम-प्रयोग की और दो प्रक्रियाएँ भी मिलती हैं —

(१) जाति-अर्थ की सूचना देनेवाले नाम। जैसे दुलहिन, बहू, जच्चा, चाचा, बाबा, बाबू, भइया, भउजी[1] आदि।

(२) नाते-रिश्तेदारों के वास्तविक नाम —पति का, पिता का, भाई का, बहन का वास्तविक नाम और जाति-अर्थ रखनेवाले नाम-शब्दों का प्रयोग इन गीतों में तो सामान्य लगता है; क्योंकि इस सामान्य भूमि के कारण ही ये सर्वत्र समान रूप से जनपद-भर में प्रचलित मिलते हैं। पर, इन सबका विधान जन्म-सम्बन्धी विविध भावों, कृत्यों तथा अनुष्ठानों के साथ मिलकर भी सामान्य है; क्योंकि ये अनुष्ठान भी जनपद में प्रायः समान ही हैं। इसी सामान्य-विधान में विशेष का संयोजन लोक-मेधा की करामात है। जब गीत गाया जाता है, तब नाते-रिश्तेवालों के सूचक सामान्य नाम आते हैं। उस समय लगता है कि उसी घर के चाचा, बाबा, देवर आदि अभिप्रेत हैं।

इस संग्रह के गीतों में कवन शब्द का जहाँ व्यवहार हुआ है, वहाँ गाते समय घर के सभी नाते-रिश्तेदारों के वास्तविक नाम ले-लेकर ये गाये जाते हैं। इस प्रकार, एक ही गीत समाज के प्रत्येक घर और परिवार का अपना खास गीत बन जाता है। एक ही दर्पण में प्रत्येक अपनी छवि देखकर प्रमुदित हो जाता है।

इसी के साथ इन लोकगीतों में एक विशेष प्रकार की भूमिका भी प्रस्तुत की जाती है, एक सोहर की इस भूमिका को देखिए—

कहमा ही लेमुआ के रोपब, कहमा अनार रोपब हो;
कहमा ही रोपब नौरंगिया, से देखि देखि जी उभरे हो।

नींबू, अनार, नारंगी। यह भूमिका वस्तुतः गीत में प्रतीक-विधान की नींव है। क्योंकि नींबू आँगन में, अनार खिड़की के पास, तथा नारंगी दरवाजे पर लगाई गई, और जब जच्चा ने नींबू लटकते देखे, अनार पके देखे और गोल-गोल नारंगियाँ देखीं, तो प्रसव-पीडा से व्याकुल हो उठी। फल-वृक्षों का रोपना, उनका विकसित होकर फूलना और

---

१. भउजी कउचो महलिया कुछौ काम, न हमरा बोलावल जी।
बबुआ, भइया जी के पास न हँकरिया, त दरदे बेयाकुल जी॥

फलना—इन सभी में प्रतीक हैं, अन्यथा फलों को देखकर जच्चा प्रसव-पीडा से क्यों व्याकुल हो उठी। यह प्रतीक-विधान कितना सहज, कितना अर्थ-स्फूर्जित कितना मनोरम और कितना मार्मिक है ! इसमें व्यंग्यार्थ की महिमा पराकाष्ठा पर पहुँची हुई है।

लोक-मेधा एक ही साथ एक से अधिक अर्थ के द्योतन का सामर्थ्य पैदा करने के लिए कभी-कभी कैसे अद्भुत रूप-विधान करती है, यह देखकर आश्चर्य होता है। उक्त गीत में ही एक शब्द आया है 'सुगही'। इसकी भाषा-वैज्ञानिक व्युत्पत्ति यों की जायगी—सुगही < सुगृहिणी। किन्तु यह सुगही लोक-क्षेत्र में आगे सुगही > सुग्गी भी बन जाता है। यह रूप-विधान सुगृहिणी के साथ 'शुकी' का अर्थ देकर एक और विशेष भाव भी उन्मेषित कर देता है।

जन्म के उपरान्त 'मुण्डन' का महत्त्व मानना पड़ेगा। मुण्डन के समय तक बालक के बाल नहीं कटवाये जाते। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं, उनमें बालक के बालों का मुण्डन कराने की इच्छा, मुण्डन के समय की माता-पिता की अभिलाषा और इस अवसर पर ब्राह्मणों, नाइयों, नाते-रिश्तेदारों को प्रसन्न करने के संकल्प की अभिव्यक्ति होती है। किसको क्या देकर प्रसन्न किया जाय। ब्राह्मण कुछ माँगता है, नाई कुछ माँगता है, कुम्हार कुछ माँगता है और बढ़ई कुछ माँगता है। ननद-भौजाई के मान-मनौवन का वर्णन इन गीतों में भी पाया जाता है। इन सभी का कुछ-न-कुछ हठ है। इन सबका उल्लेख एक मोदमयी भावना के साथ इन गीतों में मिलता है।

मुण्डन के उपरांत 'जनेऊ' का अवसर आता है। जनेऊ 'यज्ञोपवीत' का ही नाम है। यह भी शिष्ट-वर्ग में एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। इसी से बालक द्विज बनता है।

जनेऊ के गीतों में जिन भावों को सँजोया गया है, वे मुख्यतः ये हैं—

१. बालक बाबा को जनेऊ पहने देख, उनसे उनका जनेऊ माँगता है। इसमें बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति झलकती है। साथ ही उसे मनसा जनेऊ के लिए तैयार कराया जाता है।

२. बाबा कहते हैं, यह जनेऊ पुराना हो गया है, तुम्हें तो धूमधाम के साथ मैं नया जनेऊ दिलाऊँगा।

३. नाऊ बुलाया जाता है बाल मूँड़ने के लिए, कुम्हार बुलाया जाता है कलश लाने के लिए और पण्डित बुलाये जाते हैं जनेऊ देने के लिए।

४. पिता या बाबा मूँज काटने जाते हैं; क्योंकि जनेऊ के लिए मूँज की आवश्यकता है। पलास काटने जाते हैं; क्योंकि पलास का दण्ड वह धारण करेगा। फिर, मृग मारेंगे; क्योंकि मृगछाला भी तो चाहिए।

५. बालक जनेऊ के लिए जल्दी मचाता है।

इस प्रकार, अत्यन्त सीधे-सादे शब्दों में, भावों से प्लावित गीत 'जनेऊ' वा यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर गाये जाते हैं। इन गीतों से संस्कार का रूप खड़ा होता है। किन वस्तुओं की आवश्यकता है, यह भी ज्ञात होता है।और किसकी कैसी भावना है, यह भी प्रकट होता है।

मुण्डन और जनेऊ एक प्रकार से सामान्य संस्कार हैं, और सरल संस्कार हैं। इनमें विशेष जटिलताएँ लोक-पक्ष की दृष्टि से नहीं। फिर भी, मुण्डन के साथ एक टोने-टोटके की भावना किसी सीमा तक लगी रहती है; क्योंकि बालों का सम्बन्ध जन्म के क्षण से लगा रहता है। जन्म से मुण्डन तक सिर के बाल ऐसे ही बने रहते हैं, वस्तुतः वे जन्मकालीन ही होते हैं। इसलिए, इस अवसर पर एक विशिष्ट जान्मिक मानसिकता उद्भूत हो उठती है, किन्तु जनेऊ में ऐसी कोई भावना नहीं रहती है।

इनके उपरान्त विवाह-संस्कार पुनः जटिलताओं को लेकर प्रस्तुत होता है। प्रत्येक पद उमंग और आशंका से परिपूर्ण हो उठता है। अतः, एक विलक्षण मानसिकता से वातावरण परिव्याप्त हो जाता है। उमंग और आनन्द-मंगल तो मानव-दम्पति की साधना की सफलता की दृष्टि से होते हैं। 'आशंका' का भाव प्रत्येक कृत्य को विधिपूर्वक पूर्ण करने में विद्यमान रहता है। इन कृत्यों में कोई भी ऐसी बात न हो, जो अशुभ शकुन मानी जाय; क्योंकि विवाह से जो जीवन का नया रसायन सिद्ध होना है, उसमें आज की किसी त्रुटि से भविष्य में कहीं कोई अनिष्ट न हो, यह प्रबल कामना रहती है। अनुष्ठान-संपादन में यदि अशुभ शकुन होंगे, तो वे किसी भावी अनिष्ट की ही सूचना देंगे।

यह निश्चय है कि कोई भी अनिष्ट मनुष्य के किये नहीं होता। तुलसी की यह चौपाई लोक-मनोवृत्ति का यथार्थ चित्र है—'हानि लाभ जीवन मरन, जस अपजस विधि हाथ।' लोक-मानस 'विधि' की व्याख्या में समस्त प्रकार के देवी-देवताओं को स्थान देता है। अतः, इस अवसर पर वह दोनों प्रकार के कार्य करता है--प्रतिबंधक कार्य भी और प्रसन्नता-सम्पादक कार्य भी। प्रतिबन्धक कार्यों में तो देवी-देवताओं को कीलने या बाँधने के अनुष्ठान आते हैं। अऊत-पितर, भूत-प्रेत, हवा आदि सभी को बाँध दिया जाता है, जिससे कि वे इस शुभ कार्य में बाधा न डालें। उधर देवताओं की स्तुति भी मंगलाचरण के रूप में की जाती है। यह मंगलाचरण संस्कृत-नाटककारों की शैली में होते हैं और विवाह से सम्बद्ध किसी-न-किसी बात के संकेत से संयुक्त रहते हैं।

एक गीत में उल्लेख है कि गौरा पर्वतों पर फूल चुनने गईं। वहाँ एक जटाजूटधारी मिला। उसने कुछ कहा, तो तुनककर गौरा घर आई। क्रोध से फूल छितरा दिये। माँ ने पूछा--क्या बात हुई।

गौरा ने कहा—एक तपसी मिला था। माँ ने पूछा, तो उसने क्या कहा—

गौरा बोली—*लाज की बतिया हे अम्मा कहलो न जाय ,*
भउजी जे रहित हे अम्मा, कहिति समुझाय।

—वह कैसा था ?

बड़े बड़े जट्टा हे अम्मा, सूप अइसन दाढ़ी ,
ओही तपसिया हे अम्मा, हमरो डेरावे।

माँने कहा—पगली—*ओहो तपसिया हे गउरा पूरुख तोहार।*

शिव और पार्वती का स्मरण तथा उनको श्रद्धादान तो इस एक प्रकार के मंगलाचरण में है ही—साथ ही विवाहानुकूल दाम्पत्य-भाव का संकेत भी है। इसके

अतिरिक्त भावाभिभूत करने के लिए इसमें बहुत कुछ है। यथार्थ स्वभावोक्ति इसमें कितनी मोहक है—'बड़े-बड़े जट्टा हे अम्मा, सूप अइसन दाढ़ी।' सूप-सी दाढ़ी में क्या है? पार्वतीजी हँसके कह रही हैं या क्रोध में व्यंग्य कर रही हैं या कोरा मजाक? प्रशंसा कर रही हैं या निन्दा?—'ओही तपसिया है अम्मा, हमरो डेरावे।' इस प्रकार के मंगलाचरण के गीतों के साथ-ही-साथ कितने ही मंगल-परिपाटी के गीत, जैसे सीतामंगल या जानकी-मंगल के गीत भी हैं। विवाह-कर्म के साथ तो जन्म के समय से भी अधिक अनुष्ठान होते हैं। उन सबके लिए कुछ-न-कुछ गीत रहते ही हैं। इन सभी गीतों में इतना भाव-वैविध्य और विभिन्न शैलियों की इतनी कोमल संयोजना है कि मुग्ध होते ही बनता है। प्रत्येक गीत तरल राग में घुल जानेवाली मिसरी की डली होता है, और जिन परिस्थितियों में गाया जाता है, उनके साथ मिल जाने पर तो लगता है, जैसे उससे अधिक मधुर और अधिक प्रभाववाला गीत अन्यत्र मिल ही नहीं सकता। भारतीय जीवन की अन्तरंग-धारा का ज्ञान इन गीतों से होता है। इनसे जीवन की मूलभूमि से मानव-मन का संपर्क होता है। ये मगही गीत अपने जनपद के लिए तो वरदान हैं ही, मानव-जीवन के रसास्वाद के लिए भी कम मूल्यवान् नहीं हैं।

जैसा ऊपर संकेतित किया जा चुका है, मृत्यु-गीत की स्थिति जन्म, मुण्डन और विवाह के गीतों से भिन्न है। विराग के लिए जिस श्मशान-ज्ञान की चर्चा की जाती है, मृत्यु-गीतों में वही झलकता है। ये गीत जीवन्मुक्ति-विवेक के गीत कहे जा सकते हैं। इस प्रकार, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों पुरुषार्थ जन्म से मृत्यु-पर्यन्त तक के संस्कारों से सम्बद्ध इन मगही गीतों में प्रतिफलित हैं।

मुस्लिम-संस्कार

इस संग्रह में मुसलमानों में प्रचलित संस्कारों के गीत भी दिये गये हैं। ये मुख्यतः विवाह-गीत हैं। इन गीतों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दू विवाह-संस्कार का मूलरूप मुस्लिम विवाह-प्रथा से भिन्न होते हुए भी लोकपक्ष की कई बातों में अभिन्न है। कोहबर आदि के कई रीति-रिवाज दोनों में एक-से ही हैं और विवाह के अवसर पर हिन्दुओं की तरह ही उनके यहाँ भी स्त्रियाँ मधुर स्वर में जोग, टोना, कोहबर; उबटन आदि के सरस गीत गाकर उत्सव के आनंद में चार चाँद लगा देती हैं। इसी प्रकार मुस्लिम-परिवारों में जैसे सहाना-सेहरा आदि गाये जाते हैं, वैसे हिन्दू-घरों में भी। हिन्दू-घरों के समान ही मुस्लिम-घरों में भी दुलहा, दुलहिन के वही सम्बन्ध, वही नैहर-ससुराल, वही ननद-भाभी, बाबा, नाना, नानी आदि के रिश्ते-नाते, वही साज-सिंगार, तेल-उबटन आदि के वही नेगचार, वही जेवर, टीका, माला, हार, मोती, बेसर, वही पहुँची आदि, वही हास-परिहास इन गीतों के भव्य भावों के आधार हैं। हिन्दू-घरों में जैसे मुण्डन का उत्सव होता है, वैसे ही मुस्लिम-परिवारों में भी अकीका की रस्म कहीं-कहीं होती है। गोद-भराई, छट्ठी, नाम रखने और नहान की रस्में भी मुस्लिम-परिवारों में खुशी के साथ मनाई जाती हैं।

इन मुस्लिम-गीतों में कई गीत ऐसे हैं, जो हिन्दू-परिवारों में भी समान रूप से प्रचलित हैं। देहातों में इन गीतों के राग भी हिन्दू-घरों के रागों से बिलकुल मिलते-जुलते हैं, पर शहरों में उनपर अधिक नागरिकता तथा फिल्मी गानों का असर पड़ता जा रहा है। इन गीतों की भाषा प्रायः मिश्रित पाई जाती है। इनमें मगही के अलावा अवधी और खड़ी बोली का प्रचुर मिश्रण रहता है। मुस्लिम-घरों में जो बोली बोली जाती है, वह भी मिश्रित रूप में ही पाई जाती है।

मुसलमानों की शादी में लड़की-पक्षवाले को कई तरह की सुविधाएँ होती हैं। जब दोनों पक्षों में शादी की बातचीत पक्की हो जाती है, तब निश्चित तिथि पर लड़कीवाले के यहाँ बरात आती है। इस अवसर पर काजी की उपस्थिति आवश्यक है। निकाह की विधि काजीजी के द्वारा ही सम्पन्न होती है। लड़की-पक्षवाले अपनी ओर से एक वकील तथा दो गवाह नियुक्त करते हैं।

दैनमेहर इनके यहाँ बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। निकाह के समय वर को वधू के लिए रुपये स्वीकृत करने पड़ते हैं—इसे ही 'दैनमेहर' कहते हैं। यह रकम लड़कीवाले ही निर्धारित करते हैं। इसकी संख्या हजार से शुरू होकर प्रायः लाख तक भी पहुँच जाती है। इन रुपयों पर लड़की का आजीवन हक होता है। वह जब चाहे, अपने पति से 'दैनमेहर' के रुपये की माँग कर सकती है। वह चाहे, तो इसे माफ भी कर सकती है। काजीजी लड़के तथा लड़की दोनों से अलग-अलग पूछते हैं कि अमुक के साथ तुम्हारी शादी हो रही है—मंजूर है या नहीं? दोनों की स्वीकृति पर ही निकाह हो सकता है। एक की भी अस्वीकृति पर बरात लौट जा सकती है।

निकाह के बाद लड़की के सिर पर सेहरा बाँधकर और उसका मुँह ढककर पलँग पर बिठा देते हैं। दुलहे को समीप ही किसी दूसरे आसन पर बैठाया जाता है। वर के यहाँ से पिटारी आती है, जिसे 'सोहागपूरा' कहते हैं। उसमें संदल इत्यादि विभिन्न प्रकार की सुगन्धित चीजें रहती हैं। उसी समय सोहागपूरे को खोलकर सुहागिन स्त्रियाँ संदल (चंदन) पीसती हैं। फिर, दुलहा रूपये या अँगूठी से दुलहिन की माँग पर उसी संदल को भरता है। इसके बाद वर कुरान की आयतें पढ़ता है। इसी समय *आरसी-मासहफ* नामक एक विधि संपन्न की जाती है, जिसमें दुलहा आइने में दुलहन का अक्स देखता है। इस प्रकार, विवाह की रस्म पूरी होती है।

शादी के पंद्रह दिन पहले से ही दोनों पक्षवालों के यहाँ गीत शुरू हो जाते हैं। सहाना, जोग, टोना, सोहाग, सोहरा, मेंहदी-गीत, चूड़ी-गीत, बेटी-विदाई, कोहबर इत्यादि अनेक प्रकार के लोकगीत स्त्रियों की स्वर-लहरी में लहरा उठते हैं।

सहाना-गीत- सहाना का अर्थ है शाही या राजसी। निकाह के पन्द्रह दिन पहले से ही ये गीत शुरू हो जाते हैं तथा निकाह तक चलते रहते हैं। लड़के तथा लड़की दोनों के यहाँ के सहाना-गीत भिन्न-भिन्न होते हैं, पर कुछ ऐसे भी होते हैं, जो दोनों जगहों में गाये जाते हैं।

जोग—निकाह के पहले भी जोग गाये जाते हैं, पर अधिकतर सन्दल घिसते समय तथा सन्दल से लड़की की माँग भरते समय स्त्रियाँ इन्हें गाती हैं।

टोना—ये भी बहुत महत्त्वपूर्ण तथा मन को मुग्ध करनेवाले गीत हैं, जिनमें लड़के-लड़की को टोना न लग जाय, यह अभिप्राय रहता है। 'टोना' के गीत दोनों के यहाँ गाये जाते हैं।

सोहाग—ये गीत शादी के पहले लड़की को उबटन लगाते समय ही शुरू कर दिये जाते हैं। लड़की को मिस्सी लगाते समय और शृंगार करते समय स्त्रियाँ सोहाग के गीत गाकर ही उस समय के वातावरण को आनन्द से भर देती हैं।

निकाह के पहले मेंहदी लगाने के समय तथा चूड़ी पहनाने के समय के गीत विशेष प्रकार के होते हैं और केवल उसी अवसर पर गाये जाते हैं। इसी प्रकार, उबटन लगाने के भी गीत होते हैं। सोहाग लड़कीवाले के यहाँ गाया जाता है, तो सेहरा सिर्फ लड़केवाले के यहाँ।

बेटी-विदाई के गीत तो अत्यन्त करुण होते हैं। गीत सुनकर बरबस आँसू निकल पड़ते हैं।

कोहबर के समय के गीतों में औरतों की चुहल-भरी मजाक की बातें भी होती हैं। मुसलमानों के यहाँ एक विशेष प्रकार का गीत होता है, जिसे 'चाल चलाने का गीत' कहते हैं—इन गीतों में कन्या की सुकुमारता, कोमलता आदि का वर्णन रहता है। जब वधू कोहबर में ले जाई जाती है, उसी समय ये गीत गाये जाते हैं।

इस प्रकार, हिन्दू-घरानों की तरह ही मुसलमानों में भी सरस, मधुर, आनन्ददायक करुण रस से ओत-प्रोत तथा चुहल से भरे हुए लोकगीत प्रचलित हैं।

बच्चा होने के समय के गीत 'जच्चाखाने के गीत' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन गीतों में विभिन्न प्रकार के भाव होते हैं। कभी ननद का भाभी से रूठना, कभी भतीजा होने की खुशी में चीजें माँगना, कभी भाभी का मनाना, कभी पति से पत्नी का लजाकर बहाना बनाना इत्यादि भावों से पूर्ण ये मनोरंजक लोकगीत हृदय को आह्लादित किये बिना नहीं रहते। ये गीत 'सोहर' से किसी प्रकार भिन्न नहीं माने जा सकते।

इस प्रकार, ये गीत मगही-जनसमुदाय के सभी वर्गों के परम्परागत लोकाचार के चार चित्राधार हैं। अनेक बाह्य भेदों के बावजूद उनके मूल में एक व्यापक अभेद पाया जाता है। क्या भाव, क्या अभाव, क्या छंद, क्या लय, क्या ताल! सभी बातों में उनमें समरूपता पाई जाती है। एक ही गीत महलों और कुटियों में समान रूप से गाये जाते हैं।

गीत और उनके राग

सोहर—बिहार के मगही, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका और वज्जिका इन सभी क्षेत्रों में जन्मोत्सव के अवसर पर सोहर गाये जाते हैं। ये एक प्रकार के मांगलिक गीत हैं, जो प्रायः समस्त हिन्दी-भाषाभाषी प्रदेश में प्रचलित हैं। उत्तरप्रदेश के पश्चिमी भागों में इन्हें कहीं-कहीं 'सोभर', 'सोहला' या 'सोहिलो' कहते हैं। इन सबकी व्युत्पत्ति के मूल में संस्कृत का 'शुभ्' धातु है, जिससे 'शोभन', 'शोभा' आदि तत्सम तथा 'सोहना, 'सुहावना' आदि हिन्दी के तद्भव रूप बनते हैं। अपने इस व्युत्पत्तिगत अर्थ के अनुसार ही सोहर बहुत

शुभ और सुहावना माना जाता है। ब्रज में सौरी या सूतिकागार को भी 'सोभर', कहते हैं। अतः, उसके आस-पास गाये जानेवाले जन्मोत्सव के गीतों की सोभर या सोहर संज्ञा समीचीन ही है। संस्कृत के शोकहर शब्द से भी सोहर की व्युत्पत्ति संभव है। सन्तानाभाव के शोक का हरण करनेवाले प्रसन्नतामय प्रसंग से ही इसका सम्बन्ध है।[1] आनन्द और बधावा ही इन गीतों के मुख्य विषय हैं। संभवतः, इसी विचार से तुलसीदासजी ने सोहर के लिए 'मंगल' शब्द का व्यवहार किया है, जो सर्वथा सार्थक है। सोहर के कुछ गीतों में तो उनके गान या श्रवण का फल मंगल-काव्यों के पाठ के फल के समान ही दिया गया है। जो यह गीत सुने या गाये, उसका सौभाग्य जन्म-जन्म तक बना रहे और उसे पुत्र-फल प्राप्त हो।

सोहर में प्रायः सन्तान के लिए स्त्री-पुरुष की आन्तरिक लालसा और तड़प, उसके लिए की गई साधना और देव-स्तवन, गर्भवती जननी की आकुल पीडा, पुत्रोत्पत्ति-जन्य उल्लास, सम्बन्धियों तथा परिजनों का परस्पर बधाइयों और शुभकामनाओं के साथ बधावा माँगना और देना तथा आनन्दोत्सव के वर्णन रहते हैं। कुछ सोहरों में गार्हस्थ्य-जीवन के मनोहर चित्रों के साथ शृंगार, हास्य और मर्मस्पर्शी करुण रस का भी पुट पाया जाता है। इन गीतों में ननद-भौजाई के हास-परिहास तथा व्यंग्य, सास-बहू के बीच सद्भाव या दुर्भाव, पति-पत्नी के प्रेममय विनोद तथा समाज और गृह-जीवन के अन्यान्य आचार-व्यवहार, प्रसूता के पथ्यापथ्य, खान-पान, आहार-विहार, मातृत्व के अभिमान और उमंग, अनुरागमय आमंत्रणों, मनुहारों, अनुनयों, विनतियों, उपालम्भों तथा विविध कथोपकथनों और विवरणों के क्रम में व्यक्त हुए हैं। कई गीतों में किसी छोटे कथानक अथवा किसी मौलिक प्रसंग की कल्पना कर ली गई है, जिससे उनकी रोचकता और भी बढ़ गई है। प्रसंगों की कल्पना करने में ऐसे गीतों की मार्मिकता और मौलिकता की तुलना सूर और तुलसी जैसे प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं से की जा सकती है। राम, कृष्ण तथा शिव-पार्वती-सम्बन्धी प्राचीन आख्यानों तथा दैवी चरित्रों का भी आश्रय कुछ सोहर-गीतों में ग्रहण किया गया है। राम, लक्ष्मण, सीता, कृष्ण, राधा, कौसल्या, देवकी, यशोदा, नन्द, दशरथ, वसुदेव, रुक्मिणी, प्रद्युम्न, शिव, पार्वती आदि प्रसिद्ध चरित्रों का समावेश ऐसे गीतों में रहता है, परन्तु इन लोक-गीतों के धरातल पर उतरकर ये सभी दैवी चरित्र प्रायः अपनी अलौकिकता अथवा अतिमानवता का परिहार करके साधारणजनोचित लौकिक रूप में परिणत हो जाते हैं। जैसे, सोहर के राजा दशरथ डगरिन को बुलाने स्वयं जाते हैं। वस्तुतः, इन गीतों के संसार में सभी पति या तो नन्द, वसुदेव और दशरथ या कृष्ण और राजा रघुनन्दन हैं; सभी पुत्र नन्दलाल, गोपाल या रामलला हैं और सभी माताएँ कौसल्या या यशोदा हैं। पौराणिक आख्यानों का जहाँ आश्रय लिया गया है, वहाँ प्रायः यह बात भी देखने में आती है कि कथानक के रूप में छोटा-मोटा परिवर्त्तन कर लिया गया है। उदाहरणार्थ, इस संग्रह के द्वितीय खण्ड के पाँचवें (पृ० ४७) गीत को लें, जिसमें कृष्ण का

---

१. शोकहर>सोअहर>सोहर। हिन्दी में शोकहर नाम का एक मात्रिक छन्द भी है। परन्तु, सोहर का लक्षण उससे ठीक-ठीक नहीं मिलता।

जन्म होने पर उन्हें लेकर वसुदेव नन्द के यहाँ नहीं जाते; वरन् उनके बदले स्वयं देवकी ही यशोदा के यहाँ जाती है। कथा का यह रूपान्तर मातृ-हृदय के ममत्व की दृष्टि से क्या अधिक मर्मस्पर्शी और स्वाभाविक नहीं प्रतीत होता? कुछ गीतों में केवल पात्र पौराणिक हैं, पर प्रसंग की योजना सर्वथा नवीन है, जो अपने कलात्मक संकेत से चित्त को सद्यः प्रभावित करती है।

सन्तानोत्पत्ति की खबर ज्योंही मिलती है, त्योंही घर-आँगन में परिवार और पास-पड़ोस की हितैषिणी महिलाएँ, क्या छोटी, क्या बड़ी बूढ़ी, क्या विवाहिता, सभी हँसी-खुशी से उछलती हुई इकट्ठी हो जाती हैं और उनके उल्लास-भरे कंठों से सोहर की सुमधुर समवेत स्वर-लहरी स्वतः उमड़ उठती है। ढोलक के ताल पर थिरकती हुई उस ध्वनि से घर-द्वार का कोना-कोना गूँज उठता है। जन्म के छठे दिन जो 'छठी' या सातवें दिन जो 'सतौला' या बारहवें दिन जो 'बरही' या बीसवें दिन जो 'बिसौरा' अथवा कुछ अशुभ नक्षत्रों में उत्पन्न बच्चों के जन्म के सत्ताइसवें दिन जो 'सतैसा' की पूजा, स्नान-संस्कार आदि क्रियाएँ होती हैं, उन दिनों अपने-अपने हौसले के अनुसार प्रातः-सायं, दिन-रात सोहर गाने का क्रम चलता रहता है। इन गीतों में विशेष आनुष्ठानिक महत्त्व किसी का नहीं है। सभी गीत सामान्यतः सभी अवसरों पर गाये जा सकते हैं, परन्तु कुछ गीत ऐसे अवश्य हैं, जिनका सम्बन्ध विशेष विधियों से है। जैसे, बच्चा पैदा होने के बाद जब उसका नाभिच्छेदन या नाल काटने की क्रिया की जाती है, उस समय या उसके थोड़ी देर बाद उसके उपलक्ष्य में एक सोहर गाया जाता है, जिसमें पितरों से निवेदन किया जाता है कि उनके वंश में वंशधर की उत्पत्ति हुई है। इसपर पितर अपनी ओर से उसे आशीर्वाद देते हैं और उसका नाल काटने के लिए सोने की छुरी और थाल तथा उसके दूध पीने के लिए सोने की कटोरी देने का आदेश देते हैं। दो-एक सोहर ऐसे भी हैं, जो नहान, यानी प्रसूता को प्रसव के दो-चार दिनों के बाद या छठी के दिन जो पहला स्नान कराया जाता है, उसके उपलक्ष्य में गाये जाते हैं। नहान का एक गीत हमें मुस्लिम-घरों से प्राप्त हुआ है। यह इस बात का प्रमाण है कि लोक-जीवन के स्तर पर हिन्दू और मुस्लिम आचार-व्यवहार की सीमाएँ सिमटकर बहुत-कुछ अंशों में एक हो जाती हैं। मगह के मुस्लिम घरों में भी सोहर उसी प्रकार गाये जाते हैं, जैसे हिन्दू-घरों में। इसी प्रकार, शिशु की फूफी के द्वारा सम्पन्न की जानेवाली आँख-अँजाई की विधि के उपलक्ष्य में गाये जाने के लिए भी कुछ विशेष सोहर प्रचलित हैं। गीत तो सामान्य मंगल-गान के रूप में ही जन्मोत्सव-सम्बन्धी सभी विधियों के अवसर पर गाये जाते हैं। नामकरण और अन्नप्राशन के अवसरों पर भी सोहर गाये जाते हैं।

शास्त्रों में गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन-संस्कार का जो विधान है, उसका कोई प्रतिरूप बिहार में प्रचलित नहीं है। उत्तरप्रदेश में 'साध' पूजने का, 'चौक' का या 'गोद-भराई' की रस्म गर्भावस्था के सातवें महीने में मनाई जाती है। वहाँ इस अवसर पर भी सोहर गाये जाते हैं। परन्तु, बिहार में ऐसी कोई प्रथा नहीं है। फिर भी, बच्चा पैदा होने के पहले गर्भाधान के उपलक्ष्य में स्वेच्छा से यदि परिवार में आनन्द मनाया जाता है, तो ऐसे अवसर पर सोहर अवश्य गाये जाते हैं। कहीं-कहीं ऐसी प्रथा है कि जिन लोगों की

छठी किसी कारण जन्म के उपरान्त नहीं होती, उनकी छठी की पूजा विवाह के अवसर पर ही की जाती है और इसलिए उनके विवाह के अवसर पर सोहर भी गाये जाते हैं। बरात विदा हो जाने के बाद 'बर' के घर रात में 'डोमकछ' का एक नाट्य-नृत्य होता है, जिसमें खाट के पौवे या काठ के किसी अन्य टुकड़े का 'जलुआ' नाम का एक बच्चा बनाया जाता है। उसके जन्म के उपलक्ष्य में भी सोहर गाये जाते हैं।

तुलसीदास ने 'रामलला नहछू' में जो सोहर की रचना की है, उससे भी जान पड़ता है कि कहीं-कहीं विवाह-सम्बन्धी कुछ अवसरों पर भी सोहर का प्रचलन होगा। लिखित साहित्य में तुलसी के बाद धरनीदास आदि कुछ संत कवियों ने भक्ति के भी सोहर रचे हैं। बिहार में कहीं-कहीं गोदना-गोदने के समय भी सोहर गाने का रिवाज है। गोदनहारी नटिनें स्वयं मिलकर सम्भवतः सूई चुभने की वेदना की ओर से चित्त को खींचकर गान के माधुर्य में निमग्न करने के लिए ही सोहर का राग छेड़ देती हैं। सचमुच ही लोकगीतों में सोहर से बढ़कर आनन्दोल्लास का चित्ताकर्षक राग और कौन-सा हो सकता है?

इस संग्रह में मगही-क्षेत्र के जो गीत संगृहीत हैं, उनमें से अधिकांश ऐसे हैं, जो विभिन्न बोलियों के अनुसार थोड़े भाषागत रूपान्तर के साथ बिहार के भोजपुरी तथा मैथिली क्षेत्रों में भी गाये जाते हैं। कुछ तो ऐसे भी हैं, जो उत्तरप्रदेश के पूरबी जिलों में भी प्रचलित हैं। अन्तर यही है कि कहीं दो-चार कड़ियाँ बढ़ा दी गई हैं, तो कहीं घटा दी गई है अथवा थोड़ा-बहुत फेर-बदल हो गया है। कुछ गीतों के भाव तो थोड़े शब्दगत परिवर्तनों के साथ समस्त हिन्दी-क्षेत्र में प्रचलित पाये जाते हैं। सोहर में ही नहीं, विवाहादि के गीतों में भी बहुत-कुछ अंशों में यह बात पाई जाती है। वस्तुतः, ये जनगीत हिन्दी-क्षेत्र के जनसमूह की सौंदर्य-भावना तथा लोकरुचि के सम्मिलित और समन्वित प्रतीक हैं।

मगही-क्षेत्र अथवा मगही-क्षेत्र ही क्यों, समस्त बिहार तथा उत्तरप्रदेश के पूरबी भागों में जो सोहर गाये जाते हैं, उनका एक विशेष राग, एक विशेष लय, एक विशेष छन्द है, जिसे प्रायः सोहर छन्द कहा जाता है। तुलसीदासजी ने जो सोहर छंद लिखा है, वह लिखित साहित्य के छंदोविधान के अनुसार बाईस-बाईस मात्राओं के चरणों में है। उनके अन्त में तुक भी मिलाया गया है। परन्तु, लोकगीतों के जो सोहर हैं, उनमें न तो तुक मिलाने की कोई निश्चित परिपाटी है और न मात्राओं की गणना की। फिर भी, उनके सम्बन्ध में यह कहना भी युक्तिसंगत नहीं है कि 'स्त्रियाँ गाते समय छोटे-बड़े पदों को खींच-तानकर बराबर कर लिया करती हैं।'[1] वस्तुतः, सोहर एक तालवृत्त है, जिसका मापदण्ड पृथक्-पृथक् मात्राएँ और वर्ण नहीं, वरन्, लयबद्ध बलाघातपूर्ण इकाइयाँ ही हो सकती हैं। इन्हीं इकाइयों की आवृत्ति से राग की सृष्टि होती है।[2] प्रत्येक आवर्त्तक बलाघात पर ताल पड़ता जाता है। ये ताल समान रागात्मक

---

१. दे० श्रीरामनरेश त्रिपाठी, 'कविता-कौमुदी', पाँचवाँ भाग, सं० १९८६, पृ० २।

२. संगीत की दृष्टि से सोहर की एक स्वरलिपि डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ने अपने 'भोजपुरी लोक-गीतन के स्वरलिपि' नामक निबन्ध में 'भोजपुरी' (वर्ष २, अंक १, अगस्त, १९५३ ई०) में प्रस्तुत की है।

मात्राओं द्वारा निरंत्रित रहते हैं, जिससे प्रत्येक इकाई की उच्चरित अवस्थिति समतोलक बनी रहती है। सोहर बहुधा जिस राग में गाया जाता है, उसका इस दृष्टि से विचार करके, हम उसकी प्रत्येक पंक्ति को छह तालबद्ध बलाघातिक इकाइयों में विभक्त कर सकते हैं। यथा—

'पलँगा बइ|'ठल हथ म|'हादेवा | 'मचिया ग|'उरा देइ | 'हे ।
'हमरा पु|'तरवा के | 'साध पु|'तर कइसे | 'पायब | 'हे ॥

यहाँ जिस अक्षर पर तालात्मक बलाघात पड़ता है, उसके बाईं ओर ऊपर एक छोटी-सी खड़ी लकीर दे दी गई है। प्रत्येक पंक्ति में छह इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई की वास्तविक उच्चरित मात्रावस्थिति बराबर है, यद्यपि लिखित रूप में लघु-गुरु की जो गणना की जाती है, उसके अनुसार उनमें अन्तर दिखाई पड़ता है। उदाहरणार्थ, पहली इकाई में छह मात्राएँ हैं, पर दूसरी में केवल पाँच मात्राएँ गिनती में आती हैं, यद्यपि इसकी पाँच मात्राएँ वास्तविक उच्चारण में पहली इकाई की छह मात्राओं के बराबर ही हैं; क्योंकि दूसरे खण्ड का रागात्मक उच्चारण होता है—। 'ठल'हऽथ म ।—अग्रिम इकाई में यहाँ केवल एक गुरु है। परन्तु, उसके उच्चारण और दूसरी पंक्ति के प्रथमाक्षर पर जो ताल पड़ता है, उन दोनों के उच्चारण के बीच भी उतना ही समय या कालमान लगता है। पहली पंक्ति, जो स्थायी में गाई जाती है और दूसरी पंक्ति, जो अन्तरा के रूप में गाई जाती है, उन दोनों के बीच इस कालमान की पूर्त्ति, अर्थात् मात्रा-समतोलन के लिए अंतिम 'ह' के 'ए' को प्लुत में उच्चरित करना पड़ता है या उसके बाद और दूसरी पंक्ति के उच्चारण के पहले उन दोनों के बीच एक पूर्त्तिकारक शब्द जैसे, 'ललना', 'रामा' या 'राजा' आदि का निवेशन कर लेना पड़ता है।

एक दूसरा उदाहरण लीजिए—

'ननदी भउ|'जइया मिलि | 'पनिया के | 'चलली ज|'मुन दह | 'हे ।
(ननद) 'जब होतो | 'मोरा नन्द|'लाल बे|'सर पहि|'रायब | 'हे ।

यहाँ भी प्रत्येक पंक्ति में छह तालाश्रित बलाघाती इकाइयाँ हैं। अन्तिम इकाई | हे | के मात्रा-समतोलन के लिए दूसरी पंक्ति के पहले 'ननद' शब्द का प्रत्याकलन किया गया है।

इस संग्रह के पहले गीत की पहली पंक्ति है—

'घरवा से | 'इकसल ज|'सोदा रानी | 'सुभ दिन | 'सावन | 'हे ।

इसको इस गीत की पन्द्रहवीं पंक्ति से मिलाइए।

'सात | 'पुतर दइब | 'देलन | 'कंस सभ|'हर लेलन | 'हे ।

पहली पंक्ति के पहले खण्ड 'घरवा से' में जहाँ चार अक्षर (पदांश) हैं, वहाँ पंद्रहवीं पंक्ति के पहले खण्ड 'सात' में केवल दो अक्षर हैं। तो भी राग की दृष्टि से इन केवल दो अक्षरों की तालमात्राएँ पहली पंक्ति के चार अक्षरों की तालमात्राओं के समतोल हैं।

ध्यान रहे कि ये तालमात्राएँ ही इन छन्दों के लय-विधान में महत्त्वपूर्ण हैं, वर्ण-मात्राएँ नहीं। फलतः, प्रायः लिखित ह्रस्व वर्ण का उच्चारण दीर्घ और दीर्घ का उच्चारण ह्रस्व होता है और कहीं-कहीं उनका उच्चारण प्लुत में त्रिमात्रिक, चतुर्मात्रिक रूप में करना पड़ता है। उपर्युक्त उदाहरण के 'सात' के 'सा' का उच्चारण यहाँ प्लुत में ही होता है। इसी प्रकार कहीं-कहीं लय और ताल की रक्षा के निमित्त दो-तीन ह्रस्व या दीर्घ वर्णों को एक तालमात्रा के अन्तर्गत उच्चरित करना पड़ता है, जैसे—

(धनियाँ) 'बारह बरिस | 'मधुपुर | 'छायब तोहे | 'नहिं बिस|'रायब | 'हे ।

यहाँ 'बारह' और 'छायब' का संकोचन करके एकाक्षरात्मक रूप में उच्चरित करना पड़ता है।

यद्यपि बिहार तथा उत्तरप्रदेश के पूर्वी भागों में सोहर बहुधा छह बलाघाती ताल खंडों में ही गाया जाता है, तथापि इच्छानुसार इन ताल-खंडों का निबन्धन कई अन्य प्रकारों से भी कर लिया जा सकता है। उदाहरणार्थ, छह इकाइयों के बदले उपर्युक्त 'पलँगा बइठल' आदि पद का ताल-विन्यास ग्यारह खंडों में इस प्रकार किया जा सकता है—

'पलँ|'गा बइ|ठल | 'हथ | 'महा|'देवो | 'मचि|'या ग|'उरा | 'देइ | 'हे ।
'हम|रा पु|त'र|'वा के | 'सा|'ध पु|'तर | 'कइसे | 'पा|'यब | 'हे ॥

रुचि-भेद से इसको तीन ताल-खंडों में इस प्रकार नियोजित करके गाते हैं—

'पलँगा बइठल हथ | 'महादेवो मचिया ग|'उरा देइ हे ।
'हमरा पुतरवा के | 'साध पुतर कइसे | 'पायब हे ।

अथवा

पलँगा बइ'ठल हथ | महादेवो 'मचिया ग|उरा देइ 'हे ।
हमरा पु'तरवा के | साध पु'तर कइसे | पायब 'हे ॥

सोहर के ताल-खंडों के नियोजन में इस प्रकार के भेदों की सम्भावना रहते हुए भी उसके मुख्य लय में अन्तर नहीं किया जा सकता। किसी प्रकार का भी ताल-विन्यास हो, परन्तु सोहर का अंतिम ताल-खंड बराबर अवरोही स्वर में ही गाया जाता है।

इसके अतिरिक्त हमें कुछ ऐसे भी गीत मिलते हैं, जिनके विषय तो सोहर के ही जन्म-सम्बन्धी वृत्तान्त हैं, परन्तु छंद सर्वथा भिन्न हैं। उनके ताल और लय में बहुत अन्तर पाया जाता है। सम्भवतः, जन्मोत्सव के उल्लास में सोहर के केवल एक राग से सन्तुष्ट न होकर लोक-रुचि ने विविधता के आनन्द के लिए सोहर के विषय को झूमर आदि विभिन्न अन्य गीतों के रागों में भी उपनिबद्ध कर लिया है। इन रागान्तरवाले गीतों को भी विषय की एकरूपता के कारण प्रायः सोहर ही कहते हैं। परन्तु, जो इनमें छोटे-छोटे गीत हैं और जिनमें विशेषकर ननद-भौजाई सास-ससुर, पति-पत्नी आदि के हास-परिहास के वर्णन रहते हैं, उन्हें प्रायः 'खेलवना सोहर' अथवा केवल 'खेलवना' कहते हैं। ये 'खेलवने' प्रायः सोहर के बाद गाये जाते हैं। जब एक बैठक में पाँच-सात लम्बे-लम्बे सोहर गा लिये जाते हैं, तब प्रायः अन्त में इन मजेदार चटकीले चुटपुट रागोंवाले छोटे-छोटे खेलवनों से गायिकाओं की मंडली गान-समायोग का पर्यवसान करती है।

मगह के मुस्लिम-घरों में गाये जानेवाले जन्मोत्सव-सम्बन्धी गीतों में प्रायः इसी प्रकार के फुटकर छंदों और लयों का समावेश पाया जाता है। ऐसे विविध रागों में आबद्ध गीतों का एक संग्रह इस खंड के अन्त में दिया गया है।

मुस्लिम-घरों से प्राप्त इन गीतों की भाषा में मगही के साथ खड़ी-बोली के स्थानीय रूपों का प्रचुर मिश्रण मिलता है। मुस्लिम-घरों में जो भाषा बोली जाती है, उसमें खड़ी बोली के साथ अवधी के बहुत-से रूप मिश्रित हैं। इस प्रकार, इन गीतों की भाषा में एक ही साथ दो-तीन बोलियों का मिश्रण पाया जाता है। इनमें मगही प्रभाव की ही प्रधानता है। इनका रूप-विन्यास या ढाँचा भी प्रचलित मगही लोकगीतों से भिन्न नहीं है। अतः, इन बातों का और साथ ही मगही-क्षेत्र में इन गीतों के प्रचलन का विचार करके इन्हें मगही गीतों की श्रेणी में ही परिगणित करना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

प्रस्तुत संग्रह के सोहर-गीतों को क्रमबद्ध रूप में उपस्थित करने के लिए हमने उन्हें चार खंडों में विभाजित किया है। प्रथम खंड में पुत्रकामना तथा जन्मोत्सव-विषयक सामान्य व्यवहार और लोकाचार सम्बन्धी गीत रखे गये हैं। इनमें कुछ ऐसे गीत भी सम्मिलित हैं, जिनमें स्पष्ट रूप से पुत्रोत्पत्ति का उल्लेख न होते हुए भी व्यंग्यार्थ द्वारा बहुत-ही कलात्मक ढंग से आगामी मातृत्व का आनन्दप्रद संकेत कर दिया गया है। दूसरे खंड में पौराणिक आख्यानों, पात्रों तथा देवी-देवताओं से सम्बद्ध गीत दिये गये हैं। तीसरे खंड में ऐसे गीत और हास-परिहासात्मक छोटे-छोटे खेलवने हैं, जिनके विषय सोहर के होते हुए भी छन्द सोहर के प्रचलित राग से भिन्न अन्य रागों के हैं। इन गीतों में भी कुछ ऐसे गीत मिलते हैं, जिनमें कृष्ण आदि पौराणिक चित्रों का उल्लेख है। मुस्लिम-घरों से प्राप्त जन्मोत्सव-सम्बन्धी गीत चौथे खंड में दिये गये हैं। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, इन गीतों की सामाजिक भित्ति सामान्यतः वही है, जो और गीतों की है। इन गीतों के अतिरिक्त सामान्य सोहर भी मुस्लिम-घरों में जन्मोत्सव के अवसर पर प्रायः उसी रूप में और उसी प्रकार गाये जाते हैं, जैसे हिन्दू-घरों में।

मुंडन और जनेऊ के गीत

सोहर के अतिरिक्त इन अवसरों पर और कई रागों के गीत भी गाये जाते हैं; जैसे झूमर आदि। सोहर के लंबे छन्दों की अपेक्षा झूमर की बहरें छोटी होती हैं। इन गीतों के तार कुछ अधिक तीव्र गति में पड़ते हैं।

विवाह के गीत

विवाह के गीतों के राग अलग-अलग होते हैं। सगुन के गीतों का एक राग होता है तिलक का दूसरा। तिलक के गीतों के राग में प्रायः मिश्रण पाया जाता है। तिलक के किसी एक गीत में एक राग पाया जाता है, तो दूसरे में दूसरा। परन्तु, अधिकांशतः यह देखा जाता है कि तिलक के गीतों के राग मध्य सुरों से प्रारंभ होकर मंद गति से ऊपर से नीचे उतरता है और अवरोह में ही समाप्त होता है। जेवनार का राग इन सबसे भिन्न होता है। उसकी पंक्तियाँ सोहर के समान ही लम्बी होती हैं, लेकिन उनमें लय के आरोह-

अवरोह का क्रम सोहर से बहुत भिन्न होता है।[1] सगुन के राग उतने चटकीले नहीं प्रतीत होते। उनमें आरोही खंड पहले आता है, उसके बाद अवरोही। फिर, एक दीर्घ विलंबित अवरोह के साथ उसका अंत होता है। विवाह के अवसर पर जो गालियाँ गाई जाती हैं, उनमें प्रायः झूमर के राग की प्रधानता रहती है और उनकी लय में अधिक चपलता का सन्निवेश रहता है। उनका विषय हास-परिहास ही होता है, जो कभी-कभी अश्लीलता तक उतर आता है। इनकी परम्परा भी आज की नहीं, बहुत प्राचीन है। हर्ष के जन्मोत्सव पर बाण ने भी वारविलासिनियों के अश्लील रासक-पदों के गानों का उल्लेख किया है। सूरदास, तुलसीदास, केशवदास आदि ने भी विवाहादि के अवसरों पर गाली गाये जाने का वर्णन किया है।[2]

संग्रह के अंतर्गत मुंडन, जनेऊ, विवाह आदि की विधियों-उपविधियों के सम्बन्ध में आवश्यक टिप्पणियाँ यथास्थान दे दी गई हैं। इसलिए, यहाँ उनकी पुनरावृत्ति करना अनावश्यक प्रतीत होता है।

इन मगही गीतों के भाव तथा रागात्मक पक्षों में लोक-मानस का जो चित्र उपलब्ध होता है, वह सर्वत्र न्यूनाधिक रूप में व्याप्त हैं।

मगही भाषा की भूमि को काव्य का वरदान मिला हुआ है। इन गीतों में काव्यानन्द अत्यन्त स्वाभाविक रूप में प्रवाहित मिलता है। यह संग्रह मगही जनपद की लोक-मानसिक भाव-संपत्ति का यथार्थ परिचय करा सकेगा, एक-एक गीत को पढ़कर पाठक मगही जनपद के जन से तादात्म्य हो उठेगा, उसके जैसे ही भाव जाग्रत् हो उठेंगे; और तब उसके समक्ष उसका अपना जनपद भी वैसे ही गीत गाता हुआ उठ खड़ा होगा। पर, क्या ये गीत यहीं रुक जायँगी ? ये गीत पाठक को उठाकर उसके वर्त्तमान और निकट के भूत को भेदकर सुदूर अतीत के मूल बिन्दु तक ले जायँगे—अपने ही मूलबिन्दु तक नहीं—समस्त मानव के और साथ ही चराचर के। यों, इन गीतों में हम अपनी मानवी परिपूर्णता प्राप्त कर सकेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

●

---

१. विवाह के गीतों के रागों को समझने के लिए संग्रह के अन्त में हमने सगुन और देवता के दो चुने हुए गीतों की स्वर-लिपि लोक-संगीतविशारदा श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी से तैयार कराकर दे दी है। इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

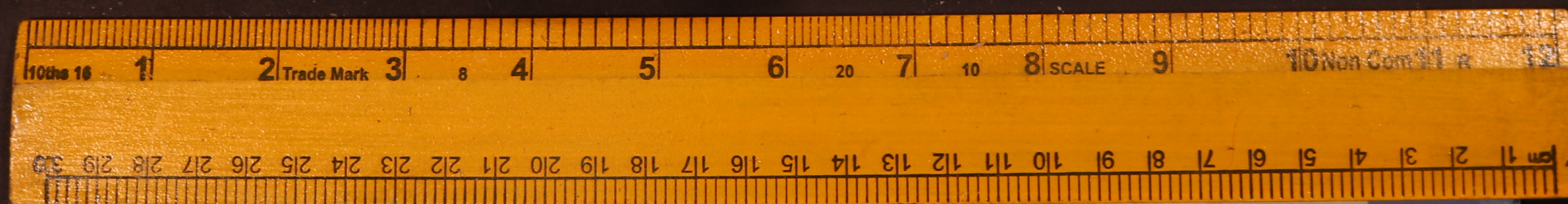
२. (क) देत महर को गारि। —सूरसागर, पद-सं० ६२२।

अथवा

सजन प्रीतम नाम लय लय दय परस्पर गारि। —सूरसागर, पद-सं० ६६०।

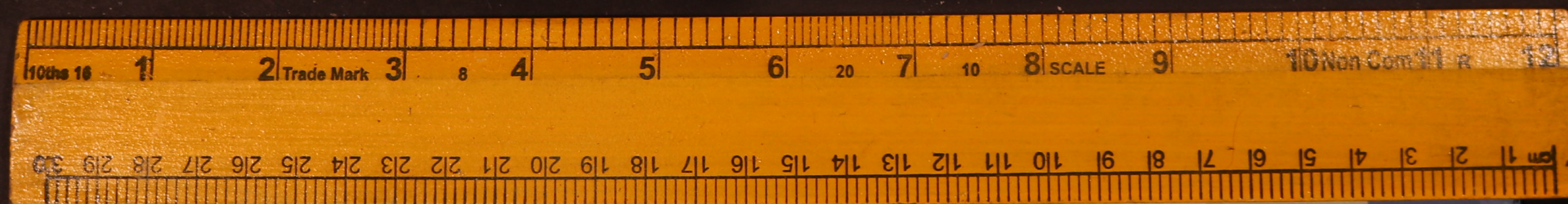
(ख) अन्नप्राशन में भी सखियों द्वारा गाली गाये जाने की चर्चा है—युवति महरि को गारि गावत......इत्यादि।

मगही संस्कार-गीत



सोहर

(प्रथम खण्ड)



[१]

[इस गीत में गर्भाधान के बाद क्रमशः प्रकट होनेवाले गर्भ के लक्षणों का उल्लेख किया गया है। फिर, यथासमय, भादो की भयानक रात में, जब बिजली की कौंध से रात्रि की भयानकता बढ़ गई है, पुत्र का जन्म होता है और सारा महल सोहर से गूँज उठता है। इसके बाद जच्चा खुशी में द्रव्यादि लुटाने और आनन्दोत्सव मनाने का संकल्प करती है। वह यथा-योग्य सबका स्वागत-सत्कार करती है। इस क्रम में वह गोतिनी का विशेष खयाल रखती है। क्योंकि, जैसा व्यवहार होगा, गोतिनी से वैसा ही प्राप्त होगा।

इस गीत की विशेषता यह भी है कि इसके प्रारम्भ में गणेश की वन्दना की गई है, जो अन्य सोहरों में नहीं पाई जाती।]

परथम गनेस पद बंदि के, कुसल मनावहु हे।
ललना, बिघन हरन गननायक, सोहर गावहु हे॥ ॥
परथम मास जब बीतल,[१] दोसर नियरायल[२] हे।
ललना, तेसर मास जब आयल, चित फरियायल[३] हे॥२॥
चउठा मास चढ़ि आयल, पचमा बितिये[४] गेल हे।
ललना, छठे मास नियरायल, गरभ जनायल[५] हे॥३॥
सतमा मास जब आयल, अठमा नियरायल हे।
ललना, नवमा मास जब आयल, होरिला[६] जलम[७] भेल हे॥४॥
भादो के रइनी[८] भेयामन,[९] बिजुली चमक उठे हे।
ललना, तेंहि छन परगटे नंदलाल, महल उठे सोहर हे॥५॥
चन्नन लकड़ी कटायम,[१०] मंगल गायम[११] हे।
ललना, अरबे[१२] से दरबे[१३] लुटायम, सभ सुख पायम[१४] हे॥६॥

---

१. बीत गया। २. नजदीक आया। ३. मिचली आना। ४. बीत गया। ५. मालूम पड़ने लगा। ६. लड़का। ७. जन्म। ८. रात। ९. भयावनी। १०. कटवाऊंगी। ११. गाऊंगी। १२. अरब की संख्या में। १३. द्रव्य। १४. पाऊंगी।

सासु के देम[१५] तीसी तेलवा, ननद केरा गड़ी[१६] तेल हे।
गोतनी के तेल-फुलेल, गोतिनियाँ के देल-लेल[१७] हे ॥७॥
सासु के देम खटोलवा,[१८] ननदी मचोला[१९] देम हे।
ललना, गोतनी के लाल पलँगिया, हमहुँ पइँचा[२०] लेम[२१] हे ॥८॥
सासु के देम इयरि-पियरि[२२] ननदिया के साड़ी देम हे।
ललना, गोतनी के लहँगा-पटोर,[२३] हमहुँ कबहुँ[२४] पइँचा लेम हे ॥९॥

●

[२]

[इस गीत में पति-पत्नी के बीच मृदुल हास-परिहास का चित्रण है। पहले जब पति अपनी पत्नी से सेज लगाने के लिए कहता है, तब वह गर्व के साथ यह कहकर साफ इनकार कर देती है कि 'मेरा मायका सोने का है, जिसकी ओलती से मोती चूते हैं, मैं सात भाइयों के बीच की अकेली दुलारी बहन हूँ। मैं नौकरानी का काम नहीं करूँगी।' पतिव्रता स्त्री की इस गर्वोक्ति में एक मनोहर प्रसंग की भी कल्पना अंतर्ध्वनित है। वह गर्भवती है और इस कारण प्रेम के मान और मातृत्व के अभिमान में अपने पति के आदेश को विनोद के साथ टाल देती है। परन्तु, जब उसका पति उसकी इस अवमानना से फिर परदेश लौट जाने पर उतारू हो जाता है, तब गर्भावस्था की शिथिलता के बावजूद वह अपना मान त्याग देती है। वह अनुनय-विनय करने लगती है और पति की सुख-शय्या शीघ्र लगा आती है।]

लिपि पोति अयलों[१] कोठरिया, चननवाँ छिरकि[२] अयलों हे।
ए ललना, घुमि फिरि अयलन[३] रघुनन्नन, सेजिया मोहि डँसि[४] देहु हे ॥१॥
सोनहिं के मोरा नइहर, ओरियनि[५] मोती चुए हे।
ए ललना, सातहिं[६] भइया के हम बहिनियाँ, सेजियवा हम कइसे[७] डाँसब[८] हे ॥२॥

---

१५. दूँगी। १६. नारियल। १७. देना-लेना। १८. छोटी खाट। १९. मचिया। २०. पैंचा-हथफेर। २१. लूँगी। २२. पीले रंग में रँगे वस्त्र। २३. गोटा-पाटा से जड़ा हुआ रेशमी लहँगा। २४. कभी।

१. आई। २. छिड़कना। ३. आये। ४. बिछाना, सजाना। ५. छप्पर का अगला भाग, जहाँ से वर्षा का पानी टपकता है, ओलती। ६. सात। ७. किस तरह। ८. बिछाऊँगी या सजाऊँगी।

एतना बचन राजा सुनलन,[९] सुनहुँ न पवलन[१०] हे।
ए ललना, चढ़ि गेलन घोड़े असवार,[११] मधुबन जायब[१२] हे ॥३॥
एतना बचन धनि[१३] सुनलन, सुनहुँ न पवलन हे।
ए ललना, धरि लेलन घोड़े के लगाम, हमहुँ जोउरे जायब हे ॥४॥
सोनहिँ के तोरा नइहर, ओरियनि मोती चुए हे।
ए धनि, सातहिँ[१४] भइया के तुहूँ बहिनियाँ, कइसे तुहूँ बन जयबो[१५] हे ॥५॥
फिरहुँ फिरहुँ ए राजा जी, फेनुकै[१६] सेजिया डाँसब हे ॥६॥
लिपि पोति अयलों कोठरिया, चननवा छिरकि अयलों हे।
ए ललना, डाँसि जे देलों[१७] लाली पलँगिया, सोवहु राजा रघुनन्नन हे ॥७॥

●

[३]

[इस गीत का भोजपुरी रूप भी मिलता है, जिसमें झुलनी के स्थान में पत्नी ने पति से तिलरी, अर्थात् गले के हार की माँग की है। विनोद में पत्नी को काली कहकर पति ने उसे बताया है कि तिलरी उसके गले में नहीं फबेगी।

इस सम्बन्ध में सास-पतोहू के व्यंग्य-विनोदपूर्ण वार्त्तालाप के बाद मगही गीत का अन्त हो जाता है। इसमें बताया गया है कि स्त्री की माँग के सिन्दूर और आँखों के काजल, जो उसके सौभाग्य के गौरवपूर्ण चिह्न हैं, शृङ्गार के लिए पर्याप्त हैं। वे स्वतः इतने आकर्षक हैं कि कोयल-जैसी काली होती हुई भी, अपने सौभाग्य के प्रताप से ही अपने पति को प्रेम-पाश में आबद्ध किये रहती है। यहाँ कालिदास की यह पंक्ति याद आ जाती है–'प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।' (कुमारसम्भव,५।१)। मगही का गीत तो यहीं समाप्त हो जाता है। परन्तु, भोजपुरी गीत में कथानक और आगे बढ़ता है। यह भी संभव है कि गीत के इस उपलब्ध मगही रूप में उसके आगे का अंश छूट गया हो। भोजपुरी गीत में पत्नी संतानवती होती है। फिर तो, मातृत्व के गौरव से उसकी मर्यादा बढ़ जाती है। पति स्वयं तिलरी लेकर उपस्थित होता है और उसे पहनने को देता है। उस समय व्यंग्य और अभिमान के साथ पत्नी कहती है—

'तिलरी राउर मइया पेन्हो, आउर बहिनिया पेन्हो हे।
हो परभुजी, हमहुँ त काली कोयलिया, तिलरिया हमरा ना सोभे हे ॥'

---

९. सुना। १०. पाया। ११. सवार। १२. जाऊँगा। १३. सौभाग्यशालिनी पत्नी। १४. सात। १५. जाओगी। १६. फिर से। १७. दिया।

इसमें पति, पत्नी और सास तीनों के बीच वार्त्तालाप के क्रम में स्त्री के सौभाग्य-शृङ्गार तथा आकर्षण के विषय में बहुत सुन्दर हास-परिहास व्यक्त किया गया है। इस गीत की अन्तर्ध्वनि में स्त्री के जीवन का साफल्य उसके रूप और रंग में नहीं, बल्कि उसके मातृत्व में है। वह कोयल-जैसी काली होकर भी अधिक-से-अधिक मूल्यवान् आभूषणों, पुरस्कारों और प्रतिष्ठाओं की पात्री है।]

पोथिया पढ़इते[1] तोहिं परभुजी, त सुनहऽ[2] बचन मोरा हो।
परभुजी, हमरा झुलनियाँ[3] केरा साध, झुलनियाँ हम पहिरब[4] हो ॥१॥
बोलिया तो, अहो धनि, बोललऽ, बोलहुँ न जानलऽ हे।
धनियाँ, कारी रे कोयलिया अइसन[5] देहिया, झुलनियाँ तोरा न सोभे हे ॥२॥
बोलिया त, अहो परभु, बोललऽ, बोलहुँ न जानलऽ हे।
परभुजी, कारी के रे सेजिया जनि जइहऽ, साँवर होइ जायेब[6] हे ॥३॥
मचिया बइठल तोहिं सासुजी, सुनहऽ बचन मोरा हे।
सासुजी, बरजहुँ[7] अपन बेटवा,सेजिया हमर जनि अवथुन,[8]
साँवर होइ जवथुन[9] हे ॥४॥
बहुआ[10], छोरि देहु माँग के सेनुरवा, नयना भरि काजर हे।
बहुआ, बरजब अपन बेटवा, सेजिया तोहर न जयतन[11] हे ॥५॥

●

[४]

[एक बहुत ही सुन्दर प्रसंग की कल्पना इस गीत में की गई है। तेरह-चौदह वर्षों के प्रवास के बाद पति प्रभूत धन उपार्जन करके, उमंग के साथ, घर लौटा है। उसके मन में यह जानने की आकांक्षा है कि मेरे विना अपने संतानहीन और अभिशप्त जीवन को उसकी पत्नी ने कैसे-कैसे निभाया है? विरह की ज्वाला स्त्री के लिए असह्य होती है। संतानवती तो किसी प्रकार पति-वियोग का सामना भी कर लेती है; परन्तु निःसंतान स्त्री के लिए इतने दिनों का अकेलापन अधिक दुःखदायी हो जाता है। ऐसी अवस्था में प्रतिकूल परिस्थितियों के आघात से कुछ स्त्रियाँ

१. पढ़ते हुए। २. सुनिए। ३. नाक में पहनने का आभूषण। ४. पहनूँगी। ५. ऐसी। ६. जाइएगा। ७. बरजो, रोको। ८. आवें। ९. जायेंगे। १०. वधू, बहू। ११. जायेंगे।

विचलित भी हो जाती हैं। इसीलिए, पति घर आने पर एक ओर जहाँ उमंग से दरवाजे पर, आँगन में, ओसारे में और अन्त में अपनी पत्नी की सेज पर उपार्जित हीरे-जवाहरात तथा अशर्फियों की थैली उझलता चलता है, वहीं दूसरी ओर वह अत्यन्त उत्सुक और सशंक भाव से अपनी पत्नी का भेद पहले चेरी से, फिर अपनी माँ से, फिर भाभी से और सबके बाद अपनी प्रिया से ही पूछता चलता है। सबसे उसे संतोषजनक उत्तर मिलता जाता है कि वह (उसकी पत्नी) पंडित पिता की पुत्री है। उसका मुख सदा उज्ज्वल है। उसने तीनों कुलों की मर्यादा की रक्षा की है। पर, जब अपनी पत्नी से वह पूछता है, तब उस संतान-रहित प्रतिव्रता नारी की सारी वेदना गीत की अन्तिम पंक्तियों में उमड़ पड़ती है—'हे राजा, आपके श्रीचरणों के विना मेरी सेज पर काली नागिन लोटा करती है।']

कत[1] दिन मधुपुर जायब, कत दिन आयब हे।
ए राजा, कत दिन मधुपुर छायब,[2] मोहिं के बिसरायब हे ॥१॥
छव महीना मधुपुर जायब, बरिस दिन आयब हे।
धनियाँ, बारह बरिस मधुपुर छायब, तोहें नहिं बिसरायब हे ॥२॥
बारहे बरिस पर राजा लउटे,[3] दुअरा[4] बीचे गनि[5] ढारे[6] हे।
ए ललना, चेरिया[7] बोलाइ भेद पूछे, धनि मोर कवन रँग हे ॥३॥
तोर धनि हँथवा के फरहर,[8] मुँहवा के लायक[9] हे।
ए राजा, पढ़ल पंडित केर[10] धियवा, तीनों कुल रखलन[11] हे ॥४॥
उहवाँ[12] से गनिया उठवलन, अँगना बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, अम्माँ बोलाइ भेद पुछलन, कवन रँग धनि मोरा हे ॥५॥
तोर धनि हँथवा के फरहर, मुँहवा के लायक हे।
ए बबुआ, पढ़ल पंडित केर धियवा, तीनों कुल रखलन हे ॥६॥
उहवाँ से गनिया उठवलन, ओसरा[13] बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, भउजी बोलाइ भेद पुछलन, धनि मोरा कवन रँग हे ॥७॥
तोरो धनि हँथवा के फरहर, मुँहवा के लायक हे।
बाबू, पढ़ल पंडित केर धियवा, तीनों कुल रखलन हे ॥८॥

१. कितना। २. छाओगे, रहोगे। ३. लौटे। ४. द्वार, दरवाजा। ५. गनि=पटसन के मोटे टाट की बनी हुई बोरी या रुपये रखने का जालीदार थैला; गँजिया। [गनि ∠ गोणी (संस्कृ०); मिला०—गनी (Gunny—अँ०); कहा०—'कूदे गोन न कूदे तंगी।']। ६. ढालता है, उझलता है। ७. चेटी, नौकरानी। ८. फुरतीला। ९. योग्य। १०. की। ११. पितृकुल, मातृकुल (ननिहाल) तथा पतिकुल की मर्यादा रखनेवाली। १२. वहाँ, उस जगह। १३. ओसारा; बरामदा, [<उपशाला]।

उहवाँ से गनिया उठवलन, सेजिया बीचे गनि ढारे हे।
ए ललना, धनियाँ बोलाइ भेद पुछलन, तुहूँ धनि कवन रँग हे ॥९॥
अँगना मोरा लेखे[14] रनबन[15] दुअरा कुँजनबन[16] हे।
ए राजा, सेजिया पर लोटे काली नगिनिया, त रउरे[17] चरन बिनु हे ॥१०॥

●

[५]

[इस गीत में एक परिहास-पूर्ण प्रसंग का आश्रय ग्रहण किया गया है। पति परदेश से वेश बदलकर लौटा है। पानी भरने के लिए गई हुई अपनी पत्नी को जब वह देखता है, तब वह उससे विनोद करता है। उसे चुक्कड़ से पानी भरते देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है। भला कहीं चुक्कड़ से पानी भरा जाता है? परन्तु यह उसकी गर्भावस्था के सर्वथा अनुकूल है। गर्भिणी स्त्री भारी घड़े से पानी भरे, तो कैसे? पत्नी पति को पहचान नहीं पाती। पनघट से घर लौटकर वह अपनी सास को जब सारा वृत्तान्त सुनाती है, तब यह आनन्दमय भेद खुलता है।]

कउन[1] बन उपजे[2] हे नरियर, कउन बन उपजे अनार हे।
ललना, कउन बन उपजे गुलाब, तो चुनरी रँगायब हे ॥१॥
बाबा बन उपजे हे नरियर, भइया बन अनार हे।
ललना, सामी[3] बन उपजे गुलाब, त चुनरी रँगायब हे ॥२॥
से चुनरी पेन्हथिन[4] सुगही,[5] दुलरइतिन[6] सुगही हे।
ललना, पेन्हिए चललन पानी लावे, चुकवन[7] पानी भरे हे ॥३॥
बटियन[8] पूछऽ हे बटोहिया, त कुआँ पनिहारिन हे।
ललना, केकर हहु तोंहि बारी-भोरी,[9] कउन भइया के दुलारी हे।
ललना, कउन पुरुसवा के नारी, त चुकवा लेइ पानी भरे हे ॥४॥
बाबा के हम हीअइ[10] बारी,[11] त भइया के दुलारी हे।
ललना, सामी जी के अलप[12] सुकुमारि, चुकवा सन[13] पानी भरी हे ॥५॥

---

१४. लिए। १५. अरण्य, वन। १६. काँटोंवाला झाड़ीदार सघन वन। १७. आपके।

१. किस। २. उपजता है। ३. स्वामी। ४. पहनेगी। ५. सुगृहिणी। ६. दुलारी। ७. मिट्टी का छोटा पात्र या चुक्कड़। ८. रास्ते में। ९. कमसिन और भोली-भाली। १०. हूँ। ११. कम उम्रवाली लड़की। १२. अल्प, अथवा अत्यन्त लप-लप पतली। १३. से।

मचिया बइठल तुहूँ सासुजी, सुनहऽ बचन मोरा हे।
ललना, रहिया में मिलल एक रजवा[14] त बदन निहारइ हे।
ललना, बोले लगल बचन कुबोल,[15] करे लगल हाँसी हे ॥६॥
कइसन[16] हइ उजे[17] रजवा, कइसन रँग हाथी हे।
ललना, कइसन हकइ[18] महाउत,[19] कहि समुझावहु हे ॥७॥
करिया रंग के हथिया से गोरे महाउत हे।
ललना, सुन्नर बदन के जे रजवा से बदन निहारइ हे ॥८॥
हँसि-हँसि बोलथिन[20] सासुजी, तुहूँ बहू बोदिल[21] हे।
ललना, रजवा हकइ मोर बेटवा, आयल परदेश करि हे।
ललना, दुअरे बाँधल हकइ हथिया, तोहर परभु आयल हे ॥९॥

●

[६]

[इस गीत में दादुर, मोर, पपीहे और झींगुर की सम्मिलित ध्वनि से सावन महीने की शहनाई से तुलना की गई है और वर्षा की कादो-कीच का भी चित्रण है। शुकी की गर्भ-वेदना से गर्भिणी नारी की वेदना की दार्ष्टान्तिक अभिव्यक्ति प्रकट की गई है। हिन्दी-साहित्य में मानव-दम्पती के लिए शुक-शुकी का प्रतीक प्रसिद्ध है। शुकी की वेदना की जानकार कोयल गर्भिणी नारी की सहेली और चेरी है, जो उसके स्वामी के पास प्रसव-वेदना का संदेश पहुँचाती है। संदेश की आनन्द-मग्नता में पति के हाथ का पासा, बेल और बबूल वृक्ष के नीचे ही गिर पड़ता है और वह दौड़कर अपनी प्रसव-पीड़िता पत्नी के पास पहुँचता है, जो, (गीत में वर्णित) 'गज ओवर' (भोजपुरी में जिसे चूहानी या चुहान कहते हैं) यानी घर का भीतरी भाग, में पड़ी थी। प्रसव-वेदना के समय स्त्री अपनी रूठी सास को मना लाने के लिए पति से कहती है। इस समय उसे सहानुभूति के साथ-साथ अनुभवी बूढ़ी की जरूरत तो है ही, अपनी सन्तति के जन्मोत्सव के आनन्द में सम्मिलित होने के लिए निकटतम सम्बन्धियों की उपस्थिति भी आवश्यक है, इसीलिए वह चचेरी सास को भी बुलाने को कहती है। उसका पति प्रसन्नता में विभोर हो अपनी माँ को मनाने

---

१४. राजा। १५. नहीं बोलने योग्य। १६. कैसा। १७. वह जो। १८. है। १९. महावत। २०. बोलती हैं। २१. नासमझ (बोदा)।

का प्रयास भी करता है, भले ही उसकी माँ अपनी पतोहू के कठोर वचनों को अब भी याद कर रही हो।

यहाँ सास-पतोहू के झगड़े की चर्चा की गई है। यह झगड़ा सदातन है और पुत्र-जन्मोत्सव के समय दोनों के मनमुटाव का खत्म होना भी सत्य है। नारी के जीवन की महती आकांक्षा की परिणति मातृत्व में ही निखरती है, इसलिए वह इस समय सभी की शुभकामना चाहती है।]

साँवन के सहनइया[1] भदोइया[2] के किच-किच[3] ए।
सुगा-सुगइया[4] के पेट,[5] बेदन[6] कोई न जानये हे।
सुगा-सुगइया के पेट, कोइली दुख जानये हे ॥ १ ॥
अँगना बहारइत चेरिया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चेरिया, मोरा परभु बइठल बँगलवा,[7] से जाइके बोलाइ देहु हे ॥ २ ॥
जुगवा[8] खेलइते[9] तोंहों बबुआ, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
बबुआ, रउरे धनि दरदे बेयाकुल, रउरा के बोलाहट[10] हे ॥ ३ ॥
पसवा त गिरलइ[11] बेल तर,[12] अउरो[13] बबूर तर हे।
ललना, धाइ[14] पइसल गजओबर,[15] कहऽ धनि कूसल हे ॥ ४ ॥
डाँड़ मोरा फाट हे कसइली जाके, ओटिया[16] चिल्हकि[17] मारे हे।
परभुजी, बारह बरिसे मइया रूसल, सेहो बउँसी लाबह[18] हे ॥ ५ ॥
मचिया बइठल तोहें मइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
मइया, तोर पुतहू[19] दरद बेयाकुल, तोरा के बोलाहट हे ॥ ६ ॥
तुहूँ त हऽ मोर बबुआ, त रउरो बंसराखन[20] हे।
बबुआ, तोर धनि बचन कुठार, बोलिया करेजे साले हे ॥ ७ ॥
सउरिया[21] बइठल तोहें धनिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।
धनि, बारह वरिस मइया रूसल, कहल नहिं मानये हे ॥ ८ ॥

---

१. शहनाई। सावन की रिमझिम, दादुर, मोर, पपीहे, झींगुर आदि की सम्मिलित ध्वनि के लिए शहनाई शब्द का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं 'सहनइया' की जगह पर 'समनइया' भी आया है। भो० ग्रा० गी० में 'सवनइया' पाठ है। 'सवनइया' या 'समनइया' का तात्पर्य है—'सावनी समाँ।' २. भाद्र मास। ३. कीच-काच। ४. शुक-शुकी। ५. गर्भ। ६. वेदना। ७. बँगला में। ८. जुआ। ९. खेलते हुए। १०. बुलावा। ११. गिर गया। १२. बिल्व वृक्ष के नीचे। १३. और। १४. दौड़कर। १५. चुहान, प्रसूति-गृह। १६. उदर के नीचे का पेड़ू वाला भाग। १७. सूल की तरह रह-रहकर दर्द करना। १८. मनालाओ। १९. पतोहू, बधू। २०. वंशरक्षक। २१. प्रसूति-गृह।

लेहु परभु नाक के बेसरिया[22] त मइया के समद[23] दहु हे।
परभुजी, बारहे बरिस चाची रूसल, उनखे[24] समद दहु हे ॥ ९ ॥
मचिया बइठल तोंहि चाची, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चाची, तोर पुतहू दरद बेयाकुल, तोरा के बोलाहट हे ॥ १० ॥
सामन[25] के समनइया[26] तो, भादो के किच-किच हे।
बबुआ, बह हकइ[27] पुरबा से पछेया, जड़इया[28] मोरा लागये हे ॥ ११ ॥
घड़ी रात गेलइ पहर रात होरिला जलम लेल हे।
ललना, बजे लगल अनन्द बधावा, महल उठे सोहर हे ॥ १२ ॥
अँगना बहारइत चेरिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चेरिया, झट दए बाँटऽन[29] सोंठउरा[30] से होरिला जलम लेल हे ॥ १३ ॥

[७]

[सावन-भादो की सुहावनी रात में, जब मोती की बूँदों की तरह रिमझिम वर्षा हो रही है। सास, ननद और पतिदेव सब-के-सब अपने-अपने स्थान पर सोये हुए हैं। ऐसे समय में पत्नी को प्रसव-वेदना आरंभ होती है। सूचना पाने पर प्रसूति-गृह के दरवाजे पर जीरे भरकर, सुगन्धि के लिए उसमें लौंग डालकर, अँगीठी जलाई गई। चंपा के फूलों से वातावरण सुगन्धित हो उठा। पुत्रोत्पत्ति के बाद सास, ननद और गोतिनी को जच्चे ने उचित सम्मान करके बैठाया। वह स्वयं गोतिनी के नजदीक आकर बैठ गई। सभी खुशी में दान-दक्षिणा देने के अतिरिक्त गाने-बजाने लगे। गोतिया से लेन-देन होता है, इसलिए गोतिनी ने दिखाने के लिए दान तो किये, लेकिन भीतर-ही-भीतर वह अपने गोतिनी की वंश-वृद्धि से खिन्न होकर विषण्ण मन से घर लौटी। भाभी के द्वारा ननद की उपेक्षा हुई है, फिर भी वह

---

२२. नकबेसर, नाक का एक आभूषण। २२. समदना, मनाना। २४. उनको। २५. श्रावण। २६. सावनी समाँ। २७. बह रही है। २८. जाड़ा। २९. बाँटो न। ३०. एक प्रकार का लड्डू, जो सोंठ, चावल के आटे आदि से बनता है, जो प्रसूता को खाने के लिए दिया जाता है तथा पड़ोसियों में बाँटा जाता है।

अपने भतीजे की खुशी में आनन्दमग्न है ; क्योंकि वह सोचती है कि भाई की वंश-वृद्धि के बाद ही तो मायके से मेरा संपर्क बना रहेगा ।]

समना[1] भदोइया के रतिया, अँगन[2] घहरायल[3] हे ।
ललना, बरसेला[4] मोतिया के बूंद तो देखते सोहामन[5] हे ॥१॥
सासु जे सुतलन[6] ओसरवा, ननद गजओबर[7] हे ।
सइयाँ मोरा रंग-महलिया, त कहि के जगावहु हे ॥२॥
जिरवा के बोरसी भरावल, लौंगिया के पसँघ[8] देल हे ।
ललना, चंपा के फुलवा महामँह, देखते सोहामन हे ॥३॥
आधि रात बीतलइ, पहर रात, बबुआ जलम लेल हे ।
ललना, बाजे लागल अनंद बधावा, महल उठे सोहर हे ॥४॥
सासु के भेजबइ नउनियाँ, ननदी घर बैरिन हे ।
गोतनी घर रउरे परभु जाहु, महल उठे सोहर हे ॥५॥
सासु के देबइन[9] खटियवा, ननदी मचोला देबइन हे ।
गोतनी के देबइन पलँगिया, हम धनि पाँव तरे हे ॥६॥
सासु लुटवलन रुपइया, ननदी ढेउआ[10] देलन हे ।
गोतनी लुटवलन गउआ, गोतिया घर सोहर हे ॥७॥
सासु जे उठलन गावइत, ननदी बजावइत हे ।
गोतनी जे उठलन बिसमाथल[11], गोतिया घर सोहर हे ॥८॥

---

१. श्रावण । २. आंगन । ३. मेघ के बरसने से घहर-घहर शब्द कर रहा है । ४. बरसता है । ५. सुहावना । ६. सोई है । ७. चुहान, घर का भीतरी भाग । ८. पँसघी की आग उसे कहते हैं; जो बच्चा पैदा होने के बाद सौरी के दरवाजे पर अंगीठी में जलाकर रख दी जाती है और छट्ठी के दिन तक लगातार जलती रहती है । यहाँ उस आग में सुगंधि के लिए लौंग डाली गई है । ९. दूंगी । १०. ताँबे का एक छोटा सिक्का, जिसका प्रचलन अब नहीं है । यह एक पैसे के बराबर होता था । ११. विषाद लेकर ।

[८]

[इस गीत के प्रारम्भ में कुसुम रंग की साड़ी और पाँच प्रकार के आभूषणों से सज्जित स्त्री के बिछुए की रुनुक-झुनुक आवाज तथा पति के पलँग पर रहने का वर्णन करके पति-पत्नी के संयोग का अप्रत्यक्ष आभास दिया गया है । प्रसव-वेदना होने पर स्त्री देवर के द्वारा अपने पति को सूचित कराती है । पत्नी अपनी असह्य वेदना के विषय में पति से कहती है तथा डगरिन बुलाने का अनुरोध करती है । पति घोड़े पर सवार होकर डगरिन के यहाँ पहुँचता है । डगरिन उससे उसका पता आदि आवश्यक बातें पूछती हुई यह भी पूछ लेती है कि जिसे प्रसव-वेदना हो रही है, वह तुम्हारी कौन है ? परिचय प्राप्त कर डगरिन कहती है कि 'मैं इस रात में दूसरी किसी सवारी पर नहीं जाऊँगी । आप उसी पालकी को ले आवें, जिसपर बैठकर आपकी पत्नी ससुराल से आई थी ।' इसी को कहते हैं प्यार-भरा नाज ! साथ ही वह उससे यह भी पूछ लेती है कि पुत्र या पुत्री होने पर आप हमें क्या-क्या इनाम देंगे ? वह पालकी पर चढ़कर आती है, लेकिन जच्चा को देखकर वह उसके पति से कहती है ।

'राजा तोर धनि हथवा के साँकर, मुँहवा के फूहर हे ।
नहीं जानथू दुनियाँ के रीत, दान कइसे हम लेबो हे ॥'

किन्तु, पति अपने वचन का पालन करता है । पुत्रोत्पत्ति के बाद रंगीन वस्त्रों को पहनकर तथा मनोवांछित दान पाकर वह प्रसन्न मन से शुभकामना करती हुई अपने घर को जाती है ।]

रुनुक झुनुक बिछिया[1] बाजल, पिया पलँग पर हे ।
ललना, पहरि कुसुम रँग चीर, पाँचो रँग अभरन[2] हे ॥१॥
जुगवा खेलइते तोंहे देवरा त, सुनहऽ बचन मोरा हे ।
देवरा, भइयाजी के जलदी बोलाबऽ, हम दरदे बेयाकुल हे ॥२॥
जुगवा खेलइते तोंहे भइया त, सुनहऽ बचन मोरा हे ।
भइया, तोर धनि दरद बेयाकुल, तोरा के बोलावथु[3] हे ॥३॥
पसवा त गिरलइ बेल तर, अउरो बबूर तर हे ।
ललना, धाइ के पइसल गजओबर, कहु धनि कूसल हे ॥४॥
डाँर[4] मोर फाटहे करइली जाके, ओटिया चिल्हकि मारे हे ।
राजा, का कहूँ दिलवा के बात, धरती मोर अन्हार लागे हे ॥५॥
घोड़ा पीठे होबऽ असवार त डगरिन[5] बोलवहु हे ॥६॥

---

१. पैर का एक आभूषण । २. आभूषण । ३. बुला रही है । ४. कमर । ५. चमारिन, जो प्रसव कराने में निपुण होती है ।

हथिया खोलले हथिसरवा, त घोड़े घोड़सार खोलल हे।
राजा, घोड़े पीठ भेलन असवार, त डगरिन बोलावन हे ॥७॥
के मोरा खोले हे केवड़िया त टाटी फुरकावय[६] हे।
कउन साही[७] के हहु तोही बेटवा, कतेक[८] राते आयल हे ॥८॥
हम तोरा खोलऽ ही केवड़िया त टाटी फुरकावहि हे।
डगरिन, दुलरइता[९] साही के हम हीअइ बेटवा, एते राते आयल हे ॥९॥
किया तोरा माय से मउसी,[१०] सगर[११] पितिआइन[१२] हे।
किया तोरा हथु गिरिथाइन,[१३] कते राते आयल हे ॥१०॥
न मोरा माय से मउसी, न सगर पितिआइन हे।
डगरिन, हथिन मोर घर गिरिथाइन एते राते आयल हे ॥११॥
हथिया पर हम नहीं जायब, घोड़े गिरि जायब हे।
लेइ आबऽ रानी सुखपालक,[१४] ओहि रे चढ़ि जायब हे ॥१२॥
जबे तोरा होयतो त बेटवा, किए देबऽ दान दछिना हे।
जबे तोरा होयतो लछमिनियाँ, त कहि के सुनावह हे ॥१३॥
डगरिन, जब मोरा होयतो त बेटवा, त कान दुनु सोना देबो हे।
डगरिन, जब होयत मोरा लछमिनियाँ, पटोर[१५] पहिरायब हे ॥१४॥
सोने के सुखपालकी चढ़ल डगरिन आयल हे।
डगरिन बोलले गरभ सयँ, सुनु राजा दसरथ ए ॥१५॥
राजा, तोर धनि हथवा के साँकर,[१६] मुहँवा के फूहर हे।
नहीं जानथू[१७] दुनियाँ के रीत, दान कइसे हम लेबो हे ॥१६॥
काहेला डगरिन रोस करे, काहेला बिरोध करे हे।
डगरिन हम देबो अजोधेया के राज, लहसि[१८] घर जयबऽ हे ॥१६॥
इयरी पियरी पेन्हले डगरिन, लहसि घर लउटल हे।
जुग-जुग जियो तोर होरिलबा, लवटि अँगना आयब हे ॥१८॥

---

६. टाटी फुरकायव = द्वार पर की टट्टी खड़खड़ाता है अथवा खोलता है। ७. शाही, उपाधि विशेष। गीत गाते समय प्रसंगानुसार व्यक्ति-विशेष का नाम लेने की परिपाटी है। ८. कितना। ९. दुलारे। १०. मौसी। ११. सभी, सगा। १२. चाची। १३. गृहिणी। १४. एक तरह की पालकी। १५. गोटा-पाटा जड़ी हुई रेशमी साड़ी। १६. हथवा के साँकर = कंजूस। १७. जानती है। १८. प्रसन्नतापूर्वक, हँसी-खुशी।

[९]

अँगना बहारइत[१] चेरिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चेरिया, बबुआ जी के पारु न हँकरवा,[२] महलिया में कुछो काम हे ॥१॥
पोथिया जे बिगलन[३] बबुआ दुअरवे पर,[४] अवरो दलनवाँ[५] पर हे।
मचिया बइठल तुहूँ भउजी, त सुनहऽ बचन मोरा हे ॥२॥
भउजी, कउची[६] महलिया कुछो काम, त हमरा बोलावल जी।
बबुआ, भइया जी के पारु न हँकरिया, त दरदे बेयाकुल जी ॥३॥
भइया, रउरा महलिया त कुछो काम, भउजी बोलावले जी।
पसवा त फेंकलन परभु जी बेलवा तरे, अउरो बबूर तरे हे।
भनसा[७] पइसल तुहूँ धनियाँ, कउन काम हमरा बोलऽवलऽ जी ॥४॥
डाँर मोरा फाटे करइले[८] जोगे, ओटिया चिल्हकि मारे हे।
सामी, लामी-लामी केसिया भसम[९] लोटे, धरती अन्हार लागे हे ॥५॥
अतना बचनियाँ परभु जी सुनलन, त देबी जी मनावन चललन हे।
देबी जी, तिरिया पर होहु न सहइया, अब न तिरिया पास जइबो हे ॥६॥
पहिले जे धनियाँ मोरा कहितऽ, त अउरो में चूमि लेती हे।
धनियाँ, मगही ढोली[१०] पनवा चभइती,[११] त जँघिया बइठइती हे।
धनियाँ, लाली रे रजइया हम ओढ़उती, त कोरबा[१२] ले के सुतती हे ॥७॥

[१०]

कथि[१] केर खटोलवा त कथि केर ओरहन[२] हे।
ललना, सेहो चढ़ि धानि बेदनायली,[३] बेदने बेयाकुल हे ॥१॥
चनन केरा खटोलवा, त रेसम के ओरहन हे।
सेहो चढ़ि धानि बेदनायली, बेदने बेयाकुल हे ॥२॥
आन[४] दिन सुतलऽ एके सेज, बहर[५] सिरहाना[६] कयले हे।
धानि हे, आज काहे सुतलऽ दोसर सेजिया, परभु से बयर कयलऽ हे ॥३॥

---

१. बुहारती हुई। २. हँकार पारना = बुलाना, निमन्त्रित करना। ३. फेंक दिया। ४. दरवाजे पर। ५. बाहर का बैठका। ६. क्या। ७. रसोई घर। ८. करैला। ९. धूल, राख। १०. मगही ढोली = मगह का उत्पन्न प्रसिद्ध पान, जिसका एक परिमाण, जिसमें पान के दो सौ पत्ते होते हैं। ११. चाभने या चबाने के लिए देते। १२. गोद में।

१. किस चीज का। २. अदवान, खाट को कसनेवाली पायताने की रस्सी। ३. वेदना से युक्त हुई। ४. दूसरे। ५. बाहर। ६. खाट का वह भाग जिस ओर सिर रखा जाता है।

काँचहि बँसवा कटायब, खटोला बिनायब हे।
पिया से लड़िए झगड़ि करि बेदना बँटायब हे ॥४॥
टोला परोसिन के माय, तुहुँ मोर बहिनी ही हे।
मइया, सब मिलि धनि परबोधऽ, कहि समुझावऽ हे ॥५॥
तोर धनि दिनमा के थोरी, बयसवा के भारी[७] हथु हे।
बबुआ, जबो घर होयतो नंदलाल, करिहऽ पनचाइत हे।
जबे घर होयतो होरिलवा तबही परबोधब[८] हे, कहि के बुझायब हे ॥६॥

●

[११]

मचिया बइठल तुहूँ सासु, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
सासु, सपन देखलूँ अजगूत[१], बालक एक सुन्नर[२] हे ॥१॥
चुप रहुँ, चुप रहुँ, पुतहू,[३] त सुनहऽ बचन मोरा हे।
पुतहू सुनि पइहें गँमवा[४] के लोग, करतइ उपहाँस तोरो हे ॥२॥
आज हकइ सोने के रात, बबुआ एक जलम लेता हे।
पुतहू, आज चानी केरा रात, होरिलवा जलम लेता हे ॥३॥
घड़ी रात बीतल पहर रात, अउरो अधिए[५] रात हे।
ललना, जलम लिहल नंदलाल, महल उठे सोहर हे ॥४॥
सासु मोरा उठलन गवइत, ननद बजइवत हे।
ललना, सामीजी त मालिन फुलवरिया, मालिन सँग सारी[६] खेलथ हे ॥५॥
एहो एहो राजा दुलरइता राजा, सुनहऽ बचन मोरा हे।
राजा, तोहरा के भेलो नंदलाल, महल उठे सोहर हे ॥६॥
पसवा[७] त गिरलइ बेल तर, कउरिया[८] बबूर तर हे।
राजा, चलि भेलन अपन महलिया, महल उठे सोहर हे ॥७॥
कोठे चढ़ि देखथिन दुलरइतिन, झर रे झरोखे लगी हे।
चेरिया, आज रे उजाड़ी देहीं बगिया, त फूल छितराइ[९] देहीं हे ॥८॥
महल में जुमलइ[१०] मलिनियाँ, त कर जोड़ी खाड़ा भेलइ हे।
रानी, काहे लागी उजड़हइ बगिया, त काहे लागी फूल छितरहइ हे ॥९॥

---

७. बयसवा के भारी = गर्भवती। ८. प्रबोधना, समझाना।

१. अजीब, आश्चर्यंकर। २. सुन्दर। ३. पतोहू, बधू। ४. गाँव। ५. आधी। ६. जुआसार, जुआ। ७. चौसर के खेलवाला पासा। ८. कौड़ी। ९. तितर-बितर। १०. पहुँच गई।

काहे लागी बाँधहहु मलिया, त काहे लागी लोर-झोर[११] हे।
रानी, बरजहु अपन कोठीवाल[१२], बगिया मत सून[१३] करू हे ॥१०॥
में तोरा पूछूँ मलिनियाँ, त सुनहऽ बचन मोरा गे।
मालिन, कइसे कइसे कयलें बिलास, मोरा के समुझाय देंही गे ॥११॥
रसे-रसे[१४] बेनियाँ[१५] डोलोलूँ, आउ[१६] फूल छितराउलूँ हे।
रानी, भउँरे[१७] रूपे राजा उहाँ[१८] गेलन, सभे रस चूसि लेलन हे ॥१२॥

●

[१२]

[प्रसव-जनित वेदना से व्याकुल पत्नी अपने पति के साथ नहीं सोने का संकल्प करती है तथा बच्चे को खेलाने का लोभ भी त्याग देना चाहती है। इतना ही नहीं, वह सेज लगानेवाली चेरी को भी अपनी बैरिन समझती है। लेकिन पुत्रोत्पत्ति के बाद आनंदोल्लास में वह अपनी सारी वेदनाएँ भूल जाती है तथा पति के साथ सोने और बच्चे को खेलाने का ही स्वप्न नहीं देखती, वरन् उसके लिए सभी प्रकार के कष्टों को सहने के लिए भी तैयार रहती है। साथ ही पुत्र के मुंडन, कर्णवेध, उपनयन, विवाह आदि संस्कारों के उत्सवों की कल्पना से वह आनन्द-विभोर हो उठती है।]

कउन बैरिन सेजिया डँसावल,[१] दियरा[२] बरावल[३] हे।
अरे, कउन बैरिन भेजले दरदिया, करेजे मोरा सालय हो ॥१॥
चेरिया बैरिन सेज डाँसल, दियरा बरायल हे।
ननद भइया भेजलन दरदिया, दरदे करेजे सालय हे ॥२॥
अब नहीं पिया सँग सोयबो, न बबुआ खेलायब हे।
ललना, अब नहीं नयना मिलायब, दरद करेजे साले हे ॥३॥
आधी राती गेल, पहर राती, होरिला जलम लेल हे।
ललना, बजे लागल अनन्द बधावा, महल उठे सोहर हे ॥४॥
अब हम पिया सँघे जायब, नयन जुड़ायब हे।
ललना, अब हम बबुआ खेलायब, अब हम सहब[४] दुख हे ॥५॥

---

११. आँसू और झगड़ा। १२. कोठी की रक्षा करनेवाले प्यादे। १३. सूना, उजाड़ना। १४. धीरे-धीरे। १५. छोटा पंखा। १६. और। १७. भ्रमर। १८. उस जगह।

१. बिछाया। २. दीपक। ३. जलाया। ४. सहन करूँगी।

होयते जे बबुआ के बिआह, अउर जग मूड़न[5] हे।
ललना, होयत बबुआ के कनछेदन,[6] ननद न बोलायब हे ॥६॥
होयते बबुआ केरा बिआह, आउर जग-मूड़न हे।
ललना, होयत बबुआ के कनछेदन, अपने से आयम हे ॥७॥

●

[१३]

[निःसंतान होने के कारण पति द्वारा अपमानित पत्नी को रोते हुए देखकर, उसका देवर उसके रोने का कारण पूछता है। वह स्त्री अपने देवर से कारण बतलाती हुई कहती है—'बबुआ, तोरा भइया देलन बनवास, से एक रे पुतर बिनु हे।' *इसपर देवर अपनी भाभी को सांत्वना देता हुआ कहता है—'भाभी, तुम मुझसे सोने और चाँदी लो तथा दान-आदि करके आदित्य भगवान् की अराधना करो। वे प्रसन्न होकर तुम्हें आशीर्वाद देंगे, जिससे तुम पुत्ररत्न प्राप्त करोगी।" देवर के अनुरोध पर भाभी आदित्य भगवान् की पूजा करती है तथा मन्नतें मानती है। आदित्यदेव के प्रसन्न होने पर वह पुत्र प्राप्त करती है। वह अपने देवर को युग-युग जीवित रहने का आशीर्वाद देती है।]*

एक धनि अँगवा[1] के पातर[2] पिया के सोहागिन हे।
ललना, दोसरे, दुआरे लगल ठाढ़, काहे भउजी आँसू ढारे हे ॥१॥
तुहूँ त हहु, भउजो, अलरी[3] से, भइया के दुलरी हे।
काहे भउजी लगल दुआर, काहे रे भउजी आँसू ढारे हे ॥२॥
तुहूँ त हहु बबुआ देवर, मोर सिर साहेब[4] जी।
बबुआ, तोरो भइया देलन बनवास, से एक रे पुतर बिनु हे ॥३॥
लेहु न लेहु भउजी सोनमा, से अउरो चानी लेहु हे।
भउजी, मनवहु आदित[5] भगमान, पुतर एक पायब हे ॥४॥
मनवल[6] आदित भगमान, से होरिला जलम लेल हे।
जुग-जुग जिअए देवरवा जे मोरा गोदी भरि देल हे ॥५॥

●

---

५. मुण्डन संस्कार। ६. कर्णबेध-संस्कार।

१. अंग। २. पतली। ३. अलबेली। ४. सिर साहब=बड़ा साहब, श्रेष्ठ। ५. आदित्य, सूर्य भगवान। ६. मनौती मानी।

[१४]

[इस गीत में नींबू, अनार और नारंगी के पौधे लगाने तथा उसमें गोले-गोले फलों के लग जाने का वर्णन गर्भधारण का प्रतीक है। पुत्रोत्पति के बाद गुलाब और कुसुम के फूलों के प्रतीक के द्वारा बच्चे की छठी के अवसर पर पहने जानेवाले रंगीन वस्त्रों की अभिव्यक्ति की गई है]

कहँमा[1]हि लेमुआ[2] के रोपब, कहमा अनार रोपब हे।
कहँमाहि रोपब नौरंगिया, से देखि-देखि जीउ भरे हे ॥१॥
अँगनाहि रोपबइ से लेमुआ, खिरकी[3] अनार रोपब हे।
दरोजे[4] पर रोपबइ नौरंगिया, से देखि-देखि जीउ भरे हे ॥२॥
लटकल देखलूँ लेमुआ त, पकल अनार देखलूँ हे।
गोले गोले देखलूँ नौरंगिया, जचा[5] रे दरद बेयाकुल हे ॥३॥
समना[6] भदोइया केरा रतिया, त होरिला जलम लेलन हे।
बजे लागल अनन्द बधाबा त महल उठे सोहर हे ॥४॥
कउन बन फूलहइ गुलबवा त कउन बन कुसुम रँग हे।
कउन देइ[7] के रँगतइ चुनरिया, त देखते सोहावँन हे ॥५॥
कुँज बन फूलहइ गुलबवा त कुरखेत[8] कुसुम फूलइ हे।
सुगही[9] के रँगब चुनरिया, त देखत सोहावँन हे ॥६॥

●

[१५]

पहिला दरद जब आयल, सासु गोड़[1] लागले हे।
सासु, अब न करम अइसन[2] काम, दरद अँग सालइ[3] हे ॥१॥
दोसर दरद जब उठल, ननदी गोड़ लागल हे।
ननदो, अब न जयबइ सामी सेज, दरद हिया सालइ हे ॥२॥
तेसर दरद जब उठल, होरिला जलम लेल हे।
बजे लागल अनन्द बधइया, महल उठे सोहर हे ॥३॥

●

---

१. किस जगह। २. नींबू। ३. खिड़की। ४. दरवाजा। ५. प्रसूता। ६. श्रावणमास। ७. देवी। ८. वह खेत, जो जोता गया हो, पर बोया नहीं गया हो अथवा कुरुक्षेत्र। ९. सुहागिन।

१. गोड़ लागल=पैर पड़ना, प्रणाम किया। २. इस तरह का। ३. सूल देना, दर्द करना।

[१६]

[प्रसव-वेदना उठने पर स्त्री का अपनी सास, गोतिनी और ननद को बुलाकर मिल लेने का आग्रह है; क्योंकि उसे अब जीने का भरोसा नहीं रहा है। वह सोंठ-पीपर नहीं पीने, पियरी नहीं पहनने तथा प्रियतम के सेज पर पुनः नहीं जाने की प्रतिज्ञा करती है। वह सास से अपने प्रियतम की सुधि लेने को, गोतिनी से पति के मन प्रबोधने को तथा ननद से प्रियतम के साथ सोने को कहती है। वह दर्द से व्याकुल रहने पर भी ननद से मजाक करना नहीं भूलती। अन्त में बच्चे के पैदा होने के बाद वह सब कुछ भूल जाती है तथा आनन्द-विभोर होकर सभी विधि-विधानों को पूरा करने को कहती है तथा पति को बुला देने का आग्रह करती है।]

पहिला दरद जब आयल सासु के बोलवल हे।
सासु, मिलि लेहु बाड़ा छछन[1] से, बाड़ा ललक से हे।।१।।
अब सोंठ पीपर नहीं पीबो, पियरी[2] ना पेन्हबो हे।
पिया के सेज न जाअबो, पिया के सुध लीहऽ तूँहीं ।।२।।
दूसरा बेदन जब आयल, गोतनी के बोलावल हे।
गोतनी, मिलि लेहु बाड़ा छछन से, बाड़ा ललक से हे।।३।।
अब सोंठ पीपर नहीं पीबो, पियरी ना पेन्हबो हे।
पिया के मुँह न देखबो, पिया मन बोधिहऽ[3] तूँहीं ।।४।।
तेसरा बेदन जब उठल, ननद के बोलावल हे।
ननदो, मिलि लेहु बाड़ा छछन से, बाड़ा ललक से हे।।५।।
अब सोंठ पीपर नहीं पीबो, पियरी न पेन्हबो हे।
पिया सँग अब न सुतबों, सुतिहऽ अब तूँहीं।।६।।
चउठा दरद जब आयल, जलमल नंदलाल हे।
अब त सासु हम जीली[4] छछन से, जीली ललक से हे।।७।।
अब सोंठ पीपर हम पीबो, पियरी हम पेन्हबो हे।
अब पिया पास हम जयबो, पिया के बोला देहु हे।।८।।

●

---

१. छछन = अभाव जनित-अतृप्ति के बाद की तृप्ति अथवा अत्यन्त व्याकुल भाव से। २. पीली साड़ी। ३. मन बोधिहऽ = मन को धैर्य बाँधना अथवा मन को रखना। (यहाँ स्त्री अपनी गोतनी से चुटकी भी ले रही है।) ४. जी गई।

[१७]

[प्रसव-वेदना उठने पर पत्नी द्वारा बार-बार जगाने पर भी पति नहीं जगता है। अन्त में पुत्री जन्म लेती है। पुत्री-जन्म का समाचार पाकर सास उससे पलंग तो छीन ही लेती है, बल्कि ताड़ की चटाई भी नहीं देती। जमीन पर ही उसे लेटना पड़ता है। अपनी पत्नी की ऐसी दुर्दशा देख कर पति मुँह फुलाकर गुस्से से भर जाता है। ननद प्रसूता को गाली देने लगती है, गोतिनी उस पर गुर्राने लगती है तथा ससुर इतने क्रुद्ध हो जाते हैं कि हल्दी-सोंठ आदि आवश्यक सामग्री भी नहीं खरीदते। एक डगरिन ही ऐसी है, जो उसके साथ मातृवत् व्यवहार करती है तथा इस अवस्था में उसे अपनी गोद में स्थान देती है। इस गीत में समाज में प्रचलित बेटी के प्रति उदासीनता तथा उपेक्षा की भावना का चित्रण है।]

आठ सयँ बाजन[1] मोरा नइहर बाजे, आठ सयँ सासुर[2] हे।
ललना, सोरह सयँ बजर दरबजवा,[3] अलबेला नहीं जागए हे।।१।।
कतेक नीन[4] सोव हऽ तू साहेब, अउरू सिर साहेब हे।
चूरी फेंकि मारली, नेपुर[5] फेंकि, अउरो कँगन फेंकि हे।
सोरहो आभरन फेंकि मारली, अलबेला नहीं जागल हे।।२।।
हम तो जनली[6] रामजी बेटा देतन, बेटिया जलम लेलक हे।
ललना, सेहो सुनि सासु रिसियायल,[7] अउरो गोसियायल[8] हे।
सासुजी, तरबो[9] चटइया नहीं दीहलन, पलँग मोर छीनि लेलन हे।।३।।
हम तो जनली राम बेटा देतन, बेटिया जलम लेलक हे।
सेहो सुनि परभु रिसियायल, मुँहो नहीं बोलल हे।।४।।
ननदी मोरा गरियाबए,[10] गोतनी घुघुकावय[11] हे।
एक डगरिनियाँ मोर माय, जे कोर[12] पइसी बइठल हे।।५।।
हम त जनली रामजी बेटा देतन, बेटिया जलम लेलक हे।
सेहो सुनि ससुर जी रोसायल,[13] आउर[14] गोसायल हे।
सोंठवा हरदिया न कीन[15] लयलन, मुँहवा फुलायल हे।।६।।

●

---

१. बाजा। २. ससुराल। ३. वज्र के दरवाजे अर्थात् वज्र के किवाड़। ४. नींद। ५. नूपुर। ६. जाना। ७. क्रुद्ध हुआ। ८. गुस्से से भर गया। ९. ताड़ की। १०. गाली देती है। ११. आँखें तरेर कर कोसती रहती है। १२. क्रोड़, गोद। १३. रोष किया। १४. और १५. क्रय, खरीद।

[१८]

[पुत्रोत्पत्ति के बाद पत्नी अपने पति से अनुरोध करती है कि प्रियतम, अगर आप कृपा करके मेरे मायके पुत्रोत्पत्ति का संदेश भिजवा देते तो मेरे पिता, माँ, बहन और भाई आनंदित हो जाते। पत्नी के अनुरोध पर पति अपने मकान के पीछे बसनेवाले नाई को अपनी ससुराल संदेश देने के लिए भेजता है। सूचना पाकर वहाँ सभी आनंदित हो जाते हैं तथा सूचना देनेवाले नाई को वहाँ स्वागत-सत्कार तो होता ही है, साथ ही उसे विदाई में शाल-दोशाले, पाट-पाटंबर भी प्राप्त होते हैं। जच्चा का भाई अपनी माँ से अनुरोध करता है कि माँ, बहन के लिए ऐसी 'पियरी' भेजना कि पियरी देखनेवाले को ईर्ष्या होने लगे। वह अपनी भाभी से ऐसा सोंठ का लड्डू भेजने को कहता है, जिसे देखकर बहन की गोतिनी का कलेजा सालने लगे। इस गीत में पति के पत्नी के प्रति और भाई के अपनी बहन के प्रति उत्कट प्रेम का चित्रण किया गया है।]

सभत्रा[1] बइठल तोंहे बाबू साहेब, अउरो सिर साहेब हे।
साहेब, मोर नइहर लोचन[2] पठइती, तो बाबूजी अनन्द होइतन हे ॥१॥
बाबूजी होयथीं अनदें मन, मइया हरखि जयतइ हे।
बहिनी के जुड़ा जयतइ छतिया, भइया मोर हुलसि जायत हे ॥१॥
मोर पिछुअरवा[3] नउआ[4] भइया, तोही मोर हित बसे हे।
नउआ, चली जाहु हमर ससुररिया, दुलरइतिन देइ[5] के नइहर हे ॥३॥
कहाँ के हहु तोंहि हजमा,[6] त केकर[7] पेठावल हे।
ललना, कउन बाबू के भेल नंदलाल, लोचन लेइ आवल हे ॥४॥
कवन पुर[8] के हम हीअइ नउआ, कवन बाबू पेठावल[9] हे।
ललना, कवन बाबू के भेलइन नंदलाल, लोचन लेइ आवल हे ॥५॥
लेहु हो नउआ, तूँ साल अउ दोसाला लेहु हे।
नउआ, लेहु तोंहि पटुका पटोर[10] लहसि घर जाहुक हो ॥६॥
मइया, जे हमर दुलरइतिन मइया, सुनहऽ बचन मोर हे।
मइया, अइसन भेजिहऽ पियरिया,[11] कि देखि के हिरदय साले हे ॥७॥
भउजो, जे हमरो दुलरइतिन भउजो, सुनहऽ बचन मोरा हे।
भउजो, अइसन भेजिह सोंठउरवा,[12] जे गोतनी के हिरदय साले हे ॥८॥

१. सभा। २. लोचन = पुत्रोत्सव की खुश-खबरी, जिसके साथ फूल-काँसे के कटोरे में हल्दी से रंगे चावल, दूब, द्रव्य आदि पदार्थ रहते हैं। ३. मकान के पीछे। ४. नापित, नाई। ५. दुलारी देवी। ६. हजाम। ७. किसका। ८. गाँव। ९. भेजा हुआ। १०. चादर और गोटा-पाटा जड़ा लँहगा। ११. पीली साड़ी। १२. सोंठ, चावल का मैदा तथा अन्य पदार्थों के साथ बना मीठा लड्डू।

[१९]

[पति ने अपनी गर्भवती पत्नी की इच्छा की पूर्त्ति के लिए उससे उसके मनोवांछित वस्त्राभूषण तथा सेज और मनोनुकूल खाद्य-पदार्थों के लिए पूछा। पत्नी ने वस्त्राभूषणों तथा मनोनुकूल सेज के लिए विस्तार से कहा और साथ ही खाद्य-पदार्थों में उसने आम, इमली और नारियल खाने की इच्छा व्यक्त की। ऐसी मान्यता है कि गर्भवती खट्टी चीजें ज्यादा पसंद करती है तथा कच्चा नारियल और उसका पानी पीने से गर्भस्थित बच्चे का रंग और उसकी आँखे—दोनों निखरते हैं। पुत्रोत्पत्ति के बाद अपने साथ सोये हुए पति से वह जरा अलग ही हट कर सोने का अनुरोध करती है; क्योंकि गर्मी से बच्चे को पसीना आने लगा। इस पर पति कहता है कि पसीने को चूने दो, मैं योग्य दर्जी बुलाकर और उपयुक्त कपड़े मँगाकर बच्चे के लिए नया सिलवा दूँगा। इस गीत में पति-पत्नी के पारस्परिक प्रेम और बच्चे के प्रति--दोनों की ममता और स्नेह का चित्रण तो किया ही गया है, साथ ही पत्नी के प्रति पति के विशेष आकर्षण का उल्लेख मिलता है।]

हम तोंही पूछही दुलारी धनी, अउरो अलारी[1] धनी हे।
ललना, कउन कउन रँग तोरा भावे, त कहिके सुनावहु हे ॥१॥
अमवा जे फरलइ[2] घउद[3] सयँ, इमली भब्बद[4] सयँ हे।
परभु जी, नरियर फरले बहुत सयँ, ओही मोरा मन भावे हे ॥२॥
हम तोंही पूछही दुलारी धनी, अउरो अलारी धनी हे।
कउन तोरा अभरन भावे, से कही के सुनाबहु हे ॥३॥
साड़ी मोरा भाव हे कम त, ललसवा[5] कुसुम रँग चूनर हे।
ललना, चोली मन भावे हे साटन फूल, आउ[6] जे नई भावे हे ॥४॥
हम तोंही पूछही अलारी धनी, अउरो दुलारी धनी हे।
ललना, कउन रंग सेजिया तो भावए, कहि के सुनाबहु हे ॥५॥
सोनन[7] के चारो पउआ,[8] रेसम लागल डोरिये हे।
पिया, मन भाव हे रंगल सेजिया, होरिला बिनु नहीं सोभे हे ॥६॥
ओते[9] सुतूँ,[10] ओते सुतूँ राजा बेटा, अउरो साहेब बेटा हे।
ललना, बड़ा रे जतन के होरिलबा, पसेना चुए लागल हे ॥७॥
चुए देहु,[11] चुए देहु पसेनवाँ, से कुरता सियायब हे ॥८॥

१. अलबेली। २. फला। ३. घौद। ४. गुच्छा। ५. लालसा। ६. और। ७. स्वर्ण। ८. खाट के पाए। ९. उधर (हटकर) १०. सोइए। ११. चूने दीजिए।

कहाँ से दरजी बोलायब, कहाँ रे कलीगर[१२] हे।
ललना, कइसन कुरता सिलायब, बाबू पहिरायब हे ॥९॥
पटना से दरजी बोलायब, गाया[१३] के कलीगर हे।
ललना, हरियर कुरता सिलायब, बाबू पहिरायब हे ॥१०॥

●

[२०]

[पुत्रोत्पत्ति की खुशी में घर में सभी आनन्दमग्न हैं तथा प्रसूता सबका स्वागत-सत्कार कर रही है। वह सबसे ज्यादा सत्कार गोतिनी का करती है तथा सबसे अधिक उपेक्षा ननद की। इस उपेक्षा के बावजूद सबके साथ ननद आनन्द-मग्न है तथा वह गाती-बजाती तो है ही, साथ ही खुशी में अशर्फी लुटा रही है। किन्तु, गोतिनी अपने गोतिया की वंशवृद्धि से उत्तम सत्कार के बाद भी विषण्ण-मन है। जहाँ घर के अन्य लोग रुपये-अशर्फी लुटा रहे हैं, वहाँ वह छदाम ही लुटाती है। गोतिनी के इस व्यवहार से प्रसूता मर्माहत हो जाती है तथा वह अपने पति से गोतिनी की अनुदारता का उल्लेख करती है। पति अपनी पत्नी को सांत्वना देते हुए कहता है—'प्रिये, जाने दो। गोतिया से तो लेन-देन का व्यवहार होता है। उन्होंने तुम्हारे बच्चे के जन्मोत्सव में जो दिया है, वही तुम उनके बच्चे के जन्मोत्सव में लौटा देना।']

ढेरिया[१] जे सोभले गेहमा[२] केरा[३], चउखट[४] चनन केरा हे।
ए ललना, बहुआ[५] जे सोभले गोदी में, होरिलवा[६] लेले हे ॥ १ ॥
दुअरे ही बाजे बजनियाँ, अँगना मदागिन[७] बेटी हे।
ए ललना, ओबरी[८] में नाचे ननद रानी, कँगनवाँ हम बधइआ लेबो हे ॥ २ ॥
बजनियाँ के देबइ सोने बजवा, मदागिन बेटी कंचन-थारी हे।
ए ललना, ननद रानी ला[९] बेसरि गढ़इबो, कँगनवाँ नहीं बधइया देबो हे ॥ ३ ॥
सासु के देबइन[१०] करुआ तेल[११], ननदो के तीसी के तेल हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन चमेली तेल, हम गोतनी पाँइच[१२] हे ॥ ४ ॥
सासु के देबइन खटोलवा, त ननदो के मचोलवा देबइन हे।
ए ललना, गोतनी देबइन पलँगवा, हम गोतनी पाँइच हे ॥ ५ ॥

१२. कारीगर। १३. गया शहर।

१. ढेरी, राशि। २. गेहूँ। ३. का, (सम्बन्ध कारक)। ४. चौखट। ५. बधू। ६. बच्चा। ७. महाभागिन, आनंदमग्न। ८. किसी कोठरी का अभ्यन्तर भाग, जिसे चुहानी भी कहते हैं। ९. के लिए। १०. दूँगी। ११. सरसों का तेल। १२. बदले में ले लेने के लिए, जो वस्तु किसी को दी जाय।

सासु के देबइन धनइया[१३] भात, ननदो के कोदइया[१४] भात हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन बसमतिया[१५] भात, हम गोतनी पाँइच हे ॥ ६ ॥
सासु के देबइन रहरी[१६] दाल, ननदो अँकटी[१७] दाल हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन मूँग दाल, हम गोतनी पाँइच हे ॥ ७ ॥
सासु के देबइन सोंठउरा, ननदो के घँघउरा[१८] हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन लड्डू, हम गोतनी पाँइच हे ॥ ८ ॥
सासु के देबइन चाउर[१९] के हलुआ, ननदो खँखोरी[२०] देबो हे।
ए ललना, गोतनी के देबइन सुज्जी के हलुआ, हम गोतनी पाँइच हे ॥ ९ ॥
सासु जे उठलन[२१] गावइत, ननद बजावइत हे।
ए ललना, गोतनी उठलन बिसमादल[२२], गोतिया घरवा सोहर हे ॥१०॥
सासु लुटवलन रुपइया, त ननदो असरफी हे।
ए ललना, गोतनी लुटवलन छेदमवाँ[२३], हम मुरछाइ[२४] गिरली हे ॥११॥
सभवा बइठल रउरा परभुजी, सुनहऽ बचन मोरा जी।
परभुजी, गोतनी लुटवलन छेदमवाँ, त हम मुरछाइ गिरली हे ॥१२॥
चुप रहु, चुप रहु धनियाँ, तुहूँ चधुराइन[२५] हे।
ए धनियाँ, उनको जे होतइन होरिलवा, छेदमवाँ उनका फेर दीह हे ॥१३॥

●

[२१]

दँतवा लगवलूँ हम मिसिया, नयन भरि काजर हे।
डंटी[१] भर कयलूँ सेनुरवा, बिंदुलिया से साटि लेलूँ हे ॥१॥
सेजिया बिछयलूँ हम अँगनमा से फूल छितराइ देलूँ हे।
रसे-रसे बेनिया डोलयलूँ, बलम गरे[२] लागलूँ हे ॥२॥

१३. धान के चावल का भात। १४. कोदो, एक प्रकार का कदन्न। १५. बासमती चावल, जो महीन और सुगन्धित होता है। १६. अरहर। १७. छोटे-छोटे खराब दाने के साथ कंकड़ी-मिश्रित अथवा (अंकरी) एक प्रकार की घास के बीज की दाल। १८. चावल का बना लड्डू। १९. चावल। २०. कड़ाही में जले हुए पदार्थ का अंश, जो खँरोचकर निकाला जाता है। २१. उठीं। २२. विषाद से भरी, विस्मित (भो० ग्रा० गी०)। २३. छदाम। २४. मूर्च्छित होकर। २५. चौधरानी, गाँव के मालिक की पत्नी।

१. सोने या चाँदी अथवा किसी दूसरी वस्तु की बनी मँगटिकनी, जिससे माँग में सिन्दूर लगाया जाता है। २. गले।

हम नहीं जानलूँ मरमिया से सुखे नीने[3] सोइलूँ[4] हे।
रसे-रसे मुँह पियरायल, जीउ फरियायल[5] हे ॥३॥
आयल मास असाढ़ से दरद बेयाकुल हे।
अँगनो न देखियइ बलमु जे, कइसे बचत बाला[6] जीउ[7] हे ॥४॥
ओने से[8] अयलन ननदिया, बिहँसि बोल बोलथि हे।
भउजो तोरो होतो आजु नंदलाल लहसि सोहर गायब[9] हे ॥५॥
हाथ में लेबो कँगनमा[10] गले मोहरमाला लेबो हे।
पेन्हें के लेबो हम पीताम्बर, लहसि सोहर गायब हे ॥६॥
हम जे जनतों एतो पीरा[11] होयतो, अउरो दरद होयतो हे।
भुलहुँ न सामी सेज जइतूँ, न बेनियाँ डोलयतूँ हे ॥७॥
आधी रात बीतलइ, पहर राती अउरो पहर राती हे।
जलमल[12] सीरी भगमान, महल उठे सोहर हे ॥८॥

●

[२२]

[प्रसव-वेदना आरम्भ होने पर पत्नी ने पान के बीड़े लगाये और ननद को कहा कि ये बीड़े अपने भैया को देना और उन्हें जल्दी बुला लाना। ननद ने प्रारंभ में तो बालसुलभ चंचलता तथा भाभी-ननद के बीच चलनेवाले वैमनस्य के कारण जाने से साफ इनकार कर दिया, लेकिन जब भाभी ने मीठी बातों से ननद को फुसलाया, तब ननद चली गई। जूआ खेलते हुए भाई को जाकर उसने संवाद दिया। सूचना पाकर भाई दौड़ा आया तथा उसने अपनी पत्नी से सभी बातें मालूम कर उपचार के लिए उपाय भी पूछा। सूतिका-गृह की व्यवस्था के लिए माँ को बुला देने के विचार का जब पत्नी ने विरोध किया, तब पति का अहं जाग उठा। उसने अपनी पत्नी से कहा—'हम तो जानति धनि, बिरही बोलित, अउरो बिरही बोलित जी। अजी धनि, लरिके में गवना करइती, बिदेस चलि जइती, बिरही नहीं सुनती जी।']

३. सुख की नींद। ४. सोई। ५. जी फरियायल = मिचली आना। ६. नाजुक, छोटा। ९. गाऊँगी (मगही-क्षेत्र के किसी-किसी भाग में क्रियाओं के भविष्यत्कालीन रूप गायम, लायम, करम आदि होते हैं, किन्तु साथ ही गायब, लायब, करब आदि भी मिलते हैं। लोकगीतों में दोनों प्रकार के रूप उपलब्ध हैं।) १०. कँगनमा और कँगनवाँ—ये दोनों प्रयोग मगही में प्रचलित हैं। ११. पीड़ा। १२. जन्म लिया।

पाँच-पाँच पनवाँ के बिरवा[1] त बिरवा सोहामन जी।
अजी ननद, एहो बिरवा भइया जी के हाथे त मैया के मनावहु जी ॥१॥
कि अजी भउजी, नाउन[2], कि अजी भउजी, भाँटिन।
कि अजी भउजी, तोरा बाप के चेरिआ जी ॥२॥
न एजी ननद, नाउन, न एजी ननद, भाँटिन।
न एजी ननद, मोरा बाप के चेरिया जी।
अजी ननद, मोरा प्रभु जी के बहिनी, ननद बलु[3] लगबऽ जी ॥३॥
जुगवा खेलइते भइया, बेलतेरे, अउरो बबुरतरे जी।
अजी भइया, प्राण पेयारी मोर भउजिया, त केसिया[4] भसमलोटे जी ॥४॥
जुगवा छोरलन राजा बेलतरे, अउरो बबुरतरे जी।
कि अरे लाला, भाई चलले, गजओबर, कहू जी धनि कुसल हे ॥५॥
लाज सरम केरा बात, कहलो न जाय, सुनलो न जाय।
कि अजी प्राभु, मरलों करमवा के पीरा[5] त ओदर[6] चिल्हकि मारे हे ॥६॥
कहितऽ त अजी धनियाँ, जिरवा[7] के बोरसी भरइतों, लवँगिया के पासँघ[8] जी।
कहितऽ त अजी धनियाँ, अपन अम्माँ के बोलइतों, रतिया सोहानन जी ॥७॥
कहितऽ त अजी धनियाँ, सोए रहूँ, अउरो बइठि रहूँ।
अजी धनि, मानिक दीप बरएबों त रतिया सोहावन जी ॥८॥
न कहुँ अजी प्रभुजी, सोए रहु, न कहुँ बइठि रहु।
अजी प्रभु, बुति[9] जइहें मानिक दीप, रतिया भेयावन जी ॥९॥
बुति जइहें जीरवा के बोरसी, लवंगिया के पासँघि जी।
अजी प्रभु, सोए जइहें तोहर अम्माँ, त रतिया भेयावन जी ॥१०॥
हम त जनति धनि, बिरही[10] बोलित, अउरो बिरही बोलित जी।
अजी धनि, लरिके में गवना करइती, विदेस चलि जइती, बिरही नहीं सुनती जी ॥११॥

●

१. पान का बीड़ा। २. हजामिन। ३. बल्कि। ४. माथे के केश। ५. पीड़ा। ६. उदर। ७. जीरा। ८. सौरी घर के द्वार पर गोरखी में रखी आग, जो छठी तक जलती रहती है और इसमें लौंग आदि सुगन्धित द्रव्य भी जलाया जाता है। ९. बुझना। १०. वियोग पैदा करनेवाली।

[२३]

[इस गीत में सास-ननद की ओर से पति-पत्नी पर होनेवाले अत्याचार का
वर्णन है। दोनों माँ-बेटी ने मिलकर पति-पत्नी के मिलन पर ऐसा प्रतिबन्ध लगाया था
कि पति महाशय पत्नी की छाया भी नहीं छू सकते थे। एक दिन कार्यवश सास-
ननद के घर के बाहर चले जाने के बाद अकेले में समय पाकर पति ने पत्नी का
रास्ता रोक लिया। परिणामस्वरूप, वह गर्भवती हो गई। उसकी सास-ननद ने जब
गर्भ के लक्षणों को देखा, तब उन लोगों को शंका हुई कि इसका पति तो कभी इससे
मिला नहीं, ये लक्षण कैसे प्रकट हुए? अपनी लज्जा और प्रवाद-रक्षा के लिए, उसने
सच्ची बातें स्पष्ट कर दीं। पति को जब इस बात की जानकारी हुई कि पत्नी ने
माँ-बहन से मेरी चोरी और गुप्त बातों का भेद खोल दिया, है, तब पत्नी को धमकी
देने लगा कि 'अगर मैं जानता कि तुम इस तरह मेरी चुगली करोगी, तो मैं बचपन में
ही गौना करवाता और तुम्हें घर पर विरह में तड़पते छोड़कर, विदेश चला जाता।'
इस गीत में पति ने स्वयं लोकापवाद से बचने के लिए पत्नी के ऊपर लगनेवाले
प्रवाद की परवाह नहीं की और उसे दंड देने की बात सोच बैठा। यह सास-ननद की
बेरहमी और तात्कालिक समाज के आज्ञाकारी और भोले पति की ओर से पत्नी पर
होनेवाले अत्याचार का एक दृष्टान्त है।]

सासु जे गेलन दाल दरे[1] हे, ननद जे गेलन पानी भरे।
हमें प्रभु छेकलन[2] डेउढ़िया,[3] अब्र धनि असगर[4] हे ॥१॥
सासु जे अयलन दाल दर के, ननद जे अयलन पानी भर के हे।
बहुआ, काहे तोर मुँहवा पियरायल, देह दुबराएल[5] हे ॥२॥
लाज सरम के बात सासु कहलो न जाय, सुनलो न जाय।
सासुजी, तोहर बेटा छेकलन डेउढ़िया, त बहियाँ मुरुकि[6] गेल हे ॥३॥
जब हम जनती धनि कि लउरी[7] बारी,[8] अउरो दुलारी बारी।
लरिके[9] में गवना करइती, बिदेस चलजइती बिरहिआ नहीं सुनती हे ॥४॥

●

[२४]

[इस गीत में पत्नी अपने विषय में आलंकारिक रूप में अपनी बात कहती है। यहाँ 'बगिया' 'जलथल', रखवार' और 'फर' शब्द प्रतीक रूप में चित्रित हैं। बगिया स्वयं पत्नी है, जिसे उसके बाबा (पिता) ने लगाया है।

१. दलने। २. रोका। ३. देहली। ४. अकेले। ५. दुबला। ६. मोच आ गया। ७. लबरी। ८. कम उम्र। ९. बचपन।

जल-थल उसकी उठती जवानी है, जो लहरा रही है। उसका 'भाई' उस बाग का रखवार है। इसी बीच 'साहब' (पति) ने बाग में चोरी की। उसने एक फल तोड़ा, दूसरा तोड़ा और जब तीसरा तोड़ा, तब रखवाले की नींद टूटी और उसने चोर को पकड़ा। रखवाले ने चोर को दौने वृक्ष की सुगंधित डाल में रेशम की डोर से बाँध दिया और सोने की छड़ी से दण्ड देने लगा। तभी पीला परिधान पहने और नवजात शिशु को लिये चोर की पत्नी बाहर निकली। उसने अपने भाई से आरजू-मिन्नत करके कहा—'भैया, चोर सुकुमार है, रेशम की डोरी से हल्के ही बाँधो।' यहाँ आलंकारिक भाषा में पुत्रोत्पत्ति से पति-पत्नी की चोरी, सोने की छड़ी से दान-दहेज और रेशम की डोरी से प्रेम-बंधन की अभिव्यक्ति की गई है।

कउन बाबू के बगिया लगावल, जलथल हरियर[1] हे।
ललना, कवन बाबू हथि[2] रखवार, कउन चोर चोरी कयलन हे ॥१॥
बाबा मोरा बगिया लगावल, जलथल हरियर हे।
ललना, मोरा भइया हथि रखवार, साहेब चोर चोरी कयलन हे ॥२॥
एक फर[3] तोड़ले दोसर फर, अउरो तेसर फर हे।
ललना, जागि पड़ल रखवार, दउना[4] डारे बाँधल हे ॥३॥
सोबरन[5] के साँटी[6] चोरवा के मारल, रेसमे डोरो बाँधल ॥४॥
घरवा से इकसल[7] जचा रानी, इयरी पियरी पेन्हले हे।
गोदिया में सोभइ एगो[8] बालक, नयन बीच काजर हे ॥५॥
भइया हमर बीरन भइया, सुनहु बचन मोरा हे।
भइया, चोरवा हइ सुकुमार फुलुक[9] डोरी बाँधिहऽ, सोबरन साँटि छुइह हे ॥६॥

●

[२५]

[पत्नी द्वारा पति से यह अनुरोध करने पर कि अगर आप आम का एक पेड़ लगाते, तो मैं उसके मीठे फल को खाती। पति बड़ी निष्ठुरता से उत्तर देता है कि अगर तुम एक बेटा पैदा करती, तो मैं भी सोहर सुनता। इस अप्रत्याशित उत्तर को सुनकर दुःखी पत्नी पहले ब्राह्मण, फिर सास, गोतिनी और ननद के पास आशीर्वाद के लिए जाती है। वह उन लोगों से अलग-अलग अनुरोध करती है कि अगर आपके आशीर्वाद से मुझे पुत्र होता, तो आपके चरणों को धोकर पीती। सब ने उसे यही

१. हरा-भरा। २. है। ३. फल। ४. एक प्रकार का पौधा, जिसकी पत्तियों से उत्कट और कड़वी सुगंध आती है, दौना। ५. सुवर्ण, सोना। ६. छड़ी। ७. निकली। ८. एक। ९. शिथिल, ढीला।

'पुरुब के पनमा पछिम होय, सुरुज पछिम उदै हे। बहुआ तरसि-
उत्तर दिया—'पुरुब के पनमा पछिम होय, सुरुज पछिम उदै हे। बहुआ तरसि जीउ जयतो, पुतर कहाँ पयबऽ हे।' तब वह सूर्य भगवान् की आराधना करके उनसे पुत्र-याचना करती है। वह कहती है—'हे भगवन्, मुझ पर दया कीजिए। मेरे पति ने मुझे ताना मारा है।' सूर्य के आशीर्वाद से उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। उसके बाद वह क्रम से ब्राह्मण, सास, गोतिनी और ननद को आमन्त्रित करती है और उचित सत्कार के बाद कहती है—'आपके आशीर्वाद से ही मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई है। मैं आपके पैरों की पूजा करती हूँ।' सभी जगहों से उपेक्षा, उपहास और निराशाजनक उत्तर पाने पर भी पुत्र-प्राप्ति के बाद सब की यथोचित आराधना कराकर इस गीत में उस स्त्री की सज्जनता, शिष्टता और कुलीनता का अच्छा परिचय दिया गया है।]

पियवा[1], त पियवा से पातर[2] पियवा, सुनहु बचन मोरा हे।
पियवा, एक पेड़ अमवा[3] लगवतऽ त फलवा हम खइती हे ॥ १ ॥
धनिया, जे तुहुँ सुघरि धनिया, सुनहु बचन मोरा ए।
धनिया, एक तुहुँ बेटवा पभइतऽ[4], त सोहर हम सुनती हे ॥ २ ॥
उठि उठि चलि भेलन बिपर[5] घरे, अउरो से बिपर घरे हे।
बिपर, तोहरे चरन धोइए पीयबो, पुतर एक होयतो हे ॥ ३ ॥
पुरुब के चनमा[6] पछिम होय, सुरुज पछिम उदै हे।
बहुआ तरसि तरसि जीउ जयतो, पुतर कहाँ पयबऽ हे ॥ ४ ॥
उहँउ[7] से चलि भइली सासु लगे, अउरो से सासु लगे हे।
सासुजी, रउरेहुँ चरन धोइ पीयबो, पुतर एक होयतो हे ॥ ५ ॥
पुरुब के चनमा पछिम होय, सुरुज पछिम उदै हे।
बहुआ तरसि तरसि जीउ जयतो, पुतर कहाँ पयबऽ हे ॥ ६ ॥
उहँउ से चलि भेलन गोतनी से, अउरो गोतनी लगी हे।
गोतनी रउरे चरन धोइ पीतूँ, पुतर एक होयतो हे ॥ ७ ॥
पुरुब के चनमा पछिम होय, सुरुज पछिम उदै हे।
बहुआ, तरसि तरसि जीउ जयतौ, पुतर कहाँ पायबऽ हे ॥ ८ ॥
उहँउ से चललन ननदी लगी, अउरो ननदी लगी हे।
ननदो तोहरो चरन धोइ पीयबो, पुतर एक होयतो हे ॥ ९ ॥
पुरुब के चनमा पछिम होय, सुरुज पछिम उदै हे।
भउजो, तरसि तरसि जीउ जयतो, पुतर कहाँ पयबऽ हे ॥१०॥

१. पिया, पति। २. छरहरा। ३. आम्र। ४. पैदा करती। ५. विप्र, ब्राह्मण। ६. चन्द्रमा। ७. वहाँ।

नहाइ-धोआइ[8] ठाढ़ा भेल[9] सुरुज गोड़ लागल हे।
सुरुज, हम पर होअन देयाल[10], पिया हो ताना मारल हे ॥११॥
आधी रात गयली पहर रात, अउरो पहर राती हे।
बीचे राती ललना जलम भेल, महल उठे सोहर हे ॥१२॥
आबह बिप्र आबह चउकि[11] चढ़ि बइठह हे।
तोहरे कहल[12] नंदलाल, तोहर गोड़ पूजब हे ॥१३॥
आवह सासु, तूँ आवह, जाजिम चढ़ि बइठह हे।
तोहरे कहल नंदलाल, तोहर पाँव पूजब हे ॥१४॥
आवह गोतनी, तूँ आवह, मचिया चढ़ि बइठह हे।
तोहरे कहल मोरा लाल, तोहरो पाँव पूजब हे ॥१५॥
आवह ननदो, तूँ आवह, चटइया चढ़ि बइठह हे।
तोहरे कहल मोरा लाल, तोहरो पियरी पहिरायब हे ॥१६॥

●

[२६]

[पत्नी ने पति से टिकोला (अमिया) खाने के लिए एक बाग लगाने की इच्छा प्रकट की। पति ने व्यंग्य करते हुए पत्नी से कहा—'अगर तुम भी एक बेटा पैदा करती, तो मैं भी सोहर सुनता।' इस पर पत्नी ने उस लहजे में तर्क उपस्थित किया कि पुत्र तो भगवान् की कृपा से और भाग्य में लिखे होने पर पैदा होता है। परन्तु, बाग तो मानव-निर्मित होता है। पति के प्रश्न का उत्तर तो उसने दे दिया; लेकिन पति द्वारा अपने ऊपर लगाये गये आरोप से वह विचलित हो गई। उसने पुत्र-प्राप्ति के लिए विधि-विधानों के साथ भगवान् सूर्य की आराधना की। आदित्य भगवान् की अनुकम्पा से उसे पुत्र की प्राप्ति हुई। उसने अपनी चेरी से कहा—'जल्द सेज लगा दो, मेरे प्रियतम सोहर सुनेंगे।' पति के व्यंग्य-बाणों से व्यथित पत्नी के मुँह की लाली भगवान् सूर्य ने रख ली।]

पियवा, हो पियवा, तू ही मोरा साहेब हो पियवा।
पियवा, जे बघिया[1] एक लगइत, टिकोरवा[2] हम चखती हो ॥१॥
धनियाँ, हे धनियाँ, तूहीं मोरा सुन्दर हे धनियाँ।
धनियाँ, बेटवा जे एक बियइतऽ[3] सोहरवा हम सुनती हे ॥२॥

८. नहा-धोकर। ९. ठाढ़ा भेल = खड़ी हुई, अर्घ्य देने के लिए खड़ी हुई। यहाँ का संकेत छठ व्रत के लिए है। १०. दयालु। ११. बैठने के लिए बनी चौकी। १२. कहा हुआ।
१. बगीचा। २. आम का टिकोला। ३. जन्म देती।

बेटवा जे होश्र हे करम से जे ऊ राम बूझथ[४] हे ।
बधिया जे होश्र हे आदमी से, आउर मानुस से ॥३॥
ओरिया[५] काटि नेहयलन, सुरूज गोड़वा लगलन हे ।
हमें पर आदित होश्र न देआल, पियवा मोरा ओलहन[६] हे ॥४॥
आधी राति गइले, पहर राति, होरिल जलम ले ले हे ॥५॥
अँगना बहारइत[७] चेरिआ, सुनहु बचन मोरा हे ।
चेरिया, प्रभुजी के सेजिया डँसाव त पियवा सुनिहें सोहर हे ॥६॥

●

[२७]

[इस गीत में भी अमिया खाने के लिए पत्नी द्वारा पति से एक बाग लगाने का अनुरोध है। किन्तु पति ने उस निःसन्तान स्त्री की भावना का खयाल किये विना, यह उत्तर दिया कि 'अगर तुम भी एक पुत्र पैदा करती, तो मैं भी सोहर सुनता।' पति के इस कटु वाक्य को सुनकर पत्नी रूठकर कोप-भवन में चली गई। पति ने पत्नी की मानसिक वेदना का खयाल नहीं किया और समझा कि स्त्रियाँ जेवर के लोभ में पड़कर अपना मानापमान भूल जाती हैं। वह जेवर देकर उसे मनाना चाहता है। उधर पति के व्यंग्य-बाण कलेजे को सालने लगते हैं तथा वह विचलित हो कह उठती है—'**मारलहऽ ए पिया, मारलहऽ, तीखे कटरिया से हे। पियवा, रउरे बात साल हे करेजवा, कँगनवा कइसे पहिरी हे।**' *पत्नी दूसरे लोगों की बातें तो सह सकती हैं, लेकिन अपने पति की, जो उसके सुख-दुःख का साथी है, बातें उसके लिए असह्य हो जाती हैं।]*

पलंग सुतल तोहे पियवा, और सिर साहेब हे ।
पियवा बगिया तू एगो लगइत, टिकोरवा हम चिखती[१] हे ॥१॥
पलंग सुतल तोंहे धानी, त सुनहऽ बचन मोरा हे ।
धानी, तुहुँ एगो बेटवा बिययतऽ सोहर हम सुनती हे ॥२॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहु न पवलन हे ।
धनि, सुतलन गोड़े-मुड़े[२] तान सुतल गज ओबर हे ॥३॥
मोर पिछुअरबा सोनार भइया, तोही मोरा हित बसे हे ।
भइया, धनियाँ ला[३] गढ़ि देहु कँगना, धनि के पहिरायब हे ॥४॥

४. सुधि लेना। ५. छप्पर का अगला भाग, ओलती। स्त्रियों का यह टोटका है कि ओलती काटकर उसके नीचे स्नान करती हैं, जिससे गर्भ धारण हो जाने का उन्हें विश्वास है। ६. उलहना। ७. बुहारती हुई।

१. चखती। २. पैर-सिर। ३. लिए, वास्ते।

काँख जाँति लिहले कँगनमा, त धनि के मनावल हे ।
धनिया के जाँघ बइठावल, हिरदय लगावल हे ॥५॥
धनि हे, छाँड़ि देहु मन के बिरोध, पहिर[४] धनि काँगन हे ॥६॥
एही कँगना रउरे माई पेन्हथ[५] अउरी बहिन पेन्हथ हे ।
पिया ओहे दिन सेजरिया के बात, करेजा मोरा सालए हे ॥७॥
मारलहऽ ए पियवा, मारलहऽ तीखे कटरिया से हे ।
पियवा रउरे बात साल हे करेजवा, कँगनमा कइसे पहिरी हे ॥८॥

●

[२८]

[इस गीत में एक निःसंतान नारी की हृदय-भावना अंकित है। इसमें ओसारे और देहली के साथ कोठरी के लीप-पोत करने पर भी चुनरी के मलिन न होने की बात कही गई है; क्योंकि गोद के शिशु से जिस प्रकार चुनरी मलिन हो सकती है, उस प्रकार लिपाई-पुताई करने से भी नहीं। इसमें शिशु के कारण होनेवाली गंदगी की भी आकांक्षा इसलिए है कि उससे मातृत्व की पूर्त्ति होगी। दूसरे पदों में यह व्यक्त किया गया है कि जैसे भाई-भतीजों के रहने पर भी माँ के विना नैहर अच्छा नहीं लगता, जैसे सास-ससुर और देवरों के रहने पर भी पति के विना ससुराल फीकी लगती है, वैसे ही अच्छे-अच्छे कपड़ों और परिधानों के होने पर भी यदि गोद में एक पुत्र नहीं हो, तो सारी सजधज बेकार है। इसमें निःसंतान नारी के हृदय की कसक की अभिव्यक्ति की गई है।]

कोठरिया जे लिपली ओसरा से अउरो देहरिया से ।
ललना, तइओ[१] न चुनरिया मइल[२] भेल, एक रे होरिलवा[३] बिनु ॥१॥
नइहर में दस सै भइया अउरो भतीजा हवे हेऽ ।
ललना, तइओ न नइहर सोहावन लगे, एक रे मइया बिनु ॥२॥
ससुरा में दस सै ससुर अउरो देवरा हेऽ ।
ललना, तइओ न ससुरा सोहावन लगे, एक रे पुरुखवा बिनु ॥३॥
देहिया में दस सै सारी अउरो चोली हेऽ ।
ललना, तइओ न देहिया सोहावन लगे एक रे होरिलवा बिनु ॥४॥

●

४. पहनो। ५. पहनें।

१. तब भी। २. मैल। ३. पुत्र।

[२६]

[इस गीत में ननद-भाभी के बीच चलनेवाले परंपरागत मनोमालिन्य का उल्लेख किया गया है। किन्तु, जब ननद ने देखा कि मेरे चलते भाई और भाभी के बीच कटुता हो गई, तब वह अपनी जिद को छोड़कर क्षमा माँग लेती है।

पहले तो भाभी अपनी ननद से वादा करती है कि अगर मुझे पुत्र होगा, तो तुम्हें अपना बेसर दे दूँगी, लेकिन पुत्रोत्पत्ति के बाद भाभी जब अपना वादा भूलकर बेसर देने से इनकार कर देती है, तब ननद निराश होकर पिता और भाई से बेसर दिला देने का अनुरोध करती है। दोनों के अनुरोध पर भी जब उसकी भाभी ध्यान नहीं देती, तब अंत में उसका भाई क्रुद्ध होकर अपनी बहन से कहता है कि अभी जरा बच्चे को पालने-पोसने दो। बच्चे के बड़े होने पर मैं दूसरा ब्याह करूँगा और इसे (अपनी पत्नी को) वनवास दे दूँगा। तुम्हारे लिए हाजीपुर के बाजार से, बेसर खरीदकर ला दूँगा। अपने पति की इस प्रतिज्ञा को सुनकर पत्नी क्रुद्ध होकर बेसर ननद की ओर फेंक देती है और कहती है—'**लेइ जाहु, लेइ जाहु, लेइ, जाहु, मोर नकबेसर हे। ननदो, बनि जाहु मोर सउतिनियाँ, जे घर से निकासल हे।**' *इस पर ननद बड़ी ही नम्रता और दीनता के साथ भाभी से कहती है*—'**काहे लागि लेबो बेसरिया, बेसरिया तोहरे छाजो हे, भउजो जीए मोरा भाई, भतीजवा, उगल रहे नइहर हे।**' *और साथ ही, अपने भाई से भी बेसर नहीं खरीदने का अनुरोध करती हुई, उसकी मंगल-कामना करती है।*

ननदी भौजइया मिलि पनिया के चलली, जमुन दह[1] हे।
ननद, जब होतो मोरा नंदलाल, बेसर पहिरायब हे ॥१॥
देबो मैं देबो तोरा ननदो हे, भइया के पियारी हहु[2] हे।
ननद, जब होतो मोरा नन्दलाल, बेसर पहिरायब हे ॥२॥
आधी रात बितलइ[3] पहर रात, होरिला जनम लेलन हे।
भउजो, अब भेलो तोरा नंदलाल, बेसर पहिराबहु हे ॥३॥
कहली हल[4] हे ननद, कहली हल, भइया के दुलारी हहु हे।
ननद, नइ[5] देबो तोहरा के बेसर, बेसरिया नइए देबो हे ॥४॥
सभवा बइठल तोहें बाबूजी, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
बाबूजी, तोर पुतहू कहलन बेसरिया, बेसरिया दिलाइ देहु हे ॥५॥
सउरी[6] पइसल[7] तुहूँ पुतहु त, सुनहऽ बचन मोरा हे।
पुतहु, देइ देहु नाक के बेसरिया, त बेटी घर पाहन हे ॥६॥

१. दह, झील। २. हो। ३. व्यतीत हुई। ४. कहा था। ५. नहीं। ६. सौरीघर। ७. पैठी हुई।

नइ देबइ, नइ देबइ, नइ देबइ, हम नकबेसर हे।
बाबूजी, बेसर मिलल हे दहेज, बेसरिया नइए देबइ हे ॥७॥
पोथी पढ़इते तुहूँ भइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
भइया, तोर धनि कहलन बेसरिया दिलाइ देहु हे ॥८॥
सउरी पइसल तुहुँ धनियाँ, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
धनि, देइ देहु अपन बेसरिया, बहिनी घर पाहुन हे ॥९॥
नइ देबइ, नइ देबइ, नइ देबइ, नइ नकबेसर हे।
प्रभु हम कहाँ पयबो बेसरिया, बेसरिया हेराय गेलो[8] हे ॥१०॥
चुप रहु, चुप रहु बहिनी, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
बहिनी, करबो में दोसर बिआह, त बलका[9] पोसाय[10] देहु हे ॥११॥
लगे देहीं हाजीपुर बजरिया, बेसर हम लाइ देबो हे।
बहिनी, इनखा[11] के देबइन बनवास, से चुप रहु, चुप रहु हे ॥१२॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहुँ न पावल हे।
धनि, नकिया से काढ़ि के बेसरिया भुइयाँ[12] फेंकि देलन हे ॥१३॥
लेइ जाहु, लेइ जाहु, लेइ जाहु मोर नकबेसर हे।
ननदो, बनि जाहु मोर सउतिनियाँ, जे घर से निकासल हे ॥१४॥
काहे लागी लेबो बेसरिया, बेसरिया तोहरे छाजो[13] हे।
भउजो, जीये मोर भाइ भतीजवा, उगल रहे[14] नइहर हे।
काहे लागी दोसरा बिआह करबऽ, काहे लागी बेसर हे।
भइया, लेइ तोर रोग-बलइया[15] हमहीं जइबे सासुर हे ॥१६॥

●

[३०]

मचिया बइठलीं[1] तोंही मइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
मइया, हमहूँ लीपलियइ[2] त सउर[3], हमहूँ कछु दान चाही हे ॥१॥
सउरी पइसल तोंहे बहुआ, त सुनहऽ बचन मोर हे।
बहुआ, देइ देहु नाक के बेसरिया, दुलारी धिया[4] पाहुन[5] हे ॥२॥

८. भूल गया। ९. बालक। १०. पालना-पोसना। ११. इनको। १२. जमीन, भूमि। १३. शोभना। १४. जगमगाता रहे। १५. रोग-बलाय।
१. बैठी हुई। २. लीपा, साफ-सुथरा किया। ३. सौरीघर। ४. बेटी। ५. मेहमान।

एतना बचन जब सुनलन, सासु से अरज करे हे।
सासुजी हम कहाँ पयबो बेसरिया, बेसरिया हेराइ[6] गेल हे ॥३॥
जुगवा[7] खेलइते तोंहे भइया, त सुनहऽ बचन मोरा हे।
भइया हमरा के दान किछु चाही, सउर हम लीपलि हे ॥४॥
एतना बचन जब सुनलन, धनि से कहे लगलन हे।
धनि देइ देहु नाक के बेसरिया, बहिन घर पाहुन हे ॥५॥
एतना बचन जब सुनलन, परभु से अरज करे हे।
परभुजी, कहाँ हम पायम[8] बेसरिया, बेसरिया भुलाई गेल हे ॥६॥
चुप रहु, चुप रहु बहिनी, त बहिनी दुलारी बहिनी हे।
कर लेबो दोसर बिआह, बेसर पहिरायब हे ॥७॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहु न पावल हे।
परभुजी, मत करू दोसर बिआह, बधइया[9] हम देइ देवइ हे ॥८॥

[३१]

[पत्नी अपने पति से गोरखपुर से खरीदकर कँगना लाने को कहती है। कँगना की बात सुनकर ननद ललच पड़ती है। वह अपनी भाभी से कहती है कि अगर तुम्हें पुत्र होगा, तो तुम मुझे क्या दोगी? भाभी ने ननद को आश्वासन दिया कि पुत्र होने पर मैं बधाई में तुम्हें यह कंगन दे दूँगी। ननद ने सूर्य भगवान् की आराधना की। उसकी भाभी के पुत्र पैदा हुआ। ननद ने कंगन की माँग की। भाभी ने देने से इनकार कर दिया। इस पर ननद फिर सूर्य की आराधना करने लगी कि भाभी को बेटी हो और उस समय कोदो के भात का पथ्य मिले। भाभी उसकी प्रार्थना सुनकर डर जाती है तथा वह कंगन देने को तैयार हो जाती है। ननद का रोष समाप्त हो जाता है और वह फिर सूर्य भगवान् से अपनी भाभी की मंगल-कामना करती हुई पुत्र-प्राप्ति के लिए आराधना करने लगती है। इस गीत में जहाँ एक तरफ ननद-भाभी का आपसी मधुर सम्बन्ध दिखलाया गया है, वहीं दूसरी ओर ननद की बालसुलभ चंचलता का भी चित्रण किया गया है।]

पियवा जे चललन गोरखपुर, धनियाँ अरज करे हे।
परभुजी, हमरा लइहऽ[1] कँगनमा, कँगनमा हम पहिरब हे ॥१॥
अँगना खेलइते[2] तोहें ननदी त भउजी से बचन बोले हे।
भउजी, तोहरा के होतो नंदलाल, हमरा तोंही[3] का[4] देबऽ हे ॥२॥

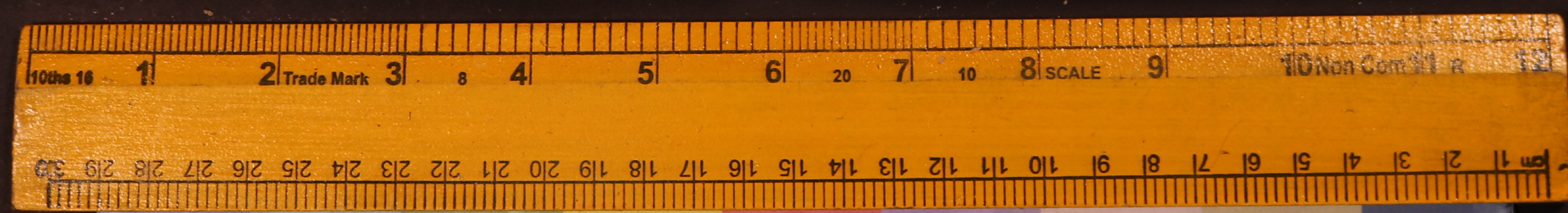
६. खो जाना। ७. जूआ। ८. पाऊँगी। ९. खुशी में दिया जानेवाला पुरस्कार।
१. लाइए। २. खेलती हुई। ३. तुम। ४. क्या।

तू हमर लउरी[5] ननदिया, आउर[6] सिर साहेब हे।
हम देबो गोरखपुर के कँगना, होरिला जमे[7] होयत हे ॥३॥
गोड़ हाथ पड़त[8] ननदिया, आदित[9] मनायल[10] हे।
आदित, मोर भउजी बेटवा बिययतन[11], बधइया हम कँगनमा लेबइ हे ॥४॥
आधी रात बितलइ, पहर रात, होरिला जलम लेल हे।
बाजे लागल आनंद बधावा, महल उठे सोहर हे ॥५॥
मचिया बइठल तोंहे भउजी त सुनह बचन मोरा हे।
कहलऽ तू हमरा कँगनमा, कँगनमा बधइया लेबो हे ॥६॥
नऽ देबो, हे ननदो, नऽ देबो, पीआ के अरजल[12] हे।
कँगना हइ पीया के कमइया[13], कँगनमा हम कइसे देबो हे ॥७॥
सुनहऽ हो आदित, सुनहऽ, हम तोर गोड़ धरी हे।
आदित, भउजी मोर बेटिया बिययतन बधइया न दे हथन[14] हे।
कोदो[15] के भतवा के पंथ[16] पड़े, जबे भोर होयत हे ॥८॥
बेटवा के सोहर हम सुनम, हम बधइया देम हे।
पहिला अरजन[17] के कँगनमा, से हो रे पहिरायम हे ॥९॥
भइया के दसो दरबजवा, दसो घर दीप जरे हे।
आदित, भउजी के होवइन होरिलवा, बसमतिया[18] के पंथ पड़े हे ॥१०॥

५. लहुरी, छोटी। ६. और। ७. जभी। ८. 'हाथ गोड़ पड़ल' मुहावरा है, किन्तु यहाँ 'गोड़ हाथ पड़त' का प्रयोग है। ९. आदित्य। १०. मनाया, प्रसन्न किया। ११. ब्यायेगी, जन्म देगी। १२. अर्जित किया हुआ। १३. कमाई। १४. दे रही। १५. एक प्रकार का कदन्न। १६. पथ्य। १७. पहली कमाई। १८. बासमती चावल।

सोहर

(द्वितीय खंड)



[१]

[प्रसव-वेदना उठने पर गौरी महादेव को बुलाती हैं। महादेव के आने पर गौरी उनसे डगरिन बुलाने को कहती हैं। डगरिन के घर का पता पूछते-पूछते महादेव उसके घर पहुँचते हैं। डगरिन उनसे पूछती है कि जिनको दर्द हो रहा है, वे आपकी कौन हैं? महादेव के बतलाने पर डगरिन पैदल जाने में अपनी लाचारी प्रकट करती है तथा पालकी लाने को कहती है। महादेव अपने घर लौट आते हैं। डगरिन की गर्वोक्ति से महादेव क्रुद्ध हो जाते हैं। अंत में गौरी के समझाने पर पालकी जाती है, जिसपर बैठकर डगरिन आती है। फिर गणेश का जन्म होता है। इस गीत में डगरिन के घर का चित्रण इस प्रकार किया गया है—'ऊँची चउपरिया पुर पाटन, आले बाँसे छावल हे। दुअरे चननवा के गाछ उहाँ रे बसे डगरिन हे।' *इतना ही नहीं, उसके घर की किवाड़ी में रत्न जड़े हुए हैं। यहाँ दिखलाया गया है कि समय पर सामान्य व्यक्ति का भी महत्त्व कितना बढ़ जाता है।]*

भँगिया पिसयते महादेओ, सुनहऽ बचन मोरा हे।
देओ,[१] तोरा धनी दरद बेयाकुल, तोरा के बोलावथु[२] हे ॥१॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहु न पओलन हे।
बुढ़उ बैल पीठी भेलन असवार, कहाँ रे धनी बेआकुल हे ॥२॥
सउरी में से बोलथी गउरा[३] देई, सुनहऽ बचन मोरा हे।
देओ, लाज सरम केरा बतिया, तोरा से कहियो केता[४] हे ॥३॥
मारहे पँजरवा[५] में पीर से डगरिन बोलाइ देहु हे ॥४॥
एतना बचन जब सुनलन, बुढ़वा दिगम्बर हे।
बुढ़उ बैल पीठ भेलन असबार, कहाँ रे बसे डगरिन हे ॥५॥
बाट जे पूछहथ[६] बटोहिआ त कुइआँ पनिहारिन[७] हे।
इहाँ त सहरबा के लोग, काहाँ रे बसे डगरिन हे ॥६॥

---

१. देव। २. बुलाती हैं। बोलवथु—बोलावहथुन (जि० पटना), बोलावहथु (जि० गया)। ३. गौरी। ४. कितना। ५. काँख और कमर के बीचवाला किनारे का भाग। 'पँजरवा के पीर' = प्रसव-वेदना। ६. पूछते हैं। ७. कुएँ पर की पनिहारिन।

ऊँची चउपरिया[८] पुर[९] पाटन[१०] आले[११] बाँस छावल हे[१२] ।
दुअरे चननवा के गाछ, उहाँ रे बसे डगरिन हे ॥७॥
डगरिन डगरिन पुकारथि,[१३] डगरिन अरज करे हे ।
के मोरा खोलहे[१४] केवरिया[१५] त रतन जड़ल हकइ[१६] हे ॥८॥
हम हिअइ[१७] देओ महादेओ, हम तोरा टाटी खोली हे ॥९॥
की[१८] तोरा माय कि मउसी, कि सगर[१९] पितिआइन[२०] हे ।
की तोरा घर गिरथाइन,[२१] दरद बेआकुल हे ॥१०॥
नइ मोरा माय से मउसी, से सगर पित्तिआइन हे ।
मोरा धनि दरद बेयाकुल, तोंहि के बोलावथु हे ॥११॥
पँरे ही पँरे[२२] नहीं जायब, पँर दुखायत[२३] हे ।
आनि देहु मोरा सुखपाल,[२४] ओहि रे चढ़ि जायब हे ॥१२॥
एतना बचन जब सुनलन बुढ़वा दिगंबर हे ।
चलि भेलन बँल असवार, घरहिं घुरि[२५] आयल हे ॥१३॥
एक त जाति के डगरिन, बोलऽहइ[२६] गरब सयँ[२७] हे ।
माँग हकइ संझा[२८] सुखपाल, ओहि[२९] रे चढ़ि जायब हे ॥१४॥
एक त सिवजी दलिद्दर,[३०] जलम के खाके[३१] भाँड़े[३२] हे ।
सिव, लेइ जाहु संझा सुखपाल, ओहिरे चढ़ि आवत हे ॥१५॥
डड़ियहि[३३] आवथी डगरिन, चाउँर डोलत आवे हे ।
चनन से अँगना लिपायल सुघर डगरिन पग धरे हे ॥१६॥
घड़ी रात बीतल, पहर रात, अउरो आधिए रात हे ।
लेलन गनेस औतार, महल उठे सोहर हे ॥१७॥

●

---

८. चौमहला । ९. मकान । १०. कोठेवाला । ११. हरे-हरे । १२. इस पंक्ति को मगह के कुछ भागों में निम्नलिखित प्रकार से भी गाया जाता है—'ऊँची पुरइया पुर पातर (पाटल), आले बाँस छावल हे ।' इस रूप में 'पुरइया' का अर्थ 'नगर' 'पाटल' का 'पाटा हुआ' तथा 'पातर' का 'पतला' लिया जायगा । १३. पुकारते हैं । १४. खोलता है । १५. किवाड़ । १६. है । १७. हैं । १८. क्या । १९. साथ की । २०. चाची । २१. घर-गृहस्थी सँभालनेवाली (पत्नी) । २२. पाँवे-पाँवे, पैदल । २३. दुखेगा, दर्द करेगा । २४. सुखपालिका ; चण्डोल ; पालकी । २५. लौट आना । २६. बोलती है । २७. गर्व से । २८. पालकी ढाँकने का रंगीन और काम किया ओहार । संझा < संजफ संजाफ (फा०) = गोटा, किनारी । २९. उसी पर । ३०. दरिद्र । ३१. राख । ३२. हँसी के पात्र । ३३. पालकी ।

[२]

[इस गीत में पुत्र-प्राप्ति के लिए विभिन्न विधि-विधानों द्वारा भगवान् शंकर की पूजा करने का वर्णन किया गया है ।

इसमें गौरी के माध्यम से स्त्री-जाति की भावनाओं का अभिव्यक्तीकरण हुआ है । यहाँ मचिया और पलंग पर बैठे हुए गौरी-महादेव, एक सामान्य दम्पती के प्रतीक हैं और पार्थिवेश्वर उनके आराध्य ।]

पलँगा बइठल हथ[१] महादेओ, मचिया गउरा[२] देई[३] हे ।
हमरा पुतरवा[४] के साध[५], पुतर कइसे[६] पायब हे ॥१॥
करबइ[७] मैं छठ[८] एतवार[९], सुरुज गोड़ लागब हे ।
मिलि-जुलि पारथि[१०] बनायब, पुतर फल पायब हे ॥२॥
कुरखेत[११] मटिया मँगायब, गंगाजल सानब[१२] हे ।
काँसे कटोरिया पारथि बनायब, फल फूल लायब हे ॥३॥
देबइन[१३] हम अछत[१४] चन्नन, अउरो बेल पातर[१५] हे ।
देबइन धतुरबा के फूल, भाँग घोंटि लायब हे ॥४॥
करबइन मैं बरत परदोस[१६] पुतर फल पायब हे ॥५॥
एक पख[१७] पूजल, दोसर पख, तेसरे चढ़ि आयल हे ।
पुरि गेल[१८] गउरा के मनकाम, पुतर फल पायब हे ॥६॥

●

[३]

[इस गीत में एक बहुत ही कारुणिक प्रसंग का वर्णन है । निर्वासित होने पर सीता को घनघोर और भयावने जंगल में प्रसव-वेदना आरंभ होती है । सीता असहाय होकर रो रही हैं और वनदेवी उन्हें सांत्वना देती है । पुत्र-जन्म के बाद सीता को कुश का बिछौना और ओढ़ना दिया जाता है । सीता मन-ही-मन सोचती हैं कि अगर यह अयोध्या में जन्म लेता, तो आज वहाँ इसके लिए क्या-क्या

---

१. हैं । २. गौरी । ३. देवी । ४. पुत्र । ५. इच्छा । ६. किस तरह । ७. करूँगी । ८. षष्ठी-व्रत, जिसका विशेष माहात्म्य कार्तिक शुक्ल षष्ठी और चैत्र शुक्ल षष्ठी में है । ९. रविवार । १०. मिट्टी के बने शिवलिंग । पार्थिवेश्वर, जो शिवयज्ञ में शत रुद्र-पूजा के लिए बनाये जाते हैं । ११. जोता-कोड़ा खेत अथवा कुरुक्षेत्र तीर्थ । १२. सानना, मिट्टी को पानी देकर गूँधना । १३. दूँगी । १४. अक्षत । १५. बिल्वपत्र । १६. प्रदोष-व्रत (त्रयोदशी व्रत, जिसमें दिनभर उपवास किया जाता है तथा सायंकाल शिव की पूजा की जाती है ।) १७. पक्ष (महीने का अर्द्धभाग या १५ दिन) । १८. पूर्ण हो गया ।

नहीं होता ? फिर वे आँचल फाड़कर कागज बनाती हैं तथा काजल की स्याही और कुश की कलम से लिखती हैं। पत्र-वाहक को कहती हैं कि तुम कौसल्या, कैकेयी तथा लक्ष्मण को खबर देना, लेकिन राम को सूचित नहीं करना। पत्रवाहक अयोध्या पहुँचता है और उसकी सबसे पहले राम से भेंट होती है। सबसे वह इनाम पाकर फिर जंगल लौट आता है। राम चलते समय पत्रवाहक के द्वारा संवाद भेजते हैं कि वह (सीता) अयोध्या लौट आवे। संवाद पाने पर सीता कहती हैं कि मैं तो धरती के फटने पर उसमें प्रवेश कर जाऊँगी, लेकिन अयोध्या नहीं लौटूँगी। इस गीत में राजा रामचन्द्र अयोध्या के राजा नहीं, वरन् सर्वसाधारण की तरह पोखरे के किनारे बैठकर दतवन करते हुए चित्रित किये जाते हैं। सीता के वनवास से राजा राम की नहीं, वरन् पति-रूप में चित्रित राम की मानसिक दशा की कल्पना सहज ही की जा सकती है। वैसी स्थिति में सीता का यह संवाद देना कि राम को सूचना न मिले, सीता के लिए स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन राम-जैसे पति पर क्या गुजरी होगी ? इसके लिए यह पंक्ति बहुत कुछ बतलाती है—'कहल सुनल सीता माफ करिह, अजोधेया चलि आवह हे।']

जेहि बन सीकियो[1] न डोलइ[2], बाघ गुजरए[3] हे।
ललना, ताहीतर रोवे सीता सुन्दर, गरभ अलसायल[4] हे ॥ १ ॥
रोवथी सीता अछन[5] सँय, अउरो छछन[6] सँय हे।
ललना, के मोरा आगे-पाछे[7] बइठतन, के[8] रे सिखावत[9] हे ॥ २ ॥
बन में से इकसलन[10] बनसपति[11], सीता समुझावल हे।
ललना, सीता हम तोरा आगे-पाछे बइठब, केसिया सँभारब[12] हे ॥ ३ ॥
हम देबो सोने के हँसुअवा[13], हमहीं होयवो डगरिन हे ॥ ४ ॥
आधी रात बीतलइ पहर रात, बबुआ जलम लेल हे।
ललना, जलमल तिरभुवन नाथ, तीनहुँ लोक ठाकुर हे ॥ ५ ॥
जलम लेहल बाबू अजोधेया त अउरो रजधानी लेत हे।
बाबू जीरवा[14] के बोरसी[15] भरयतूँ[16], लौंगिया पासँघ देती हे ॥ ६ ॥
जलमल ओही कुंजन बन अउरो सिरीस बन हे।
बबुआ, कुसवे[17] ओढ़त[18] कुस बासन[19], कुसवे के डासन[20] हे ॥ ७ ॥

---

१. सींक भी। २. डोलती है। ३. गुजरते हैं, चलते-फिरते हैं। ४. श्लथ, आलस्ययुक्त। ५-६. अछन-छछन = अधीर हो-होकर। ७. आगे पीछे (पुत्रोत्पत्ति के समय प्रसूता के आगे-पीछे बैठकर स्त्रियाँ सँभालती हैं।) ८. कौन। ९. शिक्षा देगी अथवा ढाढ़स बँधायेगी। १०. निकली। ११. वनदेवी। १२. सँवारूँगी। १३. नाल काटनेवाला हँसुआ। १४. जीरा (मसाला)। १५. गोरसी। १६. भराती। १७. कुश ही। १८. ओढ़ना। १९. वस्त्र, पहनावा। २०. बिछौना।

अँचरा फारिय[21] के कगजा, कजरा[22] सियाही भेल हे।
ललना, कुसवे बनइली[23] कलमिया, लोचन[24] पहुँचावहु हे ॥ ८ ॥
पहिला लोचन रानी कोसिला, दोसर केकइ रानी हे।
ललना तेसर लोचन लहुरा[25] देवर, रामहिं जनि जानहि हे ॥ ९ ॥
चारी चौखंड[26] के पोखरिया, राम दँतवन करे हे।
ललना, जाइ पहुँचल उहाँ[27] नउआ, त कहि के सुनावल हे ॥१०॥
कोसिलाजी देलन पाँचों टुक[28] जोड़वा[29], केकई रानी अभरन हे।
ललना, लछुमन देलन मुंदरिया[30], रामजी पटुका[31] देलन हे ॥११॥
कहले सुनल सीता माँफ करिह, अजोधेया चलि आवह हे।
फटतइ[32] धरतिया समायब[33], अजोधेया नहीं आयब हे ॥१२॥

●

[४]

[इस गीत में रामजन्म के सम्बन्ध में प्रचलित ऐतिहासिक तथ्य से कुछ भिन्न घटना का उल्लेख है। कौसल्या आदि रानियाँ किसी जड़ी विशेष को पीती हैं, जिससे तीनों को पुत्र-प्राप्ति होती है। सूचना पाकर दशरथ कौसल्या से पूछते हैं कि पुत्र-प्राप्ति के लिए तुम्हें कौन-सा व्रत करना पड़ा। कौसल्या विस्तार से प्रत्येक मास में किये गये व्रत का उल्लेख करती हैं। वे एतवार व्रत करने, तुलसी के पेड़ के नीचे दीपक जलाने, ब्राह्मण-भोजन कराने, माघ में स्नान करके अग्नि न तापने, सूर्य की पूजा करने, मातृ-पितृहीन भाँजे को पालने आदि के फलस्वरूप राम को प्राप्त करने का जिक्र करती हैं। इसपर राजा दशरथ खुशी में दान-पुण्य करने तथा अयोध्या का राज तक लुटा देने को कहते हैं। इसे सुनकर केकयी अपने पति से कहती है कि आप सोच-समझकर राज लुटावें। हम सब रानियों के भी पुत्र हुए हैं। राम के भाग्य में तो वनवास लिखा है। इसपर कौसल्या कहती हैं—'राजा छुटले बँझिनियाँ के

---

२१. फाड़कर। २२. आँखों का काजल। २३. बनाई। २४. सन्तान के जन्म होने के बाद नापित या कोई अन्य सन्देशवाहक हलदी, दूब, गुड़, अदरख और आम के पल्लव—इन मांगलिक द्रव्यों के साथ जन्म का शुभ संवाद देने के लिए सम्बन्धियों के यहाँ भेजा जाता जाता है। इसी को 'लोचन पहुँचावल' या 'लोचन भेजल' कहा जाता है। २५. लाड़ला। २६. चार खण्ड। २७. उस जगह। २८. पाँचो टुक = वस्त्र के पाँच टुकड़े (खण्ड) <स्तोक। धोती, कुर्त्ता, टोपी, गमछी और चादर, इन पाँचों को 'पाँचो टुक' कहा जाता है)। २९. जोड़ा। ३०. मुद्रिका, अँगूठी। ३१. रेशमी वस्त्र। ३२. फटतो। ३३. समा जाऊँगी, प्रवेश कर जाऊँगी।

नहीं होता ? फिर वे आँचल फाड़कर कागज बनाती हैं तथा काजल की स्याही और कुश की कलम से लिखती हैं। पत्र-वाहक को कहती हैं कि तुम कौसल्या, कैकेयी तथा लक्ष्मण को खबर देना, लेकिन राम को सूचित नहीं करना। पत्रवाहक अयोध्या पहुँचता है और उसकी सबसे पहले राम से भेंट होती है। सबसे वह इनाम पाकर फिर जंगल लौट आता है। राम चलते समय पत्रवाहक के द्वारा संवाद भेजते हैं कि वह (सीता) अयोध्या लौट आवे। संवाद पाने पर सीता कहती हैं कि मैं तो धरती के फटने पर उसमें प्रवेश कर जाऊँगी, लेकिन अयोध्या नहीं लौटूँगी। इस गीत में राजा रामचन्द्र अयोध्या के राजा नहीं, वरन् सर्वसाधारण की तरह पोखरे के किनारे बैठकर दतवन करते हुए चित्रित किये जाते हैं। सीता के वनवास से राजा राम की नहीं, वरन् पति-रूप में चित्रित राम की मानसिक दशा की कल्पना सहज ही की जा सकती है। वैसी स्थिति में सीता का यह संवाद देना कि राम को सूचना न मिले, सीता के लिए स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन राम-जैसे पति पर क्या गुजरी होगी ? इसके लिए यह पंक्ति बहुत कुछ बतलाती है—'कहल सुनल सीता माफ करिह, अजोधेया चलि आवह हे।']

जेहि बन सीकियो[1] न डोलइ[2], बाघ गुजरए[3] हे।
ललना, ताहीतर रोवे सीता सुन्दर, गरभ अलसायल[4] हे॥ १॥
रोवथी सीता अछन[5] सँय, अउरो छछन[6] सँय हे।
ललना, के मोरा आगे-पाछे[7] बइठतन, के[8] रे सिखावत[9] हे॥ २॥
बन में से इकसलन[10] बनसपति[11], सीता समुझावल हे।
ललना, सीता हम तोरा आगे-पाछे बइठब, केसिया सँभारब[12] हे॥ ३॥
हम देबो सोने के हँसुअवा[13], हमहीं होयबो डगरिन हे॥ ४॥
आधी रात बीतलइ पहर रात, बबुआ जलम लेल हे।
ललना, जलमल तिरभुवन नाथ, तीनहुँ लोक ठाकुर हे॥ ५॥
जलम लेहल बाबू अजोधेया त अउरो रजधानी लेत हे।
बाबू जीरवा[14] के बोरसी[15] भरयतूँ[16], लौंगिया पासँघ देती हे॥ ६॥
जलमल ओही कुंजन बन अउरो सिरीस बन हे।
बबुआ, कुसवे[17] ओढ़त[18] कुस बासन[19], कुसवे के डासन[20] हे॥ ७॥

१. सींक भी। २. डोलती है। ३. गुजरते हैं, चलते-फिरते हैं। ४. श्लथ, आलस्ययुक्त। ५-६. अछन-छछन = अधीर हो-होकर। ७. आगे पीछे (पुत्रोत्पत्ति के समय प्रसूता के आगे-पीछे बैठकर स्त्रियाँ सँभालती हैं।) ८. कौन। ९. शिक्षा देगी अथवा ढाढ़स बँधायेगी। १०. निकली। ११. वनदेवी। १२. सँवारूँगी। १३. नाल काटनेवाला हँसुआ। १४. जीरा (मसाला)। १५. गोरसी। १६. भराती। १७. कुश ही। १८. ओढ़ना। १९. वस्त्र, पहनावा। २०. बिछौना।

अँचरा फारिय[21] के कगजा, कजरा[22] सियाही भेल हे।
ललना, कुसवे बनइली[23] कलमिया, लोचन[24] पहुँचावहु हे॥ ८॥
पहिला लोचन रानी कोसिला, दोसर केकइ रानी हे।
ललना तेसर लोचन लहुरा[25] देवर, रामहिं जनि जानहि हे॥ ९॥
चारी चौखंड[26] के पोखरिया, राम दँतवन करे हे।
ललना, जाइ पहुँचल उहाँ[27] नउआ, त कहि के सुनावल हे॥१०॥
कोसिलाजी देलन पाँचों टुक[28] जोड़वा[29], केकई रानी अभरन हे।
ललना, लछुमन देलन मुंदरिया[30], रामजी पटुका[31] देलन हे॥११॥
कहले सुनल सीता माँफ करिह, अजोधेया चलि आवह हे।
फटतइ[32] धरतिया समायब[33], अजोधेया नहीं आयब हे॥१२॥

●

[४]

[इस गीत में रामजन्म के सम्बन्ध में प्रचलित ऐतिहासिक तथ्य से कुछ भिन्न घटना का उल्लेख है। कौसल्या आदि रानियाँ किसी जड़ी विशेष को पीती हैं, जिससे तीनों को पुत्र-प्राप्ति होती है। सूचना पाकर दशरथ कौसल्या से पूछते हैं कि पुत्र-प्राप्ति के लिए तुम्हें कौन-सा व्रत करना पड़ा। कौसल्या विस्तार से प्रत्येक मास में किये गये व्रत का उल्लेख करती हैं। वे एतवार व्रत करने, तुलसी के पेड़ के नीचे दीपक जलाने, ब्राह्मण-भोजन कराने, माघ में स्नान करके अग्नि न तापने, सूर्य की पूजा करने, मातृ-पितृहीन भाँजे को पालने आदि के फलस्वरूप राम को प्राप्त करने का जिक्र करती हैं। इसपर राजा दशरथ खुशी में दान-पुण्य करने तथा अयोध्या का राज तक लुटा देने को कहते हैं। इसे सुनकर केकयी अपने पति से कहती है कि आप सोच-समझकर राज लुटावें। हम सब रानियों के भी पुत्र हुए हैं। राम के भाग्य में तो वनवास लिखा है। इसपर कौसल्या कहती हैं—'राजा छुटले बँझिनियाँ के

२१. फाड़कर। २२. आँखों का काजल। २३. बनाई। २४. सन्तान के जन्म होने के बाद नापित या कोई अन्य सन्देशवाहक हलदी, दूब, गुड़, अदरख और आम के पल्लव—इन मांगलिक द्रव्यों के साथ जन्म का शुभ संवाद देने के लिए सम्बन्धियों के यहाँ भेजा जाता जाता है। इसी को 'लोचन पहुँचावल' या 'लोचन भेजल' कहा जाता है। २५. लाड़ला। २६. चार खण्ड। २७. उस जगह। २८. पाँचो टुक = वस्त्र के पाँच टुकड़े (खण्ड) < स्तोक। धोती, कुर्त्ता, टोपी, गमछी और चादर, इन पाँचों को 'पाँचो टुक' कहा जाता है)। २९. जोड़ा। ३०. मुद्रिका, अँगूठी। ३१. रेशमी वस्त्र। ३२. फटती। ३३. समा जाऊँगी, प्रवेश कर जाऊँगी।

नाम, बलइए से राम बन जइहें, बन से लवटि अइहें हे।' यहाँ ऐतिहासिक तथ्य को जन-मानस ने अपने अनुरूप ढाल तो लिया ही है, साथ ही इस गीत में पुत्र-प्राप्ति से कौसल्या की मनःसन्तुष्टि पराकाष्ठा पर पहुँची दीखती है। इसी तरह कैकेयी द्वारा राम को वन भेजे जाने का उल्लेख समाज में होनेवाली गोतिनी की ईर्ष्यावाली मनोवृत्ति को भी प्रकट करता है।]

कटोरनि[१] पियली कोसिला रानी, अउरो सुमिन्त्रा रानी हे।
ए ललना, सिलि[२] धोइ पियलन केकइ रानी, तीनों रानी गरभ से हे॥ १॥
कोसिला रानी के मुँह पियराएल, देह दुबराएल[३] हे।
ए ललना, दसरथ मनहिं अनन्दे, कोसिला जरि[४] रोपली हे॥ २॥
आधी राति बीतले पहर राति बीतले हे।
ए ललना, कोसिला के भेल[५] राजा रामचंदर, सुमित्रा के लछुमन हे॥ ३॥
ए ललना, केकइ के भरथ भुआल,[६] तीनों महल सोहर हे॥ ४॥
दुअरा से बोलथिन[७] राजा दसरथ, सुन ए कोसिला रानी।
ए रानी जी, कउन[८] बरत रउरा[९] कएल कि राम फलवा पाएल हे॥ ५॥
सउरी[१०] से बोलथिन कोसिला रानी, सुन राजा दसरथ जी।
ए राजा, बरत कइली एतवार, त राम फल पइली हे॥ ६॥
कातिक मासे हम नहइली, तुलसी दिया बरली[११] हे।
ए राजा, भूखल[१२] बराम्हन जेवली,[१३] त राम फल पइली हे॥ ७॥
माघ मासे नेहइली,[१४] अगनियाँ[१५] न तपली[१६] हे।
ए राजा, एहो कस्ट सहली, राम फल पइली हे॥ ८॥
बैसाखहिं मासे नेहइली सुरूज गोड़ लगली[१७] हे।
ए राजा, टूअर[१८] भगिना का पालली, त राम फल पइली हे॥ ९॥
दुअरा से बोलथिन राजा दसरथ, सुन ए कोसिला रानी हे।
ए रानी, सेर जोखि[१९] सोनवा लुटाएब, पसेरी जोखि रूपवा[२०] हे॥१०॥
ए रानी जी, सँउसे[२१] अजोधेया लुटएबो, त राम के बधइया में॥११॥

१. कटोरे-कटोरे। २. सिल, सिलौट। ३. मुँह पीला होना और देह दुबलाना, गर्भ-धारण का चिह्न है। ४. जड़ रोप दिया, वंश बचा लिया। ५. हुए। ६. भूपाल। ७. बोलते हैं। ८. कौन। ९. आप। १०. सौरीघर। ११. बाला, जलाया। १२. भूखा। १३. जेवनार कराया, भोजन कराया। १४. स्नान किया। १५. अग्नि। १६. तापना, सेवन करना। १७. गोड़ लगना = चरण पर गिरना, प्रणाम करना। १८. मातृ-पितृहीन। १९. तौलकर। २०. सम्पूर्ण, समग्र।

सउरी से बोलथिन केकइ रानी, सुन राजा दसरथ।
ए राजा, कोसिला के भेल रामचंदर, सुमित्रा के लछुमन हे॥१२॥
ए राजा, केकइ के भरथ भुआल, जानि-बुझि[२२] अजोधेया लुटइह।
ए राजा, रामजी लिखल बनवास, अजोधेया मत लुटइह॥१३॥
सउरी से बोलथिन कोसिला रानी, सुन राजा दसरथ जी।
राजा, छुटले[२३] बँझिनियाँ के नाम, बलइए से[२५] राम बन जइहें,
बन से लवटि अइहें हे॥१४॥

●

[५]

[कृष्ण-जन्म के आख्यान पर यह गीत आश्रित है। देवकी की वेदना से अभिभूत होकर यशोदा प्रतिज्ञा करती है कि वह उसके पुत्र का लालन-पालन करेगी और कंस से, जैसे भी होगा, उसकी रक्षा करेगी। कृष्ण के जन्म होने पर देवकी स्वयं बच्चे को लेकर जाती है और यशोदा की गोद में रख आती है। यहाँ वसुदेव द्वारा कृष्ण को ले जाये जाने का कोई उल्लेख नहीं है। इस गीत के अंत में काव्य के 'शिवेतरक्षतये' के आदर्श का अनुगमन करते हुए अन्य मंगल-काव्यों के समान यह निर्देश किया गया है कि जो इस गीत को गाती या गाकर सुनाती हैं, उनका सौभाग्य जन्म-जन्मान्तर तक अचल रहता है तथा उन्हें पुत्र-फल प्राप्त होता है। कई दूसरे गीतों में भी इस प्रकार के निर्देश आपको मिलेंगे।]

घरवा से इकसल[१] जसोदा रानी, सुभ दिन सामन[२] हे।
ललना, जमुना के झिरि झिरि[३] पनियाँ त पनियाँ सोहामन हे॥ १॥
सात पाँच मिलल सँघतिया[४] से सोने घइला[५] माथे लेलन हे।
गावहिं मंगल गीत, देखत सुर मोहहिं हे॥ २॥
केउ सखी मुँह धोवे, केउ सखी हँसि हँसि पानी भरे हे।
ललना, केउ एक पार तिरियवा कपसि[६] लोर[७] ढारइ हो॥ ३॥
नइ[८] हकइ[९] नावोड़िया[१०] अउरो मलहवा भइया हे।
ललना, केहि विधि उतरब पार, तिरिया एक रोवइ हे॥ ४॥
बाँधि के काँछ कछौंटा[११] अउर छाती[१२] घइला लेइ हे।
जाइ जुमल[१३] जमुना पार, काहे गे तिरिया रोवहिं गे॥ ५॥

२२. जानि-बुझि = समझ-बूझकर। २३. छूट गया, मिट गया। २४. वन्ध्या। २५. बला से।

१. निकलीं। २. श्रावण मास। ३. मन्द-मन्द झर-झर बहने वाला। ४. संगी-साथी। ५. घड़ा। ६. सिसक-सिसककर। ७. अश्रु। ८. नहीं। ९. है। १०. छोटी डोंगी। ११. आँचल कमर में बाँधना, कच्छा कसना। १२. वक्षःस्थल। १३. पहुँच गई।

की[१४] तोर नइहर[१५] दूर कि सासुर[१६] दुख पड़ल हे।
तिरिया, की तोर कंत बिदेस कवन दुख दुखित हे॥ ६॥
नइ मोरा नइहर दूर, न सासुर दुख पड़ल हे।
नइ मोरा कंत विदेश, कोख[१७] दुख दुखित हे॥ ७॥
सात पुतर दइब[१८] देलन, कंस सभ हर लेलन हे।
ललना, अठवें गरभ नगिचायल[१९] सेकरो[२०] भरोसा नइ हे॥ ८॥
चुप रहुँ, चुप रहुँ देवोकी, त सुनह बचन मोरा हे।
अपना बलक मोरा दींहऽ त हम पोस-पाल देबो हे॥ ९॥
नोन,[२१] चाउर[२२] तेल पइँचा[२३] भेल, सभे, चीज पइँचा भेल हे।
कोखवा उधार नइ सुनली, कइसे धीरजा बाँधव हे॥१०॥
किया[२४] साखी[२५] सुरजवा त किया साखी गंगा माता हे।
ललना, किया साखी सुरुज के जोत, धरम मोर साखी हथि हे॥११॥
हो गेल[२६] कौल-करार[२७] बचन हम पालब हे।
लाख देतन मोरा कंस तइयो[२८] नइँ मानब हे॥१२॥
आयल भादो के रात, किसुन[२९] पख[३०] अठमी हे।
लिहलन किसुन अवतार, सकल जग जानहु हे॥१३॥
खुल गेल बजर केवाँड़, पहरु[३१] सभ सूतल[३२] हे।
देवोकी ले भागलन जसोदा के द्वार, महल उठे सोहर हे॥१४॥
जो एहि मंगल गाअहिं गाइ सुनावहिं हे।
जलम-जलम[३३] अहियात[३४] पुतर फल पावहिं हे॥१५॥

●

[६]

[इस गीत में पौराणिक तथ्य के विपरीत देवकी के नहीं, वरन् यशोदा के गर्भ से ही कृष्ण का जन्म हुआ है। यशोदा में गर्भ के लक्षण की सूचना पाने पर नंद अपने पंडित से गर्भस्थ शिशु के विषय में जिज्ञासा करते हैं। पंडित से यह मालूम होने पर कि स्वयं त्रिभुवननाथ ही शिशु के रूप में अवतीर्ण होंगे, सभी

---

१४. क्या। १५. नैहर, मायका। १६. ससुराल। १७. कुक्षि, गर्भ। १८. दैव। १९. नजदीक हुआ। २०. उसका भी। २१. नमक, लवण। २२. चावल। २३. लौटा देने के लिए ली हुई वस्तु। २४. क्या। २५. साक्षी। २६. हो गया। २७. परस्पर वचनबद्धता, प्रतिज्ञा। २८. तब भी। २९. कृष्ण। ३०. पक्ष, पखवारा। ३१. पहरुवा, पहरेदार। ३२. सोया हुआ, निद्रित। ३३, जन्म-जन्म। ३४. सौभाग्य, (अहिबात—सं०अभिवाद (?), अविधवात्व)

हर्षोल्लास में द्रव्यादि लुटाने लगते हैं और आनंदोत्सव आरंभ हो जाता है। यहाँ भी जनमानस ने न केवल पौराणिक तथ्य को अपने मनोनुकूल परिवर्त्तित कर लिया है, वरन्, एक तरफ जहाँ 'नागर नट' नाचने आते हैं, वहाँ 'पमड़िया' भी आकर नाचने-गाने लगते हैं।]

देखि-देखि मुँह पियरायल, चेरिया बिलखि पूछे हे।
रानी, कहहु तूँ रोगवा के कारन, काहे मुँह झामर[१] हे॥ १॥
का कहुँ गे[२] चेरिया, का कहुँ, कहलो न जा हकइ हे।
चेरिया, लाज गरान[३] के बतिया, तूँ चतुर सुजान[४] हहीं गे॥ २॥
लहसि[५] के चललइ त चेरिया, त चली भेलइ झमिझमि[६] हे।
चेरिया, जाइ पहुँचल दरबार, जहाँ रे नौबत[७] बाजहइ हे॥ ३॥
सुनि के खबरिया सोहामन[८] अउरो मनभावन हे।
नंद जी उठलन सभा सयँ[९] भुइयाँ[१०] न पग परे हे॥ ४॥
जाहाँ ताहाँ भेजलन धामन,[११] सभ के बोलावन हे।
केहु लयलन पंडित बोलाय, केहु रे लयलन डगरिन हे॥ ५॥
पंडित बइठलन पीढ़ा[१२] चढ़ि, मन में बिचारऽ करथ[१३] हे।
राजा, जलम लेतन[१४] नंदलाल जगतर[१५] के पालन हे॥ ६॥
जसोदाजी बिकल सउरिया,[१६] पलक धीर धारहु हे।
जलम लीहल तिरभुवन नाथ, महल उठे सोहर हे॥ ७॥
सुभ घड़ी सुभ दिन सुभ बार सुभ रे लगन आयल रे।
धनि हे, प्रगट भयेल[१७] बिसुन देओ,[१८] अनन्द तीन लोक भेल हे॥ ८॥
हरखि हरखि देओ बरसथ[१९] फूल बरसावथ[२०] हे।
ललना, सुर मुनि गावथि[२१] गीत, मन-ही-मन गाजथि[२२] हे॥ ९॥
बाजन बाजये अपार नागर[२३] नट नाचत हे।
नाचहि गाय[२४] पमड़िया,[२५] महल उठे सोहर हे॥१०॥

---

१. झाँवर, मलिन। २. सम्बोधन का शब्द। ३. ग्लानि। ४. सुज्ञानी, सुजान, ५. आनंदित होकर। ६. झमिझमि = हंसगामी चाल में आभूषणों को बजाती हुई। ७. शहनाई। ८. सुहाना। ९. से। १०. भूमि पर। ११. धावन, संदेश-वाहक। १२. पाद-पीठ, लकड़ी का बना ऊंचा आसन। १३. करते हैं। १४. लिया। १५. जगत। १६. सौरीघर, प्रसूति-गृह। १७. हुए। १८. विष्णुदेव। १९. बरसते हैं। २०. बरसाते हैं। २१. गाते हैं। २२. गाजते है, गद्गद होते हैं। २३. नागर, दक्ष। २४. गाकर। २५. पंवरिया, पुत्रोत्पत्ति के अवसर पर नाच-गान करनेवाली जाति।

नंदजी लुटवलन अनधन अरु गजओबर[२६] हे।
जसोदा लुटवन भंडार सकल सुख आगर हे ॥११॥
सोने के थरिया[२७] भरी मोतिया, पंडितजी के आगे धरि हे।
पंडित लेहु न अपन दछिनमा,[२८] पुतरफल पायल हे ॥१२॥
बाजन बाजय गहागही[२९] नंद सुख भूलल हे।
जसोदा सउरिया में पइसल,[३०] सरग[३१] सुख लूटथ हे ॥१३॥

●

भादो रैन भयामन दिसि घन घेरे हे।
रोहिनी नछतर[१] तिथि अठमी, लाल गोपाल भेले हे ॥१॥
किरीट मुकुट घनस्याम से कुंडल कान सोभे हे।
ललना, संख चकर[२] गदा पदुम चतुर भुज रूप किए हे ॥२॥
उर बैंजयन्ती के माल से देखि रूप मन मोहे हे।
ललना, बिहसि के बोले भगमान, तोहर हम पुतर हे ॥३॥
पूरुब जलम बरदान तेही से तोर कोख अयली हे।
ललना, जनि तुहि अरपहुँ डरपहुँ[३] जसोदा घर धरि आहू हे ॥४॥
छुटि गेले बंधन जंजीर तो खुलि गेलइ फाटक हे।
ललना, वसुदेव लेलन हरि के गोद पहरु सब सूतल हे ॥५॥
बिहसि बोलल महराज, देव जनि डरपहु हे।
ललना लेई चलु जमुना के पार, कमर नहीं भींजत हे ॥६॥
यह सुनि के वसुदेव जी जमुना के पार भेलन हे।
ललना, जसोदा घर बाजत बधाई, महल उठल सोहर हे ॥७॥

●

---

२६. गजओबर=बड़ा घर या कमरा। (मिला०—ओबरी=तंग और अंधेरी कोठरी)। [ओबरी < ऊवटी > उववड़ी > ओवड़ी > ओवरी > ओवर। वा ओबर < ओवर अ < अवर अ < अपवरक (=भीतरी घर, 'गर्भागारेऽपवरक:'—त्रिकांड)]—। किन्तु, यहाँ गजओहर पाठ हो सकता है, जो 'गज-गौहर' का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ यहाँ गजमुक्ता होगा। संभव है, गज ओवर पाठ ही हो और वह 'गजोपल < गज + उपल' का अपभ्रंश हो। २७. थाली। २८. दक्षिणा। २९. उल्लास के साथ, धूमधाम के साथ। ३०. भीतर बैठी-बैठी। ३१. स्वर्ग।

१. नक्षत्र। २. शंख-चक्र। ३. न कहीं फेंको या न डरो।

[८]

[राम-जन्म के समय 'डगरिन' के पास प्रसव कराने के लिए जब बुलाहट जाती है तब वह आने में आना-कानी करती है। वह पारितोषिक की माँग बढ़ाती जाती है, एवं राजा दशरथ पुत्र-जन्म की खुशी में उसकी सभी माँगों की पूर्ति के लिए वचन-बद्ध होते हैं। यहाँ डगरिन न तो राजा की प्रजा है और न दशरथ उसके राजा। आज वह राजा के घर डोली पर चढ़कर जायगी और वहाँ हाथी-घोड़े का पारितोषिक लेगी। उसके तमककर कहने पर भी राजा दशरथ प्रसन्न हो उसे सब भंडार देने को तैयार हैं, और शिशु को नहलाने की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार का एक दूसरा गीत भी इस संग्रह में है, जिसमें गौरी और शिव की चर्चा आई है। किंतु, इस गीत के दशरथ जितना ही कोमल और भाव-प्रवण हैं, उस गीत के शिव उतना ही तुनुकमिजाज। गीत में शिव आशुतोष नहीं, प्रत्युत, रुद्र-प्रकृति के दीख पड़ते हैं। ये दोनों चित्रण ग्रामीण समाज के प्रतिबिम्ब हैं, दोनों छायाएँ वहाँ सुलभ हैं। इस गीत में दशरथ के पुत्र नंदलाल हैं, जो ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वथा विपरीत हैं। किंतु लोकगीत तो भावधारा का वाहन-मात्र है। वहाँ सभी पिता वसुदेव और दशरथ हैं और सभी नवजात शिशु नंदलाल और राम।]

चलूँ चलूँ डगरिन भवन मोर, हम राजा दसरथ हे।
डगरिन, मोर घर अयलन भगमान, भेलन[१] नंदलाल[२] मोरा हे ॥१॥
एतना बचन जब सुनलन, सुनहुँ न पयलन[३] हे।
राजा लेइ आहु डोलिया कहार, बुलइत[४] नहीं जायम[५] हे ॥२॥
एतना सुनइते राजा दसरथ, डोलिया फनावल[६] हे।
डगरिन चढ़ि चलूँ मोर महलिया, बालक नहबावहु[७] हे ॥३॥
हम लेबो हँथिया से घोड़वा अउरी गजमोतीए[८] हे।
तमकि के बोलहकइ[९] डगरिन, तबे नहबायब हे ॥४॥
एतना सुनत राजा दशरथ, डगरिन अरज करे हे।
डगरिन ले लेहु सहन[१०] भंडार, बालक नहबावहु हे ॥५॥
धन धन धन राजा दसरथ, धन कौसीला माता हे।
ललना, धन धन डगरिन भाग, जे राम नेहबावल हे ॥६॥

●

---

१. हुए, जन्म लिया। २. लोकगीतों में नंदलाल पुत्रमात्र के लिए व्यवहृत होता है। ३. पाया। ४. पैदल चलते हुए। ५. जाऊँगी। ६. डोली तैयार किया। ७. स्नान कराओ। ८. गजमोती। ९. बोलती है। १०. संपूर्ण, भरा-पूरा।

[९]

[ग्रामीण परिवार में दूसरे उत्सवों के समान जन्मोत्सव में भी नाऊन तेली, डगरिन आदि 'पौनी' आते हैं। इस गीत में नाऊन की चर्चा है। वह नंदजी से 'पियरी' रँगा देने को कहती है। नंदजी ने सभी ज्ञानी-गुणियों को संतुष्ट कर दिया और 'नउनियाँ' को 'अयोध्या' का राज्य देने को कहा। किन्तु, वह अयोध्या का राज्य लेकर क्या करेगी ? वह सोने की सिकड़ी चाहती है। यशोदा ने सोने की सिकड़ी और रोहिणी ने हँसुली दे दी। राजा ने 'पाट पितांबर' दिया। यहाँ नंद, यशोदा, रोहिणी और सुनयना का उल्लेख हुआ है; किंतु राज्य में 'अयोध्या' का नाम आया है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से गलत होने पर भी लोकगीत की दृष्टि से क्षम्य है।]

घर घर डोलऽहे[1] नउनियाँ,[2] त हाथ ले महाउर[3] हे।
राजा, मोरा तूँ रँगा दऽ पियरिया[4] महल उठे सोहर हे ॥१॥
जसोदा जी नंद के बोलाय के सभे हाल पूछल हे।
राजा, गुनी[5] सभ अधिको न जाँचथि, हिरदा जुड़ाइ देहु[6] ना ॥२॥
नंद कयलन धनदान से[7] मन हरखायल हे।
गेयानी गुनी सभ भेलन नेहाल[8] अउरो कुछ चाहिए हे ? ॥३॥
किया तोरा चाह हउ[9] नउनियाँ, माँगु मुँह खोली खोली गे।
नउनियाँ, देबऊ में अजोधेया के राज, आउरो कछु चाहहीं[10] गे ॥४॥
हँसि हँसि बोलहइ नउनियाँ त सुनहु बचन मोरा हे।
राजा हम लेबो सोने के सिकड़िया, अजोधेया राज की करब हे ? ॥५॥
जसोदा जी देलकन[11] सिकड़िया, रोहन[12] गल हाँसुल[13] हे।
राजा देलन पाट पिताम्बर, महल उठे सोहर हे ॥६॥
आवहु नयना[14] से गोतनी अउरो सभ सुन्नर[15] हे।
गावहु आज बधइया, महल उठे सोहर हे ॥७॥
बूढ़ीं सूढ़ी देलकन असिसववा जुग्रहु[16] पूत पंडित हे।
ललना, सुनरी के नयना जुड़ायल लोग बाग हरखित हे ॥८॥
जे इह सोहर गावल, गाइ सुनावल हे।
ललना जलम जलम अहियात, पुतर फल पावल हे ॥९॥

●

१. डोलती फिरती है। २. नाइन। ३. महावर। ४. पीले रंग की साड़ी। ५. गुणी जन। ६. शीतल कर दो, संतुष्ट कर दो। ७. सो, इसलिए। ८. निहाल, सकल मनोरथ सिद्ध। ९. इच्छा है। १०. चाहती हो। ११. दी। १२. रोहिणी (बलदेव की माँ।) १३. गले में पहननेवाली हँसुली, जिसकी आकृति हँसुए की तरह होती है। १४. सुनयना नाम की स्त्री। १५. सुन्दरियाँ। १६. स्वस्थ होकर बढ़ो, युवक हो।

[१०]

[प्रसव-वेदना के समय देवकी के मन में अपने किये पर पश्चात्ताप होता है और फिर प्रसंग करने की कल्पना-मात्र से ही यमुना में डूब मरने को तैयार हो जाती हैं। सखियों के बहुत समझाने-बुझाने पर वह फिर पति के पास जाती हैं। देवकी रात्रि के पहले पहर में द्वार पर केले के थंभ गाड़ने, दूसरे पहर में तुलसी का पौधा लगाने, तीसरे पहर में सकोरे में दही रख जाने और चौथे पहर में 'श्यामल कुमार' के सेज पर रख जाने का स्वप्न देखती हैं। उसी समय वसुदेवजी हँसते हुए कहते हैं कि अब यदुनाथ कृष्ण का अवतार होगा और हमारा जन्म सार्थक हो जायगा। यहाँ हरे थंभ, तुलसी और दही का स्वप्न किसी अच्छी वस्तु की प्राप्ति का द्योतक है। भारतीय परंपरा में बड़े पुरुषों के अवतार के पूर्व उनकी माताओं को स्वप्न-दर्शन का उल्लेख होता आया है। वही परंपरा इस गीत में भी वर्णित है।]

मनमा में दुखित देवोकी रानी चलली जमुन दह[1] हे।
ललना, फेर[2] नहीं करबइ परसंग,[3] जलम मोर अकारथ[4] हे ॥१॥
परबइ[5] जमुन दह जाइ, धसिए जयबइ अहे[6] दहे हे।
ललना, करबइ न बसुदेवो संग, जलम न सोवारथ[7] हे ॥२॥
सखी दस आगे भेल, दस सखी देवोकी के पाछे भेल हे।
देवोकी, करू[8] बसुदेवो जी के संग, जलम होयतो सोवारथ हे ॥३॥
पहिला पहर राति सुतली,[8] सपन एक देखली हे।
ललना, हरियर[9] केरवा[10] के थंभ, दुवारी[11] केतो[12] रोपि गेलइ हे ॥४॥
दूसर पहर जब बीतल सपन एक देखली हे।
ललना, हरियर तुलसी के बिरवा, दुवारी केतो रोपि गेलइ हे ॥५॥
तीसर पहर जब बीतल सपन एक देखली हे।
ललना, कोरवे[13] नरकोरवा[14] में दहिया[15] दुवारी केतो रखि गेलइ हे ॥६॥
चउठे[16] पहर जब बीतल, सपन एक देखली हे।
ललना सामर[17] कुमर एक सेजिया पर केउ मोरा रखि गेल हे ॥७॥
एतना सपन जब सुनलथि, बसुदेवो हँसि बोलथी हे।
जलम लेतन[18] जदुनाथ, जलम भेल सोवारथ हे ॥८॥

●

१. नदी, झील। २. फिर, पुनः। ३. रति-क्रिया। ४. असार्थक, व्यर्थ। ५. पड़ जाऊँगी। ६. उसी। ७. सार्थक। ८. सो गई। ९. हरा। १०. केला। ११. द्वार पर। १२. कौन तो। १३. कोरवा (मिट्टी आदि का बना नया छोटा पात्र, चुक्कड़)। १४. नारियल के ऊपरले कड़े भाग को आधा काटकर बनाया गया कोरवा या पात्र, जिसमें दही, अँचार आदि रखे जाते हैं। १५. दही। १६. चतुर्थ। १७. सांवला, श्यामल। १८. लेंगे।

[११]

[इस गीत के कथानक में रुक्मिणी की पुत्र-कामना का आश्रय लेकर बालक के आयुष्य की शुभाकांक्षा व्यक्त की गई है। माता के हृदय की यह स्वाभाविक इच्छा रहती है कि उसकी संतान लाखों-करोड़ों वर्ष तक जीवित रहे। 'जीवहुँ लाख बरीस'—यह मातृ-हृदय का शाश्वत आशीर्वाद है। इस गीत में रुक्मिणी ब्राह्मण, गंगा, विष्णु, शिव और ब्रह्मा के पास जा-जाकर पुत्र-सम्पत्ति की भीख माँगती हैं। ब्रह्मा पुत्र देना चाहते हैं, किन्तु कुछ दिन के लिए। इसपर शिशु पृथ्वी पर नहीं आना चाहता है। अन्त में अजर-अमर का वरदान प्राप्त कर शिशु पृथ्वी पर अवतार लेता है। पुत्र के लिए माता-पिता की अजर-अमरवाली कामना ही यहाँ अभिव्यक्त की गई है।]

रुक्मिन बिपर[1] के बोलौउलन,[2] आँगन बइठवलन[3] हे।
हमरा सँपतिया[4] के चाह, सँपति हम चाहही[5] हे॥ १॥
उलटि पुलटि बिपर देखलन मन मुसकयलन[6] हे।
रुक्मिन, बिधी नइ लिखलन लिलार,[7] सँपति कहाँ पायब हे।
रुक्मिन, देबी जी हथुन[8] दयामान, सँपति तोरा ओहि देथुन[9] हे॥ २॥
उहँऊ[10] से रुक्मिन चललन, देबी से अरज करे हे।
देबीजी हमरो सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥ ३॥
उलटि पुलटि देबीजी देखथिन बड़ी मुसकयलन हे।
रुक्मिन, बिधी नहीं लिखल लिलार, सँपति कहाँ पायब[11] हे।
रुक्मिन, गंगा जी हथुन दयामान, सँपति तोरा देइ देथुन हे॥ ४॥
उहँउ से रुक्मिन चललन, गंगा से अरज करे हे।
गंगाजी, मोरा सँपतिया के चाह सँपति हम चाहही हे॥ ५॥
उलटि पुलटि गंगाजी देखलन, मन मुसकयलन हे।
रुक्मिन, बिधी नहीं लिखल लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रुक्मिन, बिसुन[12] जी हथुन दयामान, सँपति तोरा देइ देथुह हे॥ ६॥
उहँउ से रुक्मिन चलि भेलन, बिसुन से अरज करे हे।
बिसुन, मोरा सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥ ७॥

१. विप्र। २. बुलाया। ३. बैठाया। ४. सम्पत्ति (पुत्र-रूपी सम्पत्ति)। ५. चाहती हैं। ६. मुस्कराये। ७. ललाट, भाल। ८. हैं। ९. देंगी। १०. वहाँ से। ११. पाओगे। १२. विष्णु भगवान्।

उलटि पुलटि बिसुन देखलन, मन मुसकयलन हे।
रुक्मिन, बिधी नहीं लिखल लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रुक्मिन, सिबजी हथुन दयामान, वोही सँ देथुन हे॥ ८॥
उहँउ से रुक्मिन चलि भेलन, सिब से अरज करे हे।
सिबजी, मोरा सँपतिया के चाह, सँपति हम चाहही हे॥ ९॥
उलटि पलटि सिब देखलन, मन मुसकयलन हे।
रुक्मिन, बिधि नहीं लिखलन लिलार, सँपति कहाँ पायब हे।
रुक्मिन, बरमाँजी[13] हथुन दयामान, ओही सँपति देथुन हे॥१०॥
उहँउ से रुक्मिन चललन, बरमाँ से अरज करे हे।
बरमाँजी हमरो सँपतिया के चाह, सँपति कहाँ पायब हे॥११॥
उलटि पलटि बरमाँ देखलन, मन मुसकयलन हे।
रुक्मिन, विधि नहीं लिखलन लिलार, सँपति कहाँ पायब हे॥१२॥
बरमाँजी बलका[14] के बोलौउलन जांघे बइठवलन हे।
बलका, छठिया[15] राते तोरा होयते, घुरिए[16] चलि अइह हे॥१३॥
एतना सुनयते[17] त बलका त बलका अरज करे हे।
बरमाँ जी, हम न जायब[18] अबतार बहुत दुख होयत हे॥१४॥
घर ही रोवत मोरा अंबा बाहर मोरा पिता रोइतन हे।
बरमाँ जी, हम नहीं लेबो अबतार, बहुत दुख पायब हे॥१५॥
बरमाँ जी, बलका के बोलवलन, जाँघे बइठवलन हे।
बलका सदिया-बिआह[19] तोरा होयतो, तबहि चलि अइह हे॥१६॥
बलका बरमाँ से अरज करे अउरो मिनती करे हे।
बरमाँ जी, हम न लिहब अवतार, बहुत दुख होवत॥१७॥
घरे जे रोवे मोरा भइया बाहर मोरा पिता रोइतन[20] हे।
सेजिया बइठल रोवे घरनी, बहुत दुख होयत हे॥१८॥
बरमाँ जी बलका के बोलवलन, जाँघे बइठवलन हे।
बलका, अजर अमर होई रहिह, बहुत सुख होयत हे॥१९॥

●

१३. ब्रह्मा। १४. बालक। १५. छठी, पुत्र-जन्म के छठे दिन 'छठी' नामक विधि होती है, उसी रात। १६. घूम-फिरकर आ जाना अथवा लौट आना। १७. सुनते ही। १८. जाऊँगा। १९. शादी-ब्याह। २० रोवेंगे।

[१२]

[यह गीत भी सोहर है। इसमें पदों के वर्णों या मात्राओं की संख्या नियत नहीं है। इसमें लयात्मक स्वर से मात्राओं की पूर्ति की जाती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें प्रबन्ध-काव्य के समान आरंभ में सरस्वती और गणपति की स्मरणात्मक स्तुति है; जो दूसरे गीतों में नहीं है। यह सामान्यतः बड़ा गीत है। इसमें गर्भिणी की नौ महीनों की स्थिति का चित्रण किया गया है। साथ ही स्नान के पश्चात् गर्भाधान का वर्णन किया गया है। इसमें सखियों का हँस-हँसकर पूछना, रुक्मिणी का गुस्सा होना, भोजन का पसंद न आना और चूल्हे की सोंधी मिट्टी का खाना, खटाई का खाना, मिष्टान्न का त्याग करना, मुँह का पीला होना आदि गर्भ के सभी लक्षण वर्णित हैं। बीच में रुक्मिणी से कृष्ण का यह पूछना कि तुम्हें क्या पसंद है और रुक्मिणी का उत्तर कि मुझे दूसरी किसी वस्तु की चाह नहीं, जन्म-जन्मान्तर में भी मैं आपकी दासी बनी रहूँ, यही कामना है। इसमें प्रश्न करने का प्रकार ऐसा है, जो कालिदास की उस उक्ति को स्मरण दिलाता है, जिसमें सुदक्षिणा की दोहद-कामनाओं का प्रश्न दिलीप से कराया गया है—'इति स्म पृच्छत्यनुवेलमादृतः प्रिया सखीरुत्तरकोसलेश्वरः।']

सुरसती[1] गनपत मनाइब,[2] चरन पखारब[3] हे।
अहे रुकमिनी भइल राजा जोग,[4] केसब[5] बर पावल हे ॥ १ ॥
नेहाइ धोवाइ[6] के माँग फारल,[7] अगर चनन सिर धरे।
फूल सेज बिछाय आपन कंत सँग बिहरन लगे ॥ २ ॥
चार पहर रात कामिन[8] हरि सँग बिलास करे।
चउठे पहर जब बीतल सपन एक देखल हे ॥ ३ ॥
देखि सपना रानी रुकमिनी, अपन हरि जगावहिं।
लाज लोक विचार कछु नहीं, एक बात उचारहिं ॥ ४ ॥
दूसर मास जब बीतल, कार्त्तिक[9] फूलल कुंद कली।
अहे हँसि हँसि पूछथि सखियन उनकर मोदभरी ॥ ५ ॥
रुकमिन जनमहिं करोध[10] सखिन मारन धावहिं।
जाहु नारी, देम[11] गारी[12] मोंहि खेल न भावहिं ॥ ६ ॥
तीसर मास जब आयल, अगहन मोद भरी।
सैनहिं सैन[13] सखिन सब घुमरि धुमरि[14] उठे ॥ ७ ॥

---

१. सरस्वती। २. मनाती हूँ, प्रार्थना करती हूँ। ३. पखारती हूँ, धोती हूँ। ४. योग्य। ५. केशव, कृष्ण भगवान्। ६. नहा-धोकर, स्नान करके स्वच्छ होकर। ७. फाड़ ली (संवार ली)। ८. कामिनी। ९. कार्त्तिक मास। १०. क्रोध। ११. दूँगी। १२. गाली। १३. झुण्ड-के-झुण्ड। १४. उमड़-घुमड़, घेर लेना।

देह लागत सून[15] भोजन देखि देखि हुल[16] बरे[17]।
छप्पन परकार के भोजन छाड़ि देइ, छुवा[18] न करे ॥ ८ ॥
सभ छाड़ि चुल्हवा[19] के माटि के रुकमिन चुपके चाटे ॥ ९ ॥
कउन कारन[20] भेल तोंहि के, कहि के मोंहि सुनावहू।
कउन चीज मनभावत, वोंहि के बनावहू ॥१०॥
नहीं चाहुँ अन धन लछमी, न छप्पन भोजन हे।
नहीं मोरा रोग न सोग, कउन चीज माँगु हम हे ॥११॥
जलम जलम तोर दासी होऊँ, अउरो न कछु चाहुँ हे ॥१२॥
चउठो महीने जब बीतल, पूस नियरायल हे।
लागत ठंढा बयार त काँपत हियो हमरो ॥१३॥
पचमे माह माघ आयल आयल सीरी पंचमी हे।
सजी गेल बाघ[21] बगइचा, त रुकमिन हुलसे हियो ॥१४॥
छठहिं मास जब आयल, फागुन छठवाँ जनायल[22] हे।
अहे कनक कटोरा में दूध भरि चेरिया त लावल हे ॥१५॥
सभ छाड़ि अमरस[23] चाटल, मधुर रस तेजल[24] हे।
अलफी सलफी[25] सभ फेकल[26] मन फरियायल[27] हे ॥१६॥
सतमें मास आयल चइत, सत बाजन[28] बाजये हे।
अहे, मधुबन फुलल असोक, भओंरा[29] रस भरमइ[30] हे ॥१७॥
कोइल सबद सोहावँन, अति मनभाँवन हे।
रुकमिन चिहुँकी के उठथि बदन पियरायल हे ॥१८॥
अठमे महीने जब, आयल बइसाख[31] नियरायल हे।
अहे फेरि फेरि देख मुँह अयनमा,[32] कइसन[33] मुँह पीयर हे ॥१९॥
नौमा[34] महीना जब जेठ के दुपहर हे।
लुहवा[35] चलहइ, धूरी[36] उठहइ से रुकमिन व्याकुल हे ॥२०॥
दसमहि मास जब आयल, असाढ़ नियरायल हे।
कउन विधि उतरब पार, चितय[37] रानी रुकमिन हे ॥२१॥

---

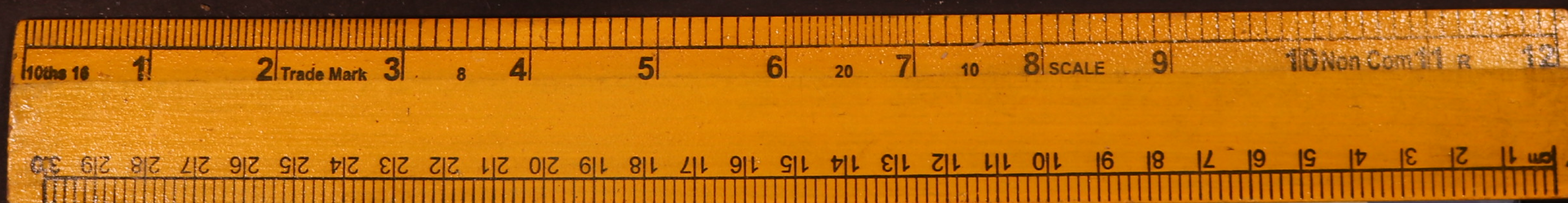
१५. सुन्न, शून्य, निर्जीव। १६. उलटी, वमन। १७. आना। १८. छूना। १९. चूल्हा। २०. रोग, बीमारी। २१. बाग। २२. मालूम पड़ा। २३. षट्रस, खट्टा। २४. त्याग दिया। २५. साज-शृंगार। २६. फेंक दिया। २७. मिचली आना। २८. विविध बाजों। २९. भौंरा, मधुप। ३०. भ्रमण करता है। ३१. वैशाख मास। ३२. ऐना, दर्पण। ३३. कैसा। ३४. नवाँ मास। ३५. लू। ३६. धूल। ३७. देखती हैं।

जलम लीहल परदुमन,[३८] महल उठे सोहर हे।
मोती, मुँगा, चानी, सोना, लुटवल, जे किछु मांगल हे।
सखी सभ मंगल गावहिं, सुध बुध बिसरहिं हे॥२२॥
जे इह मंगल गावहिं, गाइ, सुनावहिं हे।
दूध पूत बढ़े अहियात, पुतर फल पावहिं हे॥२३॥

३८. प्रद्युम्न।

सोहर

(तृतीय खंड)



[१]

[इस गीत में कदली के वन में 'घउर' (घौद) लगने और फूले हुए गुलाब के रंग के समान 'साहब' की पाग रँगाने की बात की गई है। यहाँ घौद बहुसंतति का प्रतीक है। घर-घर बँटवाने में हरदी-सोंठ का खर्च अधिक हो गया है, तब भी वह भाँट को घोड़ा, भाँटिन को लहँगा-पटोरा, चमार (डगरिन के पति) को दोनों कानों में सोना, डगरिन को पीली साड़ी, गोतियों को भात का भोज, गोतिनी को हलुआ, ननदोसी को हाथी और घोड़ा, किंतु ननद को टिपोर गदहा ही देगी। यहाँ ननद के लिए गदहा देने की जो बात है, वह वस्तुतः, ननद-भौजाई के शिष्ट हास्य और चुहलबाजी का एक दृष्टान्त है। गीतों में जहाँ ननद-भौजाई की ईर्ष्या और कलह का चित्रण है, वहीं शिष्ट हास्य भी यथास्थान अंकित है।]

कदली के बन में घउर[१] लगल हे, फूलल कोसुम[२] गुलाब।
ओही[३] रँग रँगबइ[४] साहेब के पगिया, पहिरथ[५] होरिला[६] के बाप ॥१॥
हरदी आउ सोंठ में बड़ खरच भेलइ,[७] हमरा दँहजल[८] सभ लोग ॥२॥
तोहुँ[९] त हो[१०]परभु दरोजवा[११] पर बइठऽ, हमहुँ बूझब[१२] सभ लोग।
हम धनी जाही[१३] दरोजवा पर बइठे, तोंही बूझऽ सभ लोग ॥३॥
भटवा[१४] के देबइ चढ़े के घोड़वा, भाटिन[१५] के लहँगा पटोर[१६]।
चमरा के देबइ दुनुँ[१७] कान सोनमा,[१८] डगरिन के पीयरी रँगाई ॥४॥
गोतिया के देबइन भात-भतखहिया,[१९] गोतनी के हलुआ घटाई[२०]।
ननदोसिया[२१] के देबइन चढ़े के हँथिया, चढ़े के घोड़वा,
ननदी के गदहा टिपोर[२२] ॥५॥

---

१. घौद (फलों का गुच्छा)। २. कुसुम, फूल। ३. उसी। ४. रँगूँगी। ५. पहने। ६. शिशु। ७. हो गया। ८. लथेड़ना, सताना, परेशान करना। ९. तुम। १०. सम्बोधन-पद। ११. दरवाजा। १२. समझूँ-बूझूँगी (स्वागत-सत्कार की जिम्मेवारी मेरे ऊपर)। १३. जाता हूँ। १४. भाट, स्तुति-पाठक, बन्दी। १५. भाट की पत्नी। १६. रेशम का लहँगा अथवा गोटा-पाटा चढ़ाया लहँगा। १७. दोनों। १८. कान में पहनने का सोने का गहना। १९. भोज-भात। २०. घोंटकर। २१. ननद का पति। २२. तड़क-भड़कवाला।

[२]

[गीत में इस बात की व्यंजना है कि जिस तरह पक्षी अंडे देने के पहले सींकों का घोंसला बनाते हैं और उसमें मेघ के पानी की बूँदें टोप-टोप गिरती हैं, उसी तरह यहाँ भी सींकों को चीर-चीरकर बँगला छाने और टोप-टोप करके गुलाब के चूने की बात कही गई है। गुलाब के बूँद-बूँद करके चूने से यहाँ तात्पर्य है—जीवन के आनन्द-रस के झरने से। उसी उल्लास के रंग में रँगी गई पगड़ी नवजात शिशु के पिता पहने हुए हैं। सींकों को चीर-चीरकर बँगला छवाना सुरुचि और कला-संपन्नता का तथा गुलाब के रस में पगड़ी रँगना रसिकता तथा वैभव-सम्पन्नता का द्योतक भी है। यहाँ पति को एक उलाहना भी है। स्त्री गर्भ से व्याकुल है, किन्तु उसका पति मन मारकर चुपचाप पलंग पर बैठा है, और बाद में कार्य से कचहरी चला जायगा। बेचारी प्रसूता को ही सभी आत्मीय जनों से निबटना पड़ेगा।]

सीकिया[1] चीरिए चीरिए[2] बँगला छवावल।
ठोपे ठोपे[3] चुअहे[4] गुलाब, से ठोपे ठोपे ॥१॥
सेहो[5] अरक[6] के पगड़ी रँगाबल।
पेन्हें जी होरिलवा के बाप, उनखा[7] के होरिला भयले ॥२॥
हम त एहो परभु, गरभ से बेयाकुल।
तूँ चढ़ि पलँगा बइठबऽ मन मार ॥३॥
तूँ त चलिए जयबऽ[8] राजा कचहरिआ[9]।
हम हीं बुझब, सभ लोग ॥४॥

●

[३]

[इस गीत में नींबू, अनार, नारंगी और आम के पेड़ रोपने का उल्लेख किया गया है। सभी पेड़ों में फल लग जाने पर, सभी फलों के स्वाद का अलग-अलग वर्णन किया गया है। स्त्री स्वयं खट्टा नींबू खाना पसन्द करेगी। पति को मीठे अनार, ननद को खटमिठी (मधुराम्ल) नारंगी तथा बच्चे को आम खाने को देगी। गर्भ के समय स्त्रियाँ प्रायः खट्टा खाना पसन्द करती हैं। ननद को मधुराम्ल नारंगी खाने को देगी, उसमें भी गहरा व्यंग्य ही है।]

---

१. सींक। २. चीर-चीरकर। ३. बूँद-बूँद। ४. चूता है। ५. उसी। ६. अर्क, रस। ७. उनको। ८. जाओगे। ९. कचहरी।

अँगना में रोपलूँ हम नेमुआँ[1], खिरकिया[2] अनार जी।
दरोजे[3] पर रोपलूँ नौरँगिया, बगीचवे में आम जी ॥१॥
अँगना में फूलल[4] नेमुआ, खिरकिया अनार जी।
दरोजे पर फरल[5] नौरँगिया, बगीचवे में आम जी ॥२॥
अँगना के नेमुआ हइ खट्टा, हइ मिट्ठा अनार जी।
खटमिठ लगे नौरँगिया, मीठे-मीठे आम जी ॥३॥
हम खायम[6] नेमुआ के निमकी, सइयाँ जी अनार जी।
ननदी के देबइ नौरँगिया, होरिलवा के आम जी ॥४॥

●

[४]

सासु मोर बेनिया डोलावहऽ[1], कमर भल जाँतहऽ[2] हे।
अहो लाल, देहरी[3] बइठल तू ननदिया बिरह बोलिय[4] बोलए हे ॥१॥
मोरी भौजी रखिहऽ[5] पलंगिया के लाज त बेटवा बिअइह[6] हे ॥२॥
तुहुं त[7] हहु[8] मोरा ननदी, अउरो सिर साहेब हे।
ननद, पियवा के आनि[9] बोलावह, पलंगिया डँसायब[10] हे ॥३॥
किया[11] तोर भउजो[12] हे नाउन, किया घरबारिन[13] हे।
मोर भउजो, किया तोरा बाप के चेरिया, कवुन[14] दावे[15] बोलह हे ॥४॥
नहीं मोर ननद तू नाउन, नहीं घरबारिन हे।
नहीं मोर बाप के चेरिया, बलम[16] दावे बोलली[17] हे।
ननद, तुहुं मोरा लहुरी[18] ननदिया सेहे[19] रे दावे बोलली हे ॥५॥

●

---

१. नींबू। २. खिड़की। ३. दरवाजा। ४. पुष्पित हुआ। ५. फला। ६. खाऊँगी।

१. डुलाती है। २. जाँतती है, दबाती है। ३. घर का द्वार। ४. बोली। ५. रखना। ६. ब्याना, जनना, प्रसव करना। ७. तो। ८. है। ९. लाओ। १०. बिछाऊँगी। ११. क्या। १२. भाभी। १३. घर का काम-काज संभालनेवाली। १४. किस, कौन। १५. दावे से, अधिकारवश। १६. पति। १७. बोली थी, जो कुछ कहा। १८. लाड़ली, रसिक। १९. उसी।

[५]

झपसी[१] में चढ़लूँ अटरिया, लाल हलना।
पर गेल[२] ननँदी नजरिया[३], लाल हलना ॥१॥
काहे[४] तोर भउजो हे मुँह पियरायल, लाल हलना।
काहे बदन झमँरायल[५] बतावहु[६], लाल हलना ॥२॥
तोहर[७] भइया मोरा सोंटा[८] बजौलन[९], लाल हलना।
ओही[१०] से मुँह मोर पीयर[११] हइ, लाल हलना ॥३॥
छोटकी ननदिया मोर बँरिनियाँ, लाल हलना।
मइया से लुतरी[१२] लगावल, लाल हलना ॥४॥
बहुआ जे भेलन गरभ से, रे मोर लाल हलना।
हाथी आउ[१३] घोड़ा लुटायम, रे मोर लाल हलना ॥५॥
जो होरिलवा लेतइ[१४] जलमिया, लाल हलना।
सोना आउ चानी लुटायम, मोर लाल हलना ॥६॥
लेलक[१५] होरिलवा जलमिया रे, मोर लाल हलना।
पेटी[१६] के कुंजी हेरायल[१७] रे मोर लाल हलना ॥७॥

●

[६]

जसोदा झुलावे गोपाल पलना हो, कन्हैया पलना।
चन्नन के उजे[१] पलना बनल हे, ओकर[२] में लगल रेसम फुदना[३] ॥१॥
पउअन[४] में सभ रतन जड़ल हे, हँस-हँस झुलावे मइया पलना।
नंद झुलावे, जसोदा झुलावे, आउर[५] झुलावे बिरिज[६] ललना ॥२॥

●

---

१. दुर्दिन, बूँदा-बाँदी के दिन। २. पड़ गई। ३. दृष्टि। ४. क्यों। ५. श्याम वर्ण होना, मुरझा जाना। ६. बतलाओ। ७. तुम्हारा। ८. डंडा। ९. मारा, (डंडा जमाया)। १०. उसी। ११. पीला। १२. चिनगारी (चुगली करना)। १३. और। १४. लेगा। १५. लिया। १६. बक्सा, सन्दूक। १७. भूल गया।

१. वह जो। २. उस। ३. रेशम का बना फुदना (छोटी गेंद के आकार का बना रेशम का फूलगेंदा)। ४. खाट के पउए। ५. और। ६. ब्रजनगरी।

[७]

कहऽ[१] त जच्चा रानी, डगरिन बोला देउँ।
चुप, चुप, मेरो राजा, काटब[२] नार[३] अपने ॥१॥
कहऽ त जच्चा रानी, लउँड़ी[४] बोला देउँ।
चुप, चुप, मेरो राजा, लीपब[५] सउर[६] अपने ॥२॥
कहऽ त जच्चा रानी, भउजी बोला देउँ।
चुप, चुप, मेरो राजा, पूजब[७] देओ[८] अपने ॥३॥
कहऽ त जच्चा रानी, बहिनी बोला देउँ।
चुप, चुप, मेरो राजा पारब काजर[९] अपने ॥४॥

●

[८]

कहऽ त धानी[१] अपन मइया[२] बोलावूँ।
न राजा हो, उनकर[३] आदर अब कउन[४] करतइन[५] ॥१॥
कहऽ त धानी अपन बहिनी बोलावूँ।
न राजा हो उनकर नखरा कउन सहतइन[६] ॥२॥

●

[९]

सलोनी धानी कहऽ त मइया बोलावूँ ॥१॥
नइ[१] मोरे राजा, तोर[२] मइया से काम मोरे नइ।
नइ मोरे राजा, तोर बहिनी से काम मोरे नइ।
मोरा त उठल[३] हे[४] पीर, ले आबऽ[५] धाई[६] के ॥२॥

●

---

१. कहो। २. काटूँगी। ३. नाल (बच्चे का नाल)। ४. दाई, सेविका। ५. लीपूँ-पोतूँगी। ६. सौरीघर, प्रसूति-गृह। ७. पूजूँगी। ८. देवता। ९. काजर पारना = काजल बनाना [छठी के दिन बच्चे की आँखों में आँजने के लिए पति की बहन (बच्चे की फुआ) के द्वारा काजल बनाने की विधि इस क्षेत्र में प्रचलित है।]

१. धनी, सौभाग्यवती। २. माँ। ३. उनका। ४. कौन। ५. करेगा। ६. सहन करेगा।

१. नहीं। २. तुम्हारे। ३. उठी। ४. है। ५. ले आओ। ६. धात्री, दाई।

[१०]

का[1] लेके[2] अयले[3] ननदिया, बोलाश्रो राजा बीरन[4] के।
पाँच के टिकवा[5], दस के टिकुलिया[6], लेके आयल ननदिया ॥१॥
हमर बहिनियाँ बहुत किछु लयलक[7]।
ओकरा[8] के पियरी पेन्हाउ[9], बोलावु राजा बीरन के ॥२॥

●

[११]

ननदिया माँगे फुलझड़ी हे, हम न देवइ[1]।
झलाही[2] माँगे मोती लड़ी हे, हम न देवइ ॥१॥
राजाजी, सोवे कि जागे हे, हम न देवइ।
अप्पन[3] बहिनी के बरजूँ[4] हे, हम न देवइ ॥२॥

●

[१२]

[इस गीत से भाभी-ननद का विरोध नहीं, बल्कि विनोद पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ है। भाभी प्रसव-पीड़ा से व्याकुल है और ननद हँसती है, ठिठोली करती है। वह (भाभी) अपनी सास से ननद को शीघ्र ससुराल भेज देने का आग्रह करती है और गालियों का प्रयोग करती है, जिससे विरोध नहीं, वरन् अत्यन्त ही मधुर सम्बन्ध सूचित होता है।]

हम तो दरदे[1] बेयाकुल, ननदिया के हाँसी[2] बरे[3]।
सासु तोर पइयाँ[4] परूँ[5], ननदिया बिदा करूँ ॥१॥
झलाही के बिदा करूँ, रूसिनिया[6] के बिदा करूँ।
छिनरिया[7] के बिदा करूँ, सतभतरी[8] के बिदा करूँ ॥२॥

●

---

१. क्या। २. लेकर। ३. आई। ४. भाई। ५. मँगटीका नामक आभूषण। ६. ललाट पर साटनेवाली टिकुली। ७. ले आई। ८. उसको। ९. पहनाओ।

१. दूँगी। २. हठीली अथवा झल्लानेवाली या जरलाही = जली हुई (एक प्रकार की गाली) ३. अपनी। ४. मना करो।

१. दर्द से। २. हँसी, ठिठोली। ३. आती है। ४. पाँव, पैर। ५. पड़ूँ। ६. रूठने-वाली। ७. छिनाल स्त्री। ८. सात भतार रखनेवाली, सप्तपतिका, सप्तभर्तृका।

[१३]

[गर्भ के लक्षण प्रकट होने पर सास बहू से कारण पूछती है कि यह कैसे हुआ? उस दिन तक सास समझती रही कि उसका बेटा बहू से सम्बन्ध नहीं रखता। कोई चारा न देखकर बहू निवेदन करती है कि मेरे पति भौंरे की तरह आधी रात को आते हैं, और पहर रात रहते ही खिड़की से (पीछे के दरवाजे से) लौट जाते हैं। इस पर जब सास को विश्वास नहीं हुआ, तब बहू ने जाल बुनवाया, अर्थात् षड्यन्त्र रचा। उसने उस भौंरे (पति) को जाल में फँसाकर अपनी सास को दिखला दिया तथा उसने अपनी सास से अनुरोध किया कि अब मुझ पर अविश्वास-कर लांछन न लगावें।]

बहुआ जे चलली नहाय[1], तो सासू निरेखइ[2] हे।
बहुआ, कवन मरद चित लायल[3], गरभ जनावल हे ॥१॥
सासू, आधी राति जा हइ, अउरो पहर[4] राति हे।
सासू, राती के आव हइ[5] भँवरवा[6], तो होइ के खिड़की से हे ॥२॥
बोलवहऽ[7] गाँव के पठेरिया[8], तो रेसम के जाल बुनऽ हे।
ओहि जाल बझयबइ[9] भँवरा, अछरँग[10] मोरा छुटि जइहें हे ॥३॥
मचियाहि[11] 'बैठल सासू बढ़यतिन'[12], चिन्ही लेहु[13] अपना बेटा के हे।
सासु, अछरँग मोरा छोरि देहु हे ॥४॥

●

[१४]

अठमी[1] के भेल[2] नंदलाल, बधावा ले के चलऽ[3]।
मेरो मन भेल नेहाल[4], बधावा ले के चलऽ ॥१॥
सोने के छूरी से नार[5] कटायल[6], रूपे[7] खपर[8] नेहायल।
कानों में कुंडल, गले में मोहर, केसों में झब्बूदार ॥२॥

●

---

१. स्नान करने। २. निरीक्षण करती है, निरखती है। ३. लाया। ४. प्रहर। ५. आता है। ६. भौंरा, भ्रमर। ७. बुलाओ। ८. एक जाति—पटहेरी या पटहारी, जो धागे में आभूषण गूँथता है। ९. फँसाऊँगी, बझाऊँगी। १०. न छूटनेवाला चिह्न, लांछन। ११. मचिया पर। १२. श्रेष्ठ, पूज्या। १३. पहचान लो।

१. अष्टमी तिथि। २. हुआ। ३. चलो (यह भोजपुरी प्रयोग है)। ४. निहाल, धन्य। ५. बच्चे का नाल। ६. काटा गया। ७. चाँदी। ८. खप्पर, एक प्रकार का बरतन।

रेसम के कुलिहा[९], साटन के टोपी, बीचे बीचे गोटा[१०] लगाय।
सेही पहिर के कन्हैयाजी बिहँसथ, गावथि[११] गोपी गोआल[१२] ॥३॥*

[१५]

सासु हमर रहे पक्का महल में, उनखा[१] देहु[२] बोलाइ।
हमरा भेलइ[३] नंदलाल, सुने ना कोइ रे॥१॥
गोतनी हमर रहे सीस सहल में, उनखा देहु बोलाइ।
हमरा भेलइ हे गोपाल, जगे ना कोइ रे॥२॥
ननद हमर हे महल अटारी में, उनखा देहु बोलाय।
हमरा के भेल हे होरिलवा[४] जगे ना कोइ, सुने ना कोइ रे॥३॥
सामी हमर हथ[५] मालिन के सँग, उनखा देहु बोलाय।
हमरा के भेल नंदलाल जगे न कोइ, सुने ना कोई रे॥४॥

●

[१६]

[ननद-भौजाई का वैर-विरोध प्रसिद्ध है। पुत्रोत्सव की खुशी में ननद भौजाई से बधावा माँगती है और कहती है कि तुम्हारे पास अमुक-अमुक चीजें हैं, तो क्यों न दोगी? इसपर बिगड़कर भौजाई जो उत्तर देती है, वही इस गीत में है।]

मेरो पेटारी[१] में टीका[२] रखल हे, ठिकरो[३] न देबो ननदिया हे।
मेरो दुआरी पर हाथी झुलतु हे, गदहो न देबो ननदिया हे॥१॥
मेरो कोठी[४] में चाउर[५] सइंतल[६] हे, मड़ुओ[७] न देबो ननदिया हे।
मेरो सतुक[८] में इयरी पिअरिया[९], गेन्दरो[१०] न देबो ननदिया हे॥२॥*

●

---

९. बच्चों की टोपी, कनटोप। १०. गोटा-पाटा। ११. गाते हैं। १२. गोपाल, ग्वाल-बाल।

*इस गीत में सोहर के सामान्य छन्दोविधान में कुछ परिवर्त्तन द्वारा नवीन लय-सृष्टि का प्रयास लक्षित है। यह एक प्रकार का 'झूमर' है।

१. उनको। २. दो। ३. हुआ। ४. शिशु। ५. हैं।

१. झाँपी, जो सींकी घास से बनाई जाती है। २. मँगटीका, माँग का एक आभूषण। ३. झिकड़ा या झिकटा (मिट्टी के बरतन का या खपड़े का टुकड़ा)। ४. अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना बखार। ५. चावल। ६. सँजोकर रखा हुआ। ७. मड़ुआ, एक प्रकार का कदन्न। ८. संदूक। ९. पीले रंग की नई-नई साड़ियाँ। १०. फटे-पुराने और गंदे कपड़े को सीकर बनाया गया बिछौना, गुदड़ी।

*यहाँ छन्द या लय का परिवर्तन हो गया है। यह भी एक प्रकार का 'झूमर' है। इसकी भाषा भी शुद्ध मगही नहीं है, बल्कि अपभ्रष्ट मगही है, जिस पर हिन्दी का ध्वन्यात्मक प्रभाव है।

[१७]

[यह गीत शिशु को खेलाने की लोरी है, जिसमें प्यार और आशीर्वाद है।]

दादा[१] जीए, दादी[२] जीए, आउर[३] जीए सभ लोग।
मोरे लाला के गोरे-गोरे गाल॥१॥
कुरता चूमूँ, टोपी चूमूँ, चूमूँ उनकर गाल।
मोरे लाला के भुअरे-भुअरे[४] बाल॥२॥

●

[१८]

[इस गीत में पुत्र-जन्म के बाद पुरस्कार के भागी सभी लोग कौसल्या से अपना-अपना नेग माँग रहे हैं, किन्तु सभी कौसल्या से कंगन ही लेना चाहते हैं।]

रामचंदर जलम लेलन[१] चइत[२] रामनमी के॥१॥
डगरिन जे नेग[३] माँगइ, नार के कटाइ[४]।
कोसिला के कँगन लेमो[५], चैता रामनमी के॥२॥
नाउन[६] जे नेग माँगे, पैर के रँगाइ।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥३॥
धोबिन जे नेग माँगे, फलिया[७] के धोबाइ[८]।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥४॥
फूआ[९] जे नेग माँगे आँख के अँजाइ[१०]।
कोसिला के कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥५॥
दाई जे नेग माँगे, सौरी के झोराइ[११]।
कोसिला कै कँगन लेमो, चैता रामनमी के॥६॥

●

---

१. पितामह। २. पितामही। ३. और। ४. भूरे-भूरे।

१. लिया। २. चैत मास। ३. शुभ अवसरों पर हकदार सगे-सम्बन्धियों अथवा हजाम आदि पौनियों को दिया जानेवाला उपहार। ४. काटने का। ५. लूँगा। ६. हजामिन। ७. लेवा-लुगुरी (सुजनी-साड़ी)। ८. धुलाई। ९. बुआ, फुआ। १०. आँजन करने का पुरस्कार। ११. प्रसूति-गृह की सफाई-धुलाई का पारिश्रमिक।

[१९]

भुइयाँ[१] गिरे नंदलाला, गोपाल लाल भुइयाँ गिरे ॥१॥
काहे के छूरी से नार कटयलूँ,[२] अब काहे के झारि नहलयलूँ[३] ।
सोने के छूरी से नार कटयलूँ, रूपे के झारी नहलयलूँ ॥२॥
काहे के पलना में लाल सुतयलूँ,[४] काहे के डोरी डोलयलूँ ।
सोने के पलना में लाल सुतयलूँ, रेसम के डोरी डोलयलूँ ॥३॥
काहे के कटोरा में दूध भरयलूँ, अब काहे के सितुए[५] पिलयलूँ[६] ।
सोने कटोरी में दूध भरयलूँ, अब रूपे के सितुए पिलयलूँ ॥४॥

●

[२०]

कहँवाँ[१] ही कृष्ण जी के जनम[२] भयेल,[३] कहँवाँ ही बजे हे बधावा,
जसोदा जी के बालक ।
मथुरा में कृष्ण के जनम भयेल, गोकुला ही बाजे हे बधावा ॥१॥
काहे के छूरी कृष्ण नार कटायब, काहे खपर असनान ।
सोने के छूरी कृष्ण नार कटायब, रूपे खपर असनान ॥२॥
नहाय धोआय कृष्ण पलंग सोवे, काली नागिनी सिर ठारा[४] ।
का तुम नागिन ठारा भई, हम हैं त्रिभुवन नाथ ॥३॥

●

[२१]

[इस गीत में दादी ने अपने पोते के जन्म लेने पर देवता-पितरों को जगाने को कहती है—उन्हें निमन्त्रण भिजवाती है। गीत के राम-लक्ष्मण उसके पोते के प्रतीक हैं। गीत में दादी की खुशी का मानों सोता फूट पड़ा है।]

जाय जगावहु[१] कवन[२] पितर लोग, भेलन पोता।
पोता भेल बंस-बाढ़न,[३] बहु[४] जुड़वावस[५] ॥१॥
देइ घालऽ[६] सोने के हँसुअवा, होरिला नार काटस[७] ॥२॥

---

१. जमीन पर। २. कटवाया। ३. नहलाया, स्नान कराया। ४. सुलाया। ५. सितुहा (बड़े आकारवाली एक प्रकार की सीपी)। ६. पिलाया।

१. किस जगह। २. मगही के पश्चिमी भाग में 'जनम' का प्रयोग मिलता है और पूर्वी भाग में 'जलम' का। ३. हुआ। ४. ठाढ़, खड़ा।

१. जगाओ। २. कौन। ३. वंश-वृद्धिकारक। ४. वधू। ५. हृदय को शीतल करनेवाला। ६. दे दो। ७. काटे।

भोरहिं राम जनम ले लें साँझहि लछुमन हो।
आधे राते भरथ भुआल, मोरे रे राम जनम ले ले हो ॥३॥
दियवा[८] खोजन गेलूँ,[९] दियवो न मिलल, दियरवो[१०] न मिलल।
ललना, हिरवा[११] के करबो[१२] अंजोर,[१३] मोरे राम जनमु ले लें ॥४॥
हँसुआ खोजन गेलूँ, हँसुओ न मिलल।
सोने छुरिये राम नार काटब, मोरे राम जनम ले लें ॥५॥

●

[२२]

[इस गीत में संबंधियों द्वारा जच्चा से अनुरोध किया जाता है कि पीपल पियो। पीपल पीने से जच्चे को अधिक मात्रा में दूध होता है, लेकिन स्वाद में वह बहुत तीखा होता है। जच्चा पीपल के तीखेपन के कारण, उसे पीना नहीं चाहती। इस गीत से प्रकट है कि पुत्र पैदा करने से स्त्री का सौभाग्य बढ़ गया है और सम्बन्धी उसका नाज-नखरा उठा रहे हैं।]

पिपरी[१] लेके सासु खड़ी, पिपरिया पीले बहू।
हो जयतो[२] होरिलवा ला[३] दूध, पिपरिया पीले बहू ॥१॥
पिपरी पीते मोरा होठ जरे, मोरा कंठ जरे हे।
हिरदय कमलवा[४] के फूल पिपरिया मैं न पिऊँ ॥२॥
पिपरी जेके भउजी खड़ी, चाची खड़ी।
पुरतो[५] होरिलवा के साध, पिपरिया पीले बहू ॥३॥
पिपरी पीते मोरा आँख जरे, नयना लोर[६] ढरे।
पिपरी न कंठ ओल्हाय[७], पिपरिया मैं न पिऊँ ॥४॥

●

---

८. दीपक। ९. गई। १०. दियट, दीपाधार। ११. हीरे (रत्न)। १२. करूँगी। १३. प्रकाश।

१. पिपरी = पिप्पली (संस्कृत)—पीपल-लता की जड़ या कलियाँ, जो प्रसिद्ध औषध है। बच्चा होने पर प्रसूता को पीपल का चूर्ण और मधु या गुड़, दूध में मिलाकर पिलाया जाता है, जिससे उसके स्तन में दूध बढ़ जाता है। २. जायगा। ३. के लिए। ४. कमल। ५. पूर्ण होगा। ६. अश्रु। ७. न कंठ ओल्हाय = गले के नीचे नहीं उतारी जाती है।

[२३]

जीरा रगरि रगरि[1] हम पिसलूँ।
जीरा पीले बहू, जीरा पीले धनी ॥१॥
पाग[2] के पेंच[3] में छानली हे।
जीरा पीले जरा, जीरा पीले जरा ॥२॥
होअत बलकवा के दूध।
जीरा पीले जचा, जीरा पीले जचा ॥३॥
हम बबा के अलरी दुलरी[4]।
हमरा न जीरा ओल्हाय[5], जीरा कइसे पीऊँ ॥४॥

●

[२४]

[इस गीत में उन औषधों का प्रयोग बतलाया गया है, जिन्हें रगड़कर स्त्रियाँ नवजात शिशु को घुट्टी देती हैं। इस घुट्टी से बच्चे के पेट के सारे विकार दूर हो जाते हैं।]

आवहुँ बूढ़ी रूढ़ी[1] बयठहुँ आय।
बबुआ के घोंटीं[2] देहु बतलाय ॥१॥
बचा[3] महाउर[4] आउर[5] जायफर[6]।
सोने के सितुहा[7] रूपे[8] के काम।
जसोमती घोंटी देल चुचकार ॥२॥

●

[२५]

[पुत्र-जन्म के बाद छठी-उत्सव के दिन पूजन के लिए ननद खड़ी है और भाभी से इनाम माँग रही है। कम नेग देखकर विना पूजा किये ही जब ननद चलने लगती है, तब भाभी एक लाख रुपया शीघ्र दे देती है।]

---

१. रगड़-रगड़कर। पगड़ी। ३. लपेट। ४. प्यारी-दुलारी। ५. बरदास्त नहीं होता।

१. बड़ी बूढ़ियाँ। २. घुट्टी, जन्म-घुट्टी। ३. वचा नामक औषध। ४. महावरी, कुलंजन। ५. और। ६. जायफल, जाफर। ७. बड़ी जाति की सीपी। ८. चांदी।

छठी-पूजन]

छठिआ पूजे ला[1] ननदी ठाढ़, अँगनमा,[2] हमरा के भउजो तूँ का देबऽ ना।
छठी पूजइया[3] ननदो साठ रुपइया, हमरो से ननदो झट ले लहु[4] ना ॥१॥
साठ रुपइया भउजी धर दऽ पउतिया,[5] लाख रुपइया त पुजइया लेबो ना ॥२॥
जब त ननदिया होरिला ले के चललन,[6] लाख रुपइया झट फेंकि देल ना ॥३॥

●

[२६]

[बच्चे की कुशल-कामना के लिए राई-नमक ओंइछने का उल्लेख इस गीत में किया गया है, जिससे किसी की आँख बच्चे को नहीं लगे। बच्चे की रक्षा के लिए यह एक प्रकार का टोटका है।]

न्योछन]

आज होरिलवा के देखन चलूँ।
आज होरिलवा के चूमन चलूँ ॥१॥
मोर होरिलवा हइ[1] पुनियाँ[2] के चनवा[3]।
अपन होरिलवा के खेलावँन[4] चलूँ ॥२॥
राइ[5] -नोन[6] लेके निहुँछन[7] चलूँ।
अपन-अपन नजरी[8] बचाके चलूँ ॥३॥

●

[२७]

काजर[1] के कजरौटी,[2] काजर भल[3] सोभेला[4] हे।
ललना, अँजबो[5] बबुआ के आँख, बेसरिया[6] हम लेहब हे ॥१॥

●

---

१. पूजने के लिए। २. आँगन में। ३. पूजा का इनाम। ४. ले लो। ५. कटोरे के आकार की बनी ढक्कनदार सीकी की डलिया। ६. चली।

१. है। २. पूर्णिमा। ३. चाँद। ४. खेलाने। ५. छोटी सरसों, जिसका उपयोग मसाले में होता है। ६. नमक। ७. निहुँछन = ओंइछन (निछावर करने) के लिए (एक प्रकार का उपचार, जिसमें किसी के कुशल-क्षेम या रक्षा के लिए राई-नोन या कोई अन्य द्रव्य उसके सिर या सभी अंगों के ऊपर से घुमाकर फेंक दिया जाता है या कहीं बाहर अथवा आग में डाल दिया जाता है, जिससे शिशु कुदृष्टि के दुष्परिणामों से सुरक्षित रहता है)। ८. नजर, दृष्टि।

१. काजल। २. काजल पारने—रखने की डंडीदार डिबिया। ३. अच्छा, सुन्दर। ४. शोभता है। ५. आँजूँगी। ६. नाक में पहनने का आभूषण।

[२८]

आँख-अँजाई]

राम के मथवा[१] लुटिरिया,[२] देखत नीक[३] लागय हे।
ललना, बरह्मा जे दिहले लुटुरिया, अधिको छबि लागय हे ॥१॥
राम के माथे तिलकवा, तिलक भल सोभय हे।
ललना, चन्नन दिहले बसिट्ठ,[४] अधिको छबि लागय हे ॥२॥
राम के अँखिया रतनारि, काजर भल सोभय हे।
ललना, काजर दिहले सुभदरा,[५] देखत नीक लागय हे,
अधिको छबि लागय हे ॥३॥
राम के पाँव पैजनियाँ, पाँव भल सोभय हे।
ललना, ठुमुकि चलले अँगनवाँ,[६] देखत नीक लागय हे ॥४॥

[२९]

[बच्चे की कुशल-कामना तथा उससे संबद्ध विभिन्न विधियों को संपन्न करने के लिए सास, गोतिनी और ननद के आने की बात प्रसूता करती है और कहती है कि उन लोगों की ओर से यदि किसी तरह की कोर-कसर हुई, तो नेग में दी गई सारी चीजें आँगन में ही उतार लूँगी। प्रसूता गाँव की एक अल्हड़ युवती लगती है, जो अपने सौभाग्य से इतराई हुई है।]

आँख-अँजाई]

अँगना में बतासा[१] लुटायम[२] हे, अँगना में ॥१॥
सासू जे ऐतन[३] देवोता[४] मनौतन[५]।
उनका के पीरी[६] पेन्हायम[७] हे, अँगना में ॥२॥
देवोतो मनावे में कसर-मसर[८] करतन[९]।
धीरे से पीरी उतार लेम हे, अँगना में ॥३॥

---

१. मस्तक में। २. बालों के लटदार गुच्छे। ३. अच्छा, भला, सुन्दर। ४. वसिष्ठ मुनि। ५. सुभद्रा देवी (कृष्ण की बहन और अर्जुन की स्त्री)। ६. आँगन में।

१. खालिस शक्कर की बनी एक खोखली मिठाई। २. लुटाऊँगी। ३. आयेंगी। ४. देवता। ५. मनौती करेंगी अथवा पूजेंगी। ६. पीली साड़ी। ७, पहनाऊँगी। ८, कोर-कसर, कमी। ९. करेंगी।

गोतिनी जे ऐतन पंथ[१०] रँधौतन[११]।
उनको के पीरी पेन्हायम हे, अँगना में ॥४॥
पंथ रँधावे में कसर-मसर करिहें।
धीरे से पियरी उतार लेम हे, अँगना में ॥५॥
ननद जे ऐतन आँख अँजौतन[१२]।
उनको के कँगना पेन्हायम हे, अँगना में ॥६॥
आँख अँजौनी में कसर-मसर करतन।
धीरे से कँगना उतार लेम हे, अँगना में ॥७॥*

[३०]

[इस गीत में, पुत्रोत्सव की खुशी में बहन अपने भाई से नेग में अनेक वस्तुओं की फरमाइश कर रही है।]

आँख-अँजाई]

केकरा[१] चौंर[२] जलम जदुनन्नन, केकरा वंस बढ़िये गेल माई।
नाना के चौंर जलम जदुनन्नन, दादा[३] के वंस बढ़िए गेलइ माई ॥१॥
घोड़वा चढ़ल आवे भइया, बहिनी धयलन[४] लगाम गे माई ॥२॥
छठी[५] पूजन भइया साठ रुपइया, आँख अँजन[६] सोने थारी[७] माँगब।
पान खवैया[८] पनबट्टा माँगब, पिरकी[९] बिगन[१०] उगलदान।
आपु[११] चढ़न भइया डोला[१२] माँगब, स्वामी चढ़न घोड़ा गे माई ॥३॥
जेकरा से[१३] अगे[१४] बहिनी एतना न होवे, से कइसे[१५] बहिनी बोलावे गे माई ॥४॥
हम जो जनती ननद, दीदी अइहें, नइहर जाके पभैती[१६] गे माई !
जब तोहें भउजी नइहर जयतऽ, नइहर आके नचइती गे माई ॥५॥

---

१०. पथ्य। ११. राँधेंगी, सिद्ध करेंगी। १२. आँख आँजेंगी।

* यह गीत मुस्लिम-परिवारों में भी प्रचलित है, लेकिन दोनों में भाषा के साथ रस्म-रिवाजों में अंतर है। (दे०—खंड ४, गीत-सं० ६)

१. किसके। २. ताल-तलैया या चत्वर (चौपाल)। ३. पितामह। ४. पकड़ लो। ५. षष्ठी-पूजन (दीवाल में सिंदूर-ऐपन से चित्र बनाकर देवता 'षष्ठी देवी' पूजने की विधि)। ६. आँख आँजना = आँखों में काजल लगाना। ७. थाली। ८. खानेवाला, उसका पति। ९. पान की पीक। १०. फेंकने के लिए। ११. अपने। १२. पालकी। १३. जिससे। १४. अरी (सम्बोधन)। १५. किस तरह। १६. बच्चे को जन्म देती।

[३१]

[कृष्ण-जन्म के बाद नन्दजी द्रव्यादि लुटा रहे हैं। नगर के लोग बधाई देने के लिए उमड़ रहे हैं। तेलिन तेल, तमोलिन पान और मालिन मालाओं को लेकर पहुँच रही है। उधर कृष्ण चन्दन के पालने पर सोये रेशम की डोर से झुलाये जा रहे हैं और सुर-मुनि गान कर रहे हैं तथा औढरदानी शंकर खुशी में नाच रहे हैं। इस गीत में अन्य काव्यों के समान यह निर्देश किया गया है कि जो इस सोहर को गाती या गाकर सुनाती हैं, उनका सौभाग्य जन्म-जन्मान्तर तक अचल रहता है और पुत्र प्राप्त होता है तथा उसके अन्न-धन आदि की वृद्धि होती है।]

बधैया]

किसुन जलम अब भेल, बधावा अब लेके चलऽ।
गावत मंगलचार[1], सभे मिलि लेके चलऽ ॥१॥
तेलिन लयलक[2] तेल, तमोलिन बीरवा[3]।
मालिन लौलक[4] गुथि[5] हार, जसोदा जी के आँगनऽ ॥२॥
धन-धन पंडित लोग, धने जोग रोहिनी[6]।
धन भादो के रात, कन्हइया जी के जलम भेलइ ॥३॥
धन जसोदा तोर भाग, कन्हइया तोरा[7] गोद खेले।
हरखहिं बरखहिं देओ[8], आनन्द घरे घर मचल।
लुटवत[9] अनधन धान, निहुछि[10] के निछावर[11] ॥४॥
कउची[12] के लगल पलना, कउची लागल हे डोर।
के रे[13] डोलाबे बउआ[14] पलना, के रे झूलनहार ॥५॥
अगर-चनन केरा पलना, रेसम लागल हे डोर।
जसोदा डोलाबथि[15] पलना, किसुन झूलनहार ॥६॥
सले सले[16] झूलहइ[17] पलना, मइया देखथि[18] रूप।
नंद लुटावथि[19] संपति, सभ भेलन नेहाल।
गावथि सुर मुनि कीरति, सिव नाचथ[20] दे ताल ॥७॥

---

१. मंगलोच्चार। २. ले आई। ३. पान के बीड़े (गिलौरी)। ४. ले आई (इस अर्थ में 'लैलक' और 'लौलक' दोनों रूप मिलते हैं। ५. गूँथकर। ६. रोहिणी नक्षत्र। ७. तुम्हारे। ८. देवता लोग। ९. लुटाते हैं। १०. बलैया लेकर। ११. न्यासावर्त्त, निछावर की जानेवाली वस्तु; नेग (किसी वस्तु को, किसी के सिर या शरीर के ऊपर से घुमाकर दान दे देना या कहीं रख देना और छोड़ देना)। १२. किस चीज। १३. कौन। १४. बबुआ (बच्चा)। १५. डुलाती हैं। १६. धीरे-धीरे। १७. झूलता है। १८. देखती है। १९. लुटाते हैं। २०. नाचते हैं।

जे इह सोहर गावथि, गाइ[21] देथिन[22] सुनाय।
अनधन बाढ़थि लछमी, बाढ़े[23] कुल, अहियात[24] ॥८॥
बाँझ के मिलइ पुतर फल, भरइ[25] मरछि[26] के गोद।
जलम जलम फल पावहिं, पूरइ सभ मनकाम ॥९॥

●

[३२]

[कृष्ण-जन्म की खुशी में नंद के घर में मनाये जानेवाले आनन्दोत्सव तथा जन्मोत्सव-सम्बन्धी विभिन्न विधियों के सम्पन्न करने का उल्लेख इस गीत में किया गया है।]

बधैया]

गोखुला में बाजले बधइया[1] तो अउरो बधइया बाजे हे।
ललना, जलमल सीरी[2] नंदलाल, नंद घर सोहर हे ॥१॥
सोने के हँसुआ बनायम[3], गोपाल नार[4] छीलम[5] हे।
ललना, सोने के चौकिया[6] बनायम, किसुन नेहलायम[7] हे ॥२॥
पीयरे[8] बस्तर[9] अंग पोछम, पीतामर पहेरायम[10] हे।
पइरवा[11] में पइजनी पहेरायम, गोपाल के नेहलायम हे ॥३॥

●

[३३]

बधैया]

भइया के घर में भतीजा जलम भेल, हम तो बधइया[1] माँगे अयली[2] ॥१॥
अगिला[3] हर के बरदा[4] माँगही, पिछला हर हरवाहा।
हो भइया, हम तो बधइया माँगे अयली ॥२॥

---

२१. गाकर। २२. देती हैं। २३. बढ़ेगा। २४. अविधवात्व, सौभाग्य। २५. भरती है। २६. मृतवत्सा, वह स्त्री, जिसकी संतान पैदा होते ही मर जाती है।

१. खुशी के समय बजनेवाली नौबत, शहनाई। २. श्री। ३. बनाऊँगी। ४. सद्योजात शिशु का नाल। ५. छीलूँगी (काटूँगी)। ६. चौकी। ७. स्नान कराऊँगी। ८. पीले। ९. वस्त्र। १०. पहनाऊँगी। ११. पैर, चरण।

१. 'बधइया' का अर्थ है—खुशी का नेग। २. आई। ३. आगे-आगे चलनेवाला। ४. बलीवर्द, बैल।

दूध-दही ला[५] सोरही[६] मांगही,
घीया[७] लागी भँइसिया[८], हो भइया, हम तो बधइया मांगे अयली ॥३॥
बाहर[९] के हम नोकर चाहही, घरवा बहारत के दाइ, हो भइया।
गोड़ धोमन[१०] के चेरिया चाहही, पैर दामन[११] के लौंड़िया[१२], हो भइया ॥४॥
तीरथ बरत के डोली चाहही, सामी[१३] चढ़न के हाथी, हो भइया।
हम तो बधइया मांगे अइली, हो भइया ।५॥

●

[३४]

बधैया]

दादा साहेब के घर पोता भयेल हे।
पोता निछाउर[१] कछु देवऽ[२] कि न ?।
हमसे असीस[३] कछु लेबऽ[४] कि न ? ॥१॥
देबो[५] मैं देबो पोती अन धन सोनवाँ।
हमरा हीं[६] नाचबऽ आउ[७] गयबऽ कि न ? ॥२॥
गयबो मैं गयबो दादा, दिनमा से रतिआ[८]।
अपन खजाना लुटयबऽ कि न ? ॥३॥
जुग जुग जिओ दादा तोहर होरिलवा[९]।
हमर ससुर घर पेठयबऽ कि न ? ॥४॥*

●

[३५]

बधैया]

साड़ी न लहँगा लहरदार लेबो भउजो[१] हे।
चोली न अँगिया बूटेदार लेबो भउजो हे ॥१॥

---

५. निमित्त, वास्ते। ६. 'सुरभि' नामक कामधेनु, जिसका अपभ्रंश 'सोरही' है। ७. घृत। ८. भैंस। ९. जनानखाने से बाहर—द्वार पर काम करने के लिए। १०. धोने के लिए। ११. पैर दबाने। १२. दासी। १३. स्वामी, पति।

१. न्योछावर (नेग)। २. दोगे। ३. आशीर्वाद। ४. लोगे। ५. दूँगा। ६. हमरा हीं = हमारे यहाँ। ७. और। ७. दिनमा से रतिआ = दिन से रात तक। ९. नवजात शिशु।

*अन्तिम पंक्ति में होरिलवा के स्थान पर आनेवाला सर्वनाम (उसे) छिपा हुआ है।

१. भाभी।

कँगना न लेबो, पहुँची[२] न लेबो।
बाला[३] तो लेबो चमकदार, सुनु भउजो हे ॥२॥
रुपया न लेबो, अठन्नी न लेबो।
गिन्नी तो लेबो हम हजार, सुनु भउजो हे ॥३॥
चानी न लेबो, सोना न लेबो।
हम लेबो गिनि गिनि[४] लाल[५], सुनु भउजो हे ॥४॥
जुग जुग जीओ भउजो, तोहरो होरिलवा।
जुग-जुग बढ़ो अहियात[६], सुनु भउजो हे ॥५॥

●

[३६]

बधैया]

जसोदा तोहर भाग बड़ा लहबर[१] नंदरानी।
देवोकी[२], तोहर भाग बड़ा लहबर हे रानी ॥१॥
काहाँ जलमलन[३] हे जदुनन्नन, काहाँ बाजत हे बधावा नंदरानी।
देवोकी घर में जलमलन जदुनन्नन, गोकुला में बाजत बधावा नंदरानी ॥२॥
काहे के छूरी से नार छिलायल[४], काहे के खपर[५] नेहलायल नंदरानी।
सोने के छूरी से नार छिलायल, रूपे के खपर नेहलायल नंदरानी ॥३॥
काहे के उजे[६] अँगिया[७] टोपिया, केकरा के तू पहिरयबऽ नंदरानी।
रेसमी के उजे अँगिया टोपिया, अपन लाला के पहिरायब नंदरानी ॥४॥
केरे[८] लुटवथि अन, धन, लछमी, केरे लुटावथि मोती नंदरानी।
नंद लुटावथि अन, धन, लछमी, जसोदा लुटावथि मोती नंदरानी ॥५॥
अइसन[९] जलम लिहल जदुनन्नन, घर बाजे बधावा नंदरानी ॥६॥

●

---

२. कलाई में पहना जानेवाला आभूषण। ३. वलय (इसे भी कलाई में ही पहनते हैं)। ४. गिन-गिनकर। ५. एक रत्न। ६. सोहाग (अविधवात्व)।

१. लहबर = लहलहाता हुआ; हरा-भरा। २. देवकी, वसुदेव की पत्नी। ३. जन्म लिया। ४. छीला गया, काटा गया। ५. झारी सदृश बरतन, खप्पर। ६. वह जो। ७. चुस्त कुरता। ८. कौन। ९. ऐसा।

[३७]

[पुत्रोत्पत्ति के हर्षोल्लास में द्रव्यादि लुटाने का उल्लेख इस गीत में किया गया है। मोबारख (मुबारक) शब्द का प्रयोग भी इसमें आया है, जो इसका प्रमाण है कि गाँवों में संस्कारादि में जाति तथा संस्कारगत विशेष भेद नहीं माना जाता। साथ ही, यही गीत मुस्लिम-परिवारों में भी प्रचलित है।]

बधैया]

आज अनंद भेलइ[1] हमर नगरी।
मोर दादा लुटावे अनधन सोना, मोर दादी लुटावे मोती के लरी[2] ॥१॥
बाबुजी लुटावथ[3] कोठी-अटारी, मइया लुटावे फूल के झरी।
मोबारख[4] होय होरिला तोहरो गली ॥२॥

●

[३८]

[अन्य गीतों में छठी पूजने का विधान है। इसमें बरही पूजने की चर्चा है। पुत्रोत्सव के बाद छठे दिन या बारहवें दिन एक विधि होती है, जिसमें विघ्न-बाधा की शान्ति के लिए पूजा होती है। उसी बारहवें दिनवाली पूजा की चर्चा इस गीत में है।

शिशु की माँ (प्रसूता) बरही के दिन अपने भाई को आया न देखकर अपनी सास से कहती है कि मैं बरही की पूजा नहीं करूँगी। छठी या बरही को प्रसूता का भाई बच्चे और अपनी बहन के लिए घर से सुन्दर-सुन्दर कपड़े और मिष्टान्न लाता है। किन्तु, वह हर क्षण अपने भाई की बाट जोहती है और चेरी को बाहर जाकर देखने को कहती है। अन्त में उस का भाई आता है। प्रसूता अपनी सास से राय लेकर भाई के स्वागत-सत्कार की पूरी तैयारी करती है। उसकी ननद मजाक करती है कि भाभी तुम्हारा भाई घर का कूड़ा-कर्कट लेकर आया है और देखने में बदसूरत है। ननद का मजाक जैसा भाभी से चलता है, वैसा उसके भाई से भी।]

हम नहीं पूजबइ[1] बरहिया,[2] भइया नहीं अयलन हे ॥१॥
अंगना बहारइत चेरिया त सुनहऽ बचन मोरा हे।
चेरिया, देखि आवऽ हमरो बीरन भइया, कहुँ चलि आवत हे ॥२॥
दूरहिं घोड़ा हिंहिआयल,[3] पोखरिया[4] घहरायल[5] हे।
गली गली इतर[6] धमकी गेल,[7] भइया मोरा आयल हे ॥३॥

---

१. हुआ। २. लड़ी। ३. लुटाते हैं। ४. मुबारक (बधाई के अर्थ में प्रयुक्त), बरकत का हेतु, सौभाग्यशाली।

१. पूजूंगी। २. बरही, पुत्रजन्म के बाद बारहवें दिन होनेवाली पूजा। ३. हिनहिनाया। ४. पुष्करिणी। ५. प्रतिध्वनित हो उठी। ६. इत्र। ७, सुगन्ध से भर गई।

मचिया बइठल तोहें सासुजी, सुनहऽ बचन मोरा हे।
अब हम पूजबो बरहिया, भइया मोर आयल हे ॥४॥
सासुजी, कहँमाहिं[8] धरियई[9] दउरिया,[10] कहाँ रे ई[11] सोठाउर[12] हे।
सासुजी, कहाँ बइठइअइ[13] बीरन भइया, देखतो सोहावन हे ॥५॥
कोठी[14] काँधे रखिहऽ दउरिया, कोठिल[15] बीच सोठाउर हे।
बहुआ, अंचरे[16] बइठइहऽ बीरन भइया, देखत सोहावन हे ॥६॥
ओहरी[17] बइठल दुलरइतिन ननदो, मुँह चमकावल हे।
जे कछु कोठिया के झारन,[18] अंगना के बाढ़न[19] हे।
भउजी सेहे लेके अयलन बीरन भइया, देखते गिलटावन[20] हे ॥७॥

●

---

८. किस जगह। ९. धरूँ, रक्खूँ। १०. दौरी। ११. यह। १२. सोंठ, चउरठ, गुड़ और विविध ओषधियों का बना लड्डू। १३. बैठाऊँ। १४. बखार, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना हुआ गोलाकार ढक्कनदार घेरा। १५. कोठरी, छोटा कमरा। १६. आँचल पर ही। १७. ओलती, ओलती गिरने की जगह, देहरी। १८. झाड़न। १९. बुहारन, कूड़ा-कर्कट। २०, जिसकी सूरत पर गिलट का चिह्न हो, बदसूरत।

मुस्लिम-संस्कार-गीत

[जन्मोत्सव-सम्बन्धी]

(चतुर्थ खण्ड)



[१]

[यह गीत मुस्लिम-परिवार से आया है। इसकी भाषा भ्रष्ट हिन्दी है, किन्तु शब्द मगही के हैं और मगही क्षेत्र (पटना सिटी) के परिवार के बीच प्रचलित है। यहाँ दोहद-अवस्था में जच्चा की कामना का चित्रण है, जिसमें वह गरी, छुहारा न चाहकर बादाम खाना चाहती है। नींबू, अनार आदि फल भी पसन्द नहीं है। ये सभी प्रतीक हिन्दू-घरानों में प्रचलित हैं। ये सभी फल गर्भिणी की इच्छा और स्वास्थ्य के अनुकूल हैं। इनके अतिरिक्त इस गीत में 'वृन्दावन जाना' और 'नन्दलाल को देखना' ये दोनों प्रतीक हिन्दू-परिवारों के प्रभाव को प्रकट करते हैं। संस्कारगत भावनाओं की यह समता दोनों सम्प्रदायों की निकटता को प्रकट करती है। इसी प्रकार की समता विवाह-गीतों में भी है।

राजा बोया[1] गरिया[2] छोहरवा रे।
बदमवाँ मोरा मन भावे रे॥
अँगना में लेमु[3] बोया, दुअरे[4] अनार बोया जी, राजा बोया गरिया॥१॥
अँगने में लेमु फला, दुअरे अनार फला जी।
राजा फला है छोहरवा, बदमवाँ, बदमवाँ मोरा मन भावे जी॥२॥
अँगने का लेमु पका,[5] दुअरे अनार पका।
पका है गरिया, छोहरवा, बदमवाँ, बदमवाँ मोरा मन भावे जी॥३॥
अँगने का लेमुआ तोड़ा, दुअरे अनार तोड़ा।
राजा तोड़ा है गरिया, छोहरवा, बदमवाँ, बदमवाँ मोरा मन भावे जी॥४॥
गैलूँ[6] मैं बिंदाबने[7], हुँएँ[8] हैं नंदलाल।
होरिलवा मोरा मन भावे रे॥५॥

[२]

मेरे तो पीर उठे ननदी हँसत फिरे॥१॥
बाहर बैठे ससुर हमारे, ससुर तोरे पइयाँ पड़ूँ।
ननदी बिदा करो, झलाही[1] बिदा करो॥२॥

---

१. वपन किया, बीज गाड़ा। २. गरी, नारियल। ३. नींबू। ४. द्वार पर। ५. पक गया। ६. गई। ७. वृन्दावन नामक जंगल। ८. वहीं।

१. झलाही = झगड़ालू।

बाहरे बैठे भैंसुर[२] हमारे, भैंसुर तोरे पइयाँ पड़ूँ।
ननदी बिदा करो, झलाही बिदा करो ॥३॥
बाहर बैठे सइयाँ हमारे, सइयाँ तोरे पइयाँ पड़ूँ।
ननदी बिदा करो, झलाही बिदा करो ॥४॥
कंगन सोनार घरे, चुनरी रँगरेज घरे।
गंगा जमुना बाढ़ आई, कैसे बिदा करूँ ॥५॥
मेरे से कंगन ले लो, मेरे से चुंदरी ले लो।
नइया चढ़ा ननदी बिदा करो ॥६॥

●

[३]

[इस गीत में प्रसव-वेदना से व्याकुल पत्नी अपने पति से, अपनी माँ-बहन को, बुला देने का अनुरोध करती है। अपने लिए संचित वस्त्राभूषण और मेवा आदि फलों को भी उन लोगों को देने को कहती है कि वे लोग खुश होकर मेरी सेवा करेंगी। यहाँ उसने अपने पति के लिए 'निरमोही' शब्द का प्रयोग किया है। वह दर्द का मुख्य कारण अपने पति को ही समझती है। साथ ही गाढ़े समय में सहायता पहुँचाने-वाले को अपनी संचित प्रिय-से-प्रिय वस्तु देने का अनुरोध करना भी उसके लिए स्वाभाविक है।]

निरमोहिया लाल बड़ी दरदे उठी।
सँवरिया लाल बड़ी दरदे उठी ॥१॥
मेरे पेटारे में कपड़ा बहुत सइयाँ।
माय बहन को बोला सइयाँ।
निरमोहिया लाल बड़ी दरदे उठी ॥२॥
मेरे पेटारे में गहने बहुत सइयाँ।
माय बहन को बोला सइयाँ।
माय बहन को पेन्हा[१] सइयाँ।
निरमोहिया लाल बड़ी दरदे उठी ॥३॥
मेरे पेटारे में मेवा बहुत सइयाँ।
माय बहन को खिला सइयाँ।
माय बहन को बोला सइयाँ।
निरमोहिया लाल बड़े दरदे उठी ॥४॥

●

---

२. भैंसुर = पति का बड़ा भाई।
१. पहना दो।

[४]

[इस गीत में ननद-भाभी में बधावे के इनाम के लिए वाद-विवाद का वर्णन है। ननद भाभी से, उसके पुत्र के बधावे में, बेसर लेने का हठ करती है और उसके लिए शपथ भी खाती है। भाभी भी शपथ खाकर बेसर नहीं देने को कहती है। ननद के हठ करने पर भाभी किवाड़ बंद कर देने तथा अंत में मायके चले जाने का संकल्प भी ननद से प्रकट करती है। ननद भी दीवार फाँदकर भाभी के नजदीक पहुँचने और अंत में मायके तक हरकारा भेजने को तैयार है। दोनों के हठ में विरोध नहीं, वरन् एक-दूसरे के प्रति प्यार ही झलकता है।]

भइया किरिया[१] बेसरिया हम लेबो।
भइया किरिया बेसरिया हम ना देबो ॥१॥
जब तुम ननदो, बधावा लेने अइहो।
भइया किरिया, हम भी किवाड़ हनी देबो[२] ॥२॥
जल तुम भाभी, किवाड़ हनी देबो[३]।
भइया किरिया, हम भी दीवार फाँदी ऐबो[४] ॥३॥
जब तुम ननदो, दीवार फाँदी अइहो।
भइया किरिया, हमहु नइहर चलि जैबो ॥४॥
जब तुम भाभी, नैहर चलि जइहो।
भइया किरिया, हम भी हलकारा[५] भेज देबो ॥५॥

●

[५]

[पति बड़ा भोला है। उसकी पत्नी को बच्चा हुआ है। वह दाई को देखकर, पीली साड़ी देखकर तथा बच्चे के रोने की आवाज सुनकर पत्नी से सबका कारण पूछता है, लेकिन पत्नी अपने भोले पति से बहाना करके दूसरा ही कारण बताती जाती है। पति को अंत तक धोखे में ही रखती है और उसके भोलेपन पर भीतर-ही-भीतर खुश भी हो रही है।]

हाँ, हाँ, हाँ मेरा भोला है राजा।
कमरे में दाई काहेको[१] आई,
राजा जी, मेरी नाफे[२] टली[३] थी ॥१॥

---

१. शपथ। २. किवाड़ हनी = (किवाड़ हनना) = किवाड़ बन्दकर किल्ली ठोक देना।
३. दोगी। ४. आऊँगी। ५. हरकारा, संदेशवाहक।
१. किसलिए। २. नस। ३. खिसक गई।

हाँ, हाँ, हाँ मेरा भोला है राजा।
हाँ, हाँ, हाँ मेरा सुरमा[४] सिपाही।
रानी पीली साड़ी काहे को पेन्हे थी।
राजा जी, मैं तो न्योते गई थी ॥२॥
राजा जी, मेरा भोला है राजा।
रानी कमरे में कौन रोया था।
राजा जी, दो ये बिल्ले[५] लड़े थे।
राजा जी, मेरा भोला है राजा।
राजा जी, मेरा सीधा है राजा ॥३॥

●

[६]

[इस गीत में जच्चा विभिन्न विधि-व्यवहारों को सम्पन्न करने की खुशी में सास, गोतिनी और ननद को चुनरी, तिलरी और कंगन देने का संकल्प करती है, लेकिन वह यह भी कह देती है कि अगर ये लोग इन विधियों के सम्पन्न करने में किसी प्रकार की कमी या इधर-उधर करेंगी, तो मैं इन लोगों को दी हुई चीजें वहीं आँगन में ही उतरवा लूँगी। इसमें एक तरफ जच्चा की दानशीलता का उल्लेख है, तो दूसरी ओर उसकी अल्हड़ता का।

आँगन में बतासे लुटा दूँगी, आँगन में।
सासु जी अइहें, चरुआ[१] चढ़इहें[२]।
भला उनको चुनरिया पेन्हा दूँगी, आँगन में ॥१॥
चरुआ चढ़ावे में कसर-मसर करिहें।
भला उनसे चुनरिया छिना लूँगी, आँगन में ॥२॥
गोतिनी जे अइहें, पलँग बिछइहें।
भला उनको तिलरिया[३] पेन्हा दूँगी, आँगन में ॥३॥
पलँगा बिछावे में कसर-मसर करिहें।
भला उनसे तिलरिया छिना लूँगी, आँगन में ॥४॥

---

४. शूर-वीर। ५. बिडाल।

१. चरुआ = चौड़े मुँह का मिट्टी का पात्र, जिसमें जच्चा के स्नान के लिए पानी गरम किया जाता है। २. (चूल्हे पर) चढ़ायेंगी। ३. गले में पहनने का एक आभूषण।

ननद जो अइहें, आँख लगइहें[४]।
भला उनको कँगनवाँ पेन्हा दूँगी, आँगन में ॥५॥
आँख लगावे में कसर-मसर करिहें।
भला उनसे कँगनवाँ छिना लूँगी, आँगन में ॥६॥*

●

[७]

लूँगी भावज[१] मैं वही कँगना।
मुझे कँगने को शौक मेरी भाभी ॥१॥
माँगों[२] का टीका ले री ननदिया, ले री झलाही[३]।
एक नहीं दूँगी यही कँगना ॥२॥
लूँगी मैं भावज वही कँगना।
मुझे कँगने की शौक मेरी भाभी, लूँगी मैं वही कँगना ॥३॥
नाको का बेसर ले री ननदिया, ले री झलाही।
एक नहीं दूँगी, यही कँगना ॥४॥

●

[८]

इस रे होरिलवे की दादी बड़ैतिन[१], दान बाँटे रे।
मेरा छोटा-सा होरिला, पलना झूले रे।
पलना झूले रे, झुनझुना खेले रे ॥१॥
इस रे होरिलवे की नानी बड़ैतिन, दान बाँटे रे।
मेरा छोटा-सा होरिला, पलना झूले रे।
पलना झूले रे, झुनझुना खेले रे ॥२॥
इस रे होरिलवे की अम्माँ बड़ैतिन, दान बाँटे रे।
मेरा छोटा-सा होरिलवा, पलना झूले रे ॥३॥

●

---

४. आँख लगाना = आँखें रँजना (छठी के दिन नवजात शिशु की आँखों में काजल लगाना)।

*यह गीत हिन्दू-परिवारों में भी प्रचलित है, लेकिन गीतों की भाषा के साथ रस्म-रिवाजों में अन्तर है (दे० सोहर, खण्ड तृतीय, गीत-सं० २९)।

१. भाभी। २. माँग, सीमन्त। ३. झगड़ालू।

१. बड़ैतिन = श्रेष्ठा।



[६]

[बच्चे के जन्म की खुशी में भाभी ननद को वस्त्राभूषण देना चाहती है, जिसे उसका प्यारा ननदोई भी देखेगा। लेकिन, ननद भाभी के आग्रह को टालती जाती है और उन चीजों को लेने से इनकार कर देती है। अंत में, बहुत अनुरोध करने पर वह कहती है—'ये सब चीजें तो मेरे पास बहुत हैं, इन चीजों की कमी नहीं।' ननद का यह कहना—'शाद रहे मेरा नन्हा होरिलवा, यही बहुत है जी।'—कितना उपयुक्त और प्रशंसनीय है।]

अच्छी बूबू[१] टीका[२] लेंगी, अच्छी बूबू मोतिया[३] लेंगी जी।
मेरे आरजु का है ननदोइया,[४] ओभी जरा देखेगा जी ॥१॥
नहीं भाभी टीका लूँगी, नहीं भाभी मोतिया लूँगी जी।
भाभी, ऐसे ऐसे टीके बहुत हैं, संदूकचा[५] मेरा भरा होगा जी ॥२॥
अच्छी बूबू बेसर लेंगी, अच्छी बूबू चुनिया[६] लेंगी जी।
मेरे आरजू का है ननदोइया, ओभी जरा देखेगा जी ॥३॥
अरे नहीं भाभी बेसर लूँगी, नहीं भाभी, चुनिया लूँगी।
ऐसे ऐसे बेसर बहुत हैं जी, संदूकचा मेरा भरा होगा जी ॥४॥
अच्छी बूबू कँगना लेंगी, अच्छी बीबी कड़वा[७] लेंगी।
मेरे आरजू का है ननदोइया, ओभी जरा देखेगा जी ॥५॥
नहीं भाभी कँगना लूँगी, नहीं भाभी कड़वा लूँगी।
शाद[८] रहे मेरा नन्हा होरिलवा, यही बहुत है जी ॥६॥

●

[१०]

नहवावन]

नारंगी[१] दामन वाली जच्चा, गोद में बच्चा ले।
गोद में बच्चा ले री जच्चा, गोद में बच्चा ले ॥१॥
माँग जच्चा के टीका सोभे, मोतिया लहरा ले रे जच्चा, मोतिया लहरा ले।
हजरिया[२] बैठा पास में, हँस हँस के बीड़ा ले ॥२॥

---

१. बूबू = ननद के लिए प्यार भरा संबोधन। २. ललाट का आभूषण। ३. मोती की लड़ी। ४. ननद का पति। ६. काठ का बड़ा बक्सा। ६. चुनिया = [< चुन्नी < चूर्ण] बहुत छोटा नग। ७. कड़ा (हाथ में पहनने का एक आभूषण)। ८. प्रसन्न, भरा-पूरा।

१. नारंगी रंग। २. हजारी दुलहा।

नाक जच्चा के बेसर सोभे, चुनिया लहरा ले।
हाँ जी, चुनिया लहरा ले, चुनिया लहरा ले।
हजरिया बैठा पास में, केसरिया[३] बैठा पास में, हँस हँस के बीड़ा ले ॥३॥
कान जच्चा के बाली सोभे, झुमका लहरा ले, हाँ जी, झुमका लहरा ले।
केसरिया बैठा पास में, हँस हँस के बीड़ा ले ॥४॥
हाथ जच्चा के कँगना सोभे, चुड़िया लहरा ले, हाँ जी, चुड़िया लहरा ले।
हजरिया बैठा पास में, केसरिया बैठा पास में, हँस हँस के बीड़ा ले ॥५॥

●

---

३. केसरिया वस्त्र पहननेवाला।

मुण्डन



[१]

[मुण्डन आदि शुभ संस्कारों के अवसर पर अपने कुटुम्बियों के सहयोग और उपस्थिति से बढ़नेवाली मंडप की शोभा का उल्लेख इस गीत में किया गया है। साथ ही सम्बन्धियों के स्वागत-सत्कार तथा प्रबोधन के लिए उपयुक्त सामग्री का भी इसमें वर्णन किया गया है।]

गोचर[1] हे नगर के बराम्हन, पोथिया बिचारहु हे।
आजु कन्हइया जी के मूँड़न,[2] नेओता[3] पेठाएब[4] हे॥१॥
अरिजनि[5] नेओतब, बरिजनि[6] नेओतब,[7] अउरो[8] देआदिन[9] लोग हे।
नेओतब कुल परिवार, कन्हइयाजी के मूँड़न हे॥२॥
काहे लागि रूसल[10] गोतिया[11] लोग, अउरो गोतिनी[12] लोग हे।
काहे लागि रूसले ननदिया, मँड़उआ[13] नहीं सोभले हे॥३॥
का[14] ले[15] मनएबो[16] गोतिया, का ले गोतिनी लोग हे।
अहे, का ले मनएबो ननदिया, मँड़उआ मोर सोभत हे॥४॥
बीरा[17] ले मनएबो गोतिया, सेनुर[18] ले गोतिनी लोग हे।
अहे, बेसरि ले मनएबो ननदिया, मँड़उआ मोर सोभत हे॥५॥

---

१. गोचर = प्रत्येक ग्रह अपनी-अपनी गति के अनुसार चलते हुए निश्चित काल तक किसी-न-किसी राशि का भोग करता है। उसकी इसी राशिगत चाल को गोचर कहते हैं। जन्मकाल में चंद्र नक्षत्र के अनुसार जिस मनुष्य की जो राशि होगी, उसके अनुसार चलते हुए सूर्यादि नक्षत्र, किसी विशेष राशि, अर्थात् कुण्डली के प्रथम, द्वितीयादि स्थानों में जाने पर, जो शुभाशुभ फल देते हैं, उसी को गोचर भोग-फल कहते हैं। २. मुंडन-संस्कार। ३. न्योता, निमंत्रण। ४. भेजूँगा। ५. परिजन। भोजपुरी क्षेत्र में निम्नलिखित रूप प्रचलित है— 'अरजन नेओतब परजन नेओतब, नेओतब कुल परिवार।' ६. बरिजन = परिजन, अर्थात् परिजन या अड़ोस-पड़ोस के अन्य लोग। बड़िजनी, यानी बड़ी ननद आदि अपने से बड़े सम्बन्धी। ७. निमंत्रित करूँगा। ८. और भी। ९. दयादिन = गोतिनी, पति के भाइयों की पत्नियाँ। १०. रूठे। ११. गोत्रवाले। १२. पति के भाइयों की पत्नियाँ। १३. मण्डप। १४. क्या। १५. लेकर। १६. मनाऊँगा। १७. बीड़ा (पान की गिलौरी)। १८. सिन्दूर।

[२]

[इस गीत में ललाट पर बालों के आ जाने के कारण पुत्र ने अपना मुंडन करवा देने के लिए पिता से अनुरोध किया है। इसपर पिता ने ज्येष्ठ-वैशाख महीने में मुंडन करवाने का आश्वासन दिया। ज्येष्ठ-वैशाख में ही मुंडन का विशेष मुहूर्त बनता है।]

सभवा बइठल[1] रउरा[2] बाबा कवन[3] बाबा हो।
बाबा लाबर[4] मोरा छेंकले[5] लिलार,[6] करहुँ जग-मूँड़न हो ॥१॥
झारि[7] बान्हु,[8] सम्हारि[9] बान्हु, कवन बरुआ[10] हो।
आवे दहु जेठ बइसाख, करहु जग मूँड़न हे।
करबो[11] अलबेला के मूँड़न हे ॥२॥

●

[३]

[इस गीत में मुंडन-संस्कार के अवसर पर ब्राह्मण, हजाम, कुम्हार और बच्चे की फूफी को निमंत्रित करने का उल्लेख है। ब्राह्मण संस्कार कराता है, हजाम मुंडन करता है, कुम्हार कलश आदि लेकर आता है तथा फूफी मुंडन के समय बच्चे के कटे हुए केश का गुच्छा अपने आँचल में लेती हैं, जिसे 'लापर' लेना कहा जाता है। इसके अतिरिक्त संस्कार के अवसर पर निमंत्रित लोगों को खिलाने के लिए चावल छँटवाने और दाल दलवाने का भी उल्लेख है।]

ओखरी[1] में चउरा[2] छँटाएब हे, चकरी[3] में दाल दराएब[4] हे,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
बराम्हन के नेओता[5] पेठाएब, पोथिआ समेत[6] चलि आवऽ
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
बराम्हन अलुरी[7] पसारे, हम लेबौ पोथिया के मोल,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे ॥१॥

---

१. बैठे हुए। २. आप। ३. कौन। ४. लाबर (भोज०—लापर)= माथे का केश। ५. घेर लिया है। ६. ललाट। ७. झाड़कर (कंघी देकर)। ८. बाँधो। ९. सँभालकर, सजाकर। १०. बरुआ = कुँवारा, उपनयन-संस्कार के योग्य बालक। ११. करूँगा।

१. ऊखल। २. चावल। ३. छोटा जाँता। ४. दलवाऊँगी। ५. निमंत्रण। ६. साथ, सहित। ७. अलुरी = कुछ माँगने के लिए ममतापूर्वक मनावन या हठ करना।

ओखरी में चउरा छँटाएब हे, चकरी में दाल दराएब हे,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
हजमा[8] के नेओता पेठाएब, छुरवा[9] समेते चलि आवऽ,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
हजमा अलुरी पसारे, हम लेबो छुरवा के मोल,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे ॥२॥
ओखरी में चउरा छँटाएब, चकरी में दाल दराएब,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
कुम्हरा[10] के नेओता पेठाएब, कलसा समेते चलि आवऽ,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
कुम्हरा अलुरी पसारे, हम लेबो कलसा के मोल,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे ॥३॥
ओखरी में चउरा छँटाएब, चकरी में दाल दराएब,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
फूआ[11] के नेओता पेठाएब, फुफ्फा[12] समेत चलि आवऽ
कन्हइआ जी के मूँड़न हे।
फूआ अलुरी पसारे, हम लेबो बबुआ के मोल,
कन्हइआ जी के मूँड़न हे ॥४॥

●

[४]

[बच्चे के मुंडन-संस्कार के समय उसकी माँ के द्वारा अपने कुल-परिवार के लोगों को निमन्त्रित करने तथा उल्लास में काफी खर्च करने का वर्णन है। मुंडन के समय पीड़ा से बच्चे के चौंक उठने तथा उसकी तकलीफ से विह्वल होकर नाई को दंड देने की भावना की अभिव्यक्ति तथा मुंडन समाप्त होने पर, खुशी में उसे, इनाम देने का उल्लेख है।]

पाँच सुपारी बाँटु[1] री, अब नेवतब[2] कुल-परिवार, लालजी के मूरन हे।
पाँच सुपारी बाँटु री, मोरे अलख दुलरुए[3] के मूरन हे ॥१॥

---

८. नापित, हजाम। ९. छुरा, उस्तुरा। १०. कुम्हार, कुंभकार। ११. पिता की बहन, बुआ। १२. बुआ का पति।

१. बाँटो। २. न्योता दूँगी, निमंत्रित करूँगी। ३. दुलारा।

अब बम्हना बसे जे बनारस, अब हजमा कुरखेत[४], लालजी के मूरन हे।
ए सवासिन[५] बसे ससुरघर, अब किन[६] रे परिछेबाल[७] लालजी के मूरन हे ॥२॥
अब बम्हना के चिठिया पेठाइय, अब हजमा के पकरि मँगाइय,
लालजी के मूरन हे।

ए सवासिन के डोलिया फनाइय[८], उहे रे परिछेबाल, लालजी के मूरन हे ॥३॥
नव मन गेहुँमा[९] मँगाइय, अब नेवतब कुल परिवार, लालजी के मूरन हे।
नव मन घिआ[१०] मँगाइय, अब नेवतब कुल परिवार, लालजी के मूरन हे ॥४॥
नव थान[११] कपड़ा मँगाइय, हम नेवतब सब परिवार, लालजी के मूरन हे।
पहिला अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय[१२],
लालजी के मूरन हे ॥५॥

दूसरा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे।
तीसरा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे ॥६॥
चउथा[१३] अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय,
लालजी के मूरन हे।

हजमा के लुलुहा[१४] कटाइय, नउनिया के देहु बनवास, लालजी के मूरन हे ॥७॥
पँचवा अस्तुरा नउआ फेरिय, हमर लाल उठल छिहुलाय, लालजी के मूरन हे।
हजमा के सोनवा गढ़ाइय, नउनिया के लहरापटोर[१५], लालजी के मूरन हे ॥८॥

●

[५]

[बच्चे के मुंडन में विधि-विधान सम्पन्न कराने के लिए ब्राह्मण को, मंडप छाने के लिए गोतियों को, गीत गाने के लिए गोतिनियों को, कलश के लिए कुम्हार को, मुंडन करने के लिए नाई को, पीढ़ा के लिए बढ़ई को और लापर लेने के लिए बच्चे की फूफी को निमंत्रित किया गया। सभी आये। सबका सम्मान

---

४. कुरुक्षेत्र। ५. सवासिन = परिवार की लड़कियाँ, बहन, बेटी आदि। ६. कौन। ७. परिछनेवाली। मुंडन, उपनयन और विवाह संस्कार के अवसर पर स्त्रियों द्वारा किसी द्रव्य को हाथ में लेकर बच्चे या दुलहे के माथे पर से घुमाकर सम्पन्न किया जानेवाला एक लोकाचार को परिछन कहते हैं। ८. डोली फनाना = पालकी पर चढ़ाकर ले जाना। ९. गेहूँ। १०. घृत। ११. लगभग २० गज लम्बे कपड़े को थान कहा जाता है, अदद। १२. छिहुलाय = दर्द से बेचैन होकर चौंक उठना। १३. चतुर्थ। १४. कलाई तक का भाग। १५. गोटा-पाटा जड़ी रेशमी साड़ी।

किया गया। बच्चे की फूफी के पिता (बच्चे के पितामह) ने गाँठें खोलकर मुँहमाँगा नेग दिया; लेकिन उसके भाई और भाभी (बच्चे के पिता और माँ) क्रुद्ध हो गये। दोनों ने कहा, यह तो घर को लूटने आई है।]

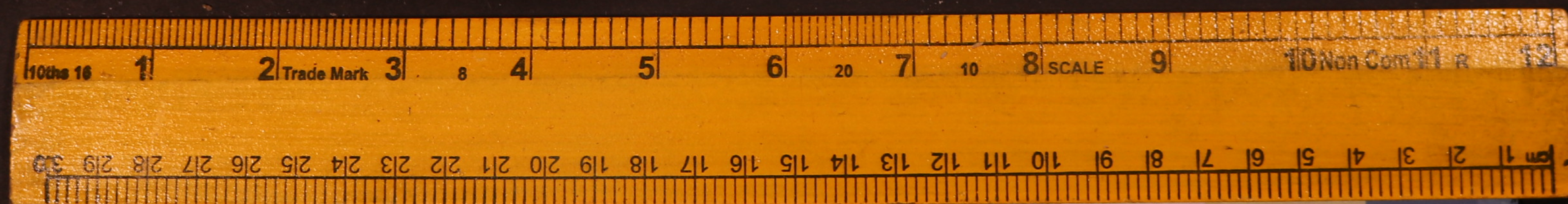
अहे बाम्हन के पड़ले हँकार[१], बरुअवा[२] के मूँड़न हे।
बाम्हन अइले बेद भनन[३] हे ॥१॥
अहे गोतिया के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
गोतिया अइले माँड़ो[४] छावन[५] हे ॥२॥
अहे गोतिनी के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
गोतिनी अइले मंगल गावन हे ॥३॥
अहे कुम्हरा के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
कुम्हरा अइले कलसा लिहले[६] हे ॥४॥
अहे हजमा के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
हजमा अइले छुरवा[७] लिहले हे ॥५॥
अहे बड़ही[८] के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
बड़ही अइले पिढ़वा[९] लिहले हे ॥६॥
अहे फूआ[१०] के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
फूआ अइले अँचरा पसरले[११] हे ॥७॥
अहे, बाबा के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
बाबा जे अइले गेंठी खोलले[१२] हे ॥८॥
अहे भइया के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
अहे भइया गइले[१३] रिसिआय[१४], बहिनी घर-लूटन[१५] हे ॥९॥
अहे, भउजी के पड़ले हँकार, बरुअवा के मूँड़न हे।
अहे, ननद अइले घर-लूटन, बरुअवा के मूँड़न हे ॥१०॥

●

---

१. बुलावा, निमंत्रण। २. कुँवारा, जिसका उपनयन होनेवाला है। ३. वेदोच्चारण। ४. मण्डप। ५. आच्छादन करने। ६. लिए हुए। ७. उस्तुरा। ८. बढ़ुकी, लकड़ी का काम करनेवाला, बढ़ई। ९. पीढ़ा, लकड़ी का पादपीठ। १०. बुआ, पिता की बहन। ११. फैलाते हुए। १२. गाँठी खोलले = गाँठ खोले हुए (रुपये-पैसे देने में मुक्तहस्त)। १३. गया। १४. रोषयुक्त होना, क्रुद्ध। १५. घर को लूटनेवाली।

जनेऊ



[१]

[बालक उपनयन-संस्कार के योग्य हो गया है, पर उसे जनेऊ नहीं दिया गया है। वह गंगा में स्नान करता है और अपने अंगों को देखकर लज्जित होता है। वह अपने पितामह और चाचा से उपनयन-संस्कार कराने को कहता है। वे लोग उसे सान्त्वना देते हैं कि तुम्हारा उपनयन बाजे-गाजे के साथ शीघ्र करूँगा।]

गँगा रे अरार[1] कवन बरूआ[2] करे असनान।
करे असननियाँ रे बरूआ, निरखे[3] आठो अँग[4] ॥१॥
बिनु हो जनेउआ हो बाबा, ना सोभे कान।
अप्पन जनेउआ हो बाबा हमरा के दऽ ॥२॥
हमरो जनेउआ हो बरूआ, भे गेल[5] पुरान।
तोहरो जनेउआ हो बरूआ, देबो बजना[6] बजाए ॥३॥
गँगा के अरार कवन बरूआ करे असनान।
करे असननियाँ रे बरूआ, निरखे आठो अँग ॥४॥
बिनु हो जनेउआ हो चाचा, ना सोभे कान।
अप्पन जनेउआ हो चाचा, हमरा के दऽ ॥५॥
हमरो जनेउआ हो बरूआ, भे गेल पुरान।
तोहरो जनेउआ हो बरूआ, देबो बजना बजाए ॥६॥

●

[२]

गंगा रे जमुनवाँ के रेतिया,[1] मोतिया उपजायब हे।
गंगा रे जमुनवाँ के रेतिया, सोनवाँ उपजायब हे ॥१॥

---

१. तट का ऊँचा भाग, कगार। २. कुँवारा, उपनयन-योग्य बालक। ३. देखता है। ४. आठो अंग = पैर, घुटना, कमर, छाती, ठुड्डी, नाक, मस्तक और हाथ। किन्तु यहाँ आठो अंग में जाँघ, कमर, छाती, बगल, कंधा, कान, माथ और हाथ समझना चाहिए। ५. भे गेल = हो गया। ६. बाजे, वाद्यवृन्द।

१. रेत।

जब मैं जनतों कवन बरूआ, तुहूँ पंडित होयबऽ हे ।
तुहूँ बराम्हन होयबऽ हे ।
कंचन थाल भराइ के, सोनवाँ भीखी[2] देयब[3] हे ।
मोतिया भीखी देयब हे ॥२॥

●

[३]

चइत[1] में बरूआ बिदा भेल, बैसाख पहुँचल[2] हे ॥१॥
जइबो[3] में जइबो ओहि देस, जहाँ दादा अप्पन[4] हे ।
उनखर[5] चरन पखारी के, हम पंडित होयब हे ।
हम बराम्हन[6] होयब हे ॥२॥
जइबो में जइबो ओहि देस, जहाँ नाना अप्पन नाना हे ।
उनखर चरन पखारी के, हम पंडित होयब हे ।
हम बराम्हन होयब हे ॥३॥

●

[४]

[उपनयन-संस्कार में प्रयुक्त होनेवाली सामग्री का उल्लेख इस गीत में किया गया है। साहिल जन्तु का काँटा, मृगछाला, पलास का डंडा और मूँज की डोरी का उपयोग इस संस्कार में होता है। यह सामग्री जंगल में ही उपलब्ध होती है। इस गीत में इन चीजों को एकत्र करने के लिए घनघोर जंगल में जाने का संकेत किया गया है।]

जेहि देस सिकियो[1] न डोलय,[2] साँप ससरि[3] गेल हे ।
ललना, ओहि[4] देस गयलन[5] दादा रइया,[6] अँगुरी धरि कवन बरूआ हे ॥१॥

२. भिक्षा (उपनयन के अवसर पर बालक ब्रह्मचारी का वेष धरकर गुरुकुल जाने का स्वांग रचता है। अध्ययन और गमन के खर्च के लिए आस गुरुजनों से एक पात्र में भिक्षा माँगता है। गुरुजन उसके पात्र में रुपये, अशर्फी आदि डालते हैं)। ३. दूँगी।

१. चैत्र मास। २. पहुँचा, आ गया। ३. जाऊँगा। ४. अपना, निजी। ५. उनका। ६. ब्राह्मण।

१. सींक भी। २. डोलती है। ३. रेंगना। ४. उस। ५. गये। ६. राय पदवीधारी।

पहिले जे मरबो साहिल,[7] साहिल काँटा चाहिला[8] हे ।
ललना, तबे हम मरबो मिरिगवा, मिरिगछाल[9] चाहिला हे ।
ललना, तबे हम कटबो परसवा[10] परास डंटा चाहिला हे ॥२॥
ललना, तबे हम कटबो मुँजिअबा, मुँजिअ[11] डोरि चाहिला हे ।
ललना, आज मोरा बाबू के जनेउआ, जनेउआ पीला[12] चाहिला हे ॥३॥

●

[५]

[यह गीत भी पूर्व गीत में वर्णित सामग्री की ही चर्चा करता है ।]

जेहि बन सिकियो ना डोलइ, बाघ सिंह गरजइ हे ।
तेहि बन चललन **कवन** चच्चा, अँगुरी धरि **कवन** बरुआ हे ॥१॥
पहिले जे कटबउ[1] मूँजवा[2], मूँज के डोरी चाहिला हे ।
तब कय कटबउ परसवा, परास डंडा चाहिला हे ।
तब कय मारबउ मिरगवा, मिरिग छाल चाहिला हे ॥२॥
जेहि बन सिकियो न डोलइ, बाघ सिंह गरजइ हे ।
तेहि बन चललन **कवन** भइया, अँगुरी धरि **कवन** बरुआ हे ॥३॥
पहिले जे कटबउ मूँजवा, मूँज के डोरी चाहिला हे ।
तब कय कटबउ परसवा, परास डंडा चाहिला हे ।
तब कय मारबउ मिरिगवा, मिरिग छाल चाहिला हे ॥४॥

●

[६]

सभवा बइठल रउरा[1] **कवन** बाबा, दहु[2] बाबा हमरो जनेउ[3] गे माई ।
बेदिया बइठल हो बरुआ, रतन के जोत[4] गे माई ॥१॥
केई[5] देवे[6] मूँज जनेउआ[7] केई मिरिग छाल गे माई ।
केई देवे पियर[8] जनेउआ, बेदिया के बीच गे माई ।
रतन के जोत गे माई ॥२॥

७. साही, खरगोश जितना बड़ा एक जन्तु, जिसका सारा शरीर तेज लम्बे काँटों से ढंका रहता है और जो जमीन में माँद बनाकर रहता है। ८. चाहता हूँ। ९. मृग-चर्म। १०. पलाश, किंशुक नामक वृक्ष। ११. मूँज की। १२. पीत रंग का।

१. काटूँगा। २. मूँज नामक घास।

१. आप। २. दो। ३. यज्ञोपवीत। ४. ज्योति। ५. कौन। ६. देता है। ७. मूँज का जनेऊ। यहाँ मूँज का जनेऊ देने का वर्णन है। प्रचलन के अनुसार उपनयन-संस्कार में मूँज की मेखला को जनेऊ की तरह पहनाया जाता है, ८. पीले रंग का।

बराम्हन देलन मूँज जनेउआ, नउआ[९] मिरिग छाल गे माई।
बाबा देलन पियर जनेउआ, बेदिया के बीचे गे माई।
रतन के जोत गे माई ॥३॥

सभवा बइठल रउरा कवन चच्चा, दहु चच्चा हमरो जनेउ गे माई।
बेदिया बइठल हो बरुआ, रतन के जोत गे माई ॥४॥
केई देवे मूँज जनेउआ, केई मिरिग छाल गे माई।
केई देवे पियर जनेउआ, बेदिया के बीचे गे माई।
रतन के जोत गे माई ॥५॥

बराम्हन देलन मूँज जनेउआ, नउआ मिरिग छाल गे माई।
चच्चा देलन पियर जनेउआ, बेदिया के बीचे गे माई।
रतन के जोत गे माई ॥६॥

●

[७]

[बालक, ब्रह्मचारी का वेष धारण कर गुरुजनों से जब भिक्षा माँग रहा है, तब स्त्रियाँ उससे पूछती हैं कि तुम कहाँ के रहनेवाले हो और क्या-क्या माँगने आये हो ? बालक तो चुप है, पर दूसरी स्त्री उसकी ओर से उत्तर देती है कि यह अमुक-अमुक वस्तुएँ माँगने आया है। यह गीत प्यार, सौभाग्य और उछाह से भरे हृदय की वाणी के रूप में प्रस्फुटित है।]

कहाँ के[१] तूँ तो बराम्हन बरुआ[२]।
कहँवाँ[३] बिनती तोहार, माई हे ॥१॥
कवन साही[४] सम्पत सुनि आएल हो बरुआ।
कवन देइ[५] दुआर[६] धरि ठाड़,[७] माई हे ॥२॥
माँगले बरुआ धोती से पोथी, माँगले पीयर जनेऊ, माई हे।
माँगले बरुआ हो चढ़न के घोड़वा, माँगले कनिया-कुआँर,[८] माई हे ॥३॥
तिरहुत के हम बराम्हन बरुआ, कवन पुर में विनती हमार माई हे।
कवन साही सम्पत सुनि अइली हो बरुआ,
कवन देइ दुआर धइले ठाड़ हे ॥४॥

---

९. नापित, हजाम।

१. किस गाँव के। २. ब्रह्मचारी वेषधारी बालक। ३. किस स्थान में, कहाँ। ४. राजा, उपाधि-विशेष। ५. देवी। ६. द्वार। ७. खड़ा। ८. क्वाँरी कन्या (पत्नी-रूप में)।

देबों में बरुआ हो धोती से पोथी, देबों में पियर जनेऊ, माई हे।
देबों में बरुआ हो चढ़न के घोड़वा, एक नहीं कनियाँ-कुआँर, माई हे ॥५॥

●

[८]

बेदियनि[१] बोलले बरुअवा, जनेऊ-जनेऊ करे हे।
बाबा, के मोरा बेदिया भरावत,[२] जनेउआ दियावत[३] हे ॥१॥
हँसि-हँसि बोलथिन[४] बाबा, बोली भितराएल[५] हे।
बबुआ, हम तोरा बेदिया भराएब, जनेउआ दियाएब हे ॥२॥
बेदियनि बोलले बरुअवा, जनेऊ-जनेऊ करे हे।
चच्चा, के मोरा बेदिया भरावत, जनेउआ दियावत हे ॥३॥
हँसि-हँसि बोलथिन चच्चा, बोली भितराएल हे।
बबुआ, हम तोरा बेदिया भराएब, जनेउआ दियाएब हे ॥४॥
बेदियन बोलले बरुअवा, जनेऊ-जनेऊ करे हे।
भइया, के मोरा बेदिया भरावत, जनेउवा दियावत हे ॥५॥
हँसि-हँसि बोलथिन भइया, बोली भितरायल हे।
बबुआ, हम तोर बेदिया भराएब[६] जनेउआ दियाएब हे ॥६॥

●

[९]

कुइयाँ[१] असथान पर मुँजवा के थलवा।[२]
मूँज चीरे चललन,[३] बरुआ कवन बरुआ ॥१॥
चिरथिन[४] कवन चच्चा मूँज के हे थलवा।
मूँज चीरे चललन बाबा हो कवन बाबा ॥२॥
तहाँ[५] कवन बरुआ लोटि-पोटि रोवलन[६]।
भुइयाँ लोटि रोवलन, दहु बाबा हमरो जनेऊ हो ॥३॥
झरलन - झुरलन[७] जाँघ बइठवलन[८]।
देबो बाबू तोहरो जनेऊ हो ॥४॥

●

---

१. बेदी से। २. बेदिया भरावत = वेदी भरावेगा। (संस्कारों के अवसर पर वेदिकाएँ बनाई जाती हैं, उनपर अनेक खाने बनाये जाते हैं और उन्हें विविध रंगों से भरा जाता है। इसी को 'बेदी भराना' कहते हैं।) ३. दिलायेगा। ४. बोलते हैं। ५. भरे गले से। ६. भराऊँगा।

१. कुआँ, कूप। २. थाला, आलबाल। ३. चले। ४. चीरेंगे। ५. उस जगह। ६. रोते हैं। ७. झाड़-पोंछ किया। ८. बैठाया।

[१०]

बराम्हन नेवतब,[१] बराम्हनी नेवतब ।
नेवतब, पोथिया सहिते[२] चलि आवऽ, माई हे ।
कब हम देखम[३] रामजी जनेउआ, कब हम देखम
किरिस्न[४] जनेउआ, माई हे ॥१॥

कुम्हरा[५] नेवतब, कुम्हइनियाँ[६] नेवतब ।
नेवतब, कलसा सहिते चलि आवऽ, माई हे ।
कब हम देखम रामजी जनेउआ, कब हम देखम
किरिस्न जनेउआ, माई हे ॥२॥

हजमा नेवतब, हजमिनियाँ[७] नेवतब ।
नेवतब, छुरवा समेते चलि आवऽ, माई हे ।
कब हम देखम रामजी जनेउआ, कब हम देखम
किरिस्न जनेउआ, माई हे ॥३॥

●

घिउढारी]

[११]

हरियर[१] लेमुआ[२] हे हरियर जोवा[३] केरा[४] खेत ॥१॥
एक अचरज हम सुनलूँ, दुलरइते बाबू के मड़वा[५] जनेऊ ।
मड़वहिं बैठल दुलरइते बाबू, गेंठ जोड़ि[६] दुलरइते सुहवे[७] हे ॥२॥
बेदिअहिं[८] घीउ[९] हे ढारिये गेल, सगरो[१०] भेइ गेल इजोर[११] ।
सरग[१२] अनंद भेल पितर लोग, अबे बंस बाढ़ल[१३] मोर ॥३॥

●

---

१. निमंत्रित करूँगी । २. साथ । ३. देखूँगी । ४. कृष्ण । ५. कुम्हार, कुम्भकार ।
६. कुम्हारिन,कुम्भकार की स्त्री । ७. हजाम की स्त्री ।
१. हरा । २. नींबू । ३. यव, जौ । ४. का । ५. मण्डप । ६. गाँठ जोड़ना—पति-पत्नी की
चादरों के छोर में धान, दूब, हल्दी और द्रव्य आदि रखकर बाँधने की प्रक्रिया । ७. सुहागिन ।
८. वेदी पर । ९. घृत । १०. सर्वत्र । ११. प्रकाश । १२. स्वर्ग में । १३. बढ़ा ।

विवाह

[यह सगुन का गीत है। इस गीत में यह उल्लेख है कि प्यारी पुत्री के विवाह के लिए वर-पक्ष से सगुन (शुभ मुहूर्त्तवाले सामान) आ गया है। लड़के के पिता ने अभी विवाह में काम आनेवाले सामानों को बनवाया नहीं है या न कोई विधि ही की है। वह अपनी प्यारी पुत्री के विछोह से दुःखी है। उसका जी कामों में नहीं लगता है। फिर, सगुन आ जाने पर उसे जब तैयारी करनी पड़ी, तब कहता है, यदि मैं जानता कि मेरी प्यारी पुत्री मेरे पास से चली जायेगी, तो मैं उसे छिपाकर रखता। इस पर कन्या कहती है कि मैं अब समझदार और सयानी हो गई हूँ, अब कितने दिन अपने पास रखोगे ? अर्थात्, शीघ्र तैयारी करो। सगुन विवाह का आरंभिक कृत्य है। इसके द्वारा कन्या-पक्षवाले वर-पक्ष को वस्त्राभूषण और रुपये देकर विवाह-सम्बन्ध दृढ करते हैं। इसके बाद ही दोनों पक्ष में सगुन उठता है और मांगलिक कार्य आरम्भ होते हैं तथा स्त्रियाँ मंगल-गीत गाना आरम्भ कर देती हैं।

[१]

अहो सगुनि[१] अहो सगुनि, सगुने[२] बियाह।
मैं तो जनइति[३] गे[४] सगुनी, होयतो बियाह ॥१॥
अरे काँचे बाँसे डलवा[५] गे सगुनी, रखती बिनाय[६]।
अरे आपन बेटा दुलरइता दुलहा, रखती चुमाय[७] ॥२॥
मैं तो जनइति गे सगुनी, होयतो बियाह।
अरे अपन बेटी दुलरइतिन बेटी रखती छिपाय ॥३॥
रखे के न रखलऽ जी बाबा, लड़िका से बारी[८]।
अरे अब कते[९] रखबऽ जी बाबा, सुबुधि-सेयानी[१०] ॥४॥

●

---

१. शुभ मुहूर्त्त। २. विवाह का शकुन। विवाह का यह प्रारम्भिक कृत्य है। इसमें कन्या-पक्षवाले वर को वस्त्राभूषण और द्रव्यादि देकर विवाह-सम्बन्ध को और भी दृढ बनाते हैं। ३. जानती। ४, सम्बोधन में इसका प्रयोग होता है। ५. बाँस की रंग-विरंगी पतली फट्ठियों या कमाचियों को एक प्रकार से गूँथकर तथा विशेष प्रकार से उसे सजाकर बनाया हुआ गोलाकार टोकरा, जिसमें विवाह का सामान जाता है। ६. बुनवाकर। ७. चुमावन-विधि सम्पन्न करके। ८. लड़कपन से उठती जवानी तक। ९. कितना (कितने वर्ष तक)। १०. समझने-बूझने की बुद्धि जिसको हो गई है, ऐसी सयानी कन्या।

[२]

[विवाह में पहले वर-पक्ष से सगुन में तिल, चावल तथा डंटी-लगे पान आये और जल्दी में थोड़े दिनों का लग्न रखा गया। इस पर लड़की के पिता ने दुलहे को आ जाने के लिए निमन्त्रण दिया। फिर, वर ने कहलवाया कि आपकी नदी में पानी बह रहा है, कैसे आऊँगा? ससुर साहब ने कहलवाया, घबराने की बात नहीं है, कल ही चन्दन का पेड़ कटवाकर, परसों ही डोंगी तैयार करा दूँगा, बेधड़क चले आओ। रास्ते में नदी पार करते समय मल्लाह जब नाव खेने लगा और जल्दी-जल्दी डाँड़ मारने लगा, तब पानी के छींटें उड़ने लगे और दुलहे के सिर की पगड़ी भींगने लगी। इसीलिए, वह धीरे-धीरे खेने की प्रार्थना करता है।

उपर्युक्त भाव ही निम्नलिखित गीत में लय का आकार धारण कर लोक-कंठ से फूट पड़ा है।]

पहिला सगुनवाँ[1] तिल-चाउर हे बाबू, तब कए डटारेबो[2] पान।
लगनियाँ[3] अइले उताहुल[4], सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥१॥
ससुर बोलएबो कवन[5] दुलहा हे बाबू।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥२॥
कइसे[6] में आएब ससुर बढ़इता[7] हे, ससुर राउर[8] नदिया
झिलमिल पानी।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥३॥
काल्ह[9] कटएबो चन्नन गछिया हे बाबू, परसों[10] बनएबो डेंगी नाव,
ताहि[11] रे चढ़ि आवहु[12] हे।
सगुनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥४॥
धीरे खेवऽ[13], मधुरे खेवऽ, मलहवा भइया हे, बाबू, भिजले[14]
कवन दुलहा सिर पगिया।
कवन सुगइ[15] सिर सेनुर[16], नयनवाँ भरी काजर।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥५॥

---

१. सगुन। ३. डाँठ (डंटी) से युक्त पान। ३. लग्न। ४. आकुल, उतावलेपन में जल्दीबाजी करने के लिए। ५. किस। ६. किस तरह। ७. श्रेष्ठ (आदरसूचक), बड़ा। ८. आपकी। ९. आनेवाला दिन, कल। १०. तीसरा दिन [परश्व]। ११. उसी पर। १२. आओ। १३. नदी पार करने के लिए नाव के डाँड़ों को चलाओ, जिससे नाव चले [क्षेपण]। १४. भींग रहा है। १५. सुग्गी, शुकी। यहाँ 'सुगइ' शब्द उस कन्या के लिए आया है, जिसे बड़े प्यार-दुलार से माता-पिता ने पाला है। १६. सिन्दूर।

कथिय[17] सुखयबऽ[18] झिलमिल[19] पगिया हे बाबू।
कथिय सुखयबऽ सिर सेनुर, नयनवा भरी काजर।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥६॥
रउदे[20] सुखाएब झिलमिल पगिया हे बाबू।
छँहिरे[21] सुखाएब सिर सेनुर, नयनवाँ भरी काजर।
लगनियाँ अइले उताहुल, सगुनवाँ भला हम पाएब हे॥७॥

●

[३]

[तिल, चावल और पान आदि चीजों के द्वारा सगुन मिल चुका है। दुलहा ससुराल जाने के लिए उतावला है; क्योंकि लग्न के साथ-साथ सगुन भी शुभ है। परन्तु, नदी में आई हुई भयंकर बाढ़ से वह भयभीत हो जाता है। वह सुपती-मौनी खेलती हुई अपनी छोटी बहन से नदी की पूजा कर उसे मनाने का अनुरोध करता है। बहन आवश्यक सामग्री के साथ नदी की पूजा करती है और कहती है कि नदी, तुम अपनी बाढ़ समेट लो, जिससे मेरे भाई और भाभी आसानी से पार उतर जायँ। विवाह के अवसर पर नदी, कुआँ तथा आँधी-तूफान आदि से रक्षा के लिए पूजा की विधि सम्पन्न करने का प्रचलन भी है।]

पहिला सगुनमा तिल-चाउर हे, तब कय डटारेवो[1] पान हे।
देहु गन[2] दुलरइते बाबा के हाथ, सगुनमा भल हम पयलूँ हे।
लगनियाँ भेलइ उताहुल,[3] सगुनमा भल[4] हम पयलूँ हे॥१॥
कानी-कानी[5] चिठिया लिखथिन दुलरइते बाबू, अहे भँमर[6]
नदिया अइलइ[7] तूफान हे।
लगनियाँ अलइ उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे॥२॥
सुपती[8] खेलइते तूहें दुलरइते बहिनों हे, बहिनो भँमर
नदिया देही न मनाई हे।
लगनियाँ मोर उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे॥३॥

---

१७. किस चीज से या कैसे। मगही में इसके लिए 'कौची' शब्द का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ 'कौन चीज' होता है। १८. सुखाओगे (आर्द्रता दूर करोगे)। १९. पतली, झीनी। २०. धूप में। २१. छाया में।

१. देखिए वि० गीत-सं० २ की टिप्पणी-सं० २। २. देहु गन = दे आओ। ३. वही, टिप्पणी-सं० ४। ४. शुभ, अच्छा। ५. रो-रोकर। ६. भँवर (नदी के आवर्त्त में)। ७. आया। ८. सुपली।

पुजबो[9] में भाँवर नदिया, सेनुरे-पिठार[10] अहे भइया भउजी
उतरे देहु पार हे।
लगनियाँ अलइ उताहुल, सगुनमा भल हम पयलूँ हे ॥४॥

●

[४]

[इस गीत में दुलहे और दुलहिन को राम और सीता का प्रतिरूप मानकर उनकी मंगल-कामना की गई है और स्तोत्रों के माहात्म्य की तरह इस गीत के गाने का फल बतलाया गया है। साथ ही यह निर्देश भी किया गया है कि इस गीत के गानेवाली का सौभाग्य युग-युग तक अचल रहता है।]

लिपि-पोति देलूँ अँगनमा,[1] अँगनमा सोहामन[2] हे।
गजमोती चउका[3] पुरावल,[4] सोने कलस धरी हे ॥१॥
आजु हे रामजी के बियाह, चलहुँ मंगल गामन[5] हे।
जुग-जुग जीथिन[6] सीतादेइ,[7] अवरो[8] सीरीराम दुलहा हे ॥२॥
भोगथिन[9] अजोधेया के राज, तीनों लोक सुन्नर हे।
जुग-जुग बढ़े अहिवात, जे मंगल गावत हे ॥३॥

●

[५]

[इस गीत में विवाह के समय प्रधानतः जिन सामानों की आवश्यकता होती है, उनका उल्लेख किया गया है। इसमें कहा गया है कि दुलहा-दुलहिन के मंडप में आने के पहले ही वे सामान मौजूद रहने चाहिए। पहले दुलहिन मंडप में आई और उसके बाद दुलहा। एक तरह से मंडप के व्यवस्थापक की स्मृति गीत के द्वारा ही जगा दी जाती है। व्यावहारिक दृष्टिकोण ही इस गीत का मुख्य पक्ष है। इस गीत में भोजपुरी की झलक मिलती है।]

मलिया के अँगनवाँ चननवाँ केरा गाछ[1]।
ताहि तर[2] सुगवा[3] सगुनवाँ[4] ले ले ठाढ़ ॥१॥

---

९. पूँजूँगी। १०. चावल के आटे का बनाया पीठा। [पिष्ट + वार = पीसे हुए चावल और जल के संयोग से बननेवाली पीठी]।

१. आँगन। २. सुहावना, शोभायमान। ३. चौका। ४. पूरण किया, अर्थात् भरा। ५. गाने। ६. जीयेंगे। ७. सीता देवी। ८. और। ९. भोगेंगे।

१. वृक्ष [गच्छ (संस्कृ०)], २. उसके नीचे। ३. तोता। ४. शकुन। मांगलिक कार्य आरम्भ करने के लिए वर पक्ष से आये सामान और पत्र।

पहिला सगुनवाँ माइ हे, मलिया के देल।
सोने के मउरिया[5] लाइ मड़वा धराय ॥२॥
दूसरे सगुनवाँ माइ हे, कुम्हरा[6] के देल।
सोने के कलसवा लाइ मड़वा धराय ॥३॥
तीसरे सगुनवाँ माइ हे, बम्हनवाँ के देल।
सोने के पतरवा[7] लाइ मड़वा धराय ॥४॥
चउथे[8] सगुनवाँ माइ हे, बेटी के बाबा के देल।
अपनी दुलहिनियाँ आनि चउका बइठाय ॥५॥
पँचवाँ सगुनवाँ माइ हे, बेटा के बाबा के देल।
अपन दुलहवा आनि चउका बइठाय ॥६॥
गरजे लागल कारी बदरिया, बरसे लागल मेघ।
भीजे लागल दुलहा दुलहिन, जोड़ले सनेह[9] ॥७॥
दुलहिन पुछये दुलहवा साधु[10] बात।
कइसे-कइसे[11] सजल[12] जी परभु अपन बरियात[13] ॥८॥
धोयले धोयले कपड़ा रँगल-रँगल दाँत।
छयले छयले गभरू[14] सजल बरियात ॥९॥
दुलहा जे पूछये दुलहिनियाँ साधु बात।
कइसे कइसे सीखल धानि राम रसोई[15] ॥१०॥
बतिसो हँड़ियवा जी परभू, छप्पन परकार।
बाबा घरे सिखली जी परभू राम के रसोई ॥११॥

●

[६]

तिलक]

[विवाह के लिए तिलक चढ़ाते समय कन्या-पक्ष के बहुत से पंडितों तथा अन्य लोगों के आने तथा दहेज में आवश्यकता से भी कम लाने और योग्य दुलहे को ठग लेने की बात कही गई है। वस्तुतः, यह वर-पक्ष की स्त्रियों का मधुर उपालंभ है।]

---

५. मौर। ६. कुम्भकार। ७. पत्रा, पंचांग। वस्तुतः, यहाँ विवाह-पद्धतिवाली पुस्तक से तात्पर्य है, जो पत्रानुमा होती है। ८. चतुर्थ। ९. स्नेह। दुलहिन की चादर के खूँट में दुलहा अपनी चुटकी से सिन्दूर रखता है और उसे फिर दुलहे की चादर के खूँट के साथ जोड़ दिया जाता है। उसे पति का स्नेह-सूचक माना जाता है, इसीलिए वह 'सनेह' कहलाता है। १०. अच्छी, मनभावन। ११. किस तरह। १२. सजी। १३. बरात। १४. वह स्वस्थ नवयुवक, जिसकी मसें भींग रही हों। १५. रसोई के लिए लोक-प्रचलित शब्द।

सभवा बइठले रउरा[१] बाबू हो कवन बाबू ।
कहवाँ से अइले पंडितवा, चउका[२] सभ घेरि ले ले ॥१॥
दमड़ी दोकड़ा के पान - कसइली ।
बाबू लछ[३] रुपइया के दुलहा, बराम्हन भँड़ुआ ठगि ले ले ॥२॥
बाबू, लछ रुपइया के दुलहा, ससुर भँड़ुआ ठगि ले ले ॥३॥

●

[७]

नगर अजोधेया में बाजहइ[१] बधावा[२], घरे-घरे मंगलचार[३] हे ।
रोरी-अछत[४] ले ले बराम्हन, पंडित जलदी से लगन सोचाव हे ॥१॥
लाल हो पट केर[५] जाजिम झारि[६] बिछावल हे ।
एक दिसि बइठलन राजा दसरथ, दोसरे राम-लछुमन हे ॥२॥
तिलक देथिन जनइया रीखी[७], लगन उताहुल[८] हे ।
अछत छीटथिन[९] लोग सभे, होवत मंगल हे ॥३॥

●

[८]

लगन]

[इस गीत में कोयल की कूक के द्वारा लगन की डुगडुगी पीटने का उल्लेख किया गया है। वसंत ऋतु में होनेवाले विवाह से सम्बद्ध यह गीत है। इस गीत में विवाह का शुभ मुहूर्त निकलवाने की बात है।]

अमवा के डाढ़[१] चढ़ि बोलेले कोइलिया ।
लगन[२] लगन डिँड़ियाय[३] हे ॥१॥

---

१. आप । २. किसी शुभ कार्य का वह स्थान, जहाँ कर्त्ता बैठकर संस्कार-विधि सम्पन्न करता है। उस स्थान को गोबर या मिट्टी से लीपकर उस पर ऐपन आदि की लकीरों से चौकोर अल्पना बना दी जाती है। तिलक में इसी चौके पर बैठाकर दुलहे का तिलक सम्पन्न होता है। ३. लाख।

१. बजता है। २. शहनाई आदि बाजे, जो मांगलिक कार्य के समय बजाये जाते हैं [वर्द्धापन (वृद्धिवाद्य)]। ३. मंगलाचार। ४. रोली (रोचनी)-अक्षत। ५. का। ६. झाड़कर। ७. जनक ऋषि। ८. उतावलेपन, जल्दबाजो। ९. छीटते हैं।

१. डाल। २. विवाह का शुभ मुहूर्त्त। ३. डिंडियाय (संस्कृ० डिंडिय)=चारो ओर डुगडुगी पीटना या रट लगाना।

एहो नगरिया माइ हे, कोई नहीं जागथिन[४] ।
लगन न माँगथिन[५] लिखाइ जी ॥२॥
एहो नगरिया माइ हे, जागथिन कवन बाबू,
हमें लेबइ लगन लिखाइ हे ॥३॥
घर से बाहर भेलन[६], दुलरइता दुलहा,
आजु बाबू लगन लिखाहु जी ॥४॥
अइसन लगन लिखिह जी बाबू,
ओहे लगन होइतो वियाह जी ॥५॥

●

[९]

चौका]

[इस गीत के प्रथम तीन पदों में उस फुलवारी की रक्षा का वर्णन है, जिसमें दुलहे के माथे पर चढ़नेवाली मौर के पौधे उगे हुए हैं तथा गले में पहनाई जानेवाली माला, जिस फूल से गूँथी जायेगी, उस चम्पा के पौधे लगे हैं। मौर और माला पहनकर जब दुलहा दुलहिन के साथ चौके पर बैठा, तब दुलहिन पक्ष के लोगों ने उन्हें घेर लिया। दुलहे को पता नहीं चलता है कि इसमें कौन मेरे क्या होंगे? इसलिए, वह दुलहिन से उनलोगों का परिचय पूछता है और दुलहिन ने जिस खूबी के साथ अपने लोगों का परिचय बतलाया है, वह इस गीत में पढ़िए।]

आरी[१] के हेंठे-हेंठे[२] लगि गेल फुलवारी ।
कान्हर[३] बछरू चरावल हे ॥१॥
फेरू-फेरू[४] अहो कान्हर, अपनो बछरुआ ।
चरि जएतन[५] घनी फुलवारी हे ।
येली[६] चरि जइहें, बेली[७] चरि जइहें, चंपा ममोरले[८] डाढ़ हे ॥२॥
काहे से[९] गाँथब[१०] हो कान्हर फल के मउरिया[११] ।
काहे से गाँथब हो कान्हर चंपाकली हरवा ।
दुलहा दुलहिन चौका चलि बइठल, बाम्हन वेद उचारल हे ॥३॥

---

४. जागते हैं। ५. माँगते हैं। ६. हुए।

१. मेंड़। खेत की ऊँची हदबन्दी। २. नीचे-नीचे। ३. कृष्ण कन्हैया। ४. फेरो (प्रत्यावर्त्तन), हटाओ। ५. जायगा। ६. इलायची। बेली का अनुवदनात्मक प्रयोग। ७. बेला फूल। ८. मड़ोरना, तहस-नहस कर देना। ९. किस चीज से। १०. गूँथूँगा। ११. मौर।

हँसि हँसि पूछल दुलहा कवन दुलहा।
कउने हथुन[12] बाबू तोहार हे, कउने हथुन अम्मा तोहार हे ॥४॥
जिनका डँरवा[13] में पिअरी[14] धोतिया सोभे,
ओहे[15] हथि बाबूजी हमार हे।
जेकर हँथवा में सोने के कँगना सोभे,
ओही हथि अम्मा हमार हे ॥५॥
कामर[16] ओढ़न, कामर डाँसन[17], ओहि हथिन चच्चा हमार हे।
जिनकाहिं सोभे परभु लहरा-पटोरवा, ओहि हथिन चाची हमार हे ॥६॥
धीरे से अइहें गंभीरे चुमइहें[18], ओही हथिन बहिनी हमार हे।
जिनका मुँहवाँ में लहालही[19] बिरवा[20], ओहि हथिन भइया हमार हे ॥७॥
अइंठलि-जोइंठलि[21], ओठ ममोरलि[22], ओहि हथिन भउजी हमार हे ॥८॥

●

[१०]

चुमावन]

[विवाह के समय राम के 'चुमाने' का उल्लेख इस गीत में किया गया है। प्रायः सभी विधियों के सम्पन्न होने के बाद दुलहे को 'चुमाने' की प्रथा है। दुलहे से रिस्ते में बड़ी औरतें ही चुमावन की विधि सम्पन्न करती हैं। इसमें सास चुमावन करके आशीर्वाद दे रही है।]

चनन काटिए काटि, पिढ़वा[1] बनयबइ सिवसंकर हे।
से पिढ़वा रामजी बइठयबइ, सुनहु सिवसंकर हे ॥१॥

१२. हैं। १३. डाँड़, कमर, कटि। १४. पीली। १५. वही। १६. कम्बल। १७. बिछौना। १८. चुमावन नामक विधि करेंगी। स्त्रियाँ दुलहे या दुलहिन के पैर, घुटने, भुजा और सिर से हाथ की चुटकी में दधि, अक्षत आदि लेकर छुलाती हैं और उनके माथे पर रखती हैं, इसे चुमावन कहा जाता है। चुमावन आशीर्वादात्मक विधि है। नाते-रिस्ते में जो स्त्रियाँ दुलहे से हँसी-ठिठोली करनेवाली होती हैं, चुमाते समय दुलहे के शरीर के उन स्थानों में अँगुली गड़ा-गड़ाकर चुमाती हैं और हल्दी-दही लपेट देती हैं। इससे शर्मिन्दा दुलहा भीतर-ही-भीतर तो रंज होता है, पर लज्जावश कुछ कह नहीं सकता। वस्तुतः, भाभी आदि का ऐसा करना, दुलहे में वासना जागरित करने के लिएं होता है। अर्थात्, काम-कला का प्रशिक्षण मण्डप से ही आरम्भ हो जाता है। १९. लहलह, चमकता हुआ, प्रफुल्लित। २०. पान का बीड़ा। २१. इठलाती-मदमाती। २२. ओठ बिदकाती।

१. पादपीठ, पीढ़ा।

सोना के पइलवा[2] में सेनुरा धरयबइ सिवसंकर हे।
सीता के मँगिया भरयबइ, सुनहु सिवसंकर हे ॥२॥
सोना के थरियवा[3] में अछत धरयबइ सिवसंकर हे।
सेहु अछत रामजी चुमयबइ, सुनहु सिवसंकर हे ॥३॥
चुमावे चलली में सासु मनाइन[4] सिवसंकर हे।
चुमि-चुमि देल असीस, सुनहु सिवसंकर हे ॥४॥
जुग-जुग जियथिन रामचंदर सिवसंकर हे।
होइहो अजोधेया के राजा, सुनहु सिवसंकर हे ॥५॥

●

[११]

चुमवन बइठलन कउन[1] मइया सिवसंकर हे।
कहमाँहिं[2] भेल अनंद, कहहु सिवसंकर हे ॥१॥
चुमवन बइठलन कोसिला रानी, सुनु सिवसंकर हे।
अजोधाहिं[3] भेगेलइ[4] अनंद, कहहु सिवसंकर हे ॥२॥
मोतियनि अँजुरी[5] भरावल, सुनहु सिवसंकर हे।
जवरे[6] जनइया[7] रीखी[8] बेटी, सुनहु सिवसंकर हे ॥३॥
भँटवा[9] हे गरजइ दरोजे[10] बइठी, सुनहु सिवसंकर हे।
भँटीनियाँ[11] मँड़ोबा[12] धइले[13] ठाढ़, सुनहु सिवसंकर हे ॥४॥
नउबा[14] जे हँस हइ निछाबर लागी, सुनहु सिवसंकर हे।
नउनियाँ जे रूसलइ[15] पटोर ला[16], सुनहु सिवसंकर हे ॥५॥
देबो गे नउनियाँ से सोने रूपे पीत पटम्मर हे।
देबो हम अजोधा के राज, सुनहु सिवसंकर हे ॥६॥

●

२. पइला, नापने का एक माप, जो बरतन के आकार का होता है। किन्तु यहाँ उसी आकार के सिन्धोरे से तात्पर्य है। काठ का कटोरानुमा बरतन, जिसमें सिंदुर, सन आदि रखे जाते हैं। ३. थाली। ४. गौरी की माँ मेनका, मैना। यहाँ सास के लिए प्रयुक्त।

१. कौन। २. कहाँ। ३. अयोध्या। ४. हो गया। ५. अंजलि। ६. साथ में। ७. जनक। ८. ऋषि। ९. भाट, बंदी। १०. दरवाजे पर। ११. भाट की पत्नी। १२. मंडप। १३. धरकर (धृत्वा), पकड़कर। १४. नाई। १५. रूठ गई है। १६. रेशमी वस्त्र के लिए।

[१२]

मिली-जुली चलहु चुमावन, सुनहु सिवसंकर हे।
आजु हइ राम के बियाह, सुनहु सिवसंकर हे ॥१॥
दस-पांच सखिया बारिय भोरे[1], अउरो बड़ सुन्नर हे।
हाथ लेले सोने के थार[2], सुनहु सिवसंकर हे ॥२॥
चुमवल मइया कोसिला मइया, अवरो तीनों मइया हे।
आज अजोधेया में उछाह,[3] सुनहु सिवसंकर हे ॥३॥

●

[१३]

संझा]

[विवाह-संस्कार सम्पन्न होने के तीन-चार दिन पहले से स्त्रियाँ ब्राह्ममुहूर्त और संध्या समय, उस घर के आगे, जिसमें गृह-देवता स्थापित रहते हैं, खड़ी होकर देवता की आराधना में इस गीत को गाती हैं।]

संझा[1] बोलथी माइ हे किनखा[2] घर हम जाइब, के लेत संझा मनाई हे ॥१॥
दुलरइते बाबू घर हमें जाइब, दुलरइते देइ लेत संझा मनाई हे ॥२॥

●

[१४]

संझा बोलत माई हे किनकर[1] घरे जाग[2] ॥१॥
कथि केर[3] घियवा[4], कथि केर बात[5]।
कथि केर दियवा[6], जरइ[7] सारी रात ॥२॥
सोने केर दियवा, कपासे केर बात।
सोरही गइया[8] के घियवा, जरइ सारी रात ॥३॥

●

---

१. कम उम्र की, भोली-भाली (मुग्धा नायिका)। २. थाली। ३. उत्साह (उत्साह-भरा आनन्द)।

१. संध्या। २. किसके।

१. किसके। २. यज्ञ। ३. किस चीज का। ४. घृत। ५. बाती, वर्त्तिका। ६. दीप। ७. जलती है। ८. सोरही गाय (सुरभि गाय)।

[१५]

देवता]

[इस गीत में भक्त के घर देवता के आने का उल्लेख है। साथ ही यह भी संकेत किया गया है कि विवाह-संस्कार में स्थापित कलश का दीपक रात-भर जलता रहे और उसमें शुद्ध कपास की बाती और अच्छी गाय का घृत डाला जाना चाहिए।]

साते[1] हो घोड़वा गोसाईं, सातो असवार।
अगिलहिं[2] घोड़वा देवा सुरूज असवार ॥१॥
घोड़वा चढ़ल देवा करथी पुछार[3]।
कउने अवादे[4] बसे, भगत हमार ॥२॥
ऊँची कुरीअवा[5] देवा, पुरुबे दुआर[6]।
बाजे मँजीरवा[7] गोसाईं, उठे झँझकार[8] ॥३॥
कथि केर दियवा देवा, कथि केर बात।
केथी केर घिया, जरइ सारी रात ॥४॥
सोने केर दियरा देवा, कपासे केर बात।
सोरही के घिया देवा, जरइ सारी रात ॥५॥
जरि गेलो घिया, मलिन भेलो बात।
खेलहुँ न पइलऽ देवा, चउ पहर[9] रात ॥६॥

●

[१६]

लेहु[1] हजमा सुबरन कसैलिया[2], नेवतियो[3] लावऽ चारो धाम हे।
गया से नेवतिहऽ[4] गजाधर[5] नेवतिहऽ, नेवतिहऽ बीर हलुमान हे।
गंगा में नेवतिहऽ गंगा मइया नेवतिहऽ, नेवतिहऽ सीरी जगरनाथ[6] हे।
धरती से नेवतिहऽ सेसरनाथ[7] हे ॥१॥
गाया से अयलन[8], गजाधर अयलन, अयलन सीरी जगरनाथ हे।
गंगा से गंगा मइया अयलन, अयलन बीर हलुमान हे।
धरती से अयलन सेसरनाथ हे ॥२॥

●

---

१. सप्त, सात। २. आगे के। ३. पूछ-ताछ। सुख-दुःख की स्थिति। जो लोग कुशल-समाचार पूछने जाते है, उसे पुछार कहा जाता है। ४. आवास, ग्राम। ५. कुटिया। ६. द्वार। ७. मंजीर (वाद्य)। ८. झनकार। ९. चार प्रहर।

१. लो। २. सोने की सुपारी। ३. निमंत्रण दे आओ। ४. निमंत्रण दोगे। ५. गदाधर भगवान्। ६. जगन्नाथ। ७. शेषनाग। ८. आये।

[१७]

उबटन]

[दुलहे और दुलहिन के शरीर की सफाई और सौंदर्य के निखार के लिए संस्कार, प्रारम्भ होने के पहले घर की सधवा स्त्रियाँ गीत गाकर उबटन लगाती हैं। जौ या गेहूँ के आटे, हल्दी, सरसों, तिल, चिरौंजी तथा अन्य सुगन्धित द्रव्यों को पीसकर उबटन बनाया जाता है। द्रव्यों के पीसने का काम नाइन करती है। इसके लिए नाइन को विशेष पुरस्कार दिया जाता है।]

ऊ जे[1] जव[2] रे गोहुम केरे ओबटन[3], राई[4] सरसो के तेल,
अउरो[5] फुलेल।
से बेटा बइठल ओबटन[6], दुलरइता बइठल ओबटन ॥१॥
लगवलऽ[7] मइयो[8] सोहागिन, हाँथ कँगन डोलाय, नयना घुमाए।
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन ॥२॥
लगवल चाची सोहागिन, हाँथ कँगन डोलाय, नयना घुमाय।
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन ॥३॥
लगवल फूआ[9] सोहागिन, हाँथ कँगना डोलाए, नयना घुमाए।
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन ॥४॥

●

[१८]

के[1] रे लेल उबटन, के रे लेल तेल।
के रे लेल थारी[2] भरी हरदी[3] कस्तूर[4] ॥१॥
येते[5] आवऽ[6], येते आवऽ, बइठऽ दुलरइता।
लगतो[7] अहो दुलहा, हरदी कस्तूर ॥२॥

●

---

१. वह जो। २. यव, जौ। ३. उद्वर्त्तन, उबटन। ४. सरसों की ही एक जाति। ५. और। ६. उबटन लगवाने के लिए। ७. लगाती है। ८. माता। ९. बुआ, पिता की बहन।

१. कौन। २. थाली। ३. हल्दी। ४. कस्तूरी। ५. यहाँ। ६. आओ। ७. लगेगा अथवा लगाया जायेगा।

[१९]

मटकोर]

[मटकोर की विधि के लिए घर तथा बाहर से निमंत्रित स्त्रियाँ गीत गाती हुई घर के पास की नदी, जलाशय, कुएँ या खेत में जाकर वहाँ से शुद्ध मिट्टी कोड़ लाती हैं। उसी शुद्ध मिट्टी के ऊपर कलश रखा जाता है तथा उसमें और मिट्टी मिलाकर लग्न का चूल्हा तैयार किया जाता है, जिसे बिअहुती चूल्हा भी कहा जाता है। गीत गानेवाली गीत में ही मिट्टी कोड़नेवाली दाई को गालियाँ देकर आनन्द मनाती हैं। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है।]

माटी कोरे[1] गेल छिनरो[2], पार गंगा हे।
गजनवटा[3] में चोरवले[4] आयल सोरह गो[5] भतार[6] हे ॥१॥
घर के भतार पूछे, कवन-कवन जात[7] हे।
चार गो त जोलहा-धुनिया, चार राजपूत हे ॥२॥
चार गो त मुसहर[8], बड़ मजगूत[9] हे।
भले[10] छिनरो भले, भले कोरे[11] गेल[12] हे ॥३॥

●

[२०]

माटी कोड़े गेली[1] हम आज मटिखनमा[2]।
इयार[3] मोरा पड़लन, हाय जेहलखनमा[4] ॥१॥
पियवा के कमइया[5] हम कछु न जान ही।
इयार के कमइया नकबेसर[6] हई[7] हे ननदो[8] ॥२॥
ओही नकबेसर धरी इयार के छोड़यबो[9]।
इयार मोरा पड़लन हाय जेहलखनमा ॥३॥

●

---

१. कोड़ने, खनने। २. छिनाल [छिन्ना + नारी]। ३. स्त्री की पहनी हुई साड़ी के नीचे का भाग। [गुह्याच्छादन-पट अथवा गुह्यन-पट]। ४. चुराकर। ५. संख्या, अदद। ६. भर्त्तार, पति। ७. जाति। ८. चूहा मारकर खानेवाली एक निम्न जाति; [मूषकहर अथवा मूषहर]। ९. मजबूत। १०. अच्छा, खूब। ११. (मिट्टी) कोड़ने। १२. गई।

१. गई। २. मिट्टीवाली खान, जिस खान (गढे) से मिट्टी निकाली जाती है। ३. यार, प्रेमी। ४. जेलखाना, कारागृह। ५. कमाई, उपार्जन। ६. नाक में पहना जानेवाला एक आभूषण। ७. है। ८. ननद, पति की बहन। ९. छुड़ाऊंगी।

[२१]

मंडप]

[इस गीत में बाप-बेटी का संवाद है। बेटी जन्म तो लेती है, पिता के घर; पर उसका विस्तार या सम्बन्ध अन्य स्थान (पति के घर) से होता है। पिता से पुत्री की यही शिकायत है कि दूब जहाँ जन्म लेती है, वहीं उसकी टहनी क्यों नहीं फैलती ? बात यह है कि अपनी सोने-जैसी बेटी का ब्याह पिता ने किसी काले लड़के से कर दिया था। बेटी असन्तुष्ट थी; पर दूसरी ओर विवश भी थी। उसके इन प्रश्नों के उत्तर में पिता अपनी प्यारी पुत्री को समझाता है और काले दुलहे की अनेक प्रकार से प्रशंसा करता है तथा उसकी उपमा अयोध्या के राजा रामचन्द्र से देता है। इस गीत में पुत्री के प्रतीक में दूब रखी गई है, जिससे उसकी कोमलता और शिशुता की ध्वनि बड़ी ही मार्मिक हो उठी है।]

कहमाँहि[1] दुभिया[2] जनम गेलइ जी बाबूजी ,
कहमाँहि पसरल[3] डाढ़[4] हो ॥१॥
दुअराहिं[5] दुभिया जनम गेलउ[6] गे[7] बेटी ,
मड़वाहिं[8] पसरल डाढ़ हे ॥२॥
सोनमा[9] ऐसन[10] धिया[11] हारल[12] जी बाबा।
कार-कोचिलवा[13] हथुन दमाद हे ॥३॥
कारहिं-कार[14] जनि घोसहुँ[15] गे बेटी ,
कार अजोधेया सिरी राम हे ॥४॥
कार के छतिया[16] चननमा सोभइ[17] गे बेटी ।
तिलक सोभइ लिलार[18] हे ॥५॥
कार के हाथ बेरवा[19] सोभइ गे बेटी ।
मुखहिं सोभइ बीरा[20] पान हे ॥६॥
मथवा में सोभइ चकमक[21] पगड़िया ।
गलवा[22] सोभइ मोतीहार हे ॥७॥

---

१. किस जगह। कहाँ। २. दूब। ३. फैली। ४. डाल, टहनी। ५. द्वार पर। ६. जनम गई। ७. 'गे' सम्बोधन में व्यहृत होता है। ८. मण्डप में। ९. सोना। १०. ऐसी। ११. पुत्री। १२. हार गये। १३. काला-कलूटा। कुचैला, गंदा, मैला। १४. काला-काला। १५. घोषणा करो, बार-बार पुकारो। १६. छाती, हृदय। १७. शोभता है। १८. ललाट। १९. पुरुष की कलाई में पहना जानेवाला आभूषण, कड़ा। २०. बीड़ा। २१. चमकदार। २२. गले में, कण्ठ में।

ऐसन[23] बर के कार काहे[24] कहलऽ।
कार हथिन सिरी राम हे ॥८॥

●

[२२]

[इस गीत से पता चलता है कि मण्डप की निगरानी पिता के जिम्मे और द्वार पर अथितियों का स्वागत कन्या के भाई के जिम्मे होता है। इसलिए, अच्छे मंडप के लिए कन्या के पिता की तथा द्वार पर अच्छे स्वागत-प्रबन्ध के लिए कन्या के भाई की बड़ाई होती है। किन्तु, दुलहे की बड़ाई लजीलेपन के लिए होती है।]

ऊँची ए मड़वा छरइह[1] दुलरइते[2] बाबा।
ऊँची होतो[3] नाम तोहार हे ॥१॥
झारी[4] गलइचा[5] बिछइह[6] दुलरइते भइया।
ऊँची होतो नाम तोहार हे ॥२॥
धरती में नजर खिरइह[7] दुलरइते बर।
देखतो नगरी के लोग हे ॥३॥

●

[२३]

हरदी]

[विवाह में हल्दी चढ़ाना भी एक विधि है, जो हरी-हरी दूबों के गुच्छों के सहारे दुलहे या दुलहिन पर चढ़ाई जाती है। बड़ी आयुवाले ही हल्दी चढ़ाते हैं, जिसका तात्पर्य मांगलिक आशीर्वाद है।]

सोना के ढकनी[1] में हरदी परोसल[2] ।
उपरे[3] लहलही दूभ[4] हो, सिरवा[5] हरदी चढ़ावे ॥१॥

---

२३. इस तरह के, ऐसे। २४. क्यों।

१. छवाना, अच्छादन कराना। २. प्यारे। ३. होगा। 'नाम ऊँचा होना', मुहावरा है, अर्थात् यश-विस्तार। ४. झाड़कर। ५. गलीचा, कालीन। ६. बिछाना। ७. गड़ाना। 'खिरइह' का भोजपुरी रूप 'खिलइह' होता है। धरती में नजर खिलाना का अर्थ होता है, धरती के भीतर तक दृष्टि प्रवेश करा देना।

१. मिट्टी का छोटा ढक्कन, छोटा ढकना। २. परसी हुई, रखी हुई। ३. ऊपरी भाग में। अर्थात्, ढकनी में हल्दी रखी हुई है, उसके ऊपर दूबों का गुच्छा है। ४. दूब, दूर्वादल। ५. सिर के ऊपर।

पहिले चढ़ावे बराम्हन अप्पन[६] ।
तब सकल परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे ।
सोना के ढकनी में हरदी परोसल ।
उपरे लहलही दूभ हो, सिरवा हरदी चढ़ावे ॥२॥
पहिले चढ़ावे बाबा जे अप्पन ।
तब सकल परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे ॥३॥
पहिले चढ़ावे चच्चा जे अप्पन ।
तब सकल परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे ॥४॥

●

[२४]

कवने रइया[१] हरदी बेसाहल[२] हे ।
कवने देई[३] पिसतन[४] , लगतउ[५] गे[६] बेटी उबटन[७] ॥१॥
दादा रइया हरदी बेसहलन, दादी देइ पिसलन ,
लगतउ गे बेटी उबटन, लगतउ गे बेटी तेल-फुलेल ॥२॥
कवने रइया हरदी बेसाहल हे ।
कवने देइ पिसतन, लगतउ गे बेटी उबटन ॥३॥
बाबू रइया हरदी बेसहलन, मइया देइ पिसलन ।
लगतउ गे बेटी उबटन, लगतउ गे बेटी तेल फुलेल ॥४॥

●

[२५]

राई[१] सरसों के तेल अवरो[२] फुलेल, सो बेटा बइठल हइ[३] उबटन[४] ।
दादी सोहागिन, हाथ कँगना डोलाय, लुलुहा[५] घुमाय, नयना लड़ाय ,
सो बेटा बइठल हइ उबटन ॥१॥

---

६. अपना । अपना ब्राह्मण = कुल-पुरोहित ।

१. राय, एक उपाधिविशेष । २. खरीदा, मोल लिया । ३. देवी । ४. पीसेंगी । ५. लगाई जायेगी, लगेगी । ६. हे ! ७. शरीर में मलने के लिए सरसों, तिल और चिरौंजी का लेप । [उद्वर्त्तन > उब्बट्टन (पा०)] ।

१. सरसों की एक जाति । २. और । ३. बैठा हुआ है । ४. उबटन लगवाने के लिए । ५. कलाई के आगेवाला भाग ।

राई सरसों के तेल, अवरो फुलेल, सो बेटा बइठल हइ उबटन ।
उनकर[६] मइया सोहागिन, हाथ-कँगना डोलाय, लुलुहा घुमाय ,
नयना लड़ाय, सो बेटा बइठल हइ उबटन ॥२॥
राई सरसों के तेल, अवरो फुलेल, सो बेटा बइठल हइ उबटन ।
उनकर चाची सोहागिन, हाथ कँगना डोलाय, लुलुहा घुमाय ,
नयना लड़ाय, सो बेटा बइठल हइ उबटन ॥३॥

●

[२६]

हरियर पट[१] केरा[२] जाजिम[३] भारी बिछावहु हे ।
आयल कुल-परिवार, हरदी चढ़ावहु हे ॥१॥
हरदी चढ़ावथी[४] दुलरइता दादा, सँघे[५] दुलरइतो दादी हे ।
ताहि पाछे[६] कुल परिवार, से हरदी चढ़ावथी हे ॥२॥

●

[२७]

कहमाँहि[१] हरदी जलम लेले[२] , कहमाँहि लेले बसेर[३] ,
हरदिया मन भावे ।
कुरखेत[४] हरदी जलम लेले, मड़वा में लेलक[५] बसेर ,
हरदिया मन भावे ॥१॥
पहिले चढ़ावे बराम्हन लोग, तब चढ़ावे सभलोग ,
हरदिया मन भावे ॥२॥

●

---

६. उनकी ।

१. हरे वस्त्र । २. का । ३. दरी के ऊपर बिछाई जानेवाली बड़ी चादर । ४. चढ़ाते हैं । ५. साथ में । ६. पश्चात् ।

१. किस जगह । २. लिया । ३. बसेरा, वासस्थान । ४. जोता-कोड़ा खेत । ५. ले लिया ।

[२८]

कलसा]

कय[१] गुने[२] कलसा हे, कय गुने भार[३] ।
बोल हे कलसवा हे, के[४] लेत भार ॥१॥
छव गुने कलसा हे, नव गुने भार।
बोलथि[५] जनइया[६] रिखी[७], हम लेबो भार ॥२॥
गंगा-जल पानी देबो, पुंगी-फल धान ।
चउमक[८] बराय[९] देबो, सगरो[१०] इँजोर[११] ॥३॥
धन[१२] अनपुरना[१३] देइ, धन रउरा भाग ।
कलसा धराइ गेल[१४], जनइया रिखी के मड़वा ॥४॥

●

[२६]

[इस गीत में मंडपाच्छादन, कलश-स्थापन तथा दीप-ज्वलन की विधि का वर्णन है। अन्त में, यह भी कहा गया है कि इन विधियों से पितर लोग स्वर्ग में इसलिए आमन्त्रित हैं कि अब हमारे वंश की वृद्धि होगी। इससे ज्ञात होता है कि विवाह वंश-वृद्धि के लिए ही प्रमुख महत्त्व रखता है।]

कहमाँहि किसुन[१] जी जलम लेलन, कहमाँहि बाजत बधावा[२],
सुनहु जदुनन्नन[३] हे ।
मथुराहि किसुनजी जलम लेलन, गोखुला[४] में बाजत बधावा,
सुनहु जदुनन्नन हे ॥१॥
कयराहिं[५] काटी-कुटी खँम्हवा[६] गड़ावल[७], छोटे-मोटे
मँड़वा बनावल, सुनहु० ।
खरही[८] काटी-कुटी[९] मँड़वा छवायबइ[१०], मँड़वा में कलसा
धरयबइ[११], सुनहु० ॥२॥

---

१. कितना। २. गुणित—जैसे दुगुना, तिगुना, चौगुना आदि। ३. बोझ, वजन। ४. कौन। ५. बोलते हैं। ६. जनक। ७. ऋषि। ८. चतुर्मुख दीपक। कलसे के ऊपर जो दीपक रखा जाता है, उसमें चारों ओर मुंह होते हैं और हर मुंह में बत्ती जलती है। ९. जलना, बलना। १०. सर्वत्र। ११. प्रकाश। १२. धन्य। १३. अन्नपूर्णा। १४. रखा गया, स्थापित किया गया।

१. कृष्णजी। २. वर्द्धन-वाद्य, मंगल-वाद्य। ३. यदुनन्दन। ४. गोकुल। ५. कदली को, केले को। ६. स्तम्भ, खम्भा। ७. गड़वाया। ८. खर, एक प्रकार की घास, मूँज। ९. काट-छाँटकर। १०. छवाऊँगी। ११. धरवाऊँगी, रखवाऊँगी।

ओकरा[१२] में भरबई[१३] गंगा पानी, ओकरा में धरबइ
कसइलिया[१४], सुनहु० ।
ओकरा में धरबइ पलबिया[१५], ओकरा में धरबइ
पन-फूलवा[१६], सुनहु० ॥३॥
बारबइ[१७] हम मानिक दियरा[१८], झलमल करतइ[१९] दियरा,
सुनहु जदुनन्नन हे ।
मँड़वहिं रखबइ[२०] हरदिया, पूजबइ हम गउरी-गनेसवा[२१],
सुनहु जदुनन्नन हे ॥४॥
उपरे[२२] अनंद पितर लोग, अब बंश बाढ़ल मोर,
सुनहु जदुनन्नन हे ।
मँड़वहिं हो गेल इँजोर[२३], सुनहु जदुनन्नन हे ॥५॥

●

[३०]

चीकन[१] मटिया[२] कोड़ि मँगाएल, ऊँची कय[३] मँड़वा छवाएल ।
जनकपुर जय जय हे ॥१॥
सोने कलस लय[४] पुरहर[५] धरब, मानिक लेसु[६] फहराय[७] ।
जनकपुर जय जय हे ॥२॥
लाल लाल सतरंजी[८] अँगन[९] को बिछाएल ।
जनकपुर जय जय हे ॥३॥
जय जय बोले नउअवा से बाम्हन, जय जय बोले सब लोग ।
जनकपुर जय जय हे ॥४॥
धन राजा दसरथ, धन हे कोसिलेया ।
धन[१०] हे सीता देई के भाग, रामे बर[११] पायल[१२] हे ॥५॥

●

---

१२. उसमें। १३. भरूँगी। १४. पूंगीफल, सुपारी। १५. पल्लव। १६. पान और फूल। १७. बालूँगी, जलाऊँगी। १८. माणिक्य-दीप। १९. करेगा। २०. रखूँगी। २१. गौरी-गणेश। २२. ऊपर (स्वर्ग में)। २३. प्रकाश।

१. चिक्कन, चिकनी। २. मिट्टी। ३. करके। ४. लेकर। ५. कलश के ऊपर रखा जानेवाला पूर्णपात्र, जिसमें अरवा चावल या जौ भरा जाता है। कलश में धान की बाली भी रखी जाती है। यह पूर्णपात्र 'पुरोहित' का होता है, इसीलिए इसको पुरहत, पुरहथ या पुरहर भी कहा जाता है। ६. बलता हुआ दीप। ७. वर्त्तिका की लौ उठ रही है। ८. सात रंगवाली दरी। ९. आँगन। १०. धन्य। ११. दुलहा। १२. प्राप्त किया।

[३१]

घिउढारी]

[घिउढारी की विधि में गौरी-गणेश तथा सप्तमातृकाओं की पूजा करके सात कुश-पिंजुलियों पर अथवा नये पीढ़े पर सात सिन्दूर की लम्बी पंक्ति बनाकर वर या वधू के माता-पिता द्वारा मंत्रपूर्वक घृत-धारा गिराई जाती है। यह धारा गृह-देवता के पास, गृह-देवता के घर के बाहर और मंडप में गिराई जाती है। इसे संस्कार-पद्धतियों में 'वसोर्धारा' भी कहते हैं। लेकिन, लौकिक विधि तथा इस शास्त्रीय विधि में स्थान-भेद के कारण कुछ अन्तर भी पड़ता है।

इस गीत में भाई के अनुरोध करने पर बहन गीत गाने को उद्यत तो होती है, पर दहेज में अपने लिए चुनरी, अपने बच्चे के लिए आभूषण और पति के लिए घोड़े की माँग करती है। किन्तु, उसकी भाभी इन चीजों को देने से इनकार करती है और कहती है कि तुम चली जाओ। इस अपमान से बहन बहुत दुःखी होती है और उसका पति उसके नैहर की खिल्ली उड़ाता है तथा पत्नी को ढाढ़स भी दिलाता है कि ये सारी चीजें मैं नौकरी करके लाऊँगा और तुम्हारी साध पुराऊँगा। तुम नैहर का मोह छोड़ दो। इस पर पत्नी कहती है—

"आगि लागे परभु चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
बजर पड़े चढ़न के घोड़वा, नइहर कइसे तेजब हे॥"]

अँगना जे लिपली[1] दहादही[2], माड़ो[3] छावली हे।
ताहि चढ़ि भइया निरेखे[4], बहिनी चलि आवल हे॥१॥
मचिया बइठल मोरा धनिया[5], त धनिया सुलच्छन[6] हे।
धनिया, आवऽ हथिन[7] बाबा के दुलारी, गरब[8] जनि बोलहु हे॥२॥
आवहु हे बहिनी, आवहु, मोरा चधुराइन[9] हे।
बहिनी, बइठहु बाबा चउपरिया[10], मंगल दस गावहु,
गाइके[11] सुनावहु हे॥३॥
गाएब[12] हो भइया गाएब, गाइ के सुनाएब हे।
भइया, हमरा के का देबऽ दान, लहसि[13] घरवा जायेब हे॥४॥

१. लीपी-पोती (लेपन)। २. दहकनेवाला, चमकनेवाला, स्वच्छ। ३. मण्डप। ४. निरखता है, देखता है [निरीक्षण]। ५. वधू, स्त्री, पत्नी [धनिका]। ६. सुन्दर (सौभाग्यसूचक) लक्षणोंवाली। ७. आ रही है। ८. गर्व की बात। ९. चौधराइन, श्रेष्ठ। १०. चौपाल, छाया हुआ मण्डपाकार बैठका, जहाँ गाँववालों की पंचायत होती है। ११. गाकर। १२. गाऊँगी। १३. उल्लसित होकर।

गावहु, ए ननद गावहु, गाइके सुनावहु हे।
ननदो, जे तोरा हिरदो[14] में समाए[15], लेइके[16] घरवा जाहुक[17] हे॥५॥
हमरा के दीहऽ चुनरिया, बलकवा के हाँसुल[18] हे।
भउजी, प्रभु के चढ़न के घोड़वा, लहसि घर जाएब हे॥७॥
कहाँ पाएब लाली चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
ननदो, कहवाँ पाएब चढ़न के घोड़वा, लउटि[19] घरवा जाहु हे॥७॥
रोइत जाहइ[20] ननदिया, बिलखइत जाहइ भगिनवाँ न हे।
हँसइत जाहइ ननदोसिया, भले रे मान[21] तोड़ल हे॥८॥
चुप रहु चुप रहु, धनिया, मोर चधुराइन हे।
हम जएबो राजा के नोकरिया, दरब[22] लेइ[23] आएब[24] हे॥९॥
तोहरा ला[25] लएबो चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
अपना ला चढ़न के घोड़वा, नइहर बिसरावहु[26] हे॥१०॥
आगि लागे परभु चुनरिया, बलकवा के हाँसुल हे।
बजर[27] परे चढ़न के घोड़वा, नइहर कइसे[28] तेजब[29] हे॥११॥

●

[३२]

[पुत्र या पुत्री के विवाह में घिउढारीवाली विधि माता-पिता करते हैं। उस अवसर पर लड़के या लड़की का मामा अपनी बहन के पहनने के लिए वस्त्र लाता है। उसी वस्त्र को पहनकर लड़की की माँ अपने पति के साथ घिउढारी की विधि सम्पन्न करती है।

यहाँ इसी की चर्चा है। मंडप सजा है। पूजा की तैयारी हो रही है। लोग इकट्ठे हो गये हैं; पर अभीतक लड़के का मामा नहीं आया। इसीके सम्बन्ध में स्त्री अपनी दासी से कहती है—'जरा जाकर देखो कि मेरे भैया आ रहे हैं या नहीं? पति के साथ पीढ़े पर बैठूँगी, गोतिया भाई इकट्ठे हैं, पर मेरे भैया नहीं आये। मैं पियरी कैसे पहनूँ, पैर कैसे रँगाऊँ? यह मंडप मेरे लिए बीहड़ वन-सा लगता है। मेरी घृत-धार जरा भी नहीं शोभती।' इसी बीच उसका भाई बड़ी शान से आता है

१४. हृदय। १५. अटे, जँचे। १६. लेकर। १७. जाना। १८. बच्चों के गले में पहनाया जानेवाला एक आभूषण। १९. लौटकर। २०. जाती है। २१. अभिमान। २२. द्रव्य। २३. लेकर। २४. आऊँगा। २५. तुम्हारे लिए। २६. बिसरा दो, भुला दो। २७. वज्र। २८. किस तरह। २९. त्यागूँगी।

और बहन के लिए सारा सामान लाता है। फिर, बड़े आनन्द से घिउढारी सम्पन्न होती है।]

अगे[१] अगे चेरिया[२] कवन चेरिया गे।
चेरिया, अंगना बहारि[३] जरा देखूँ, भइया नहीं आयल हे ॥१॥
केकरा[४] संघ बइठम[५] चनन पीढ़वा[६]।
केकरा से सोभे मोर माँड़ो,[७] भइया नहीं आयल हे ॥२॥
सामी संघे बइठम चनन पीढ़वा।
गोतिया से सोभे मोर माँड़ों, भइया नहीं आयल हे ॥३॥
कइसे पेहरब[८] इयरी पियरिया,[९] से कइसे रँगायब गोड़[१०]।
मोरा लेखे[११] माँड़ो हे बिजुबन,[१२] बिनु भइया न सोभे घीउढार[१३] ॥४॥
चमकि के बोलहइ जे चेरिया।
झमकइते[१४] आवे तोरा भाइ, रखूँ कोठी-कान्हें[१५].अँजवार[१६] ॥५॥
दुअरहिं घोड़े हिंहियायल[१७], डोला[१८] धमसायल[१९] हे।
आगे आगे आवथिन[२०] दुलरइता भइया, सँघ भउजी मोर हे ॥६॥
डँड़िया[२१] ही आवल पोखर कान्हें[२२], देखूँ चेरी भइया केर[२३] सान।
भइया मोरा लखिया हजरिया[२४]।
लौलन[२५] इयरी पियरिया, भउजी सिर सेनुर हे ॥७॥
चउका चनन[२६] हम बइठम, इयरी पियरी पेन्हिके[२७] हे ॥८॥
अब हमर माँड़ो राज गाजल,[२८] होवे घिउढार बिधि हे।
बेदे बेदे[२९] भेल घिउढार, सुमंगल गावल हे ॥९॥

●

---

१. अरी। २. नौकरानी, दासी। ३. बुहारकर। ४. किसके। ५. बैठूँगी। ६. पीढ़े पर। ७. मण्डप। ८. पहनूँगी। ९. लाल-पीली साड़ी। १०. पैर। ११. लिए। १२. बीहड़ वन। १३. घृतधार; विवाह के अवसर पर घृत ढालकर पूजा की जानेवाली एक विधि। १४. इठलाते हुए। १५. कोठी का उपरला भाग। १६. स्थान बनाकर, खाली कर। १७. हिनहिनाया। १८. पालकी। १९. धूम-धाम से आना, धम्म से आना, अर्थात् एक-ब-एक पहुँच आना। २०. आते हैं। २१. पालकी। २२. पोखर के किनारे। २३. को। २४. लक्षपति-सहस्रपति। २५. ले आये। २६. चौका-चन्दन। चौके के ऊपर बैठकर की जानेवाली सारी विधियाँ। २७. पहनकर। २८. राजसी शोभा। २९. प्रत्येक बेदी पर।

[३३]

[इस गीत में कहा गया है कि जिस तरह मंडप, कलश के विना, कलश पुरहर के विना, मंडप की शोभा भाई-बन्धु और पड़ोसिनों के विना, चौका-चन्दन पति के विना, दान देना पुत्र के विना तथा लाल-पीला पहनावा लड़की के विना नहीं शोभा देता, उसी तरह विवाह में पीला कपड़ा नैहर के विना पहनना शोभा नहीं देता।

नैहर के प्रति नारी का ममत्व इस गीत में प्रकट किया गया है।]

मड़वा न सोभले कलसवा बिनु, अवरो[१] पुरहरवा[२] बिनु हे।
मड़वा न सोभले गोतियवा[३] बिनु, अवरो सवासिन[४] बिनु हे ॥१॥
चउका चनन कइसे बइठब, अपना पुरुखवा[५] बिनु हे।
अरबे[६] दरबे[७] कइसे लुटायब, अपना पुतरवा[८] बिनु हे ॥२॥
लाल पियर कइसे पेन्हब, अपन धिया[९] बिनु हे।
इयरी पियरी कइसे पेन्हब, अपना नइहरवा[१०] बिनु हे ॥३॥

●

[३४]

[पूर्व गीत का ही भाव इस गीत में भी दरसाया गया है।]

मड़वा डगमग[१] खरही[२] बिनु, कलसा पुरहर बिनु हे।
मन मोरे डगमग नइहर बिनु, अप्पन सहोदर बिनु हे ॥१॥
मड़वहिं बइठल गोतिया लोग, भनसा[३] गोतिनिया लोग हे।
तइयो नहीं मन मोरा हुलसल[४], अप्पन नइहर बिनु हे ॥२॥
इयरी पियरी कइसे पेन्हब, अप्पन नइहर बिनु हे।
चउका चनन कइसे बइठब, अप्पन जयल[५] बिनु हे।
अरप दरप[६] कइसे बोलब, अप्पन पुरुख बिनु हे ॥३॥

●

---

१. और। २. पुरहर, कलश के ऊपर रखा जानेवाला पूर्णपात्र। ३. भाई-बन्धु। ४. सुवासिनी, गाँव की विवाहित लड़कियाँ। ५. पुरुष, पति। ६. अरब की संख्या। ७. द्रव्य। ८. पुत्र। ९. पुत्री,। १०. नैहर, मायका, अर्थात् नैहर के लोगों की अनुपस्थिति में।

१. हिल-डोल। २. मूँजपत्र, एक प्रकार की घास। ३. रसोईघर। ४. उल्लसित। ५. जायल, सन्तान। ६. अभिमानपूर्ण, दर्पपूर्ण।

[३५]

पैरपूजी]

[विवाह-संस्कार में गुरुजनों की पाद-पूजा होती है। उसी अवसर पर यह गीत गाया जाता है।]

चउका चढ़ि बइठलन **कवन** साही, राजा रघुनन्नन हरि[1]।
पूजहऽ पंडित जी के पाओं[2], सुनहु रघुनन्नन हरि ॥१॥
पाओं पुजइते सिर नेवले[3], राजा रघुनन्नन हरि।
देहऽ पंडितजी हमरो असीस, सुनहु रघुनन्नन हरि ॥२॥
दुधवे नहइह[4] बाबू पुतवे पभइह[5], रघुनन्नन हरि ॥३॥
चउका चढ़ि बइठलन **कवन** साही, राजा रघुनन्नन हरि।
पूजहऽ चाचा जी के पाओं सुनहु रघुनन्नन हरि ॥४॥
पाओं पुजइते सिर नेवले, राजा रघुनन्नन हरि।
देहऽ चच्चा जी हमरो असीस, सुनहु रघुनन्नन हरि ॥५॥
दुधवे नहइह बाबू, पुतवे पभइह, रघुनन्नन हरि ॥६॥
चउका चढ़ि बइठलन **कवन** साही राजा रघुनन्नन हरि।
पूजहऽ चाची जी के पाओं, सुनहु रघुनन्नन हरि ॥७॥
पाओं पुजइते सिर नेवले, राजा रघुनन्नन हरि।
देहऽ चाची जी हमरो असीस, सुनहु रघुनन्नन हरि ॥८॥
दुधवे नहइह बाबू पुतवे पभइह, रघुनन्नन हरि ॥९॥

[३६]

इमली घोटाई]

[इमली घोंटाई की विधि घिउढारी के बाद होती है। लड़की का मामा अपनी बहन को इमली घोंटाता है तथा कुछ उपहार भी देता है। इस विधि में कहीं-कहीं लड़के और लड़की की माँ रोती भी है। यह दृश्य बड़ा कारुणिक होता है। कहा जाता है कि माँ इसलिए रोती है कि मेरी सन्तान आजतक तो मेरी थी, पर अब यह दूसरे की (पत्नी या पति) हो जायेगी।

---

१. इस गीत में 'रघुनन्नन हरि' पद 'हर गंगा' आदि के समान टेक के रूप में व्यवहृत है। यह पद 'कवन साही' के लिए उपमान के रूप में भी प्रयुक्त माना जा सकता है। 'कवन बाबू' के स्थान पर पैर-पूजी करनेवाले व्यक्ति का नाम उच्चरित किया जाता है। २. पांव, पैर। ३. नवाते हैं, झुकाते हैं। ४. दूध से नहाना, अर्थात् घर में दूध-दही की नदी बहना। ५. पूत-पभाना, अर्थात् पुत्र-पुत्री (संतान) से परिपूर्ण होना।

इस गीत में निमंत्रण पाकर बहन का भाई आवश्यक सामग्री के साथ आता है तथा उसका स्वागत भी होता है। वह अपने देर से आने के लिए क्षमा-प्रार्थना करते हुए बहन से मन का क्रोध शान्त करने को कहता है तथा अपनी लाई चुनरी पहनने का अनुरोध करता है।]

अरे रे काला भँवरवा[1], तू नेवति ला[2] नैहर मोरा हे ॥१॥
किये ले[3] नेवतबइ नैहरवा, किये ले ससुर लोग हे।
लौंग[4] लेइ नेवतिहे नैहरवा, कसइली[5] ले ससुर लोग हे ॥२॥
कहँवा से औतइ[6] महरिआ[7], कहाँ से बीरन भइया हे।
पूरब से औतइ महरिआ, पछिम से बीरन भइया हे ॥३॥
कहँवा उतरबइ[8] महरिआ, कहँवे बीरन भइया हे।
मड़वे उतरबइ महरिआ, अँचरे[9] बीरन भइया हे ॥४॥
किये किये[10] खयतइ बोझियवा[11], किये रे बीरन भइया हे।
दाल भात खयतइ बोझियवा, दूध खाँड़ बीरन भइया हे ॥५॥
किये दे[12] समाधबइ[13] बोझियवा, त किये दे बीरन भइया हे।
दान दे समधबइ[14] बोझियवा, त चढ़न के घोड़वा बीरन भइया हे।
हँसइत जयतइ[15] बोझियवा, कुरचइत[16] बीरन भइया हे ॥६॥
खोली देहु बहिनी गुदरिया[17] त, तू पेन्हिलऽ चुनरी मोरा हे।
छोड़ी देहु मन के कुरोध[18], तू भइया से मिलन करू हे ॥७॥

[३७]

शिव-विवाह]

फूल लोढ़े[1] चलली हे गउरा[2], बाबा फुलवारी।
बसहा चढ़ल महादेव, लावले[3] दोहाई[4] ॥१॥
लोढ़ल[5] फुलवा हे गउरा देलन छितराए।
रोवते कनइते[6] हे गउरा, घर चलि आवे ॥२॥

---

१. भ्रमर। २. निमन्त्रित कर आओ। ३. क्या लेकर। ४. लवंग। ५. कसैली, पूगीफल। ६. आवेगी। ७. कहारिन, दासी। ८. उतारूंगी। ९. आँचल के ऊपर। १०. क्या-क्या। ११. बोझा ढोनेवाला सेवक, भारवाहक। १२. क्या देकर। १३. मनाऊंगी (समाधान कर लेना, प्रबोध लेना)। १४. मना लूंगी। १५. जायेगा। १६. प्रसन्नता से कुलाँचें भरता हुआ। १७. गन्दा तथा फटा-चिटा वस्त्र। १८. क्रोध।

१. टहनियों से चुन-चुनकर फूल तोड़ने। २. गौरी, पार्वती। ३. लगाते हैं। ४. दुहाई, प्रार्थना। ५. चुनकर तोड़ा हुआ। ६. रोते-काँदते।

मइया अलारि[7] पूछे, बहिनी दुलारि पूछे।
कउने तपसिया[8] हे गउरा, तोरो के डेरावे ॥३॥
लाज के बतिया[9] हे अम्मा, कहलो न जाए।
भउजी जे रहित हे अम्मा, कहिति समुझाए ॥४॥
पूछु गल सखिया[10] सलेहर[11], कहिहें समुझाए।
बड़े बड़े जट्टा हे अम्मा, सूप अइसन[12] दाढ़ी ॥५॥
ओही तपसिया हे अम्मा, हमरो डेरावे।
ओही तपसिया हे अम्मा, पड़ले दोहाई ॥६॥
बुद्धि तोरा जरउ[13] हे गउरा, जरउ गेयान।
ओही तपसिया हे गउरा, पुरुख[14] तोहार ॥७॥

●

[३८]

[विवाहोत्सव के अवसर पर सारी रात दीपक जलाकर दुलहा-दुलहिन के पाशा खेलने का उल्लेख है। इस गीत में कामना की गई है कि जबतक ये संसार का भोग करते रहें, तबतक स्नेह में दोनों का जीवन सदा प्रकाशमान बना रहे।]

मथवा[1] जे आयल[2] महादेव बड़े बड़े जटा।
कँधवा[3] जे आयल महादेव बघिनी के छला[4] ॥१॥
घर से बाहर भेली[5] सासु मनाइन[6]।
गोहुमन सरप छोड़ल फुफकारी ॥२॥
किया[7] सासु किया सासु गेल डेराइ।
तोरा लेखे[8] अहे सासु गेहुमन साँप।
मोरा लेखे अहे सासु गजमोती हार ॥३॥
कथिकेरा[9] दियवा, कथिकेरा बाती।
कथिकेरा तेलवा, जरेला[10] सारी राती[11] ॥४॥
जरु[12] दीप जरु दीप चारो पहर राती।
जब लगि दुलहा दुलहिन खेले जुआसारी[13] ॥५॥

---

७. पुचकार कर। ८. तपस्वी। ९. बात। १०. गले-गले मिलने वाली सखी। ११. सहेली। १२. ऐसा। १३. जल जाय। १४. पुरुष, पति।

१. माथे पर, सिर पर। २. आया। ३. काँधे पर। ४. बाघ-छाल, बाघम्बर [व्याघ्राम्बर]। ५. हुई। ६. मैना, पार्वती की माँ। ७. क्यों। ८. वास्ते। ९. किस चीज का। १०. जलता है। ११. रात्रि। १२. जलो। १३. जूआ।

[४५]

उगि गेल चँदवा, छपित[1] भेल हे सुरुजा[2]।
बइठहू न[3] दुलरइता दुलहा, फूल केर हे सेजिया ॥१॥
कइसे हम बइठू हे सासु, फूल केर हे सेजिया।
मोर दादा साहेब भींजत[4] होइहें, चारो पहर रे रतिया ॥२॥
दादा के देबो रे दुलहा, सोनामूठी[5] रे छतवा[6]।
छतवे ओड़ोते[7] रे दादा, चलत बरियतिया[8] ॥३॥

●

[४६]

मलिया[1] के अँगना कसइलिया[2] के डरवा[3]।
लचकि लचकि भेल डार हे ॥१॥
घर से बाहर भेलन, दुलरइता दुलहा।
तोड़लन कसइलिया के डार हे ॥२॥
घर से बाहर भेलन, दुलरइता दादा।
मालिन ओरहन[4] देइ हे ॥३॥
बरजहुँ हो बाबू, अपन दुलरुआ[5]।
तोड़ल कसइलिया के डार हे ॥४॥
जनु कुछु कहऽ मालिन, हमरा दुलरुआ।
हम देबो कसइलिया के दाम[6] हे ॥५॥

●

[४७]

[इस गीत में दुलहे के बल-पौरुष का गुणानुवाद किया गया है। नौजवान अपनी मनोनीत ससुराल पहुँचता है। उस सुन्दर-सुघड़ युवक को देखकर सभी मोहित हो जाते हैं। उससे अभीतक अविवाहित रहने का कारण पूछते हैं। उसने उन्हें बतलाया कि मेरे घरवाले विभिन्न कामों में फँसे रहे, जिससे मेरे विवाह की उन्हें चिन्ता नहीं हुई और मैं अभी तक क्वाँरा बना रहा। पर, अब मेरा विवाह होगा।

---

१. छिप गया, तिरोहित हो गया। २. सूर्य। ३. बैठो न, अर्थात् बैठो। ४. भींगते। ५. सोने की मूठवाला। ६. छत्ता, छत्र। ७. आड़ में, ओट में। ८. बराती।

१. माली। २. कसैली, सुपारी। ३. डाल। ४. उलाहना, उपालम्भ। ५. दुलारा, प्यारा। ६. मूल्य।

उसने सास-ससुर की नदियों में जाल डाला; पर सफलता नहीं मिली। किन्तु, जब उसने साले की नदी में जाल फैलाया, तो झट कुँआरी कन्या को फँसा लिया। लोग बिगड़े। उन्होंने पूछा कि तुमने ऐसा दुस्साहस किसके बलपर किया है और तुम्हारा परिचय क्या है? उसने अपना परिचय तो बतला ही दिया, साथ ही उसने गर्व-भरी वाणी में कहा—'मैंने किसी के भरोसे ऐसा नहीं किया है, अपनी जाँघ के पौरुष का ही मुझे भरोसा है।'

प्राचीन जमाने में होनेवाले विवाह की स्मृति दिलानेवाला यह गीत आज भी लोक-मानस में रमा हुआ है। इस गीत द्वारा स्त्रियाँ अपने दुलहे के बल का बखान करती हैं।]

अँखिआ त हवऽ[1] दुलरू[2] रतन के जोतवा[3], ओठवनि[4]
चुअले[5] गुलाब हे।
अतिना[6] सुरति[7] तोरा हलवऽ[8] दुलरू, कउना बिधि
रहलऽ कुआँर[9] हे॥१॥
बाबा जे हमर दर रे देवनियाँ[10], पितिया[11] जोतले[12] कुरखेत[13] हे।
भइया जे हमर जिरवा लदनियाँ[14], ओहे बिधि रहली कुआँर हे॥२॥
बाबा जे छोड़लन दर रे देवनियाँ, पितिया छोड़लन कुरखेत हे।
भइया जे छोड़लन जिरवा लदनियाँ, अब मोरा होएत बियाह हे॥३॥
केकर नदिया हे झिलमिल पनियाँ, केकर नदिया में बहले सेवार हे।
केकर नदिया में चेल्हवा[15] मछरिया, कउन दुलहा नावे[16] जाल हे॥४॥
सासु के नदिया में झिलमिल पनियाँ, ससुर के नदिया बहले सेवार हे।
सरवा[17] के नदिया चेल्हवा मछरिया, कवन दुलहा नावे जाल हे॥५॥
एक जाल नवलऽ[18] दुलहा, दुइ जाल नवलऽ, बझि गेलवऽ[19]
घोंघवा[20] सेवार हे।
तीसरहिं जलवा जब नवलऽ दुलरू, बझि गेल कनियाँ[21] कुआँर हे॥६॥

---

१. है। २. दुलारे, प्यारे। ३. ज्योति। ४. अधरों में। ५. चू रहा है। ६. इतना। ७. सौन्दर्य, खूबसूरती। ८. था। ९. क्वाँरा, कुमार, अविवाहित। १० ड्योढ़ी के दीवान (राजदरबार के दीवान—मंत्री)। ११. पितृव्य, चाचा। १२. जुताई करते हैं। १३. बहुत बड़े चकलेवाला खेत। जोता-कोड़ा खेत। १४. जीरे (एक तरह का मसाला) की लदनी। उसके व्यापार के लिए बैलों का कारवाँ चलता है। १५. एक छोटी-पतली चंचल मछली। १६. लगाता है, डालता है। १७. साला, पत्नी का भाई। १८. लगाया, डाला। १९. गया। २०. शंख जाति का एक कीड़ा, घोंघा। २१. कन्या।

[४३]

[इस गीत में बरात सजाने, बरात का प्रयाण, द्वार-पूजा, परिछावन, विवाह और कोहबर में प्रवेश करते समय सखियों की ठिठोली का वर्णन किया गया है। सखियों ने रामचन्द्र से परिहास करते हुए कहा—'पहले अपनी बहन का नाम बताओ, तभी कोहबर में जा पाओगे।' इसपर राम ने कहा—'मेरी तो बहन जन्मी ही नहीं। हाँ, भाई जन्मा है, जिसका नाम लक्ष्मण है। वह मेरे साथ ही आया है और वह मेरी साली को माँग रहा है।'

यहाँ रामचन्द्र किसी भी दुलहे के प्रतीक हैं और जनकपुर से ससुराल का तात्पर्य है।]

दसरथ नन्नन चलल बियाह करे, माँथ बन्हले[1] पटवाँस[2] हे॥१॥
केहिं[3] जे रामजी के पगिया सम्हारल, केहिं सजल बरियात हे।
केहिं जे रामजी के चनन चढ़ावल, साजि[4] चलल बरियात हे॥२॥
भाई भरथ रामजी के पगिया सम्हारल, दसरथ साजे बरियात हे।
माता कोसिला रानी चनन चढ़ावल, साजि चलल बरियात हे॥३॥
एक कोस गेल राम, दुइ कोस गेल, तीसरे में बोले बन काग हे।
भाई भरथ राम के पोथिया बिचारलन, काहे बोले बन काग हे।
रामजी के पोथिया धोतिया धरन[5] पर छूटल, ओही बोले बन काग हे॥४॥
जब बरियात दुआर[6] बीच आयल, चेरिया कलस लेले ठाड़[7] हे।
परिछे[8] बाहर भेलन सासु मदागिन[9], हाँथ दीपक लेले ठाड़ हे॥५॥
कवन बर के आरती उतारब, कवन बर बियहन[10] आएल हे।
जेकरहिं[11] माँथ मउरी[12] भला सोभे, तिलक सोभले लिलार हे॥६॥
ओही बर के आरती उतारब, ओही बर बियहन आएल हे।
सासु के खोइँछा[13] में बड़े बड़े खेलौना, से देखि रिझल[14] दमाद हे।
सासु के खोइँछा में मोंतीचूर के लड्डू, से देखि ठुनके[15] दमाद हे॥७॥

---

१. बाँधा। २. पटमोर। यह करीब चार अंगुल चौड़ा होता है तथा इसमें नीचे की ओर फूल बनाकर लटकाये रहते हे। इसे ललाट पर बाँधा जाता है। ३. कौन। ४. सजाकर। ५. छप्पर को धारण करनेवाली शहतीर। ६. द्वार। ७. खड़ी है। ८. परिछन करने के लिए। विवाह के समय स्त्रियाँ वर को दही-अक्षत का तिलक लगाती हैं और लोढ़ा आदि वर के माथे के चारों ओर घुमाती है। वर की रक्षा के लिए एक न्यास-विधि। ९. महाभागिन, श्रेष्ठ। १०. विवाह करने। ११. जिसके। १२. मौर। १३. आँचल, जो मोड़कर पात्र की तरह बना लिया गया है। १४. रीझ गया। १५. मान के साथ धीरे-धीरे रोना।

भेल बियाह, बर कोहबर चललन, सारी सरहज[16] छेंकलन[17]
दुआर हे।
बहिनी के नमवाँ[18] धरहु[19] बर सुन्नर, तब रउरा[20] कोहबर
जाएब हे ॥८॥
हमरहिं बंसे बहिनी नहीं जलमें[21], जलमल[22] लछुमन भाइ[23] हे।
सेहु भाइ जउरे[24] चलि आएल, माँगलक[25] सलिया बियाहि हे ॥९॥

●

[४४]

बेटा-विवाह]

[यह गीत कहीं-कहीं विवाह के समय भी गाया जाता है। वस्तुतः, यह तिलक का गीत है, जब कन्या-पक्ष के लोग लड़के के यहाँ तिलक चढ़ाने जाते हैं। इस गीत में लड़के के लिए वधू-पक्ष से आये सामान को वर-पक्षवाली स्त्रियाँ दूसती हैं और कहती हैं कि हमारे पुत्र को ठग लिया गया!]

बाबू[1] सिर जोगे[2] टोपी त न आएल।
बाबू के ठग के ले गेल, सुनहु लोगे।
बाबू के सेंतिए[3] ले गेल, सुनहु लोगे।
रामजी कोमल बर लइका[4], सुनहु लोगे ॥१॥
बाबू देह जोगे कुरता त न आएल।
बाबू के ठग के ले गेल, सुनहु लोगे।
बाबू के सेंतिए ले गेल, सुनहु लोगे।
रामजी कोमल बर लइका, सुनहु लोगे ॥२॥
बाबू गोड़ जोग धोती त न आएल।
बाबू के ठग के ले गेल, सुनहु लोगे।
बाबू के सेंतिए ले गेल, सुनहु लोगे।
रामजी कोमल बर लइका, सुनहु लोगे ॥३॥

●

---

१६. साले की पत्नी। १७. छेंक दिया, रोक दिया। १८. नाम। १९. धरो, रखो, बतलाओ। २०. आप। २१. जन्मी। २२. जन्म लिया। २३. भाई, भ्राता। २४. साथ ही। २५. माँगता है।

१. मगध में लोग पुत्र को प्यार से 'बाबू' कहते हैं। २. योग्य। ३. निःशुल्क ही, मुफ्त में ही। ४. नादान या अबोध लड़का।

सिउजी के भींजले[9] जमवा से जोड़वा[10], गउरा पर एक बुनियो[11] न परे हे।
सासु लिपलका[12] सिउजी धँगहूँ[13] न पवली, ननदिया जी के एको
उतरवो[14] न देली हे।
ओहे गुने[15] ना एको बुनियो न परे हे ॥३॥

●

[४१]

[शिव-गौरी (दुलहा-दुलहिन) के बीच चलनेवाले एक मधुर परिहास का चित्रण इस गीत में है। गौरी ने शिवजी के नशा खाने की खिल्ली उड़ाई। शिवजी ने भी गौरी के नैहर की दरिद्रता पर ताना कसा। नैहर के अपमान से झल्लाकर गौरी ने शिवजी की पैतृक सम्पत्ति का जब गुणगान आरम्भ किया, तब तो शिवजी की बोलती ही बन्द हो गई।

अपने नैहर के अपमान को स्त्रियाँ किसी भी अवस्था में सहन नहीं कर सकतीं।]

बन के करिखा[1] सिउजी, बने[2] धधकवलन[3]।
ओहे[4] करिखा सिउजी, भभूति चढ़वलन[5] ॥१॥
कहवाँ नेहयलऽ[6] सिउजी, कहवाँ छोड़लऽ झोरी[7]।
कउने अमलिए[8] सिउजी, मोतिया हेरवलऽ[9] ॥२॥
जमुना नेहइली गउरा देइ, गंगा छूटल झोरी।
भँगिए[10] अमलिए गउरा देइ, मोतिया हेरइली ॥३॥
देखलों में देखलों गउरा देइ, तोहरो नइहरा[11]।
फूटल थारी[12] गउरा देइ, चुअइत[13] लोटा।
लाजे न परसे[14] गउरा देइ, तोहरो महतारी ॥४॥

---

९. भींग गया। १०. जामा-जोड़ा, दुलहे को पहनाया जानेवाला वस्त्र, जिसका निचला भाग घाँघरादार (घेरावदार) होता है तथा कमर के ऊपर इसकी काट बगलबंदी के ढंग की होती है। ११. बूँद भी। १२. लिपा हुआ, साफ-सुथरा किया हुआ। १३. धाँगना, रौंदना (बिगाड़ना)। १४. उत्तर। १५. उसी कारण।

१. कालिख। २. वन में ही। ३. जलाया। ४. उसी। ५. चढ़ाया, लगाया, धारण किया। ६. स्नान किया। ७. झोली। ८. अमल में, नशे में। ९. भुला दिया, खो दिया। १०. भाँग के। ११. नैहर, मायका [ज्ञाति+गृह]। १२. थाली। १३. चूता हुआ। १४. परसना, परोसना, थाल में भोजन लगाना [परिवेषण]।

जब तुहूँ उकटलऽ[१५] सिउजी, हमरो नइहरा ।
हमहूँ उकटबो सिउजी, तोरो बपहरा[१६] ॥५॥
सातो कोठिलवा[१७] सिउजी, सातो में पेहान[१८] ।
हाँथ नावे[१९] चलली सिउजी, एको में न धान ॥६॥
छनियाँ[२०] एक देखली सिउजी, ओहो तितलउका[२१] ।
चेरिया एक देखलीं सिउजी, सबुजी[२२] सेयान ।
बावाँ[२३] गोड़[२४] लँगड़ी, दहिना आँख कान[२५] ॥७॥
बएला[२६] एक देखली सिउजी, गोला[२७] रे बरधवा[२८] ।
कउआ[२९] मारे ठोकर सिउजी, दँतवा निपोरे[३०] ॥८॥

●

[४२]

राम-विवाह]

किनका[१] के एहो[२] दूनूँ कुवँरा[३] , जनक पूछे मुनि जी से ॥१॥
गाई के गोबर अँगना निपावल, गजमोती चउका पुरावल[४] ।
धनुस देलन ओठगाँई[५] , जनक पूछे मुनि जी से ॥२॥
जे एहो धनुस करत तीन खंड, सीता बियाह घरवा ले जायत हो ।
किनका के एहो दूनूँ कुवँरा, जनक पूछे मुनि जी से ॥३॥
उठला सिरी रामचन्दर धनुस उठवला ।
धनुस कयला[६] तीन खंडा, जनक पूछे मुनि जी से ॥४॥
भेलो[७] बियाह, चलल राम कोहबर[८] , मुनि सब जय जय बोले ।
अब सिय होयल[९] बियाह, जनक पूछे मुनि जी से ॥५॥

●

१५. उघटन, दबी-दबाई बात को उभाड़ना । १६. बाप का घर । १७. अन्न रखने की कोठी । १८. ढक्कन । १९. लगाने, डालने । २०. छप्पर (छादन) । २१. तीता कद्दू । २२. सब्ज रंग की, साँवले रंग की । २३. वाम, बायाँ । २४. पैर । २५. काना । २६. बैल । २७. पीले और लाल रंग का रोमवाला । इस रंग का बैल किसी काम का नहीं होता । कहावत है—'कइल, करियवा, गोला, तीनों माघ में डोला ।' २८. बैल [बलीवर्द] । २९. काक, कौआ । ३०. निपोड़ना ।

१. किसका । २. ये । ३. कुमार, पुत्र । ४. पूर्ण करना, भरना, वेदी की आकृति में अल्पना करना । ५. उठँगा दिया, किसी चीज के सहारे रख दिया । ६. किया । ७. हुआ । ८. विवाह सम्पन्न हो जाने पर दुलहा-दुलहिन का वह घर, जिसमें कुल-देवता की पूजा तथा कुछ अन्य विधियाँ सम्पन्न की जाती है । ९. हो गया ।

जर गेल दियवा सपुरन[१४] भेल बाती ।
खेलहुँ न पयलऽ[१५] दुलरुआ[१६] चारो पहर राती ॥६॥
तोरहिं जँघिआ[१७] हो परभु, निंदो[१८] न आवे ।
बाबा के जँघिआ हो परभु, निंद भल आवे ॥७॥
बाबा के जँघिया हे सुघइ[१९], दिन दुइ-चार ।
मोरा जँघिया हो सुघइ, जनम सनेह[२०] ॥८॥

●

[३९]

[शिव के मना करने पर भी अनामंत्रित गौरी अपने पिता दक्ष के यज्ञ में सम्मिलित होने जाती हैं । वहाँ अपमानित होकर वे अग्नि-कुंड में कूद जाती हैं । समाचार प्राप्त कर शिव ने दक्ष-यज्ञ पर धावा बोल दिया । वे दक्ष-यज्ञ का विध्वंस करने लगे । इतनी बात तो पौराणिक है । इसके बाद लोक-मानस की भावना के अनुसार शिवजी की सास उनसे प्रार्थना करती हैं कि यज्ञ का ध्वंस मत करो । मैं तुमको दूसरी गौरी दूँगी और फिर से परिछूँगी ।]

मिनती[१] से बोलले गउरा देइ, सुनहु महादेव हे ।
मोरा नइहरवा में जग[२] होले, जग देखे जायम[३] हे ॥१॥
मिनती से बोलथिन[४] महादेव, सुनहु गउरा देइ हे ।
बिना रे नेवतले[५] गउरा जनि[६] जाहु, तोहरो[७] आदर नाहिं हे ॥२॥
केकरो[८] कहलिया[९] गउरा नाहिं कएलन[१०], अपने चलि गेलन हे ।
नाहिं चिन्हे[११] माए बाप, नाहिं चिन्हे नगर के लोगवा हे ॥३॥
एक त चिन्हले[१२] बहिनी गाँगो[१३], उठि अँकवार[१४] कइले हे ।
बिना रे नेवतले बहिनी आएल, तोहरो आदर नाहिं हे ॥४॥
कने[१५] गेल, किया भेल[१६] बराम्हन, अगिनी कुंड खानहु[१७] हे ।
जब रे बराम्हन कुंड खनलन[१८], गउरा कूदि पड़लन हे ॥५॥

१४. सम्पूर्ण, समाप्त । १५. पाया । १६. दुलारा, प्यारा । १७. जाँघ । १८. नींद भी । १९. सुघरी, सुन्दरी । २०. जन्म-भर का स्नेह ।

१. विनती । २. यज्ञ । ३. जाऊँगी । ४. बोलते हैं । ५. निमंत्रित । ६. मत, नहीं । ७. तुम्हारा । ८. किसका । ९. कहना । १०. किया । ११. पहचानते हैं । १२. पहचाना । १३. गंगा बहन । १४. भुजपाश में पकड़कर गले मिलना, छाती से लगाना । [अङ्कपालि; अङ्कमाल] । १५. किधर । १६. क्या हुआ । १७. खोदो । १८. खोद दिया ।

जब रे गउरा कूदि पड़लन, महादेव धावा चढ़लन[19] हे।
मिनती से बोललन सासु, सुनहु महादेव हे ॥६॥
मोरा घर आजु जग होले[20], जग जनि भाँड़हु[21] हे।
गउरा के बदल[22] गउरा देहब, फिनु शिव परिछब[23] हे ॥७॥

●

[४०]

[इस गीत में दुलहे के प्रति दुलहिन की एकान्त निष्ठा की चर्चा की गई है। वनवास के समय जिस तरह राम के साथ सीता वन को गईं, उसी तरह इस गीत में शिवजी के पूर्वी देश में वाणिज्य के लिए जाते समय पार्वती भी उनके साथ जा रही हैं। शिवजी ने बहुत समझाया कि बीहड़ मार्ग में भूख-प्यास से व्याकुल हो जाओगी, अतः मेरी बात मानो, घर लौट जाओ। गौरी ने उत्तर दिया—'तुम्हारे लिए भूख-प्यास क्या है? जब तुम्हें भाँग-धतूरे का नशा लगेगा, उस समय मैं पंखा झलूँगी।'

रास्ते में पानी बरसा। शिवजी तो भींग गये, पर गौरी पर एक बूँद भी नहीं पड़ी। शिवजी ने पूछा यह क्या बात है? तब गौरी ने उत्तर दिया कि मैंने सास की कभी अवहेलना नहीं की और न अपनी ननद की बातों का कभी उत्तर दिया। उसी के प्रताप से ऐसा हुआ।

यहाँ दुलहे-दुलहिन के प्रतीक शिव और गौरी हैं। इस गीत के द्वारा दुलहिन को उपदेश है कि पति में गौरी की तरह निष्ठा रखना, न कभी सास की अवहेलना करना और न ननद की बातों का उत्तर देना।]

सिउजी जे चललन पुरबी[1] बनीजिआ[2], गउरा देइ भेलन[3] संघ साथ हे।
फिरु फिरु[4] गउरा हे, हमरी बचनियाँ, मरि जइबऽ भुखवे पियास हे ॥१॥
भुखवे पियसवे सिउजी तोर पर[5] तेजम[6],
भँगवा धतुरवा के लगि जइहें निसवा[7] हे।
गउरा सुन्नर रस बेनियाँ[8] डोलइहें हे ॥२॥

---

१९. चढ़ाई कर दी, धावा बोल दिया। २०. होता है। २१. नष्ट-भ्रष्ट करो। २२. बदले में। २३. परिछूँगी (बरात द्वार लगने के बाद वर का विधि-विशेष से स्वागत होता है, जिसे 'परिछन' कहते हैं।)

१. पूर्व देश को। २. वाणिज्य के लिए। ३. हुई। ४. फिरो, लौट जाओ। ५. तुम्हारे ऊपर। ६. त्यागूँगी, वार दूँगी। ७. नशा। ८. पंखा (सरस हवा देनेवाली पंखी) [व्यजन]।

कउना रिखइया[22] के हहु तुहूँ नाती परनाती हे, कउना
रिखइया के हहु तुहूँ पूत हे।
कउने भरोसे[23] तुहूँ जलवा लगवलऽ, कहवाँहि बेख[24] तोहर हे ॥७॥
कवन सिंह के हीं[25] हम नाती परनाती, **कवन** सिंह के हम पूत हे।
जँघिया भरोसे[26] हम जलावा लगवली, **कवन** पुर बेख हमार हे ॥८॥

●

[४८]

बारह बरीस के नन्हुआँ[1] **कवन** दुलहा, खेलत गेलन बड़ी दूर।
उहवाँ[2] से लइलन[3] हारिले सुगवा[4], लिहलन हिरदा लगाय ॥१॥
सब कोई पेन्हें अँगिया[5] से टोपिया, सुगवाहि अलुरी[6] पसार[7]।
हमरा के चाहीं मखमल चदरिया, हमहूँ जायब बरियात ॥२॥
सब कोई चढ़लन हथिया से घोड़बा, हमरा के चाहीं सोने के पिंजड़वा।
हमहूँ जायब बरियात ॥३॥
सब कोई खा हथी[8] पर पकवनवाँ, हमरा के चाहीं बूँट[9] के भँगरिया[10]।
हमहूँ जायब बरियात ॥४॥
सब कोई देखे बर बरियतिया, सासु निरेखे धियवा दमाद।
अइसन[11] लाढ़ी[12] रे बर कतहूँ न देखलूँ, सुगवा लिहलन बरियात ॥५॥
आहि[13] जे माई पर परोसिन, सुगवा के डीठि जनि नाओ[14]।
बन केइ सुगवा बनहिं चली जइहें, संग साथी अइले बरियात ॥६॥

●

---

२२. यहाँ ऋद्धिमान् से तात्पर्य है। ऋषि। २३. सहारे, बल से। २४. 'बेख' फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ मूल, जड़ या नींव होता है। किन्तु, मगही अथवा भोजपुरी में 'बेख' गाँव, घर या संपत्ति को कहते हैं; क्योंकि किसी व्यक्ति की वास्तविक जड़ तो उसका 'घर' या 'गाँव' ही होता है। २५. हूँ। २६. अपनी ही जाँघ के बल पर, अर्थात् अपने पराक्रम के विश्वास पर।

१. नन्हा, छोटा। २. उस जगह, वहाँ। ३. लाया। ४. हारिल तोता। ५. कुरता, अँगरखा। ६. हठ, जिद। ७. पसारना। ८. खाते हैं। ९. चना। १०. हरे चने की ढेंढ़ी (फली)। ११. ऐसा। १२. लाड़ला। १३. 'माई' का अनुवादात्मक प्रयोग। १४. लगाओ।

[४६]

नीमिया रे कड़ुआइन[१], सीतल बतास बहे हे।
ताहि तरे ठाढ़[२] दुलरइता दुलहा, नयना दुनो लोर[३] ढरे हे ॥१॥
घर से बाहर भेलन दुलरइता दादा, काहे बाबू लोर ढरे हे।
किया बाबू आजन बाजन थोड़ा भेल, साजन[४] धुमइला[५] भेल हे ॥२॥
माइ के जनमल दुलरइता भइया, सेहु न जौरे[६] जयतन हे।
पाँचो भइया पाँचो दहिन बहियाँ[७] जइहें, जौरे बहनोइया जइहें हे ॥३॥

●

[५०]

बाबू के मउरिया[१] में लगले अनार कलिया[२]।
अनार कलिया हे, गुलाब झरिया[३]।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया ॥१॥
बाबू सरहज से बोलिहऽ अमीर[४] बोलिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया ॥२॥
बाबू के जोरवा[५] में लगले अनार कलिया।
अनार कलिया हे, गुलाब झरिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया ॥३॥
बाबू के अँगुठी में लगले अनार कलिया।
अनार कलिया हे, गुलाब झरिया।
बाबू धीरे से चलिहऽ ससुर गलिया ॥४॥

●

[५१]

[इस गीत में बेटा की बरात साजने, ले जाने तथा पहुँचने पर वर और कन्या में कुछ बातें बढ़ जाने की चर्चा है। वर को अपने पौरुष का घमंड है, तो कन्या भी, जो अपने पिता और भाई की दुलारी है, आसानी से पति के आधिपत्य को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। पति अपने घर चलकर उसके दिमाग को देखने की

१. स्वाद में कड़वा। २. खड़ा। ३. अश्रु, आँसू। ४. सजावट, कपड़े, पहनावे आदि। ['आजन-बाजन' के तुक पर 'साज' का 'साजन' हो गया है।] ५. धूमिल; मलिन; मैला। ६. साथ में। ७. दाहिनी भुजा के समान निरंतर रक्षक; सहायक।

१. माथे का मौर। २. अनार की कली। ३. गुलाब की झड़ी (पंखुड़ियाँ)। ४. अमीर, शिष्ट व्यक्ति। ५. दुलहे को पहनाया जानेवाला वस्त्र, जिसका निचला भाग घाँघरादार (घेरादार) होता है तथा कमर के ऊपर इसकी काट बगलबंदी के ढंग की होती है।

धमकी देता है। बरात लौटकर गाँव आने पर दुलहा-दुलहिन के गृह-प्रवेश करते समय दुलहे की बहन नेग लेने के लिए द्वार रोकती है और दुलहा नेग देने का वादा करता है। बरात की आधुनिक सारी परिपाटी इस गीत में चित्रित है।]

चललन कवन साही[१] बजना[२] बजाइ हे।
दहकि[३] चिरइया सब उठलन चेहाइ[४] हे ॥१॥
का तुहूँ चिरइया सब उठलऽ चेहाइ हे।
हमरा कवन पुता बियाहल[५] जाइ हे ॥२॥
बइठलन कवन साही जाजिम डसाइ[६] हे।
जँघिया कवन पुता कचरल[७] पान हे ॥३॥
बइठलन कवन भँड़ुआ खरइ[८] डसाइ हे।
जँघिया[९] दुलारी बेटी लट छटकाइ[१०] हे ॥४॥
फेंकलन कवन दुलहा बिरवा[११] पचास हे।
बिड़वो न लेवे सुगइ[१२], मुखहूँ न बोले हे ॥५॥
केकरा दिमागे[१३] हे सुगइ, बिरवो न लेवे हे।
केकरा दिमागे हे सुगइ, मुखहूँ न बोले हे ॥६॥
बाबा के दिमागे जी परभु, बिरवो न लेवीं[१४] हे।
भइया के दिमागे जी परभु, मुखहूँ न बोली हे ॥७॥
ऊँचे चउरा[१५], नीचे चउरा, कवन पुर नगरिया हे।
हुएँ[१६] तोरा देखब हे सुगइ, बाबा के दिमाग हे ॥८॥
हुएँ तोरा देखब हे सुगई, भइया के गुमान हे।
चलु चलु बरियतिया[१७] सब, अपनो दुआर हे।
भरले मजलिसवे सुगइ, देलन जबाब हे।
चलु चलु बरियतिया सब, अपनो दुआर हे ॥९॥

१. एक जातीय उपाधि। २. विविध बाजे, वाद्य। ३. कलेजे में धक्क से हो जाना, धड़कन बढ़े हृदय से। ४. चौंक उठना। ५. ब्याहने, विवाह करने। ६. डसाकर, बिछाकर। ७. कच-कच करके चबाना। ८. खर या मूँजपत्र की चटाई। ९. जाँघ पर। १०. सिर के केश-कलाप की लटों को बिखेरकर। बिहार-प्रदेश में प्रायः सर्वत्र विवाह के समय कन्या के केश बाँधे नहीं जाते हैं, खुले रहते हैं। कन्या को अपनी जाँघ पर बैठाकर पिता विधि सम्पन्न करता है और कन्यादान करता है। उसी का उल्लेख यहाँ किया गया है। ११. पान के बीड़े। १२. सुगृहिणी अथवा अतिशय प्यार में पत्नी के प्रतीक में शुकी शब्द का व्यवहार होता है। १३. अभिमान से। १४. लेती हूँ। १५. चबूतरा, चौपाल। १६. वहीं। १७. बराती, बरात में आये लोग।

हमरा *कवन* बहिनी, छेंकले[१८] दुआर हे।
छोड़ू छोड़ू अगे बहिनी, हमरो दुआर हे।
अवइथथुन[१९] दुलारी भउजो, लीहऽ खोइँछा[२०] झार[२१] हे ॥१०॥
भउजी के भइया बाप, निपटे गँवार हे।
खोइँछा में देलन हो भइया, एहो दुभि धान[२२] हे ॥११॥
छोड़ू छोड़ू अगे बहिनी, हमरो दुआर हे।
तोहरा के देबो गे बहिनी, कंठा[२३] गढ़ाय हे।
पाहुन[२४] के देबो गे बहिनी, चढ़ेला घोड़बा हे ॥१२॥

[५२]

हम तोरा पूछिला[१] *कवन* अलबेलवा।
के रे[२] सम्हारे बाबू के एहो रँगल मउरिया ॥१॥
मलिया के जलमल[३] बँगाली बहनोइया।
ओही रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल मउरिया ॥२॥
हम तोरा पूछिला *कवन* अलबेलवा।
के रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जोड़वा[४] ॥३॥
दरजिया के जलमल बँगाली बहनोइया।
ओही रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जोड़वा ॥४॥
हम तोरा पूछिला *कवन* अलबेलवा।
के रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जुतवा ॥५॥
चमरा के जलमल बँगाली बहनोइया।
ओही रे सम्हारे बाबू के एहो रँगल जुतवा ॥६॥

---

१८. दरवाजा छेंकना। 'दुआर छेंकाई' एक वैवाहिक रीति है। विवाह करके लौटने पर वर की बहन उनके (दुलहे-दुलहिन) गृह-प्रवेश करते समय दरवाजे पर खड़ी होकर रोक लेती है और कुछ नेग या उपहार लेकर छोड़ती है। १९. आती हैं। २०. आँचल का अगला भाग, जिसे मोड़कर झोली की तरह बनाया जाता है। बेटी-पतोहू के कहीं जाते समय खोंइछा में चावल, दूब, हल्दी, रुपये आदि बाँध देने की प्रथा है। खोंइछा यात्रा समाप्त होने पर ही खोला जाता है। २१. झाड़ लेना। २२. दूर्वादल और धान। २३. कण्ठ का एक आभूषण। २४. बहनोई।

१. पूछते हैं। २. कौन रे! ३. जन्मा हुआ। ४. दे०—वि० गी० सं० ५०, टि० ५।

[५३]

सभवा बइठल तोहें बाबा, बाबा बगिया[१] में कइसन[२] इँजोर[३] ?
तूं नहीं जाने दुलरइतिन बेटी, आयल घेरी[४] बरिआत ॥१॥
कउन रँग हथिन[५] बर बरियतिया, कउन रँग हुनकर[६] दाँत।
सोने रँग बरवा, रूपे रँग बरियतिया, पनमा रँगल हुनकर दाँत ॥२॥

[५४]

[इस गीत में बरात, डाला-दौरा और दुलहे को सजाने का उल्लेख किया गया है। जिसके जिम्मे जिस वस्तु को सजाने का काम होता है, उसी से निवेदन किया गया है।

सभवा बइठल तोहें दादा, सभे[१] दादा उठिकर।
हे साजहु बरियतिया उठिकर, हे साजहु
बरियतिया उठिकर ॥१॥
मचिया बइठली तोहें दादी, सभे दादी उठिकर।
हे साजहु डाला दउरवा[२] उठिकर, हे साजहु
डाला दउरवा उठिकर ॥२॥
ससुरा से आयती बहिन सभे, बहिनी उठिकर।
हे आँजहु[३] भइया अँखिया उठिकर ॥३॥
कथि[४] लाय[५] मुहँमा उगारब[६] कथिलाय।
हे आँजहु भइया के अँखिया उठिकर ॥४॥
तेल रे उबटन लाए मुहँमा उगारब।
कजरवा[७] लाय हे आँजब भइया के
अँखिया उठिकर ॥५॥

[५५]

बरसय जी बाबू, रिमझिम बुँदवा, बरसय जी ॥१॥
हाथी साजूँ, घोड़ा साजूँ, साजूँ बरियतिया।
साज देहु जी बाबा, दँड़िया[१] सवरिया, साज देहु ॥२॥

---

१. बागीचा। २. कैसा। ३. उद्योत, प्रकाश। ४. घेरकर। ५. हैं। ६. उनका।
१. सब। २. डाला-दौरा (इनमें मिष्टान्न, कपड़े आदि सजाये जाते हैं)। ३. अंजन करो। ४. किस (वस्तु)। ५. लाकर। ६. उगाना, साफ करना। ७. काजल।
१. पालकी।

हाथी के पाँव धइले मामा[2] खड़ी है, सुन लेहु जी ।
बाबू हमरी बचनियाँ, सुन लेहु जी ॥३॥
कइसे में सुनिश्रो मामा, तोहरी बचनियाँ ।
जा हियो[3] जी मामा, धनि के उदेसवा[4] ।
बियाहन[5] को मामा, राजा बंसी[6] बेटिया ॥४॥

●

[५६]

[इस गीत में उस समय की चर्चा है, जब दुलहिन के द्वार पर बरात आकर लग गई है। दोनों पक्षों में खटपट हो गई है। दुलहिन की माँ कहती है कि दुलहा पेड़ के नीचे खड़ा है, बरात के हाथी प्यासे हैं और घोड़े भूखे हैं। बराती धूप के मारे हैं, फिर भी पैर नहीं धो रहे हैं। दुलहा झगड़ालू है, वह किसी को प्रणाम तक नहीं कर रहा है। बरात को सारी सुविधा देकर खुश करने का वर्णन इस गीत में हुआ है।]

हमरो **कवन** बाबू बिरीछ[1] तर खाड़ा गे माइ ।
थर थर काँपइ गे माइ ॥१॥

हथिया पियासल आवइ, सुढ़ँवा उनारइ[2] गे माइ ।
घोड़वा भूखल आवइ लगमियाँ[3] चिबावइ[4] गे माइ ॥२॥
लोगवन[5] रउदाइल[6] आवइ, पैरवो न धोवइ गे माइ ।
दुलहा झउराहा[7] आवइ, सिरवो न नेवावइ[8] गे माइ ॥३॥
हथिया के पोखरा देबइ, सुँढ़वो न उनारइ गे माइ ।
घोड़वा के दाना देबइ, लहलह दुभिया[9] गे माइ ॥४॥
लोगवन के पटुर[10] देबइ, पैरवा जे धोवइ गे माइ ।
दुलहा के कनियाँ[11] देबइ, सिरवा नेवावइ गे माइ ॥५॥

●

---

२. दादी । ३. जा रहे हैं । ४. उद्देश्य, खोज में । ५. ब्याह लाने के लिए । ६. राजवंशी, राज-खानदान की ।

१. वृक्ष । २. उनारना, ऊपर की ओर उठाना [उन्नाय अथवा उन्नाह]। ३. लगाम। ४. चर्वण करता है, चबाता है। ५. लोग सब, सर्वसाधारण बराती। ६. रौद्रायित, धूप से आकुल। ७. झगड़ालू, हठी। ८. नवाता है, प्रणाम करता है। ९. दूब, दूर्वा। १०. पट-दुकूल, चादर। ११. कन्या। मगध और भोजपुर में दुलहिन को भी कन्या कहा जाता है।

[५७]

अपनी महलिया से मलिया मउरी[1] गुथइ[2] ।
जहाँ **कवन** बाबू खाड़[3] जी ॥१॥
मैं तोरा पूछूँ मलियवा हो भइया ।
केते दूर बसे ससुरार जी ॥२॥
तोर ससुररिया, बाबू, मउरिया से खैंचल[4] ।
चुनमें[5] चुनेटल[6] तोर दुआर जी ॥३॥
मोतिया चमकइ बाबू, तोहर ससुररिया ।
चारो गिरदा[7] गड़ल हो निसान[8] जी ॥४॥
अपनी महलिया में दरजी जोड़ा[9] सियइ ।
जहाँ **कवन** बाबू खाड़ जी ॥५॥
मैं तोरा पूछूँ दरजियवा हो भइया ।
केते दूर बसे ससुरार जी ॥६॥
तोर ससुररियां बाबू, जोड़वा से खैंचल ।
चुनमें चुनेटल तोर दुआर जी ॥७॥
मोतिया चमकइ बाबू, तोहर ससुररिया ।
चारो गिरदा गाड़ल हइ निसान जी ॥८॥

●

[५८]

[इस गीत में आभूषणों का वर्णन है, जिन्हें दुलहा अपनी दुलहन को अपने हाथ से पहना रहा है]

टिकवा[1] ओलरि[2] गेल माँग से,
दुलहा पेन्हावे[3] हाँथ से, गभरू[4] पेन्हावे हाँथ से ।
अहियात[5] बाढ़े भाग से, सोहाग[6] बाढ़े भाग से ॥१॥

---

१. मौर। २. गूँथता है। ३. खड़ा। ४. खचित। ५. चूने से। ६. चूने से पोता हुआ। ७. गिर्द, तरफ। ८. डंका अथवा चिह्न, अर्थात् चारों ओर झंडे गड़े हैं और डंके बज रहे हैं। ९. दे०—वि० गी० सं० ५०, टि० ५।

१. मंगटीका (सिर का एक आभूषण)। २. निश्चित स्थान से च्युत हो जाना, लुढ़क जाना। ३. पहनाता है। ४. वह स्वस्थ नौजवान, जिसकी मसें भींग रही हों। ५. अहिवात, अविधवात्व। ६. सौभाग्य, सुहाग।

कंठवा[७] ओलरि गेल गल्ला[८] से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से ॥२॥
बलवा[९] ओलरि गेल लिलुहा[१०] से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से ॥३॥
छागल[११] ओलरि गेल पाँव से,
दुलहा पेन्हावे हाँथ से, गभरू पेन्हावे हाँथ से।
अहियात बाढ़े भाग से, सोहाग बाढ़े भाग से ॥४॥

●

बन्ना]

[५९]

आज लाड़ो[१] केरा अजबी बहार रे बना।
बाना,[२] सुरती[३] गजबी सोहार[४] रे बना ॥१॥
बाना, अपन अपन नयनमा[५] सम्हार रे[६] बना।
बाना, लगी जयतउ नजरी के बान रे बना ॥२॥
बाना, दुलहा हइ दुलहिन के जोग रे बना ॥३॥

●

[६०]

बाना, माँगे दुलहवा बहार,[१] बहार देउँ सरहज[२]।
बाना, माँगे दुलहवा ननद के, ननद देउँ सरहज ॥१॥
माथा में दुलहा के मउरी न हइ।
बाना, माँगे दुलहा मोती के हार, हार देउँ सरहज ॥२॥

●

---

७. कंठा, गले का आभूषण। ८. गला, कंठ। ९. बाला, कलाई में पहना जानेवाला कड़ा। १०. कलाई के आगेवाला हाथ का भाग। ११. पैर में पहना जानेवाला एक आभूषण, पायल।

१. लाड़ली। २. भद्र, दुलहा। ३. शक्ल-सूरत। ४. शोभायमान, सुन्दर। ५. नयन। ६. सँभालो।

१. आनन्दोपभोग का अवसर। २. साले की पत्नी।

[६१]

तोहर मउरी हवऽ नव लाख के।
जरा जइहऽ[१] काँटे कुसे बच के ॥१॥
नदी नाले से चलिहऽ सँम्हर के[२]।
जरा लाड़ो[३] से रहिहऽ सँम्हर के ॥२॥

●

[६२]

बाबू, दादी पूछतूँ ह[१] घड़ी रे घड़ी।
बाबू कइसन[२] बनल हो[३] ससुर के गली ॥१॥
मामा,[४] का तूँ पूछऽ हऽ[५] घड़ी रे घड़ी।
मामा, सोने के महल ससुर के गली ॥२॥
बाबू, झुट्ठो बड़ाई हमरा से करी।
कादो कीचड़ भरल हे ससुर के गली ॥३॥
बाबू, भूल गेलऽ आपन बाबू के गली ॥४॥

●

[६३]

[इस गीत में दुलहे द्वारा ससुराल की प्रशंसा और उसके घरवालों द्वारा उसके ससुराल की शिकायत का वर्णन है।]

बन्ना[१] दादी पूछे हँसि हँसि बात रे बना।
बन्ना, कइसन हथुन[२] तोहर ददियासास[३] रे बना ॥१॥
बन्ना, हमर ददियासास जइसन दूध रे बना।
बन्ना, छप्पन रंग[४] खइली[५] ससुरार रे बना ॥२॥
बन्ना, एतना बड़इया मति करु रे बना।
बन्ना, खट्टा दही अइसन[६] तोरे सास रे बना ॥३॥
बन्ना, झोर भात[७] खयलऽ ससुरार रे बना ॥४॥

●

---

१. जाना। २. सँभलकर। ३. लाड़ली (दुलहिन)।

१, पूछती हैं। २. किस तरह की, कैसी। ३. बनी है। ४. दादी। ५. पूछती हो।

१. दुलहा। २. हैं। ३. पत्नी की दादी। ४. छप्पन प्रकार के भोजन। ५. खाया, भोजन किया। ६. ऐसी। ७. झोल-भात, शोरबा (रस्सा) और भात।

[६४]

टोना]

[यह गीत उस समय गाया जाता है, जब दुलहिन-दुलहे को टोना-टोटका से बचाये जाने की विधि की जाती है। इसमें दुलहिन को मछली माना गया है, जो नैहर के जलाशय से निकलकर ससुराल की छोटी नदी में आ गई है। दुलहा जाल में फँसाकर जलाशय से उसे निकाल लाया है। दूसरी ओर यह भी कहा गया है कि वह लड़की अद्भुत है, जिसने टोना करके मेरे लड़के को भरमा लिया है। इसमें दुलहे और दुलहिन के गाँवों की प्रशंसा भी की गई है।]

कवन पुर तलाओ[1] के मछरी, नदी नाला में आयो जी,
बाबा प्यारे टोना[2]।
नदी नाला में आयो जी भइया प्यारे टोना ॥१॥
कहवाँ के अइसन[3] गभरू[4] जिनि जाल लगायो जी,
जिनि जाल लगायो जी, भइया प्यारे टोना ॥२॥
कहवाँ के अइसन बेटिया जिनि लाल भोरायो जी,
बाबा प्यारे टोना।
जिनि लाल भोरायो जी, भइया प्यारे टोना ॥३॥
कवन पुर के अइसन गभरू जिनि जाल लगायो जी,
बाबा प्यारे टोना।
जिनि जाल लगायो जी, भइया प्यारे टोना ॥४॥
कवन पुर के अइसन बेटिया, जिनि लाल भोरायो जी,
बाबा प्यारे टोना।
जिनि लाल भोरायो जी, भइया प्यारे टोना ॥५॥

●

[६५]

बेटी के दादा सौदागर रे टोनमा[1]।
हथिया चढ़ल जोग[2] बेचथी रे टोनमा ॥१॥

---

१. तालाब, जलाशय। २. यह गीत टोना-टोटका का है। इसलिए, अन्त में 'टोना' का व्यवहार किया गया है। यह विधि इसलिए की जाती है, जिससे दुलहे या दुलहिन को किसी का टोना न लग जाय। ३. ऐसा। ४. वह स्वस्थ नौजवान, जिसकी अभी मसें भींग रही हों।

१. 'टोना-टोटका' को 'जोग-टोना' भी कहा जाता है। २. यह विवाह की विधियों में एक विधि है। कन्या के साथ उसकी सखी-सहेलियाँ इस गीत को गाती हुई घर-घर घूमती हैं तथा अक्षय सौभाग्य प्राप्त करने की माँग करती हैं। इसमें सुहागिनों के सिंदूर आदि से कन्या का शृंगार करती हैं। मगध में इसे 'जोग' कहा जाता है। यह इसलिए किया जाता है कि किसी का जोग-टोना दुलहिन पर नहीं लगे।

बेटा के बाप भँड़ुहवा[3] रे टोनमा।
गदहा चढ़ल जोग खरीदथी[4] रे टोनमा ॥२॥
चउका[5] चढ़ल बेटी बिहँसथी रे टोनमा ॥३॥

●

[६६]

कहमाँ से बेटा आएल रे टोनमा।
केकर[1] गली आइ भरमल[2] रे टोनमा ॥१॥
पटना सहरवा से अयलूँ रे टोनमा।
ससुरा गलियवा[3] मैं भरमलूँ रे टोनमा ॥२॥
गोड़ परूँ टोनमा न मारिहऽ[4] रे टोनमा।
बाबा, हम ही एकलउता[5] बेटा रे टोनमा ॥३॥

●

[६७]

[इस गीत में आँगन में लगे लौंग के पेड़ के फूलों को चुनकर ताबीज बनाकर दुलहे को पहनाने का उल्लेख है, जिससे दुलहे पर किसी की नजर न लग जाय।]

बाबा के अँगना लवँग केर गछिया[1]।
फूल चुअए[2] चारो कोना, रे मेरो टोना ॥१॥
फूल चुन चुन तबीज[3] बनैलों[4]।
बान्हू[5] दुलरइता दुलहा बाजू[6], रे मेरो टोना ॥२॥

●

[६८]

सहाना]

[सहाना का तात्पर्य शाही गीत से होता है। इसी शब्द से 'शहनाई' भी बनता है, जिससे शाही बाजे का बोध होता है। शहाना और शहनाई का उपयोग वस्तुतः ब्याह के अवसर पर ही किया जाता है।]

---

३. भड़ुवा, एक गाली। ४. खरीदते हैं। ५. चौका (अल्पना से चित्रित वेदी)।

१. किसको। २. भटक गया। ३. गलियों में। ४. मारना। ५. एकलौता, एकमात्र।

१. गाछ। २. चूते हैं, टप-टप गिरते हैं। ३. ताबीज। ४. बनाया। ५. बाँधता हूँ। ६. बाजू, भुजा।

हरियर[1] मड़वा धयले[2] मउरिया सम्हारइ बंदे।
मउरी के झोंक मजेदार, झमाझम रे बंदे।
दुलहा के मउरी से छुटल पसेना बंदे।
दुलहिन के चाकर[3] बंदे, दाँवँन[4] से पोंछल पसेना बंदे ॥१॥
हरियर मड़वा धयले मोजवा[5] सम्हारइ बंदे।
मोजा पर जुत्ता मजेदार, झमाझम रे बंदे, चमाचम रे बंदे।
दुलहा के मोजा से छुटल पसेना बंदे।
दुलहिन के चाकर बंदे, दाँवँन से पोंछल पसेना रे बंदे ॥२॥
हरियर मड़वा धयले, दुलहिन सम्हारइ बंदे।
दुलहिन के घूँघुट मजेदार झमाझम रे बंदे, चमाचम रे बंदे।
दुलहा के अंग से छुटल पसेना बंदे।
दुलहिन के चाकर बंदे दाँवँन से पोंछल पसेना रे बंदे ॥३॥

[६९]

टिकवा[1] कारन लाड़ो[2] रूस[3] रहल रे, टिकवा कहाँ रे गिरे?
टिकुली कारन लाड़ो गोसा[4] से भरे, टिकुली कहाँ रे भुले? ॥१॥
गंगा में गिरल, जमुना दह[5] पड़ल, टिकवा कहाँ रे गिरे?
पाँव पड़ि बनरा[6] मनावे रे लाड़ो, टिकवा खोजि खोजि लायम[7] ॥२॥
गंगा में देब महाजाल, जमुनमा दह डूबि डूबि लायम।
लगे देहु हाजीपुर[8] बजार, टिकवा कीनि कीनि[9] लायम ॥३॥
जाये देहु हमरो बनीज[10], टिकुली रंगे रंगे[11] लायम।
लाइ देबो नौलखहार[12] सेजिया चकमक रे करे ॥ ४॥

१. हरे-हरे (बाँसों के)। २. धरकर, पकड़कर। ३. नौकर। ४. दामन, आँचल। ५. पैर में पहननेवाला पायतावा।

१. मँगटीका, माँग के ऊपर पहना जानेवाला आभूषण। २. लाड़ली दुलहन। ३. रूठना। ४. गुस्सा, क्रोध। ५. झील [ह्रद]। ६. बन्ना (दुलहा) का अपभ्रंश 'बनरा' है। इस अपभ्रंश के प्रयोग से दुलहे को बन्दर भी बनाया गया है, जिसे मदारी अनेक तरह से नचाता है। यहाँ दुलहन को मदारी माना गया है। ७. लाऊँगा। ८. बिहार प्रदेश में 'हाजीपुर' का बाजार कभी बहुत प्रसिद्ध था। मुसलमानी शासन में 'हाजीपुर' उन्नति की चोटी पर था, इसलिए ग्रामीण गीतों में प्रायः बाजार के लिए 'हाजीपुर' का व्यवहार होता है। ९. खरीदकर, क्रय करके। १०. वाणिज्य पर। ११. रंग-विरंग की। १२. नौ लाख मुद्रा का हार—'नौलखा हार'।

[७०]

नहछू]

[विवाह में नहछू (नख काटने) की विधि जब होने लगती है, तब यह गीत गाया जाता है। नाइन जब दुलहन का नख काटने लगी, तब उसके मुख की सुन्दरता देखती रह गई। अन्त में वह नख-कटाई का प्रचुर और कीमती नेग प्राप्त कर हँसते-बिहँसते घर गई।

जबे पग छुअलक[1] नउनियाँ[2], जय-जय कहु सिय के।
लछमी बिराजे हिरदा द्वार[3], जय जय कहु सिय के ॥१॥
एक नोह[4] छिलले[5] दूसर नोह छिलले, जय जय कहु सिय के।
टुके टुके[6] सिय मुँह ताके, जय जय कहु सिय के ॥२॥
रानी सुनयना देलन हाँथ के कगनमा, जय जय कहु सिय के।
आउरो देलन गलहार, जय जय कहु सिय के ३॥
हंसत खेलइते घर गेलइ नउनियाँ, जय जय कहु सिय के।
दुअरे पर नवबत झार,[7] जय जय कहु सिय के ॥४॥

[७१]

खार-खूर छोड़ाई]

[विवाह के लिए वर जब प्रस्थान करता है, तब उसके पहले उसे स्नान कराया जाता है। इस विधि में धोबिन दुलहे को स्नान कराती है और नेग लेती है। इस विधि को 'खार-खर छोड़ाना' कहा जाता है।]

राजा दसरथ जी पोखरा खनावले, घाट बँन्हावले हे।
कोसिला जी डँड़िया फँनावले[1], राम नेहवावले[2] हे ॥१॥
मँड़वहिं[3] झगड़े धोबिनियाँ, निछावर[4] थोड़ अहे हे।
रघुबर के नेहलइया[5] हमहीं गजहार[6] लेबो हे ॥२॥
जनु तोहें झगड़ू धोबिनियाँ, निछावर थोड़ अहे हे।
राम बिआहि[7] घर अइहें, त तोरा गजहार देबो हे ॥३॥

१. छुआ, स्पर्श किया। २. नाइन, हजामिन। ३. हृदय-द्वार। ४. नख, नाखून। ५. छिलना, तराशना, काटना। ६. टुकुर-टुकुर। ७. नौबत झड़ना मुहावरा है, जिसका तात्पर्य शहनाई (मंगल-वाद्य) बजने से है।

१. पालकी पर चढ़ाकर ले गई। २. स्नान कराती हैं। ३. मण्डप में ही। ४. न्यौछावर, नेग, दुलहे को ओइँछ कर दिया जानेवाला दान। ५. स्नान-कराई। ६. गजमुक्ता का हार। ७. विवाह करके।

[७२]

सेहरा]

[नदी के किनारे की लहलहाती दूब को चरनेवाली सोरही गाय का दूध पीकर लड़का हृष्ट-पुष्ट हो गया है। अब वह विवाह के लिए हठ कर रहा है। विवाह के समय मौर पहनकर वह श्वसुर की सँकरी गली में गया। उसकी मौर की लड़ी उसमें फँसकर झड़ने लगी। इतने में घर से निकलकर दुलहिन ने देखा कि मेरे छैले के मौर की लड़ी टूटकर गिर रही है। उसकी इच्छा हुई कि उसे जमीन पर न गिरने दूँ, ऊपर से ही पकड़ लूँ, पर भीड़ देखकर लाज से ऐसा न कर सकी।]

नदिया के किनारे लहालही[1] दुभिया[2], चरले सोरहिया के गाय हे।
ओही[3] रे बछरवा[4] के गभरू[5] बनवलों, पियले कटोरवे दूध हे॥१॥
दुधवा पिअइते बाबू अभुरी पसारे[6], माँगल[7] मउरी गँथाए हे।
होए द बिहान[8] पह फटे[9] द दुलरुआ, बसि जइहें सहर बजार हे॥२॥
सोनवा चोरायम[10], मउरी बनायम[11], मोतिअनि लगले जे लर हे।
साँकरि साँकरि गलिया **कवन** भँड़ुआ, साँकरि रउरी दुआर[12] हे॥३॥
जहाँ ए **कवन** बाबू लगत दुअरिया, झरले मउरिया के लर हे॥४॥
अपन रसोइया[13] से बाहर भेलन **कवन** सुगइ[14]।
कइसे में लोकूँ[15] छैल जी के मउरिया, झुकि परे गाँव के लोग हे॥५॥

●

[७३]

नदिया किनारे जी हरी हरी दुभिया।
गइया चरावे हीरालाल जी॥१॥
कारी गाय सुन्नर[1] ऐसो लेरू[2]।
दुधवा पियत हीरालाल जी॥२॥

---

१. हरी-हरी, लहलहाती हुई। २. दूब। ३. उसी। ४. बछरू, वत्स (छोटा शिशु)। ५. वह स्वस्थ नौजवान, जिसकी मसें भींग रही हो। ६. हठ ठानता है। ७. माँगता है। ८. भोर, सुबह। ९. पौ फटना, प्रकाश की आभा छिटकना, तड़का होना। १०. चुराऊँगी। ११. बनाऊँगी। १२. दरवाजा। १३. रसोईघर। १४. सुग्गी दुलारी, प्यार-भरा संबोधन। १५. जमीन में गिरने के पहले ऊपर में ही थाम लूँ।

१. सुन्दर। २. कम दिनों का बछड़ा।

सोने के सेहला[3] गढ़ा दऽ मोरे बाबा।
अउर जड़ा दऽ हीरालाल जी॥३॥
सोने के सेहला बाबू मरमों[4] न जानूँ।
कइसे जड़इबे हीरालाल जी॥४॥
तोहरो ससुर जी के साँकर गलिया।
झरि जयतो सेहला के फूल जी॥५॥
आगे आगे जइतन बाबा[5] जी साहेब।
सेकर[6] पीछे मामा[7] सोहागिन जी।
जेकर[8] पीछे जइतन छोटकी बहिनिया।
चुनि लेतन सेहला के फूल जी॥६॥

●

[७४]

मलिया के बाघ[1] में बरसे झालर[2] मेघ हे।
भींजले दुलरुआ मउरिया[3] सहित हे॥१॥
मउरी के रखिहऽ दुलरुआ मलिया के पास हे।
निहुरि निहुरि[4] दुलरुआ करिहऽ[5] परनाम हे॥२॥

●

[७५]

बेटी-विवाह]

[इस गीत में बेटी के विदा होने के प्रसंग का वर्णन है। वह हाथ में सिंधोरा और खोंइछे में हल्दी में रँगा अरवा चावल, दूब, पान, द्रव्य आदि मांगलिक पदार्थ लेकर अपने सभी गुरुजनों से सुहाग का आशीर्वाद लेने जाती है। दादी जब आशीष के साथ उसके आँचल में सिन्दूर देने लगती है, तब बेटी कहती है कि आँचल में दिया सिन्दूर तो झड़कर नष्ट हो जायेगा, मेरी माँग में ही सिन्दूर लगा दो, जिससे मेरा सुहाग अचल हो जाय।]

---

३. दुलहे के सिर पर पहनाया जानेवाला वह मौर, जो फूलों या गोटे की लड़ियों से गूँथकर बनाया जाता है और जिसकी लड़ियाँ मुँह के आगे झूलती रहती हैं। ४. मर्म। ५. पितामह। ६. उसके। ७. पितामही, दादी। ८. जिसके।

१. बाग। २. बूँदों की झड़ी लगानेवाला। ३. मौर। ४. झुक-झुककर। ५. करना।

हाथ सिन्होरबा[1] गे बेटी, खोंइछा[2] दुब्भी पान।
चली भेली दुलारी गे बेटी, दादा दरबार ॥१॥
सुत्तल[3] हला[4] जी दादा, उठला चेहाय[5]।
किया[6] लोभे अइला[7] गे बेटी, दादा दरबार ॥२॥
अरबो[8] न माँगियो जी दादा, दरब[9] दुइ चार।
एक हम माँगियो जी दादा, दादी के सोहाग ॥३॥
मचिया बइठली जी दादी, दहिन[10] लटा[11] झार।
लेहु दुलरइते गे बेटी, अँचरा पसार ॥४॥
अँचरा के जोगवा[12] गे दादी, झुरिये झुरि[13] जाय।
मँगिया सेनुरबा गे दादी, जनम अहियात[14] ॥५॥

●

[७६]

लाड़ो[1] जोगे[2] टिकवा *कवन* दुलहा लावे जी।
अइसन धूपेकल्ला[3] में कहाँ से गभरू[4] आवे जी।
अइसन झहर[5] बदरी[6] में कहाँ से गभरू आवे जी।
अपन गरज[7] लागि पइयाँ[8] पड़इत आवे जी ॥१॥
लाड़ो जोगे कंठवा *कवन* दुलहा लावे जी।
अइसन धूपेकल्ला में कहाँ से गभरू आवे जी।
अइसन झहर बदरी में कहाँ से गभरू आवे जी।
अपन गरज लागि पइयाँ पड़इत आवे जी ॥२॥

---

१. सिधोरा, सिन्दूरदान। २. खोंइचा, खोंइछा। स्त्रियों की साड़ी के आँचल के अग्रभाग में रँगा चावल या धान, दूब, हल्दी आदि मांगलिक द्रव्यों के साथ रुपये आदि भी दिये जाते हैं, उसी को खोंइछा देना कहा जाता है। ३. सोये हुए, निद्रित। ४. थे। ५. अकचकाकर। ६. क्या अथवा किस। ७. आई। ८. अरब की संख्या में। ९. द्रव्य (यहाँ मुद्रा से तात्पर्य है)। १०. दाहिने भाग में। ११. खुले केशों के लम्बे-लम्बे गुच्छे। १२. योग, टोटका (एक शुभ विधि)। १३. झड़ जाना। १४. अहिवात, अविधवात्व, सौभाग्य।

१. दुलारी दुलहन, लाड़ली। २. योग्य। ३. कड़ी धूपवाले समय। ४. वह स्वस्थ नवयुवक, जिसकी अभी मसें भींग रही हों। ५. झड़ी लगानेवाली। ६. बादलो। ७. जरूरत, स्वार्थ। ८. पाँव।

लाड़ो जोगे बलवा[9] *कवन* दुलहा लावे जी।
अइसन धूपेकल्ला में कहाँ से गभरू आवे जी।
अइसन झहर बदरी में कहाँ से गभरू आवे जी।
अपन गरज लागि पइयाँ पड़इत आवे जी ॥३॥
लाड़ो जोगे झँझवा[10] *कवन* दुलहा लावे जी।
अइसन धूपेकल्ला में कहाँ से गभरू आवे जी।
अइसन झहर बदरी में कहाँ से गभरू आवे जी।
अपन गरज लागि पइयाँ पड़इत आवे जी ॥४॥

●

[७७]

सींकी के बढ़निया[1] गे बेटी, सिरहनमा[2] लाइ गे रखिहऽ।
भोरे भिनसरवा[3] गे बेटी, अँगनमा बाढ़ी[4] गे लइहऽ ॥१॥
सेहो बढ़नमा[5] गे बेटी, कुरखेतवा[6] जाइऽ गे बिगिह[7]।
सेहू जनमतइ[8] गे बेटी, कदम जुड़ी[9] छँहियाँ ॥२॥
सेहू तरे[10] उतरइ गे बेटी, सतपँचुआ[11] के जनमल[12] दमदा।
लँगटवा[13] के जनमल दमदा ॥३॥

●

[७८]

बैठल सिया मनमारी[1] से रामे रामे।
अब सिया रहली[2] कुमारी, से रामे रामे ॥१॥
गाइ के गोबर अँगना नीपल[3]।
मोतियन चौका पुराइ[4], से रामे रामे।
धनुस देलन[5] ओठगांइ[6], से रामे रामे ॥२॥

---

९. बाला, कलाई का एक आभूषण। १०. झाँझ, पैर में पहनने का एक आभूषण।

१. झाड़ू। २. सिरहाने, खाट का वह भाग, जिधर सिर रहता है। ३. भिनुसार, प्रातःकाल। ४. बुहार। ५. बुहारन। ६. जोते-कोड़े गये खेत में। ७. फेंक आना। ८. जन्म लेगा। ९. ठण्डी। १०. नीचे, तले। ११. सात-पाँच व्यक्तियों। १२. जन्मा हुआ, पैदा किया हुआ। १३. नंगा, कंगाल।

१. मन मारकर, उदास। २. रह गई। ३. लिपा-पुता। ४. पूरना, भरना, अल्पना करना। ५. दिया। ६. सहारा देकर खड़ा करना, उठंगाना।

देसहिं देस के भूप सब आयल[7] ।
धनुसा देखिये मुरझाइ, से रामे रामे ॥३॥
अजोधा नगरिया से राम लछुमन आयल ।
धनुसा देखिये मुसकाइ, से रामे रामे ॥४॥
गुरु अगेयाँ[8] पाइ के रामजी धनुसा उठयलन ।
धनुस कइलन[9] तीन खंड, से रामे रामे ।
अब सिय होयतो बियाह, से रामे रामे ॥५॥
मुनि सब जय जय बोले, से रामे रामे ।
सखी सब फूल बरसाये, से रामे रामे ॥६॥

●

[७६]

सियाजी बाढ़ऽ[1] हथिन अँगना, माता निरखै[2] हे ।
माइ हे, अब सीता बियाहन जोग[3], सीता जोग बर चाही हे ॥१॥
हाँथ काय[4] लेहु बराम्हन धोबिया, काँखे[5] पोथिया हे ।
चलि जाहो नगर अजोधेया, सीता जोग बर चाही हे ॥२॥
काहाँ[6] से बराम्हन आइला[7], काहाँ धाइला[8] हे ।
कउन[9] रिखी[10] कनेया कुआँरी, कउन बर चाही हे ॥३॥
जनकपुर से हम बराम्हन आइलूँ[11], अजोधेया धायलूँ हे ।
जनक रिखी कनेया कुआँरी, राम बर चाही हे ॥४॥
केरे[12] उरेहल[13] सिर मटुका[14], तिलक चढ़ावल हे ।
अहे, केरे सजत बरियात, कउन सँग जायत हे ॥५॥
जनक उरेहल सिर मुटुका, तिलक चढ़ावल हे ।
अहे, दसरथ सजत बरियात, भरथ सँग जायेता[15] हे ॥६॥

●

---

७. आये । ८. आज्ञा । ९. किया ।

१. बाढ़ऽ हथिन = झाड़ू दे रही हैं, बुहार रही हैं । २. देखती हैं । ३. विवाह करने योग्य । ४. हाथ में । ५. बाहुमूल के नीचेवाला स्थान, बगल में । ६. किस जगह । ७. आ रहे हैं । ८. जा रहे हैं, दौड़ रहे हैं । ९. किस, कौन । १०. ऋषि । ११. आया हूँ । १२. कौन, किसने । १३. चित्रित किया, बनाया । १४. मुकुट । १५. जायेंगे ।

[८०]

बर खोजन[1] जब चललन बाबा हे, हाँथ गुलेल[2] मुँह पान हे ।
पुरुब खोजलन[3] पछिम खोजलन, खोजलन मगह मनेर[4] हे ॥१॥
खोजइते खोजइते गेलन अजोधेया नगरी, मिलि गेलन राजकुमार हे ।
राजा दसरथजी के चारियो बेटवा, हमें घर सीता कुँआर हे ॥२॥

●

[८१]

हमरो बाबाजी के चारो खंड अँगना, चहुँ दिसि लगल केवार हे ।
ओहि[1] खंभ ओठँगल[2] बेटी दुलरइती बेटी, बाबा से मिनती हमार हे ॥१॥
काहाँ तोंहे बाबा पयलऽ[3] गजदाँत हथिया, काहाँ पयलऽ गजमोती हार हे ।
काहाँ तोंहे पयलऽ डँटहर[4] पनमा, काहाँ पयलऽ राजकुमार हे ॥२॥
राजा घर पयली बेटी गजदाँत हथिया, पैसारी[5] घर गजमोती हार हे ।
बरियाहिं[6] पइली डँटहर पनमा, देस पइसी[7] राजकुमार हे ॥३॥
कइसे के चिन्हबऽ[8] बाबा गजदाँत हथिया, कइसे के गजमोती हार हे ।
कइसे तों चिन्हबऽ बाबा डँटहर पनमा, कइसे के राजकुमार हे ॥४॥
खरग[9] से चिन्हब गजदाँत हथिया, झलक[10] से गजमोती हार हे ।
डंटिया से चिन्हब डँटहर पनमा, पोथिया पढ़इते राजकुमार हे ॥५॥

●

[८२]

[रूपवती बेटी के लिए ऐसा दुलहा खोजा गया है, जिसे सौतेली माँ है और जो स्वयं काला-कुरूप है। बेटी की माँ ऐसी सूचना पाकर गले में फाँसी लगाकर मरने का संकल्प करती है। बेटी माँ को समझाती है कि माँ, यह कोई नई बात नहीं है। पिताजी का यह अन्न-धन और यह चौपार मकान तो भैया के भाग्य में लिखा है। मेरे भाग्य में तो दूर देश जाना है। भैया के जन्म के समय सोने की

---

१. खोजने, ढूँढ़ने । २. धनुष के आकार का बना अस्त्र, जिसके सहारे गोली फेंकी जाती है । ३. खोजा, ढूँढ़ा । ४. मगध-प्रदेश का एक कसबा, जो सोन और गंगा के संगम पर बसा है और जो एक प्राचीन ऐतिहासिक गाँव है ।

१. उसी । २. उठंगी, सहारा लेकर बैठी । ३. पाया । ४. डंटीदार (ताजा) । ५. पंसारी, सिन्दूर, नमक, हल्दी तथा विविध मसाले बेचनेवाला बनिया । ६. बारी, तमोली, पान बेचने तथा पत्तल सीनेवाली एक जाति । ७. पैठकर । ८. पहचानोगे । ९. बड़े दाँत । १०. चमक, आभा ।

छुरी से नाल काटी गई; पर मेरे जन्म लेने पर हँसिया और खुरपी भी नहीं मिली, तो ठीकरे से नाल काटी गई थी। तुम लड़की के लिए ऐसा दुस्साहस मत करो।

भारतीय समाज में बेटी की उपेक्षा के प्रति लड़की का गहरा व्यंग्य है।]

ऊँच तोरा लिलरा[1] गे बेटी, मनि[2] बरे[3] जोत[4]।
दँतवा के जोत गे बेटी, बिजुली चमके ॥१॥
एक तो सुनली[5] गे बेटी, मएभा[6] सासु।
दोसरे सुनली गे बेटी, करिया[7] दमाद।
खयबो में माहुर[8] बिरवा[9], लगयबो में फाँसी,
येही धिया[10] लागी[11] ॥२॥

जनि खाहु माहुर ब्रिरवा, जनि लगावहु फाँसी।
भइया के लिखल हे अम्मा, बाबा चउपरिया[12]।
हमरो लिखल हे अम्मा, जयबो दूर देसवा ॥३॥
जाहि दिन हे अम्मा, भइया के जलमवाँ[13],
सोने छूरी कटइले नार[14] हे।
जाहि दिन अहे अम्मा, हमरो जलमवाँ,
हँसुआ खोजइते हे अम्मा, खुरपी[15] न भेंटे;
झिटकी[16] कटइले मोरो नार हे ॥४॥

●

[८३]

बेरहिं बेरी[1] कोइल[2] रे, तोहिं बरजों[3] हे।
कोइल रे, आज बनवाँ[4] चरन[5] जनि जाहु।
अहेरिया[6] रजवा चलि अयतन[7] हे ॥१॥
अयतन तऽ आवे दहुन अहेरिया रजवा हे।
अहे सोने के पिंजरवा चढ़ि बइठम[8] हे।
अहेरिया रजवा का[9] करतन[10] हे? ॥२॥

---

१. ललाट, भाल। २. मणि। ३. बलती है, जलती है। ४. ज्योति। ५. सुना। ६. सौतेली। ७. काला। ८. जहर। ९. बीड़ा, बिरवा, पौधा। १०. लड़की, बेटी। ११. कारण, लिए। १२. वह मकान, जिसमें चारों तरफ से घर हो और बीच में आँगन हो। १३. जन्म। १४. नाल। १५. घास छीलने का लोहे का एक औजार। १६. मिट्टी के बरतन या खपड़े का टुकड़ा, ठीकरा।

१. बार-बार। २. कोयल। ३. बरजती हूँ। ४. वन में। ५. चरने-चुगने। ६. आखेट करनेवाला शिकारी। ७. आयेंगे। ८. बैठूँगी। ९. क्या। १०. करेंगे।

बेरहिं बेरी बेटी तोहिं बरजों हे।
बेटी दुअरे खेलन जनि जाहु।
कवन दुलहा चलि अयतन हे ॥३॥
अयतन तऽ आवे दहुन कवन दुलहा हे।
अहे सोने पलकिया चढ़ि बइठम हे।
कवन दुलहा का करतन हे? ॥४॥
एक कोस गेल[11] डाँड़ी[12], दुइ कोस हे।
अहे अम्मा रोवथि[13] छतिया फाड़ि हे।
गोदिया[14] बेटी, आजु सुन्ना[15] भेल हे ॥५॥
दुइ कोस गेल डाँड़ी, तीन कोस हे।
अहे चाची रोवथि छतिया फाड़ि हे।
सेजिया आजु बेटो, सुन्ना भेल हे ॥६॥
तीन कोस गेल डाँड़ी, चार कोस हे।
अहो भउजी[16] रोवथि छतिया फाड़ि हे।
भनसा[17] ननदी आजु सुन्ना भेल हे ॥७॥
चार कोस गेल डाँड़ी, पाँच कोस हे।
अहे सखी सब रोयथिन छतिया फाड़ि हे।
सलेहर[18] आज सखी सुन्ना भेल हे ॥८॥

●

[८४]

पत्ता-तोड़ाई]

[बेटी के विवाह में एक विधि यह भी होती है कि कन्या के साथ उसका भाई वटवृक्ष के पास जाता है और वह वृक्ष से पत्ता तोड़ता है। यह गीत उसी अवसर पर गाया जाता है। मातृ-गृह के विछोह के कारण बेटी की आँखों से आँसू गिर रहे हैं तथा वह अपने चारों ओर देख रही है। बेटी देखती है कि उसके भाई के हाथ में तलवार है और उसकी भाभी हाथ में सिंधोरा लिये भाई के पीछे-पीछे आ रही है।

यह विधि योग माँगने के अन्तर्गत है। योग इसलिए माँगा जाता है कि लड़की के प्रति दुलहे का आकर्षण बराबर बना रहे।]

---

११. गई। १२. पालकी। १३. रोती है। १४. गोद। १५. सूना, खाली। १६. भाभी। १७. रसोईघर। १८. वह सखी, जिससे अपने मन की बात कही जाय या उचित परामर्श लिया जाय।

जोगवा[१] बेसाहन[२] चलल मोर भइया रे टोनमा ।
भइया चलले संगे साथ रे टोनमा ।।१।।
घुरि फिरि[३] देखथिन बेटी दुलरइतिन बेटी रे टोनमा ।
अँखियन से ढरे लोर[४] रे टोनमा ।।२।।
आगे आगे अवथिन[५] भइया दुलरुआ भइया रे टोनमा ।
पाछे पाछे भउजी[६] चली आवे रे टोनमा ।।३।।
भउजी के हाथ में सोने के सिंघोरबा[७] रे टोनमा ।
भइया हाथे तरवार रे टोनमा ।।४।।

●

[८५]

जोग-मँगाई]

कहाँ से जोग आयल, कहाँ जोग घुरमई[१] गे माई ।।१।।
दुलरइता दुलहा हीं[२] से जोग आयल ।
तेलिया दुहरिया[३] जोग घुरमइ गे माई ।
दुलरइता देइ[४] के जाके जोग लाग गे माई ।।२।।

●

[८६]

जोग]

लेहऽ[१] दुलरइता भइया कँधवा[२] कोदरिया[३] ।
परबत से जड़ी ला देहु भइया ।।१।।
तोड़िए काटिए[४] भइया बाँन्हलन मोटरिया ।
लऽ न दुलरइतिन बहिनी जोग के जड़िया ।।२।।
पिसिए कुटिए[५] बहिनी भरल कटोरिया ।
पीअऽ न दुलरइता दुलहा जोग के जड़िया ।।३।।
हमें न पीबो सुघइ[६] जोग के जड़िया ।
हम भागी जायबो बाबा के पासे ।।४।।

●

१. योग, टोना-टोटका । २. खरीदने के लिए । ३. मुँह पीछे घुमाकर । ४. अश्रु, आँसू । ५. आते हैं । ६. भाभी । ७. सिन्दूरदान, सिन्धोरा ।

१. चक्कर काटता है । २. दुलहा के यहाँ । ३. द्वार, दरवाजा । ४. देवी ।

१. ले लो । २. कन्धे पर । ३. कुदाली, कुदाल । ४. तोड़कर तथा काटकर । ५. कूट-पीसकर । ६. सुगृहिणी, सुग्गी ।

[८७]

परिछन]

रामचन्दर चललन बियाह करे, रिमिझिमि बादल हे ।
अरे रिखियन[१] खबरि जनावउ,[२] कहाँ दल उतरत[३] हे ।।१।।
परिछे बाहर भेली सासु त, सोना के डलनि[४] लेले हे ।
अहे, किनकर[५] आरती उतारूँ, कउन बर सुन्नर हे ।।२।।
साम[६] बरन[७] सिरीराम, त गोरही[८] लछुमन हे ।
सिरी रामचन्दर के आरती उतारूँ, ओहि बर सुन्नर हे ।।३।।

●

[८८]

अवध नगरिया से अयले बरियतिया हे ।
परिछन चलु मिली जुली साजु सब सखिया हे ।।१।।
साजी लेहु डाली डुली[१] बारी लेहु[२] बतिया[३] हे ।
पान फूल दूध दही अछत भरी लुटिया[४] हे ।।२।।
मकुनी[५] जे हथिया के जरद[६] अमरिया[७] हे ।
ताही चढ़ी आवल हमर अलबेलवा हे ।।३।।
हथिया वो घोड़वा के बनवल हइ सिंगरबा[८] हे ।
ताही चढ़ी चारो दुलहा सोभत असवरबा[९] हे ।।४।।
जामा साजे जोड़ा साजे साजल गले हरवा हे ।
हथवा रूमाल सोभे माथे मनिन[१०] मउरिया हे ।।५।।
सासु के अँखियाँ लगल मधुमछिया[११] हे ।
कइसे में परिछों दमाद अलबेलवा हे ।।६।।
आरती करइतो सुधि बुधि नहीं आवे हे ।
आनन्द मंगल तेही छन सब गावे हे ।।७।।
राम रूप छकि-छकि पावे दरसनमा हे ।
उँटवा नगाड़ा बाजे बाजे सहनइया हे ।।८।।

१. ऋषियों को । २. सूचित करो । ३. उतरता है । ४. डाला, दौरा । ५. किसकी । ६. श्याम । ७. वर्ण । ८. गौर ।

१. फूल की डाली । २. जला लो । ३. बत्ती । ४. पूजा करनेवाला छोटा लोटा । ५. विना दाँतवाला छोटे कद का हाथी । ६. पीले रंग का मखमल, जड़ीदार । ७. अमारी, हौदा । ८. शृंगार । ९. सवार, । १०. मणियों की । ११. मधुमक्खी ।

●

[८९]

हम त माँगली आजन बाजन, सिंघा[1] काहे लाया रे।
परिछन के बेरिया,[2] बनूक[3] काहे लाया रे ॥१॥
हम त मँगली हाथी घोड़ा, मोटर काहे लाया रे।
भोंपू भोंपू मोटर बोले, कान घबराया रे ॥२॥
हम त रहली दुलहा परिछत, जियरा ललचाया रे।
धुर फुर कर गोला छोड़े, जियरा घबराया रे ॥३॥
परिछन के बेरिया पिहतौल[4] काहे लाया रे।
लाजो न लागे समधी, नाम को हँसाया रे ॥४॥

●

[९०]

अवध नगरिया से अइलय[1] बरियतिया हे, परिछन चलु सखिया।
हथिया झुमइते[2] आवे, घोड़वा नचइते[3] हे, सोभइते[4] आवे ना।
सखि रघुबर बरियतिया हे, सोभइते आवे ना ॥१॥
बजन बजइते आवइ, कसबी[5] नचइते हे।
उड़इत[6] आवे न चवदिस[7] से निसान[8] हे, उड़इते आवे ना ॥२॥
लेहू लेहू डाला[9] डुली बारी लेहू बतिया हे।
परिछन चलु रघुबर बरियतिया हे, देखन चलु ना ॥३॥
ढोल वो नगाड़ा बाजइ, बजइ सहनइया हे।
देखन चलु न सखि रघुबर बरियतिया हे ॥४॥

●

[९१]

गुरहत्थी]

[विवाह में कन्या-दान और सिन्दूर-दान के पहले तथा कन्या-निरीक्षण के अवसर पर गुरहत्थी नामक विधि सम्पन्न होती है, जो गुरु (श्रेष्ठ जन) के हाथों सम्पन्न कीजाती है। इस विधि में दुलहिन को दिये जानेवाले वस्त्राभूषण वर का जेठा भाई देवताओं को अर्पित करके दुलहिन को देता है और अन्त में दुलहिन के सौभाग्य-वर्द्धन के लिए आशीर्वाद देता है। इसी अवसर पर यह 'गुरहत्थी' का गीत गाया जाता है।]

---

१. एक प्रकार का सींग-जैसा लम्बा और टेढ़ा बाजा, जो फूँककर बजाया जाता है और जिसकी आवाज दूर तक जाती है। २. समय। ३. बन्दूक। ४. पिस्तौल।

१. आई। २. झूमते। ३. नाचते हुए। ४. शोभते हुए। ५. वेश्या, नर्त्तकी। ६. उड़ता हुआ। ७. चारों दिशा। ८. झंडा। ९. डाला-दौरा।

अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा[1]।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
टिकवा[2] ले गुरहँथिये[3] रे, जेठ भैंसुरा ॥१॥
अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
नथिया[4] ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा ॥२॥
अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा तजन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
हँसुली[5] ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा ॥३॥
अच्छा अच्छा गहना चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
बजुआ[6] ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा ॥४॥
अच्छा अच्छा कपड़ा चढ़इये रे, जेठ भैंसुरा।
बड़ा जतन के धियवा रे, जेठ भैंसुरा।
सड़िया ले गुरहँथिये रे, जेठ भैंसुरा ॥५॥

●

[९२]

ये ही लँड़ भँइसुरा[1] के, लामा लामा[2] टाँग[3] रे।
ये ही टाँगे लँघलक[4], मँड़वा[5] हमार रे ॥१॥
ये ही लँड़ भँइसुरा के, बड़के बड़के[6] आँख रे।
ये ही आँखें देखलक[7], गउरी[8] हमार रे ॥२॥
ये ही लँड़ भँइसुरा के, बड़के बड़के हाँथ रे।
ये ही हाँथे छुअलक[9] गउरी हमार रे ॥३॥
ये ही लँड़ भँइसुरा के, बड़के बड़के दाँत रे।
से ही दाँते हँसलक[10], मड़वा हमार रे ॥४॥

●

---

१. दुलहे का बड़ा भाई। २. मँगटीका, माँग के ऊपर पहना जानेवाला शिरोभूषण। ३. गुरहत्थी नामक विधि सम्पन्न करना इस विधि में जेठ (भसुर) दुलहिन को वस्त्राभूषण देता है। ४. नाक का आभूषण। ५. गले का एक आभूषण। ६. बाजूबन्द।

१. भसुर (जेठ) के लिए गाली। २. लम्बे-लम्बे। ३. जाँघ से नीचे तक का पैर। ४. लाँघ गया। ५. मण्डप। ६. बड़ी-बड़ी। ७. देखा। ८. गौरी, कन्या। ९. छूआ, स्पर्श किया। १०. हँसा।

[६३]

टिकवा[1] देख मत भुलिहऽ[2] हो दादा, टिकवा हइ मँगन[3] के।
दुलहा हइ सतपँचुआ[4] के जनमल,[5] दुलहिन हइ जिमदार[6] के ॥१॥
नथिया देख मत भुलिहऽ हो बाबा, नथिया हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल, दुलहिन हइ जिमदार के ॥२॥
झुमका देख मत भुलिहऽ हो चच्चा, झुमका हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल, दुलहिन हइ जिमदार के ॥३॥
हँसुली देख मत भुलिहऽ हो मामा, हँसुली हइ मँगन के।
दुलहा हइ सतपँचुआ के जनमल, दुलहिन हइ जिमदार के ॥४॥

●

[६४]

खार-खुर-चुनाई]

['खर चुनना' विवाह के समय की एक लोक-विधि है। इसमें दुलहे की सास दरवाजे से मंडप तक तिनका छींट देती है, जिसे दुलहे को चुनना पड़ता है। इस समय जो गीत गाया जाता है, उसमें दुलहे की माँ को गाली रहती है। प्रस्तुत गीत उसी अवसर का है।]

सखी चुनवत पान मोहन प्यारे के ॥१॥
जबे जबे हरिजी खरही[1] चुनावे।
गारी सुनावे मनमान[2], मोहन प्यारे के ॥२॥
ले खरही हरि, टटर[3] बिनैबो,[4] देतन तोर मइया दोकान[5]।
जोग के बीरा[6] सखियन देलन, हर लेलन हरि के गेयान ॥३॥

●

१. मँगटीका नामक आभूषण। २. भूलना, भ्रम में पड़ जाना। ३. उधार माँगकर लाया हुआ। ४. सात-पाँच व्यक्तियों का। ५. जन्मा, अर्थात् छिनाल का जन्मा हुआ, वर्णसंकर। ६. जमीन्दार, रईस।

१. खर, तिनका। २. मनमाना। ३. टट्टी। ४. बुनवाऊँगी। ५. दूकान, अर्थात् तुम्हारी माँ अपनी दूकान पर उसी टट्टी को लगायेगी। ६. पान का बीड़ा।

[६५]

लावा-छिटाई]

[सिन्दूर-दान के पूर्व अग्नि-कुण्ड के पास लड़की का भाई धान या धान का लावा बहन के हाथ में देता है, जिसे वह अपने पति के हाथ में गिरा देती है और पति उसे बिखेर देता है या कहीं-कहीं लड़की की अंजलि को ही पकड़कर लड़का लावा को छितरा देता है। धान का लावा इसलिए लड़की के हाथ में उसका भाई भरता है कि जिस प्रकार धान पहले एक जगह खेत में बोया जाता है, फिर उसे उखाड़कर अन्यत्र रोपा जाता है, जहाँ वह फूलता-फलता है, उसी प्रकार लड़की पितृ-गृह में पैदा होती है और पति-गृह में फूलती-फलती है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि धान जब छिलके के साथ रहता है, तभी उसमें उत्पादन की क्षमता रहती है। केवल चावल में उत्पादन की क्षमता नहीं रहती। उसी प्रकार लड़की के लिए छिलके की तरह उसके पति का संरक्षण बना रहना चाहिए, जिससे वह फूले-फले। तीसरा कारण यह हो सकता है कि भाई बहन की अंजलि धान से कई बार इसलिए भरता है कि पिता के बाद इस घर पर मेरा प्रभुत्व होगा। पिता के बाद जब-जब तुम आओगी, तुम्हारी अंजलि इसी प्रकार भरी जायगी और तुम्हारा आदर-सत्कार इसी प्रकार होता रहेगा। इस लौकिक विधि के पीछे पूर्ण वैज्ञानिकता है।]

लावा[1] न छींटऽ ह[2] कवन भइया, बहिनी तोहार हे।
अँगूठा न धरऽ ह[3] कवन दुलहा, सुगइ तोहार[4] हे ॥१॥
लावा न छींटऽ ह कवन भइया, बहिनी तोहार हे।
अँगूठा न धरऽ ह कवन दुलहा, सुगइ तोहार हे ॥२॥

●

[६६]

कन्यादान]

जाहि दिन अगे[1] बेटी, तोहरो जलम भेल।
नयनमा[2] न आयल सुखनीन[3] हे ॥१॥
नीदो न आवे बेटी भूखो न आबय।
तारा गिनइते भेल बिहान[4] हे ॥२॥

१. धान का लाजा, खील। २. छींटते हो। ३. धरते हो, पकड़ते हो। ४. तुम्हारी।

१. सम्बोधन का एक शब्द, जैसे—अरे, हे। २. नयनों में। ३. सुख की नींद। ४. भोर, प्रभात।

पुरूब खोजलूँ, पच्छिम खोजलूँ,
खोजलूँ सहर बिहार[5] हे।
एक नहीं खोजलूँ दुलरइता बाबू के डेरवा[6],
जाहाँ हथी[7] राजकुमार हे ॥३॥
दादा के हाथ में गेड़ुआ[8] जे सोभए,
दादी के हाथे कुस डाढ़[9] हे।
काँपन लागे बाबा कुस के गेड़ुअवा,
काँपन लागे कुस डाढ़ हे ॥४॥
आल[10] में ताख पर गुड़िया रोवे,
रोवे लागल टोलवा परोस हे।
जारे जारे[11] रोवथि बाबा दुलरइता बाबा,
बनवे[12] के कोइल[13] चलल जाय हे ॥५॥

●

[६७]

चउका[1] चढ़ि बइठलन **कवन** बाबू।
जाँघ ले ले धिया बइठाइ हे ॥१॥
ए राम, असरे पसरे[2] चुनरी भींजल ना।
रउरा परभुजी बेनियाँ[3] डोलावऽ ना ॥२॥
कइसे बेनियाँ डोलाऊँ हे सुगइ।
ताकत होइहें[4] बाबूजी तोहार हे ॥३॥
चलु चलु सुगइ हमर देसवा।
उहँई[5] देबो बेनियाँ डोलाइ ना ॥४॥
चउका चढ़ि बइठलन **कवन** चच्चा।
जाँघ ले ले धिया बइठाइ हे ॥५॥

---

५. मगध का 'बिहारशरीफ' नामक नगर। ६. डेरा, अस्थायी निवास। ७. हैं। ८. भारी, जलपात्र। ९. कुश की डंटी। १०. ताक, ताखा। ११. जार-बेजार। १२. जंगल की। १३. कोयल। यहाँ 'कोयल' बेटी की प्रतीक है।

१. अल्पना से पूरित बेदी। २. अगल-बगल। ३. हवा करने के लिए छोटा पंखा (व्यजन)। ४. देखते होंगे। ५. वहीं।

ए राम, असरे पसरे चुनरी भींजल ना।
रउरा परभुजी बेनियाँ डोलावऽ ना ॥६॥
कइसे बेनियाँ डोलाऊँ हे सुगइ।
ताकत होइहें चच्चा तोहार हे ॥७॥
चलु चलु सुगइ हमर देसवा।
उहँई देबो बेनियाँ डोलाइ ना ॥८॥

●

[६८]

[कन्या-दान के समय मंडप में मणिदीप जल रहा है और मंत्रोच्चार के लिए ब्राह्मण भी बुलाया गया है। लड़की को कपड़े से ढककर लाया गया और पिता की जाँघ पर उसे बैठा दिया गया। वहाँ पर जब दुलहे ने दुलहिन का रूप देखा, तब वह उसे निहारता ही रह गया और अपने भाग्य को सराहने लगा। पर, अपनी सुन्दरी और प्यारी बेटी को दान देने में पिता का हाथ काँपने लगता है कि अपने हृदय के टुकड़े को कैसे दान कर दूँ। उसे स्मरण दिलाया जाता है कि कुआँ खुदवाना और बेटी जन्माना—दूसरे के लिए ही होता है, इसलिए बेटी के विवाह में सोचो नहीं। इतना ही नहीं, लड़की के लिए ब्राह्मण तथा परिवार को भी मोह है कि आजतक तो हमारी लड़की थी, पर अब वह दूसरे की हो रही है। इस गीत में बड़ा ही कारुणिक भाव चित्रित है।]

मँड़वा बइठल बाबा, दुलरइता बाबा, चकमक मानिकदीप[1] हे।
कनेयादान के अवसर आवल, बराम्हन कयल हँकार[2] हे ॥१॥
झाँपि झूँपि[3] लवलन[4] मइया दुलरइतिन मइया,
रखल बाबा केर जाँघ हे।
जब रे दुलरइता बाबा मुँहमा उघारल,
साजन रहल निरेखि हे ॥२॥
का हथी[5] सीता हे सुरुज के जोतिया,
का हथी चान के जोत हे।
अइसन[6] सुनर कनेया कइसे मोरा भेंटल,
धन धन हको[7] मोरा भाग हे ॥३॥
कुसवा ले काँपथि बेटी के बाबू,
कइसे करब कनेया दान हे।

---

१. माणिक्य का दीप। २. बुलावा, निमन्त्रण। ३. पहना-ओढ़ाकर, कपड़े में छिपाकर। ४. लाया। ५. क्या हैं। ६. ऐसी। ७. है।

तोड़ी देहु तोड़ी देहु करहु बियहवा,
तोड़ी देहु जिया जंजाल हे।
कुइयाँ[८] खनउली आउ बेटी बियाहली,
तनिको न करहु बिचार हे ॥४॥
बेद भनइते[९] बराम्हन काँपल, काँपी गेल कुल परिवार हे।
हमर धियवा पराय घर जयतन, अब भेल[१०] पर केर आस हे ॥५॥

[९९]

हाथ सेंतुरवा गे बेटी, खोंइछा[१] जुड़ी[२] पान।
चलली दुलरइती गे बेटी, दादा दरवाज[३] ॥१॥
सुतल[४] हल[५] जी दादा, उठल चेहाय[६]।
कवन संजोगे गे बेटी, अयली दरवाज ॥२॥
अरबो[७] न माँगियो जी दादा, दरब दो चार।
एक हमहुँ माँगियो जी दादा, दादी के सोहाग ॥३॥
लेहु दुलरइते गे बेटी, अँचरा[८] पसार ॥४॥
अँचरा के जोगवा[९] गे दादी, झरिय झुरि जाय।
मँगिया[१०] के जोगवा गे दादी, जनम अहियात[११] ॥५॥

[१००]

कहवाँ[१] के सेनुरिया[२] सेनुर[३] बेचे आयल हे।
कहवाँ के बर कामिल,[४] सेनुर बेसाहल[५] हे ॥१॥
कवन पुर के सेनुरिया सेनुर बेचे आयल हे।
कवन पुर के वर कामिल, सेनुर बेसाहल हे ॥२॥

---

८. कुआँ, कूप। ९. उच्चारण करते हुए, पढ़ते हुए। १०, हुआ।

१. आँचल का अग्रभाग। २. जोड़ा। ३. दरवाजा, द्वार। ४. सोये। ५. थे। ६. अकचकाकर। ७. अर्ब-दर्ब—धन-दौलत। ८. आँचल। ९. आशीर्वाद रूप में प्राप्त होनेवाला जोग-टोना। १०. माँग, सीमन्त। ११. अविधवात्व, सौभाग्य।

१. किस स्थान, कहाँ। २. सिन्दूर बेचनेवाला। ३. सिन्दूर। ४. काबिल, होशियार। ५. खरीदा।

[१०१]

सेनुरा सेनुरा जनी करू[१], सेनुरा बेसाहम[१] हे।
धनि[२] लागि[३] जयबइ[४] सेनुरा के हाट, से सेनुरा ले आयम[५] हे ॥१॥
एतना कहिए दुलहा उठलन, चलि भेलन[६] मोरंग[७] हे।
मोरंग देसे सेनुरा सहत[८] भेलइ,[९] सेनुरा लेआवल हे ॥२॥
लेहु धनि सेनुरा से सेनुरा आउर टिकुली बेनुली[१०] हे।
धनि साटि लेहु अपन लिलार, चलहु मोर ओबर[११] हे ॥३॥
कइसे[१२] के साटि हम बेनुली, कइसे करू सेनुर हे।
कइसे के चलूँ हम ओबर, हम तो कुमार बार[१३] हे ॥४॥
चुटकी भर लेहु न सेनुरबा, सोहगइलबा[१४] बेसाहहु[१५] हे।
भरी देहु धानि के माँग, धानि तोहर होयत हे ॥५॥
चुटकी भरी लिहलन सेनुरबा, सोहगइलबा बेसाहल हे।
दुलहा भरी देलन धानि के माँग, अब धानि आपन हे ॥६॥
बाबा जे रोवथिन मँड़उवा[१६] बीचे, भइया खँम्हवे धयले[१७] हे।
अमाँ जे रोवथिन घरे भेल,[१८] अब धिया पर हाथे हे ॥७॥
सखि सभ माथा बन्हावल,[१९] लट छिटकावल[२०] हे।
अजी सखि, चलूँ गजओबर, अब भेल पर हाथ हे ॥८॥
सेनुरा सेनुरा जे हम कयलूँ, सुनेरा[२१] त काल भेल हे।
सेनुरा से पड़लूँ सजन घर, नइहर[२२] मोर छूटल हे ॥९॥
छूटि गेल भाई से भतीजबा, आउरो घर नइहर हे।
अब हम पड़लूँ परपूता[२३] हाँथे, सेनुर दान भेल हे ॥१०॥

---

१. खरीदूँगा। २. धन्या, पत्नी। ३. के लिए, हेतु। ४. जाऊँगा। ५. ले आऊँगा। ६. चल पड़ा। ७. नेपाल का एक पूर्वी जिला, जो बिहार के पूर्णियाँ जिले की सीमा से मिलता है। ८. सस्ता। ९. हुआ। १०. स्त्रियों के ललाट पर साटने के लिए काँच की बनी बिन्दी। इसमें जो बड़ा होता है, उसे टिकुली कहते हैं और जो बिलकुल बिन्दी जैसा छोटा होता है, उसे बिनुली कहते हैं। ११. ओबर=(मिला०-गजओबर) घर का भीतरी भाग। १२. कैसे। १३. कुमारी और बाला। १४. लकड़ी की कँगूरेदार छोटी डिबिया, जिसमें विवाह के समय सिन्दूर भरकर दिया जाता है। १५. खरीद लाओ। १६. मण्डप के। १७. धरे हुए, पकड़े हुए। १८. घर में। १९. माथा बन्हावल=माथे का बाल बाँधना, अर्थात् जूड़ा बाँधना। २०. लटों को छिटकाया। २१. सिन्दूर। २२. नैहर, मायका। २३. दूसरे का पुत्र।

[१०२]

[पतिगृह में नववधू की असहाय दशा की एक झाँकी इस गीत में दी गई है। इसमें एक गहरा व्यंग्य है। बेटी ब्याह के बाद अपनी ससुराल से होकर फिर मायके आई है और अपने दादा के आँगन में आकर खड़ी हुई है। दहेज के लिए उसकी सास-ननद के प्रतिकूल टीका-टिप्पणी और आलोचनात्मक मनोवृत्ति की करुण-कथा सुनकर दादा चुप हैं। दादा के द्वारा दहेज में अन्न-धन, सोना-चाँदी सब देने पर भी एक माथे की कंघी छूट गई थी, जिसके लिए लड़की की सास-ननद उलाहना दे रही थी। वह कौन-सा दादा होगा, जिसकी वाणी यह सुनकर मूक न हो जाय।]

दादा केरा अँगना जामुन के गछिया।
सेइ तर[1] दुलरइतिन बेटी ठाढ़, से दादा न बोलइ ॥१॥
रहियो[2] न बोलइ, बटियो[3] न बोलइ।
पनिया भरइते[4] पनिहारिन, से दादा न बोलइ ॥२॥
अनमा[5] से देल दादा, धनमा[6] से दिहले।
मोतिया दिहले अनमोल जी ॥३॥
एक नहीं दिहले दादा, सिर के कँगहिया[7]।
सासु ननद ओलहन[8] देत, से दादा न बोलइ ॥४॥

●

[१०३]

बगिया[1] में ठाढ़ा[2] भेल **कवन** बेटी, बगिया सोभित लगे हे।
बाँहि[3] पसार मलिनिया कि आजु फुलवा लोर्हब[4] हे ॥१॥
धीर धरु अगे मालिन धीर धरु, अवरो[5] गँभीर बनु हे।
जब दुलहा होइहें कचनार,[6] तवे फुलवा लोर्हब हे ॥२॥
मँड़वाहि ठाढ़ा भेल **कवन** बेटी, मड़वा सोभित लगे हे।
बाँहि पसार **कवन** दुलहा, आजु धनि हमर[7] हे ॥३॥
धीर धरु अजी परभु, धीर धरु, अवरो गंभीर बनु हे।
जब बाबू करिहन[8] कनेयादान, तवे तोहर होयब हे ॥४॥

●

---

१. उसी के नीचे। २. राहगीर। ३. रास्ता। ४. भरती हुई। ५. अन्न। ६. धन, वैभव। ७. कंघी। ८. उलाहना।

१. बाग, बागीचा। २. खड़ा। ३. बाँह, भुजा। ४. लोढ़ूँगी, (फूल) तोड़ूँगी। ५. और। ६. एक वृक्ष, जो हरा-भरा रहता है, अर्थात् कचनार की तरह हरित-पुष्पित। ७. हमारी। ८. करेंगे।

[१०४

कोहबर]

[कोहबर में दुलहा-दुलहन सोये हैं। सुख की नींद में दोनों को समय का ज्ञान नहीं रहा और सवेरा हो गया। फिर, दुलहन दुलहे को जगाने लगी। दुलहा दुलहन से पूछता है कि 'तुम्हें कैसे पता चला कि सवेरा हो गया?' दुलहन कहती है—'डाल पर कौए बोल रहे हैं, दुहने के लिए गायें घर-घर आ रही हैं और सबसे बड़ी पहचान तो यह है कि मेरी माँग के मोती बदरंग हो गये हैं। रात में जो मोतियों की चमक थी, वह भोर होने से कम हो गई है। क्या इससे पता नहीं चलता कि सवेरा हो गया?']

तनि एक[1] अइपन[2] लिखलूँ हम कोहबर[3]।
ताहि पइसी[4] सुतलन[5] दुलहा दुलरइता दुलहा।
जवरे[6] दुलहिनियाँ सुघड़[7] साथे हे हरी।
लिखलूँ हम कोहबर[8] मनचित लाय हे हरी ॥१॥
एक पहर बितलइ, दोसर पहर बितलइ हे।
भे गेलइ[9] फरिछ[10] बिहान,[11] सुरुज किरिन छिटकल हे हरी ॥२॥
दादी जे पइसी कोहबर दुलहा जगावे हे।
भे गेलो फरिछ बिहान, सुरुज किरिन छिटकल हे हरी ॥३॥
उठि उठि जगबथि राम के सीता देइ हे।
उठूँ परभु,[12] भे गेलो बिहान, उठहुँ परभु कोहबर हे हरी ॥४॥
हम तोहिं पूछूँ हे सीता देइ दुलहिन हे।
कइसे चिन्हलऽ[13] भे गेलो बिहान, कहहु सिरी राम हे हरी ॥५॥
भेल फरिछ परभु, कउआ[14] डार बोले जी।
गउआ दुहन घर घर आवे, सुनहु मोर सामी हे हरी ॥६॥
मोर माँगे मोतिया सभ परभु बदरंगे भेल।
एही से[15] चिन्हलूँ भेल बिहान, उठहु रघुनन्दन हे हरी ॥७॥

●

---

१. थोड़ा-सा। २. चावल को पीसकर तथा उसमें हल्दी मिलाकर तैयार किया गया घोल, जिससे चौका चित्रित किया जाता है। इसी घोल को 'ऐपन' कहते हैं। ३. वह गृह, जो खासकर दुलहे-दुलहिन के लिए सजाकर रखा जाता है और जिसमें दुलहे-दुलहिन से कुछ विधियाँ सम्पन्न कराई जाती हैं तथा उन्हें सोने के लिए भी वही घर दिया जाता है। ४. प्रवेश कर। ५. सोये। ६. साथ में। ७. सुगृहिणी, सुन्दरी। ८. कोहबर लिखना = कोहबर-घर में दीवाल पर, विधि-विधान तथा कुल-परंपरा के अनुरूप अनेक प्रकार के मांगलिक चित्र बनाना। ९. हो गया। १०. साफ, स्वच्छ। ११. भोर। १२. प्रभु, स्वामी। १३. पहचाना। १४. काक, कौआ। १५. इसी से।

[१०५]

[कोहबर में दुलहा सोया है। देर से सोने के कारण सवेरा होने पर भी उसकी नींद नहीं खुलती। जगाने पर वह कहता है कि अभी आधी रात शेष है, मुझे क्यों जगा रही हो? दुलहन उत्तर देती है—'दासी आँगन बुहार रही है और दीपक की लौ धूमिल हो गई, अब सवेरा हुआ, उठो।']

नया घर नया कोहबर नया नींद हे।
नया नया जुड़ल सनेह, सोहाग के रात, दूसर नया नींद हे ॥१॥
सासु जे पइसि जगाबए, नया नींद हे।
उठऽ बाबू, भे गेल बिहान, सोहाग के रात, दूसर नया नींद हे ॥२॥
सासु जे अइसन बइरिनियाँ, नया नींद हे।
आधि रात बोलथिन[1] बिहान, सोहाग के रात, दूसर नया नींद हे ॥३॥
लाड़ो[2] जे जाइ जगाबए, नया नींद हे।
उठऽ[3] परभु, भे गेल बिहान, सोहाग के रात, दूसर नया नींद हे ॥४॥
चेंरिया जे अँगना बहारइ, नया नींद हे।
दीया[4] के बाती धुमिल भेल, अइसे[5] हम जानली[6] बिहान।
सोहाग के रात, दूसर नया नींद हे ॥५॥

●

[१०६]

[दुलहा अपनी दुलहन के साथ कोहबर में सोने गया। उसने दुलहन को अलग हटकर ही सोने को कहा; क्योंकि उसके पसीने से उसकी कीमती चादर मैली हो जायगी। दुलहन रूठकर नीचे जमीन पर ही सो गई। दुलहे ने सलहज से दुलहन को मना देने का अनुरोध किया। भाभी ने ननद से रूठने का कारण पूछा। अभिमानिनी ननद ने कहा—'इसने मेरा अपमान किया है।' भाभी ने ननद को सांत्वना देते हुए अपने ननदोई को कुछ खरी-खोटी बातें सुनाईं।]

आले आले[1] बँसवा कटावलूँ, डढ़िया[2] नबि नबि[3] जाय।
से जीरा छावल कोहबर ॥१॥
सेहे[4] पइसि[5] सूतल[6] दुलहा दुलरइता दुलहा।
जवरे[7] सजनमा केर धिया, से जीरा छावल कोहबर ॥२॥

---

१. बोलती हैं। २. लाड़ली, दुलहन। ३. उठिए, जागिए। ४. दीपक। ५. इस तरह। ६. जाना।

१. अच्छे-अच्छे, कच्चे; हरे। २. डाली। ३. झुक-झुक जाना। ४. उसी में। ५. प्रवेशकर, पैठकर। ६. सोया। ७. साथ में।

ओते[8] सुतूँ[9], ओते सुतूँ, दुलहिन, दुलरइतिन दुलहिन।
पुरबी चदरिया[10] मइला होय जयतो, से जीरा छावल कोहबर ॥३॥
एतना बचनियाँ जब सुनलन, दुलहिन सुहवे।
खाट छोड़िए भुइयाँ[11] लोटे हे, से जीरा छावल कोहबर ॥४॥
भनसा[12] पइसल तोहें[13] बड़की सरहोजिया[14]।
अपन ननदिया के बौंसावह[15], से जीरा छावल कोहबर ॥५॥
उठूँ मइयाँ[16] उठूँ मइयाँ, जाऊँ कोहबरवा।
अपन सँम्हारू[17] लामी केस, से जीरा छावल कोहबर ॥६॥
कइसे उठूँ, कइसे उठूँ भउजी हे।
छिनारी पूता[18] बोलहे[19] कुबोल, से जीरा छावल कोहबर ॥७॥
कने[20] गेल[21], कीया[22] भेलऽ[23], छिनारी के भइया हे।
हमर ननदिया रूसवलऽ[24], से जीरा छावल कोहबर ॥८॥

●

[१०७]

[कोहबर में दुलहे के द्वारा दुलहिन की प्रशंसा करने पर दुलहन अपने दुलहे से कहती है कि अगर मैं तुम्हें इतनी अच्छी लगती हूँ तो तुम मेरे पिता से दहेज क्यों लेते हो?]

बहरी[1] के कोहबर लाल गुलाब हे।
भीतरी के कोहबर पनमें[2] छवावल हे ॥१॥
ताहि पइसी[3] सुतलन[4], सजन के बेटा जी।
जवरे[5] लगके[6] सुतलन दुलरइता देवा के बेटी जी ॥२॥
गरजे लागल मेघवा, बरसे लागल मेघ जी।
भींजे लागल दुलहा दुलहिन, जुटल[7] सनेह जी ॥३॥

---

८. उधर, अलग हटकर। ९. सोओ। १०. पूर्व देश की बनी चादर। ११. भूमि पर। १२. रसोई घर। १३. तुम। १४. साले की पत्नी। १५. मनाओ। १६. कन्या के लिए प्यार-भरा संबोधन। १७. संभालो। १८. छिनाल का पुत्र, गाली। १९. बोलता है। २०. किधर। २१. गया। २२. क्या। २३. हुआ। २४. रुठा दिया।

१. बाहर। २. पान के पत्तों से। ३. प्रवेश करके। ४. सोया। ५. साथ में। ६. लगकर, सटकर। ७. जुट गया।

खोलूँ धनि, खोलूँ धनि, अपन घूँघुट जी।
तोहर मुहँमां[8] लगहे[9], बड़ सोहामन[10] जी ॥४॥
जब रउरा[11] मुहँमाँ लगे सोहामन जी।
काहे[12] हमर बाबा से माँगलऽ दहेज जी ॥५॥

●

[१०८]

[प्रथम मिलन में ही दुलहन दुलहे की बातों से खिन्न होकर घर से चल पड़ती है। रास्ते में उसका भाई मिल जाता है। भाई उसे सांत्वना देता है और अपनी बहन की इच्छा के अनुसार अपने बहनोई को सजा भी देता है।]

मोर रे मजुरवा[1] केरा[2] नाया कोहबर।
गंगी जमुनी[3] बिछामन भेलइ हे ॥१॥
ताहि पइसी सुतलन दुलहा दुलरइता दुलहा।
जवरे[4] भये दुलरइतिन सुघइ[5] हे ॥२॥
ओते सुतूँ, ओते सुतूँ दुलरइतिन सुघइ हे।
घामे[6] रे चदरिया मइला होय रे, नाया कोहबर ॥३॥
एतना बचनियाँ जब सुनलन दुलरइता सुघइ हे।
चलि भेलन अपन नइहरवा रूसि[7] हे ॥४॥
अंतरा[8] में मिललन दुलरइता भइया हे।
काहे बहिनी बिदइया भेलऽ हे ॥५॥
हम तो बिदइया नइहरबा भेली हे।
परपूत[9] बोलऽ हे कुबोली बोली हे ॥६॥
बाँधल[10] केसिया भइया, खोलाइ देलन हे।
संखा चुड़िया[11] फोड़ाइ[12] देलन हे।
कसमस[13] चोलिया फराइ[14] देलन हे ॥७॥
घुरू घुरू[15] बहिनी, नइहरवा चलूँ हे ॥८॥

---

८. मुख-मण्डल। ९. लगता है। १०. सुहावना। ११. आपको। १२. क्यों।

१. मयूर के पंख। २. का। ३. दो रंगों का; जिसमें सोने-चाँदी के तारों से काम हुआ हो। ४. साथ में। ५. सुभगा, सुन्दरी। ६. पसीने से। ७. रूठकर। ८. दूर के दो गाँवों के बीच का सुनसान निर्जन मैदान। ९. पराये का पुत्र। १०. बंधा हुआ। ११. शंख की चूड़ियाँ। १२. फोड़। १३. कसनेवाली। १४. फाड़। १५. लौट चलो।

खोलल केसिया भइया बँधाइ देलन हे।
कसमस चोलिया सिलाइ देलन हे ॥९॥
संखा चुड़िया पेन्हाइ देलन हे।
छिनारी पूता[16] के बन्हाइ देलन हे ॥१०॥

●

[१०९]

[प्रथम मिलन की रात में दुलहा-दुलहन कोहबर में सोने गये। दुलहन ने दुलहे से अलग हटकर सोने को कहा। दुलहन की बातों से रुष्ट होकर दुलहे ने अपना बिछावन घर के बाहर कर लिया। कुछ देर के बाद जोरों की वर्षा होने लगी। दुलहा दुलहन से दरवाजा खोलने के लिए आरजू-मिन्नत करने लगा। दुलहन ने दुलहे से कहा—'यह तभी सम्भव है, जब तुम मेरे पिता तथा माता से दहेज नहीं लोगे और न मेरी माँ की बातों का कभी जवाब दोगे। इतना ही नहीं, अपनी सारी अर्जित सम्पत्ति, द्रव्यादि मेरे जिम्मे कर दोगे और उसका कभी हिसाब भी नहीं लोगे।' बिचारा दुलहा उसकी सभी शर्त्तों की स्वीकार कर लेता है।]

कहवाँ के कोहबर लाल से गुलाब हे।
कहवाँ के कोहबर पान से छवावल हे ॥१॥
अँगना के कोहबर लाल हे गुलाब हे।
भीतर के कोहबर पान से छवावल हे ॥२॥
सेहु पइसी[1] सुतलन दुलरइते बाबू राजा हे।
जवरे भइ सुतलन पंडितवा केरा धिया हे ॥३॥
ओते[2] सुतूँ, ओते सुतूँ, ससुर जी के बेटवा हे।
नइहर के चुनरी मइल[3] जनु होवइ हे ॥४॥
एतना बचन जब सुनलन दुलरइते बाबू राजा हे।
भीतर के सेजिया बाहर कर देलन हे ॥५॥
गरजे लगल बादल बरसे लगल बुंद हे।
देहरी लगल दुलहा रोदना पसारे[4] हे ॥६॥
खोलु धनि, खोलु धनि, सोबरन केवाड़ हे।
आजु के रतिया सुहावन करि देहु हे ॥७॥

---

१६. शीलभ्रष्ट माँ का पुत्र (प्यार से ससुरालवाले दुलहे को ऐसी गालियाँ दे-देकर गीत गाते हैं)।

१. उसमें प्रवेश करके। २. अलग हटकर, उधर ही। ३. मैली। ४. रोने लगा।

कइसे हम खोलूँ परभु, सोबरन केवड़िया हे।
हमरा बाबू से दहेज मत लिहऽ[5] हे।
हमरी अम्माँ से जयतुक[6] मत लिहऽ हे॥८॥
तोहरो बाबू से दहेज नहीं लेबो[7] हे।
तोहरी अम्माँ से जयतुक नहीं लेबो हे॥९॥
हमरी अम्माँ से जबाब मति करिहऽ[8] हे।
तोहरी अम्माँ से जबाब मति करबो हे॥१०॥
लाख अरजिया जी परभु, लेखो[9] मत लिहऽ हे।
अरथ भंडार[10] परभु, सौंपि हमरा दिहऽ हे॥११॥

●

[११०]

[दुलहा खेल में मस्त है। उसे दुलहन के रूठकर मायके चले जाने की सूचना मिलती है। वह सूचित करनेवाले व्यक्ति से कहता है—'जाने दो, वहाँ जाने पर उसकी पीठ गरम होगी।' लेकिन उसे उत्तर मिलता है—'यह नहीं समझना कि तुम्हारी सास निर्दय है। उन्हें अपनी बेटी प्राण से भी प्यारी है।']

परबत उपर नेमुआ चनन[1] केर गाछ, लिखूँ कोहबर।
ताहि तर दुलरइता दुलहा खेलइ जुगवा सार[2], लिखूँ कोहबर॥१॥
किया तोंहे अजी बाबू, खेलबऽ जुगवा सार, लिखूँ कोहबर।
तोहरो दुलरइतिन सुघवे[3] नइहरवा भागल जाय, लिखूँ कोहबर॥२॥

---

५. लेना। ६. सलामी, प्रणाम करने तथा किसी विधि को संपन्न करने के लिए द्रव्यादि लेना। ७. लूँगा। ८. जवाब करना=यह मुहावरा यहाँ सवाल-जवाब के अर्थ में प्रयुक्त है। एक मालवी लोकगीत में भी इसी अर्थ में 'जवाब करना' मुहावरे का व्यवहार किया गया है—

'कई रे जवाब करूँ रसिया से,
दल रे बादल चमके तारों,
साँस पड़े पिउ लागे जी प्यारों,
कई रे जवाब करूँ रसिया से।'

९. लेखा-जोखा, हिसाब। १०. द्रव्य का भांडार, द्रव्य और भांडार।

१. नींबू और चन्दन। २. जूआ, पाशा खेलने की गोटी। ३. प्यार-भरा सम्बोधन, जो सुग्गे के अर्थ का प्रतीक है। सुभगा।

जाय देहु जाय देहु, अम्माँ जी के पास, लिखूँ कोहबर।
उनको पीठी[4] बजतइन[5] सुबरन केर साँट[6], लिखूँ कोहबर॥३॥
ई मति जानु बाबू, सासु निरमोहिया, लिखूँ कोहबर।
उनकर धिया हइन[7] परान के अधार, लिखूँ कोहबर॥४॥

●

[१११]

[प्रस्तुत गीत में दुलहे की बात से रूठकर दुलहन के मायके चले जाने का उल्लेख है। दुलहा अपनी सलहज के पास दुलहन को मना देने के लिए पत्र लिखता है और अपनी भाभी के मनाने पर वह फिर विहँसती हुई अपने दुलहे के पास चली जाती है।]

अइपन[1] पिसिले, कोहबर लिखिले, लिखली मनचित लाय[2] रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर॥१॥
ताहि कोहबर सुतलन **कवन** दुलहा, जवरे सजनवाँ के धिया रे।
दिलजान लिखलों कोहबर, मनमोहन लिखलों कोहबर॥२॥
ओते सूतूँ, ओते सूतूँ, सुगइ **कवन** सुगइ, तोरे पीठे[3] गरमी बहूत रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर॥३॥
अतिना[4] बचन जब सुनली **कवन** सुगइ, रूसि नइहर चलि जाय रे।
दिलजान लिखलों कोहबर, मनमोहन लिखलों कोहबर॥४॥
रहिया में रे भेंटलन भइया, **कवन** भइया, कहाँ बहिनी
चललू अकेल रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर॥५॥
लाज सरम केरा बात जी भइया, कहलो न जाए, परपूता[5]
बोलले कुबोल रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर॥६॥
हँसि हँसि चिठिया जे लिखथिन **कवन** दुलहा,
देहुन गल[6] पियारो[7] सरहज हाँथ रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर॥७॥

---

४. पीठ पर। ५. बजेगी, बरसेगी। ६. सोने की छड़ी। ७. है।

१. आटा को पानी में घोलकर अथवा चावल पीसकर बनाया गया तरल पदार्थ, जिससे कोहबर में चित्र बनाया जाता है। २. मन लगाकर। ३. पीठ में। ४. इतना। ५. पराये का पुत्र। ६. दे आओ। ७. प्रिय, प्यारो।

मानु मानु[8] ननद हे हमरी बचनियाँ,
आजु सोहाग केरा रात रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर ॥८॥
कइसे में मानूं हे भउजी, तोहर बचनियाँ,
परपूता बोलले कुबोल रे।
संखा चूरी[9] देलन मसकाय[10] रे, डाँसल सेजिया[11] उदासे[12] रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर ॥९॥
मानु मानु ननद हे हमरी बचनियाँ।
फेनु कै[13] सेजिया डसायब रे, फेनु देबो संखा चूरी पेन्हाय रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर ॥१०॥
मानली कवन सुगइ चलति बिहँसि रे।
दिलजान लिखों कोहबर, मनमोहन लिखों कोहबर ॥११॥

●

[११२]

[इस गीत में कोहबर में दुलहा-दुलहिन के बीच चलनेवाले वार्त्तालाप का वर्णन हुआ है। बातचीत में दोनों के प्रति दोनों के उत्कट प्रेम का चित्रण हुआ है।]

रचिएक[1] कोहबर लिखलूँ हम कोहबर।
लिखलूँ हम मनचित लाय, अनजान लिखुँ कोहबर हे ॥१॥
सेहि पइसो सुतलन दुलहा दुलरइता दुलहा।
जवरे दुलहिनियाँ संघें साथ, लिखुँ कोहबर ॥२॥
रसे रसे डोलहइ चुनरी लगल बेनियाँ।
होवे लगल[2] दुलहा दुलहिन बात, अनजान लिखुँ कोहबर ॥३॥
हम त हिम्रो[3] धनि तोहर परनमा।
तू हका[4] हमर परान, अनजान लिखुँ कोहबर ॥४॥

●

८. मान जाओ, राजी हो जाओ। ९. शंख की चूड़ी। १०. तोड़। ११. बिछाया हुआ बिछावन। १२. उदास। १३. फिर से।

१. रचकर। २. होने लगा। ३. हूँ। ४. हो।

[११३]

[प्रस्तुत गीत में दुलहन दुलहे की बातों से रूठकर मायके चल पड़ती है। दुलहा अपने साले से उसे मना देने का अनुरोध करता है। भाई अपनी बहन को समझाते हुए कहता है कि पतिव्रता और कुलीन स्त्रियाँ अपने पति की बातों को सहती हैं। तुम्हें भी अपने पति के बातों का खयाल न करके, वहाँ लौट जाना चाहिए।]

उपरे परबतवा पर हारिल सुगवा, अहो उनकर रातुल[1]
दुनु ठोर, से एहो नाया कोहबर।
सेहो पइसि सूतल दुलहा दुलरइता दुलहा, जवरे सजनमा
केर धिया, से एहो नाया कोहबर ॥१॥
ओते[2] सुतूँ[3], ओते सुतूँ दुलहिन दुलरइता दुलहिन।
मोरे रे चदरिया मइल होय, नाया कोहबर ॥२॥
एतना बचनियाँ जब सुनलन दुलरइती सुहवे[4] हे।
खाट छोड़िए भुइयाँ[5] सोइ गेलन[6], ए नाया कोहबर ॥३॥
सरिया[7] खेलइते तोहें दुलरइता सरवा[8] हे।
रूसल बहिनियाँ बँउसी देह[9] त, एहो नाया कोहबर ॥४॥
उठूँ बहिनी, उठूँ बहिनी, हमर बोलिया हे।
उठिकर चिरवा सँम्हारू, त एहो नाया कोहबर ॥५॥
कइसे के उठियो अउ[10] चिरवा सँभारिए हे।
राउर बहनोइया बोलय कुबोल त, एहो नया कोहबर ॥६॥
बोले देहुन बोले देहुन, कुबोली बोलिया हे।
कुलमन्ती सहहे[11] कुबोल, एहो नाया कोहबर ॥७॥

●

(११४)

[पत्नी पति के पलंग के पास गई। पति ने उसके सतीत्व की परीक्षा के लिए उससे गंगा, सूर्य और अग्नि की शपथ खिलवाई। पत्नी इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। पति को उसके सतीत्व पर पूर्ण विश्वास हो गया। लेकिन, इन परीक्षाओं से पत्नी को हार्दिक क्लेश हुआ। उसने पुरुष की जाति को ही शंकाशील ठहराया। इतना ही

१. लाल। २. उधर, दूर हटकर। ३. सोओ। ४. सुभगा, सुन्दरी। ५. जमीन पर। ६. सो गई। ७. जूआ। ८. साला, पत्नी का भाई। ९. मना दो। १०. और। ११. सहती है।

नहीं, अंत में वह पृथ्वी में धँसकर प्राण त्यागने की बात सोचने लगी, जिससे उसे अपने पति का मुँह देखना न पड़े।]

सोने के खटिया रूपे केर मचिया, ईंगुर लगल चारो पाट[1] हे।
एक हाथ तेल, दूसर हाथ अबटन,[2] सीता सिरहनमा[3] लेले ठाढ़[4] हे ॥१॥
गंगा किरियवा[5] तूहुँ खाहु[6] जी सीता, तब धरू पलँग पर पाँव हे।
गंगा हाथ लिहलन जबहिं सीता देइ, गंगा हो गेलन जलबाय[7] हे ॥२॥
येह किरियवा सीता मैं न पतिआऊँ[8] सुरुज किरियवा तूँ खाहु हे।
जबहिं सीता हे सुरूज हाथ लिहलन,[9] सुरूज हो गेलन छपित हे ॥३॥
येहु किरियवा सीता मैं न पतिआऊँ, अगिन[10] किरियवा तूँ खाहु हे।
जबहिं सीता देइ अगिन हाथ लिहलन, अगिन होलइ[11] जरिछाय[12] हे ॥४॥
कहथिन रामचंदर सुनु देइ सीता जी, अब हम दास तोहार हे ॥५॥
अइसन पुरूख[13] के जात[14] बनावल, झूठो लगावे अकलंक[15] हे।
फाटत[16] भुइयाँ[17] ओकरो में[18] समयतीं,[19] मुहमाँ न देखतीं तोहार हे ॥६॥

●

[११५]

[शिवजी द्वारा चुपके-से दूसरी शादी करके दुलहन के साथ घर आने पर, पड़ोसिनों के समझाने पर जब गौरी दुलहन का परिछन करने जाती हैं, तब देखती हैं कि दुलहन तो उनकी बहन ही है। छोटी बहन गौरी से आशीर्वाद माँगती है। गौरी क्रोध में अपनी छोटी बहन को आशीर्वाद देती हैं—'तुम्हारा अहिवात अचल रहेगा, लेकिन तुम निःसंतान रहोगी। तुम घर का सारा काम करना, लेकिन भूल से भी कभी शिवजी के पास नहीं जाना।' सौत किसे अच्छी लग सकती है? नई दुलहन गौरी की छोटी बहन है, लेकिन वह सौत बनकर आई है, इसलिए गौरी शिवजी पर उसके अधिकार का कभी सहन नहीं कर सकतीं।]

पुरइन पात चढ़ि सुतली[1] गउरा देइ।
सपना देखली अजगूत[2] हे ॥१॥
टोला पड़ोसिन तुहूँ मोरा गोतनी।
सपना के करू न बिचार हे ॥२॥

---

१. चारो पाये में। २. उबटन। ३. खाट का वह हिस्सा, जिधर सिर रहता है। ४. खड़ी। ५. गंगा की शपथ। ६. खाओ। ७. अदृश्य। (बाय=वायु)। ८. बिश्वास करूँ। ९. लिया। १०. अग्नि। ११. हो गई। १२. जलकर राख हो गई। १३. पुरुष। १४. जाति। १५. कलंक, दोष। १६. फट जाती। १७. पृथ्वी। १८. उसी में। १९. प्रवेश कर जाती।

१. सोई। २. विचित्र; बेमेल [अयुक्त]।

तुहूँ इयानी[1] गउरा तुहूँ सेयानी।
तुहूँ पंडितवा के धिया हे ॥३॥
मोरँग[4] देस बाजन एक बाजे।
सिवजी के होयलइन[5] बियाह हे ॥४॥
पेन्हऽ गउरा देइ इयरी से पियरी।
सउतिन परिछ[6] घर लावऽ[7] हे ॥५॥
पुतहू जे रहतइ परिछि घर लइती[8]।
सउतिन परिछलो[9] न जाय हे ॥६॥
डँड़िया[10] उघारि जब देखलिन गउरा देइ।
इतो[11] हइ[12] बहिन हमार हे ॥७॥
देस पइसि[13] बहिनी बरो[14] न मिलल।
तुहूँ भेल सउतिन हमार हे ॥८॥
अइसन असीस बहिनी हमरा के दीह।
जुग जुग बढ़ी अहिवात हे ॥९॥
मँगिया के जुड़ल[15] सीतल रहिहऽ हे बहिनी।
कोखिया[16] के होइहऽ[17] बिहून[18] हे ॥१०॥
सार[19] पइसी बहिनी गोबर कढ़िहऽ[20]।
सिव जी के पास मत जाहु हे ॥११॥

●

[११६]

टुटली में फटली मड़इआ[1] देखते भेयामन[2] हे।
सेहु[3] पइसी सुतली गउरा देइ, मन पछतावे हे ॥१॥

---

३. सयानी का अनुवादात्मक प्रयोग। ४. नेपाल का एक पूर्वी जिला, जो पूर्णियाँ जिले की सीमा से मिला है। ५. हुआ। ६. परिछने। 'परिछन' की विधि संपन्न करने। ७. लाओ। ८. लाती। ९. परिछा भी। १०. पालकी। ११. यह तो। १२. है। १३. देस पइसी=सारे देश में घूमने पर, [पइस < प्रवेश]। १४. दुलहा। १५. मँगिया के जुड़ल=सौभाग्यवती। माँग का सुहाग अचल रहे। १६. कोख से। १७. होना। १८. हीन। (कोखिया-बिहून= कोख से हीन, निःसंतान)। १९. गोशाला। २०. काढ़ना।

१. झोपड़ी। २. भयानक। ३. उसमें।

माँगि चाँगि[४] लावल[५] महादेव, धन बित[६] छरिश्रा[७] हे।
बाघेछाल देल श्रोछाइ,[८] बसहा धान खाइल[९] हे ॥२॥
नहाइ धोवाइ महादेव चउका चढ़ि बइठल हे।
श्रधन[१०] देली ढरकाइ[११], बिहँसि गउरा बोलथिन हे ॥३॥
सब केर देलहो महादेव, धन बित छड़िया हे।
श्रपना जगतर[१२] भिखारी, पइँचो[१३] न मिलत हे।
ऐसन नगरिया के लोग, पइँचो न देहइ[१४] हे ॥४॥

●

[११७]

[दुलहन दुलहे की शिकायत अपने भाई से करती है और दुलहे पर चोरी करने का अभियोग लगाती है। परन्तु, उस (चित) चोर को वह धूप में बँधा नहीं देखना चाहती। उसे वह अपने आँचल में बाँधना चाहती है, जिससे वह उसपर हमेशा लुभाया रहे।]

श्रँगना में चकमक, कोहबर श्रँन्हार[१]।
नेसि[२] देहु दियरा[३], होयतो[४] इँजोर गे माइ ॥१॥
पान श्रइसन पतरी, सुहाग बाढ़ो[५] तोर।
साटन[६] के श्रँगिया समाय[७] नहीं कोर[८] गे माइ ॥२॥
केंचुश्रा[९] के चोरवा भइया, देहु न बंधाय।
रउदा[१०] में बाँधल भइया, रहतन रउदाय[११]।
श्रँचरो में बाँधब भइया रहतन लोभाय ॥३॥

●

४. भिक्षाटन करके। ५. लाये। ६. वित्त, संपत्ति। ७. छरिया या छड़िया। भोजपुरी क्षेत्र में इस पंक्ति में छरिया या छड़िया के स्थान पर 'सोनवा' शब्द गाया जाता है। ८. बिछाना, फैलाना। ९. खा गया। १०. श्रदहन, वह पानी, जो चावल पकाने के लिए गरम किया जाता है। ११. गिरा दिया। ढुलका दिया। १२. जगत् का। १३. पायँच, पैंचा, उधार। १४. देता है।

१. श्रँधेरा। २. जला दो। ३. दीपक। ४. हो जायगा। ५. बढ़े। ६. एक बढ़िया रेशमी कपड़ा। ७. श्रँटता नहीं है। ८. गोद, यहाँ छाती से तात्पर्य है। ९. कंचुकी। १०. धूप। ११. धूप से व्याकुल।

[११८]

[प्रस्तुत गीत में प्रथम मिलन की रात में ही दुलहे की बात से दुलहन के रूठकर मायके चलने और फिर दुलहे द्वारा उसे मनाने का उल्लेख हुआ है।]

नवगुन[१] लगल सनेह, सोहाग रात निंदिया।
सेहो पयसी सुतलन दुलरइता दुलहा, जवोरे दुलरइतिन दुलही हे ॥१॥
श्रोते सुतूँ श्रोते सुतूँ सुगही हे, सोहाग रात निंदिया।
पुरबी चदरिया मइला भेल रे, सोहाग रात निंदिया ॥२॥
एतना बचन धनि सुनहु न पयलन, सोहाग रात निंदिया।
चलि भेलन नइहरवा के बाट, सोहाग रात निंदिया ॥३॥
घुरू घुरू[२] श्राहु चलु मोर सेजरिया, सुहाग रात निंदिया।
संखा चुड़िया[३] पहिराय देबो हे, सोहाग रात निंदिया ॥४॥

●

[११९]

[कोहबर में पति, पत्नी से उसकी उदासी का कारण पूछता है। पत्नी अपनी उदासी का कारण बतलाते हुए कहती है—'बाग में फूले-फले अमृत के फल को पाने के लिए ही मैं उदास हूँ।' पति उसकी इच्छा की पूर्त्ति करता है। फिर, उस फल को पीसा गया और पत्नी उसे पीकर, प्रसन्न मुख से पति की सेज पर गई और वह पति को तेल लगाने लगी। पत्नी ने अपने प्रियतम से, उनके जन्म के समय किये गये उत्सवों के विषय में पूछा। पति ने अपने जन्म के समय सारे नगर में धूम-धाम से मनाये गये उत्सव तथा बड़े-बूढ़े लोगों द्वारा दिये गये आशीर्वचनों का जिक्र किया। फिर, पति द्वारा पत्नी के जन्मोत्सव के संबंध में पूछने पर वह अपनी दीनता दिखलाती हुई कहने लगी—'मेरे जन्म की सूचना पाते ही घर के सभी उदास हो गये तथा हम दोनों माँ-बेटी की बड़ी उपेक्षा हुई।' दुलहन के उत्तर में स्वाभाविकता तथा कन्या-जन्म के समय की जानेवाली उपेक्षा के साथ-साथ भारतीय समाज पर गहरा व्यंग्य भी है।]

कोहबर बइठल श्रोहे धनि सुन्नर, काहे धनि बदन मलीन।
तनि एक[१] श्रहे धनि मुहमा पखारह,[२] खिलि जयतो बदन तोहार ॥१॥
मलिया के बघिया[३] में फुलवा फुलायल, फूल फुलल कचनार।
श्रोहे फूल लागि[४] हइ जियरा बेयाकुल, मोर बदन कुम्हलाय ॥२॥

१. नौगुना, नया। २. लौट चलो। ३. शंख की चूड़ी। ४. पहना दूंगा।
१. थोड़ा-सा। २. पखारो, धोश्रो। ३. बाग में। ४. फूल के लिए।

मलिया के बधिया फेड़[५] अमरितवा,[६] फूल फरि भेल भुइआँ नेव[७] ।
तेहि अमरित फल लागि जियरा बेयाकुल, मोर बदन कुम्हलाए ॥३॥
कथिए पिसायब, कथिए उठायब, कथिए धरब हम सहेज ।
लोढ़े पिसाएब, हँथवे उठायब, कटोरवे रखब सहेज ॥४॥
सेहि पीइ[८] अहे धनि, सुतह हमर सेजिया, खिलि जयतो बदन तोहार ।
लोढ़े पिसायल, हँथवे उठायल, कटोरवे रखल सहेज ॥५॥
सेहि पीइ एहो धनि सुतलन सेजरिया, खिलि गेलन बदन अपान[९] ।
मलियन[१०] तेल कटोरवन[११] उबटन, तेल लगावे आठो अँग ॥६॥
तेल लगवइत[१२] एक बात पूछल, कहु परभु जलम के बात ।
हमरो जलम भेल, नगर बधावा भेल, भे गेलइ[१३] चहुँ दिस इँजोर ॥७॥
बड़ जेठ लोग सभ आसीस देलन, राजा भगीरथ होय ।
तुहूँ कहहु धनि अपन जलमिया, कहली हम सब हे अपान ॥८॥
जाहि दिन अजी परभु, हमरो जलम भेल, बाबा सुतल चदरी तान ।
झोंकि दिहल चेरिया मिरचा[१४] के बुकनी[१५], सउरी[१६] में
पड़ल हरहोर[१७] ॥९॥
बाबा जे जड़लन[१८] बजड़ केमड़िया,[१९] मामा[२०] उठल झउराय[२१] ।
गड़ल गड़ुअवा[२२] हमर उखड़ावल,[२३] होइ गेलन जीउ जंजाल ॥१०॥

[१२०]

[पति अपनी दुलहन से रात में कोहबर में आने का अनुरोध करता है, लेकिन वह घरवालों के देख लेने के बहाने बनाकर आने में अपनी असमर्थता प्रकट करती है। इस गीत में 'झिंगनी' के फूल के खिलने से सूर्यास्त होने का संकेत है।]

बेरिया[१] डुबन लगल, फूलल झिंगनियाँ[२] ।
आजु मोरा अइह धानि, हमर कोहबरिया ॥१॥
कइसे के अइयो[३] परभु, तोहरो कोहबरिया ।
अँगना में हथु[४] सासु मोर रे बयरनियाँ[५] ॥२॥

५. पेड़। ६. अमृत का ७. जमीन पर झुक गया। ८. उसे पीकर। ९. अपना। १०. मलिये में; तेल रखने का छोटे कटोरे जैसा पात्र-विशेष। ११. कटोरे में। १२. लगाते समय। १३. हो गया। १४. मिर्च। १५. चूर्ण। १६. सौरीघर। १७. हंगामा। १८. जड़ दिये, बंद कर दिये। १९. वज्र की किवाड़ी। २०. दादी। २१. झल्ला उठीं। २२. द्रव्य रखकर धरती में गाड़ा गया पात्र। २३. उखड़वा दिया।

१. वेला। मुहा०—बेर डुबल = सूर्यास्त हुआ। २. झिंगनी = एक तरकारी विशेष। ३. आऊँ। ४. है। ५. बैरिन, दुश्मन।

सासुजी के दिहऽ धानि, दलिया[६] आउ भतवा ।
चुपके से चलि अइहऽ हमर कोहबरिया ॥३॥
कइसे के अइयो परभु, तोहरो कोहबरिया ।
ओसरा[७] में हथु गोतनी मोर रे बयरिनियाँ ॥४॥
गोतनी के दिहऽ तूँ, भरि के चिलिमियाँ[८] ।
चुपके से आ जइहऽ हमर कोहबरिया ॥५॥
कइसे के अइयो परभु, तोहर कोहबरिया ।
बाहरे खेलत हथु, ननदी बयरनियाँ ॥६॥
ननदी के दिहऽ धानि, सुपती मउनियाँ[९] ।
चुपे चुपे चलि अइहऽ हमरो कोहबरिया ॥७॥
कइसो के अइयो परभु, तोहर कोहबरिया ।
मुसुकत खाड़े हथु देवर बयरनियाँ ॥८॥
देवर के दिहऽ धानि, खइनियाँ[१०] आउ चुनमा ।
चुपके से चलि अइहऽ, हमरो कोहबरिया ॥९॥

[१२१]

[विवाह के बाद कोहबर घर की असह्य गरमी के कारण दुलहन डोमिन से अपना कंगन देकर एक बेनिया (पंखा) खरीदती है। डोमिन को कंगन पहने देखकर दुलहन की सास, डोमिन से पूछती है कि इतना सुन्दर कंगन तुम्हें कहाँ से मिला ? डोमिन द्वारा सच्ची बात की जानकारी प्राप्त कर वह अपनी पतोहू को गालियाँ देने लगती है तथा अपने लड़के से उसकी शिकायत करती है। परन्तु, अपनी नई दुलहन के प्रेम-पाश में आबद्ध लड़का कहता है—'माँ तुम्हारा प्यार तो घड़ी-दो-घड़ी का ही है। मेरी दुलहिन का प्यार हमेशा के लिए है, उसे मैं ऐसा करने से मना नहीं कर सकता।]

घर पिछुअरवा[१] डोमिन के घरवा ।
देइ देहि बिनि[२] डोमिन बेनियाँ[३] नवरँगिया[४] ॥१॥

६. दाल। ७. बरामदा। ८. चिलम, मिट्टी का कटोरीनुमा पात्र, जिसपर तम्बाकू रखकर पीते हैं। ९. बच्चों के खेलने योग्य बाँस की बनी बटरी, डलिया आदि। १०. खैनी, तम्बाकू, तंबाकू का सूखा हुआ पत्ता, जो चूने के साथ रगड़कर खाया जाता है।

१. पीछे। २. बुन दो। ३. बाँस की कमाची का बना पंखा, व्यजन। ४. नौ रंग का।

हमरा जे हकइ[५] डोमिन, साँकर[६] कोहबरिया ।
हमरा के लागइ डोमिन, बड़ी रे गरमियाँ[७] ॥२॥
जे तूँहि चाहिं दुलहिन, बेनिया नवरँगिया ।
तूँ हमरा देहिं[८] दुलहिन, सोने के कँगनमा ॥३॥
कहमा तूँ पयले डोमिन, अइसन[९] कँगनमा ।
कहमा गढ़वले डोमिन, अइसन गढ़नमा ॥४॥
तोहर पुतहु किनलन[१०], बेनियाँ नवरँगिया ।
ओहि रे देलन मोरा, सोने के कँगनमा ॥५॥
भइया खउकी[११] बाबू खउकी, तूँहूँ रे पुतोहिया ।
कहमा हेरवलें[१२] अपन, सोने के कँगनमा ॥६॥
हमरा जे हलइ[१३] सासु, साँकर कोहबरिया ।
हमरा के लागइ सासु, एतना गरमियाँ ॥७॥
हम जे किनलूँ सासु, बेनिया नवरँगिया ।
ओने[१४] से अवलन[१५], दुलहा दुलरूआ ॥८॥
तोहर धानि हकउ बाबू, एता[१६] रे सउखिनियाँ[१७] ।
कइसे कइसे किनलन बेनियाँ नवरँगिया ॥९॥
तोहर दुलार अमाँ, घड़ी रे पहरुआ ।
धानि के दुलार अमाँ, हकइ सारी रतिया ।
कइसे के बरजूँ[१८] अमाँ, नाया दुलहिनियाँ ॥१०॥

●

[१२२]

[आँगन में चंदन के पेड़ के नीचे वर-वधू की सेज पर मोती-जटित सुहाग-बेनिया के डोलने तथा पुरवा हवा के कारण, दोनों को नींद आ गई। इसी बीच 'बेनिया' की चोरी हो गई। वधू ने अपनी ननद के यहाँ उस बेनिया को देखा। उसने अपने पति से उसका उल्लेख किया। पति पत्नी को अपनी बहन पर लगाये गये अभियोग के कारण, भला-बुरा कहने लगा। पत्नी ने शपथ खाकर कहा—'मैंने आपकी बहन पर अभियोग नहीं लगाया है, मैंने तो उसे उनके घर में देखा है।' पत्नी के रूठने के कारण पति का सारा क्रोध समाप्त हो जाता है और वह अपनी पत्नी को प्रबोधते हुए फिर से बेनिया खरीद देने का आश्वासन देता है।]

---

५. है। ६. साँकरी, पतली। ७. गरमी। ८. दो। ९. ऐसा। १०. खरीदा। ११. अपने भाई को खानेवाली, एक गाली विशेष। १२. भुलाया। १३. था। १४. उधर से। १५. आये। १६. इतनी। १७. शौकीन। १८. मना करूँ।

हार लगल[१] बेनियाँ, सोहाग लगल बेनियाँ ।
मोती लगल हे, सोभइ सुगही[२] के सेजिया ॥१॥
अँगना में हकइ[३] चनन केरा[४] हे गछिया[५] ।
बिछ गेलइ[६] हे धनि, सुगही के सेजिया ॥२॥
से चले लगलइ हे उहाँ[७] ,हार लागल बेनियाँ ।
ओने से[८] आवल पुरबा[९], आयल सुख नीनियाँ ॥३॥
भुला गेलइ हे मोरा हार लगल बेनियाँ ।
भुला गेलइ हे मोरा सुहाग लगल बेनियाँ ॥४॥
आग लावे[१०] गेलूँ[११] हम, ननदी के अँगना ।
उहीं[१२] धरल हे देखलूँ, हार लगल बेनियाँ ॥५॥
बाबा खउकी,[१३] भइया खउकी, तुहूँ मोरा धानि ।
लगाइ देलऽ हे मोर बहिनी के चोरिया ॥६॥
बाबा कीर[१४], भइया कीर, परभु तोर दोहइया ।
हम न लगौली[१५] तोर बहिनी के चोरिया ॥७॥
आग लावे गेली हम, ननदो के अँगना ।
ओहँइ[१६] देखली, हम हार लगल बेनियाँ ॥८॥
आवे देहु, आवे देहु, हाजीपुर के हटिया[१७] ।
कीन देबो[१८] हे धनि, हार लगल बेनियाँ ॥९॥
लाय देहो हे परभु, हार लगल बेनियाँ ।
रूस गेल हे धनि, लाय देबो बेनियाँ ॥१०॥

●

[१२३]

[गरमी के कारण जब पेड़ों के पत्ते भी नहीं डोल रहे थे, उस समय वर-वधू के कोहबर में सुन्दर बेनिया (पंखा) डोलती रही। एक दिन वह बेनिया चोरी चली गई। वधू ने अपने ननदोसी (ननद के पति) की सेज पर उस बेनिया को देखा और उसके विषय में उसने अपने पति से कहा। पति अपनी पत्नी पर बिगड़ गया कि तुम

---

१. लगा हुआ। २. सुभगा, सुगृहिणी। ३. है। ४. का। ५. पेड़, गाछ। ६. बिछा दिया गया, फैला दिया गया; बिछावन को पलँग, चारपाई आदि पर फैला दिया गया। ७. वहाँ। ८. उधर से। ९. पूरब दिशा से चलनेवाली हवा। १०. लाने। ११. गई। १२. वहीं। १३. खानेवाली। १४. किरिया, कसम, शपथ। १५. लगाया। १६. वहीं। १७. बाजार। १८. खरीद दूँगा।

मेरी बहन पर चोरी का अभियोग लगाती हो ? वह अपनी पत्नी को मारने की धमकी भी देने लगा। उसने यहाँ तक कह दिया—"सेजिया बिछायब तहाँ धनि पयबइ। अरे, मइया के जनमल बहिनियाँ कहाँ पयबइ।" इस पद में पत्नी का अपमान स्त्री-जाति की दीनता और सहोदरा बहन के प्रति उत्कट प्रेम झलकता है।]

अमवा[1] के पत्तो न डोलले,[2] महुआ के पत्तो न डोलले।
एक इहाँ[3] डोलले सुगइ सेज हे बेनियाँ ॥१॥
हरे रँग के बेनियाँ, आँचर[4] लगल मोतिया।
सुरुजे देलन जोतिया ॥२॥

आग आने[5] गेलिअइ[6] हम सोनरा के घरवा।
कउनी[7] रे बैरिनियाँ चोरयलक[8] मोर हे बेनियाँ ॥३॥
गेलिअइ हम ननदोहिं बनके[9] पहुनमा।
अरे, ननदोसिया के पलँग देखली अपन बेनिया ॥४॥
मारबो हे धनियाँ हम कादो[10] में लेसरि[11] के।
अरे, हमरे बहिनियाँ के लगैलऽ[12] काहे[13] चोरिया ॥५॥
सेजिया बिछायब तहाँ धनि पयबइ[14]।
अरे, मइया के जनमल बहिनियाँ कहाँ पयबइ ॥६॥

[१२४]

सजे-सजाए सेज पर बैठने के लिए पत्नी द्वारा अनुरोध करने पर, पति उससे कहता है—'मैं कैसे तुम्हारी सेज पर बैठूँ, तुमने तो मेरी बहन पर चोरी का अभियोग लगाया है।' पत्नी अपने भाई की शपथ खाकर पति को आश्वासन देती है कि 'मैंने ऐसा नहीं कहा है, लेकिन, पति को उस पर विश्वास नहीं होता। वह अपनी पत्नी का अपमान करते हुए कहता है—'जहाँ चार रुपए फेंक दूँगा, वहीं पत्नी मिल जायगी, लेकिन सहोदरा बहन कहाँ से पाऊँगा ?" पति के इस वाक्य से पत्नी तिलमिला जाती है और कह देती है—"मैं भी जहाँ आँचल पसार दूँगी, वहीं मुझे पति मिल जायँगे, परन्तु मुझे भी सहोदर भाई कहा से मिलेगा ? मैं अपने भाई की शपथ खा रही हूँ, फिर भी आपको विश्वास नहीं होता ?" इस गीत में भाई-बहन के उत्कट प्रेम के साथ पति-पत्नी का पारस्परिक कलह भी वर्णित है।

---

१. आम के। २. डोलता है। ३. यहाँ। ४. आँचल, झालर। ५. लाने। ६. गई। ७. कौन। ८. चुराया। ९. बनकर। १०. कीचड़। ११. लसारकर (भोज०), सानकर, घसीट-घसीट कर। १२. लगाया। १३. क्यों। १४. पाऊँगा।

रचि रचि[1] रचलूँ[2] सबुज रँग सेजिया।
सुरुज जोति सेजिया, मोती लगल सेजिया ॥१॥
धायल, धूपल[3] अयलन दुलहा दुलरइता दुलहा।
बइठूँ, बइठूँ, बइठूँ दुलहा सबुजे रँगे सेजिया ॥२॥
कइसे के बइठूँ धनि, तोहरा हे सेजिया।
तूँ तो लगैलऽ धनि, हमर बहिनी चोरिया ॥३॥
बाबा किरिया,[4] भइया किरिया, परभु तोहर दोहइया।
हम न लगवली तोर बहिनियाँ के चोरिया ॥४॥
टका[5] चार बिगवौं[6] हम पयबो सगरो[7] धनियाँ।
कहमा त पयबो धनि, अपन बहिनियाँ ॥५॥
अँचरा[8] बिछयबो ताहाँ[9] रे परभु पयबो।
कहमा त पयबो परभु, हमहुँ सहोदर भइया ॥६॥

[१२५]

[बाजार से खरीद कर लाए हुए मयूर-पंख लगे 'बेनिया' को डुलाने का अनुरोध करने पर पत्नी, पति से कहती है कि 'बेनिया' तो आपकी बहन ने चुरा लिया। इस पर पति अपनी पत्नी को आश्वासन देता है कि अगहन महीने के शुभ-मुहूर्त में बहन को विदा कर दूँगा। इस गीत में कौड़ी से 'बेनियाँ' खरीदने का उल्लेख है। पहले खरीद-बिक्री के लिए कौड़ी का प्रयोग होता था।]

नन्हीं नन्हीं कउड़िया दुलहा, फाँड़ा[1] बान्हीं लेल।
चलि गेल अहो दुलहा, हाजीपुर हटिया ॥१॥
उहाँ[3] से लावल[4] दुलहू, मजुरवा[5] लगल बेनियाँ।
घामा[6] के घमाएल कवन दुलहा, डोलाए माँगे हे बेनियाँ ॥२॥
कइसे डोलाऊँ परभु, मजुरवा लगल हे बेनियाँ।
तोरो कवन बहिनी चोराइ लेलन हे बेनियाँ ॥३॥
आवे देहु अगहन दिनवाँ, उपजे देहु धनवाँ।
अपनी कवन बहिनी बिदा करबों हे ससुररिया ॥४॥

---

१. रच-रचकर। २. बनाया, तैयार किया। ३. जल्दीबाजी में दौड़े हुए। ४. शपथ, कसम। ५. रुपया। ६. फेकूँगा। ७. सब जगह। ८. आँचल। ९. वहाँ।

१. धोती का वह हिस्सा, जो कमर में लपेटा जाता है। २. बांध लिया। ३. वहाँ। ४. लाया। ५. मयूर-पंख। ६. धूप।

[१२६]

[कोहबर में दुलहे के सो जाने के कारण दुलहन रूठ जाती है तथा फिर से अपने प्रियतम की सेज पर नहीं जाने का हठ करती है। उसे अपने पति की अरसिकता के कारण दुख है। वह कहती है—"उन्हें तो रंगीन सेज और नींद ही प्रिय है। उन्हें मुझसे क्या मतलब ?" दुलहे के ऐसे व्यवहार से दुलहन का रूठना उपयुक्त ही है।]

मोती लगल सेजिया, मुँगे[1] लगल सेजिया।
चाँद देलन जोतिया, सुरुज देलन मोतिया ॥१॥
ताहि पर[2] सुतलन दुलहा दुलरइता दुलहा।
आइ गेलइन[3] हे हुनुँके[4] सुखनीनियाँ[5] ॥२॥
नीनियाँ बेयागर[6] दुलहा तानलन[7] चदरिया।
दुलहिन सूतल मुख मोर[8] सबुज सेजिया ॥३॥
अब न जायब हम परभु जी के सेजिया।
उनखा[9] पियार[10] हकइन[11] सबुज सेजे नीनियाँ ॥४॥

●

[१२७]

अँगना में रिमझिम कोहबर दीप बरे[1] हे।
अरे ताहि कोहबर सुतलन **कवन** दुलहा,
बेनिया डोलाइ माँगे हे ॥१॥
बेनिया डोलइते हे आवल[2] सुखनीनियाँ।
रसे रसे[3] बीत गेलइ सउँसे[4] रँगे रतिया ॥२॥

●

१. मूँगा, एक रत्न-विशेष। २. उस पर। ३. आ गई। ४. उसको, पति को। ५. सुख की नींद। ६. व्यग्र, बेचैन। ७. तान लिया। ८. मुख मोड़ कर। ९. उन्हें। १०. प्यारा। ११. है।

१. जलता है। २. आ गई। ३. धीरे-धीरे। ४. समूची।

[१२८]

मोरा पिछुअड़वा[1] बबुरी[2] के गछिया[3],
हाँ जी मालिन, बबुरी फुलले कचनरवा।
से फूल लोढ़ले[4] दुलहा **कवन** दुलहा,
हाँ जी मालिन, गूँथि जे दहु[5] निरमल हरवा[6] ॥१॥
से हार पहिरले दुलहा **कवन** दुलहा,
हाँ जी मालिन, पेन्हि चलले ससुररिया।
बीचे रे **कवन** पुर में घोड़ा दउड़वलन[7],
हाँ जी मालिन, टूटि जे गेल निरमल हरवा ॥२॥
पनिया भरइते तोंहि कुइयाँ पनिहारिन,
हाँ जी मालिन, चूनि जे देहु निरमल हरवा।
येहुं निरमल हरवा बाबू, माइ रे बहिनी चुनथुन[8],
अउरो चुनथुन पातर[9] धनियाँ ॥३॥
माइ रे बहिनी चेरिया घर घरुअरिया[10],
पातरी धनि हथिन[11] नइहरवा।
मँचिया बइठले तोंहि अजी सरहजिया,
हाँ जी मालिन, कउना[12]हिं रँगे पातर धनियाँ ॥४॥
जनि[13] रोउ[14], जनि कानू[15], अजी ननदोसिया,
हाँ जी मालिन, सामबरन[16] मोर ननदिया।
येहो सरहजिया माइ हे जँगली छिनार,
हाँ जी मालिन, दूसि[17] देलन पातर धनियाँ ॥५॥

●

[१२९]

[पति ने बाहर से आकर पत्नी को सेज लगाने का आदेश दिया, लेकिन राजा की बेटी और पंडित भाई की बहन होने के गर्व में उसने वैसा करने से इनकार कर दिया। पति रूठकर विदेश चलने लगा। पत्नी दौड़कर घोड़े की लगाम पकड़कर पति से पूछने

१. पिछवाड़े, घर के पीछे। २. बबूल। ३. गाछ, पेड़। ४. तोड़ने, चुनने। ५. दो। ६. हार, माला। ७. दौड़ाया। ८. चुनेगी। ९. पतली। १०. घर में सुगृहिणी के रूप में है। ११. है। १२. किस। १३. मत। १४. रोओ। १५. काँदो, रोओ-चिल्लाओ। १६. श्याम वर्ण की, साँवले रंग की। १७. दोष लगा दिया।

लगी—'आप मुझे किसे सौंप रहे हैं?' पति ने उत्तर दिया—'तुम्हारे मायके में माँ-बाप हैं और ससुराल में ससुर आदि हैं। तुम्हें घबड़ाने की जरूरत क्या है?" परन्तु, पत्नी ने जिसका सारा गर्व टूट चुका था, कहा—"पति के बिना ये सभी मेरे किस काम के? जिस प्रकार माँ-बाप के बिना नैहर बेकार हैं, उसी प्रकार पति के बिना ससुराल भी मेरे लिए किसी काम का नहीं?' भारतीय पत्नी के लिए पति ही सर्वस्व है।]

दूरि गमन[1] से अयलन कवन दुलहा, दुअराहिं भरि गेल साँझ[2] हे।
केने[3] गेल, किअा भेल सुगइ कवन सुगइ, कोहबर के करू न बिचार हे ॥१॥
एक हम राजा के बेटी, दूसरे पंडितवा के बहिनी, हम से न होतइ बिचार हे।
अतना बचनियाँ जब सुनलन कवन दुलहा, घोड़े पीठे भेलन असवार हे ॥२॥
अतना बचनियाँ जब सुनलन कवन सुगइ,
पटुक[4] झारिए झुरिए[5] उठलन कवन सुगइ।
पकड़ले घोरा[6] के लगाम हे।

अपने तो जाहथि[7] जी परभु, ओहे रे तिरहुत देसवा,
हमरा के[8] सौंपले जाएब जी ॥३॥

नइहर में हव[9] हे धनि, माय बाप अउरो सहोदर भाई,
ससुरा में हव छतरीराज[10] हे ॥४॥

बिनु रे माय बाप, कइसन हे नइहर लोगवा, बिनु सामी नहीं ससुरार हे।
किआ[11] काम देथिन[12] जी परभु, माय बाप अउरो सहोदर भाई,
चाहे काम देथिन छतरीराज हे? ॥५॥

[१३०]

[पत्नी अपने बालों को ठीक कर रही थी, उसी समय उसका पति आ जाता है और उसकी बाँह पकड़ लेता है। पत्नी अपने पति से बाँह छोड़ने का आग्रह करती है; क्योंकि उसे भय है कि उसकी चूड़ी फूट जायगी तथा बाँह में मोच आ जायगी। पति जबरदस्ती करता है और चूड़ी फिर से पिन्हा देने का आश्वासन देता है। अभिमानिनी पत्नी उस चूड़ी को छूने को भी तैयार नहीं है, लेकिन पति अपनी शक्ति और पौरुष के बल पर उसे चूड़ी पहना देने की धमकी देता है।]

१. दूर से चलकर। २. भरि गेल साँझ=संध्या हो गई। ३. किधर। ४. चादर [पट्ट, पट्टिका]। ५. झाड़कर। ६. घोड़ा। ७. जा रहे हैं। ८. किसे। ९. है। १०. क्षत्रियराज। ११. किस, कौन। १२. देंगे।

मलिया के बाघ[1] में बेलिया[2] फूले हे फुलवा,
चमेलिया फूले हे फुलवा।
तहवाँ हे कवन सुगइ झारे[3] लामी[4] केसिया ॥१॥
घोड़वा चढ़ल आवे कवन दुलहा।
अरे लपकि धइले छयला[5] दहिन मोरा हे बहियाँ ॥२॥
छोड़ू छयला, छोड़ू छयला, दहिन मोरा बहियाँ।
फूटि जइहें संखाचूड़ी, मुरुकि[6] जइहें बहियाँ ॥३॥
फूटे दहु संखाचूड़ी, नाहि मुरुकि बहियाँ।
फेनो[7] के पेन्हयबो सुगइ, लाली लाली हे चूड़िया।
अरे फेनो के पेन्हयबो सुगइ, सोने के हे कँगना ॥४॥
कहाँ तूहूँ पयबो परभु, लाली लाली चूड़िया।
कहाँ तूहूँ पयबो परभु, सोने के कँगना ॥५॥
अम्माँ पउती[8] पयबो सुगइ, लाल लाल चूड़िया।
सोनरा घर पयबो सुगइ, सोने के कँगना ॥६॥
जब हम होयबो[9] कवन साही के बेटिया।
अरे लातहुँ[10] न छुअबो छयला, लाली लाली चूड़िया ॥७॥
जब हम होयबो कवन साही बहिनियाँ।
अरे लातहुँ न छुअबो छयला, सोने के कँगना ॥८॥
जब हम होयबो कवन साही के बेटवा।
अरे जोर[11] से पेन्हयबो सुगइ, लाली लाली चूड़िया ॥९॥
जब हम होयबो कवन साही भतीजवा।
अरे जोर से पेन्हयबो सुगइ, सोने के कँगना ॥१०॥

[१३१]

[दुलहा दुलहन को अपने घर चलने को कहता है। दुलहन अपने पिता के घर को छोड़ने में होने वाली असुविधाओं तथा माँ-बाप, सखी-सहेलियों और भाई-बहनों से बिछुड़ने की वेदना का जिक्र करती है। दुलहा उसे सांत्वना देते हुए कहता है—"तुम अब मेरे पिता को अपना पिता, माँ को अपनी माँ, मेरे छोटे भाई को अपना प्यारा देवर और मेरी बहनों को अपनी सहेली समझना।" अंत में

१. बाग। २. बेली का फूल। ३. झाड़ती है। ४. लंबे। ५. छैला, बाँका, रँगीला पुरुष। ६. मोच आ जायगी। ७. फिर से। ८. सींकी से बुनकर बनाई गई पिटारी। ९. होऊंगी। १०. लात से भी, पैर से भी। ११. ताकत, बल।

दुलहन 'सुपती-मौनी' के खेल तथा मायके के सुख को भूलने में अपनी असमर्थता प्रकट करती है। कन्याओं को अपनी माँ के घर की स्वतंत्रता ससुराल में कैसे नसीब हो सकती है? वहाँ तो दुलहन बनकर घर के कोने में छिपा रहना पड़ेगा।

हरि हरि[१] दुभिया[२] सोहामन लागे हे।
फरि फरि[३] दौना[४] झुकि गेलइ हे ॥१॥
घोड़वा दउड़यते अयलन दुलरइता दुलहा हे।
जिनखर[५] अभरन[६] अमोद[७] लागे हे।
जिनखर पगिया[८] केसर रँगे हे ॥२॥
धाइ धुइ[९] पइसल सुघइ सेजिया हे।
कहु धनि खेम[१०] कुसल हे।
चलहु धनि हमर देसवा हे ॥३॥
हम कइसे जयबो परभु तोहर देसवा हे।
रोइ रोइ मइया मरि जयतइ हे ॥४॥
कलपि[११] कलपि बाबू रहि जयतन हे।
सँघवा[१२] के सखिया सँघे मोरा छूटि जयतइ हे।
कोरपिछुआ[१३] भइया रूसि जयतइ हे ॥५॥
एतना बचनियाँ सुनि के दुलरइता दुलहा हे।
सुनु धनि बचन मोरा हे ॥६॥
मइया मोरा होतो[१४] धनि तोहर मइया हे।
मोर बाबूजी तोर बाप हे।
मोर बहिनी होतो धनि तोहर सखिया हे।
मोर भइया तोहर लहुरा[१५] देवर हे ॥७॥
नइहरा के सुखवा परभु जी कइसे बिसरब हे।
उहाँ सुपती[१६] मउनी कइसे खेलब हे ॥८॥

---

१. हरे रंग की। २. दूब, दूर्वा। ३. फलकर। ४. एक प्रकार का पौधा, जिसकी पत्तियों में तीव्र गंध होती है। ५. जिनका। ६. आभरण। ७. फैलने वाली सुगंध, सुरभि। ८. पाग, पगड़ी। ९. दौड़कर। १०. क्षेम-कुशल, कुशल-समाचार। ११. कलपि कलपि = विलाप करके। १२. साथ की। १३. कोरपिछुआ भइया = सबसे छोटा भाई; जिसके बाद दूसरी संतान नहीं हुई हो। १४. होगी। १५. लघु; छोटा; प्यारा। १६. सुपती-मउनी = छोटा सूप और डलिया, जिनसे छोटे बच्चे घरेलू खेल खेला करते हैं। जिस प्रकार गुड्डा-गुड़ियों से शादी-व्याह और घर बसाने का खेल होता है, उसी प्रकार 'सुपती-मउनी' से घर-गृहस्थी का खेल होता है।

[१३२]

[मनोवांछित पुष्प के लिए पति-पत्नी में नोक-झोंक हुई। पति ने उन पुष्पों का पता पूछा। पत्नी ने बतलाया कि वह मेरे मायके के बाग में है। भौंरे के रूप में छिपकर तुम उसे ले आओ। पति पत्नी की बात मानकर और उसे प्रसन्न रखने के लिए उस बाग में पहुँचा, लेकिन अपने साले के द्वारा वह चोरी करते समय पकड़ा गया। साले ने उसे लवंग की डाली में बाँध दिया तथा स्वर्ण-छड़ी से उसकी खबर भी ली। अपनी दुर्दशा की खबर उसने पत्र द्वारा अपनी पत्नी को दी। पत्नी ने अपने भाई को पत्र लिख कर उसे मुक्त करवाया।]

अउरी झउरी[१] करथिन दुलरइतिन सुगवे हे।
हम लेबइ[२] इलइची[३] फुलवा हे।
हम लेबइ जाफर फुलवा हे ॥१॥
कहाँ हम पयबो इलइची फुलवा हे।
कहमा जाफर फुलवा हे ॥२॥
हमरा नइहरवा परभु इलइची फुलवा हे।
अउरो जाफर फुलवा हे ॥३॥
पहुना[४] बहाने परभु नइहरवा जइह[५] हे।
भौंरवा[६] रूपे फूलवा लेइ अइह हे ॥४॥
बगिया में अयलन दुलरइता सरवा[७] हे।
लवँगिया डरवा[८] सरवा बाँधी देलन हे।
सोबरन सँटिया[९] सरवा मारी[१०] देलन हे ॥५॥
रोइ रोइ चिठिया लिखथिन दुलरइता दुलहा हे।
येहो चिठिया धनि हाथ हे ॥६॥
हँसि हँसि चिठिया लिखथिन दुलरइतिन सुघइ हे।
येहो चिठिया भइया हाथ हे ॥७॥
लवंग डढ़िया[११] भइया चोरवा[१२] खोली दिहऽ हे।
सोबरन संटिया भइया फेरी[१३] लिहऽ हे ॥८॥

---

१. अउरी-झउरी = नोक-झोंक। २. लूँगी। ३. इलायची। ४. पाहुन, कुटुम्ब, मेहमान। ५. जाना। ६. भौंरा। ७. साला, पत्नी का भाई। ८. डाली में। ९. छड़ी। १०. मारा, पीटा। ११. डाली। १२. चोर को। १३. लौटा लेना।

[१३३]

[सजे-सजाये सेज पर सोते समय पति की बातों से रूठकर पत्नी मायके चल पड़ती है। रास्ते में नदी के किनारे पहुँचकर वह मल्लाह से नदी पार कर देने का अनुरोध करती है। मल्लाह उससे रात वहीं व्यतीत करने को कहता है। वह पतिव्रता नारी मल्लाह को भला-बुरा सुनाते हुए कहती है—'चाँद-सूरज के समान अपने पति को तो मैं त्याग कर आई हूँ, फिर तुम्हारे जैसे नीच का संग मैं करूँ ?" उसी समय उसका पति फल-फूलों के साथ उसे मनाने आ जाता है और वह अपना मान त्यागकर उसके साथ लौट जाती है।

अहे मोरा पिछुअड़ा[1] लवँगिया के गछिया[2] ।
लवँग चुअले[3] सारी रात हे।
अहे लवँग चुनि चुनि सेजिया डँसवलों।
बीचे बीचे रेसम के डोरा हे ॥१॥
अहे ताहि पइसि[4] सुतले, दुलहा **कवन** दुलहा।
जउरे सजनवा केरा धिया हे।
अहे ओते ओते[5] सुतहु **कवन** सुगइ।
तोरा गरमी मोरा ना सोहाय हे ॥२॥
अहे अतिना[6] बचनिवाँ जब सुनल **कवन** सुगइ।
रोअत नइहरवा चलि जाय हे।
अहे मोरा पिछुअड़वा मलहवा रे भइया।
मोहि के[7] पार उतारऽ हे ॥३॥
अहे राति अमल[8] बहिनी अतहीं[9] गँवावऽ[10] ।
भोरे[11] उतारब पार हे ॥४॥
अहे भला जनि बोलइ भइया, मलहवा भइया।
तोरो बोली मोहिं न सोहाय हे।
अहे चान[12] सुरुज अइसन अपन परभु तेजलों[13] ।
तोहरो के सँग नहीं जायब हे ॥५॥

---

१. पीछे, पिछवाड़े, मकान के पिछले भाग में। २. गाछ, पेड़। ३. चूता है। ४. प्रवेश करके ५. अलग हटकर, उधर। ६. इतना। ७. मुझे। ८. समय। ९. यहीं। १०. बिताओ, व्यतीत करो। ११. सबेरे। १२. चंद्रमा। १३. त्याग दिया।

अहे एके नइया आवले लवँग इलाइची।
दोसरे नइया आवे पाकल पान हे।
अहे तीसरे नइया आवले ओहे पनखउका[14] ।
उनके साथ उतरव पार हे ॥६॥

●

(१३४)

बगिया मति[1] अइहा[2] हो दुलहा, डेहुरिया[3] मति हो छुइहा[4] ।
पोसल चिरईंया[5] हो दुलहा, उड़ाइ मति हो दीहा[6] ॥१॥
बगिया हम अइबो[7] हे सासु[8], डेहुरिया हम हे छुइबो[8] ।
पोसल चिरइँया हे सासु, उड़ाइ हम हे देबो ॥२॥
सड़क मति अइहा हे दुलहा, ओहरिया[9] मति हे छुइहा।
पोसल सुगवा हे दुलहा, उड़ाइ मति हो दीहा ॥३॥
सड़क हम अइबो हे सासु, ओहरिया हम हे छुइबो।
पोसल सुगवा हे सासु उड़ाइ हम हे देबो ॥४॥
मड़वा मति अइहो हो दुलहा, कलसवा मति हो छुइहा।
बरल[10] चमुकवा[11] हे दुलहा, बुताइ[12] मति हे दीहा ॥५॥
मड़वा हम अइबो हे सासु, कलसवा हम हे छुइबो।
बरल चमुकवा हे सासु, बुताइ हम हे देबो ॥६॥
कोहबर मति जइहा हे दुलहा, सेजिया मति हे छुइहा।
पोसल बेटिया हे दुलहा, रुलाइ मति हे दीहा ॥७॥
कोहबर हम जयबो हे सासु, सेजिया हम हे छुइबो।
पोसल बेटिया हे सासु, रूलाइ हम हे देबो ॥८॥

●

---

१४. पान खाने वाला, यहाँ उसके पति से तात्पर्य है।

१. मत, नहीं। २. आना। ३. ड्योढ़ी; छोटी डाली। ४. छूना। ५. चिड़ियाँ। ६. देना। ७. आऊँगा। ८. छूऊँगा। ९. ओहार, पालकी के ऊपर का परदा। १०. जले हुए, जलते हुए। ११. कलश के ऊपर का वह दीपक, जिसमें चारो ओर चार बत्तियाँ जलायी जाती हैं, चौमुख। १२. बुझाना, जलती हुई लौ को ठंढा करना।

[१३५]

नदिया किनारे जिरवा जलमि[1] गेलइ ।
फरे[2] फूले लबधि[3] गेलइ हे ॥१॥
घोड़वा चढ़ल आथिन[4] दुलरइता दुलहा हे ।
उनकर पगड़ी अमोद[5] बसे हे ॥२॥
ओतें[6] सूतूँ, ओतें सूतूँ, दुलरइता दुलहा हे ।
होइ जयतइ चुनरिया मइला हे ॥३॥
धोबिया जे धोबले[7] जमुन दह हे ।
सूखे[8] देलकइ चनन गछिया हे ॥४॥
बाट जे पूछले बटोहिया भइया हे ।
केकर[9] सिर के पगड़िया सुखइ हे ।
केकर तन के चुनरिया सुखइ हे ।
जेकर गंधे आमोद बसे हे ॥५॥

●

[१३६]

जमुना किनरवा[1] जीरवा जलमि गेलइ हे ।
फरी फूरी[2] ओरझ[3] गेलइ हे ॥१॥
हथिया चढ़ल आथिन[4] दुलरइता दुलहा हे ।
जिनखर[5] पगिया रँगे रँगे हे ।
जिनखर अभरन[6] रसे रसे[7] हे ॥२॥
नदिया किनारे धोबिया धोवे लगल हे ।
सूखे देलक कदमियाँ तरे हे ॥३॥

---

१. जलमि गेलइ = पैदा हो गया, जनम गया । २. फल से । ३. लबधि गेलइ = लद गया । ४. आ रहे हैं । ५. आमोद, सुवास । ६. उधर । ७. धोता है । ८. सूखने के लिए । ९. किसका ।

१. किनारे । २. फल-फूलकर । ३. झुक गया, उलझ गया । ४. आते हैं । ५. जिनके । ६. आभरण । ७. शोभित हो रहे हैं । [रसे-रसे <लसे-लसे < लसना]।

हँसि हँसि पुछथिन **कवन** दुलहा हे ।
केकर बेटी के चुनरिया सुखइन हे ।
केकर धिया के केचुअवा[8] सुखइन हे ॥४॥
जिनखर चुनरी रँगे रँगे हे ।
जिनखर केचुआ अमोद बसे हे ॥५॥
कवन पुर के हथिन दुलरइता बाबू हे ।
उनखर बेटी के चुनरिया सुखइन हे ।
उनखर धिया के केचुअवा सुखइन हे ॥६॥

●

[१३७]

[दुलहा हाथी पर सवार होकर आता है और वह अपनी ससुराल तथा दुलहन का पता पूछता है । ससुराल नजदीक आ गया है, इसलिए, उसे धीरे-धीरे बोलने का निर्देश किया जाता है तथा धीरे से उसकी दुलहन के विषय में इतना बतला दिया जाता है कि तुम्हारी दुलहन कची कली के समान है । इस गीत में दुलहे की उत्सुकता और शिष्टाचार का वर्णन उल्लेखनीय है ।]

बाबा फुलवरिया लवँग[1] केर गछिया, अरे दह[2] ।
जुहिया फुलल कचनरिया, अरे दह ॥१॥
घोड़वा चढ़ल आवइ दुलहा दुलरइता दुलहा, अरे दह ।
कते[3] दूर हइ[4] ससुररिया, अरे दह ।
कइसन हइ दुलहिनियाँ, अरे दह ॥२॥
धीरे बोलूँ, धीरे बोलूँ दुलहा दुलरइता दुलहा, अरे दह ।
नजिके[5] बसहइ[6] ससुररिया, अरे दह ।
काँच[7] कली हइ दुलहिनियाँ, अरे दह ॥३॥

●

---

८. कंचुकी ।

१. लवंग । २. अरे दह = यह केवल स्वर-निर्वाह के लिए प्रयुक्त निरर्थक शब्द है । ३. कितनी । ४. है । ५. नजदीक ही । ६. बसता है । ७. कची ।

[१३८]

[दुलहा गंगा स्नान को गया और वह रास्ते में कहीं ठहर गया। वहीं वह किसी मालिन के प्रेम-पाश में फँस गया। पत्नी ने उसे मालिन के साथ देखा और वह रूठ कर अपने मायके चल पड़ी। वहाँ पहुँचकर उसने भाई से अपने पति को सजा देने का अनुरोध किया।]

गंगा असननियाँ[1] चललन दुलरइता दुलहा हे।
बास[2] लेलन कदमियाँ[3] तरे हे।
सूत[4] गेलन मलिनियाँ कोर[5] हे ॥१॥
पान के पनबट्टा[6] ले ले धानि खाड़ा भेलन हे।
लेहु[7] परभु पान बिरवा[8] हे ॥२॥
देखि के मलिनियाँ कोरे नइहरवा चललन हे।
चलि भेलन भइया पास हे ॥३॥
चनन गछिया[9] काटिहऽ[10] भइया, दुलरइता भइया।
अपने बहनोइया लागि[11] हे ॥४॥
रेसम डोरिया[12] बाँटिहऽ[13] दुलरइता भइया हे।
अपनो बहनोइया लागि हे ॥५॥

●

[१३९]

[कोहबर में दुलहा-दुलहन सोये। दुलहे ने रात भर विभिन्न चीजों को देकर, आरज़ू-मिन्नत करते हुए अपनी ओर घूमकर सोने के लिए दुलहन से आग्रह किया। अंत में भोर में दुलहन ने अपना मान त्यागकर दुलहे की बात मान ली, लेकिन उसी समय बैरी काग बोलने लगे और दोनों दिल-मसोस कर दिन भर के लिए अलग हो गए।]

अगे अगे चेरिया बेटिया, नेस देहु[1] मानिक दियरा[2] हे।
येहो[3] बँसहर[4] घर दियरा बराय[5] देहु, सुततन[6] दुलरू दुलहा हे ॥१॥

---

१. स्नान करने के लिए। २. वास, निवास। ३. कदमियाँ तरे=कदंब के नीचे। ४. सो गया। ५. गोद में। ६. पान के बीड़े रखने का एक प्रकार का डिब्बा। ७. लो। ८. बीड़ा। ९. गाछ, पेड़। १०. काटना। ११. लिए। १२. डोरी १३. बाँटना, ऐंठना।

१. नेस देहु=जला दो। २. दीपक। ३. इस। ४. बाँस का घर, मंडप, कोहबर। ५. जला दो। ६. सोये।

पहिल पहर राती बीतल, इनती मिनती[7] करथिन हे।
लेहु बहुए सोने के सिन्होंरबा[8], तो उलटि पुलटि सोबऽ[9] हे ॥२॥
अपन सिन्होरबा परभु मइया के दीहऽ[10], अउरो बहिनी के दीहऽ हे।
पुरुब मुँह[11] उगले जो चान, तइयो[12] नहीं उलटि सोयबो हे ॥३॥
दोसर पहर राती बीतल, इनती मिनती करथिन हे।
लेहु बहुए नाक के बेसरिया, उलटि जरा सोबहु हे ॥४॥
अपन बेसरिया परभु, मइया दीहऽ, अउरो बहिनिया दीहऽ हे।
पुरुब के सुरूज पछिम उगतो[13], तइयो नहीं उलटि सोयबो हे ॥५॥
तेसर पहर रात बीतल, दुलहा मिनती करे, अउरो आरजू करे हे।
लेहु सुहवे[14] सोनहर[15] चुनरिया, त उलटि पुलटि सोबऽ हे ॥६॥
अपन चुनरिया परभु जी मइया दीहऽ, अउरो बहिनिया दीहऽ हे।
पछिम उगतो जे चान, तइयो तोरा मुँह न सोयब हे ॥७॥
चउठा पहर रात बीतल, भोर भिनिसरा[16] भेले हे।
भिनसरे लगल सिनेहिया[17] तो कागा बैरी भेले हे ॥८॥

●

[१४०]

[दुलहे के घर में आने पर दुलहन काँपने लगी तथा कोड़ में ले लेने पर उसे पसीने आ गए। उसने दुलहे से छोड़ देने का अनुरोध किया तथा मायके भाग जाने की धमकी दी। अन्त में उसने अपने मायके के बाग से चंपा की कली ला देने की शर्त पर वहाँ रहना स्वीकार किया। इस गीत में प्रथम-मिलन का स्वाभाविक वर्णन हुआ है।

जब पिया अयलन[1] हमर अँगनमा।
धमे धमे[2] धमकहइ[3] सगर[4] अँगनमा ॥१॥
जब पिया अयलन हमर चउकठिया[5]।
मचे मचे मचकहइ[6] हमर चउकठिया ॥२॥

---

७. प्रार्थना। ८. सिंधोरा। लकड़ी का बना हुआ सिंदूर पात्र। ९. सोओ। १०. देना। ११. पूरब दिशा की ओर। १२. तौभी। १३. उगेंगे। १४. सुभगे, सुगृहिणी। १५. स्वर्ण-खचित। १६. भोर। १७ स्नेह।

१. आए। २. धम-धम। ३. धमकता है। ४. समग्र, समूचा। ५. चौकठ। ६. मचकता है।

जब पिया अयलन हमर सेजरिया।
थरे थरे काँपहइ[7] हमर बारी[8] देहिया ॥३॥
जब पिया भरलन[9] हमरा के गोदिया।
टपे टपे चूए लगल, हमर पसिनमा[10] ॥४॥
छोड़ि देहु छोड़ि देहु, हमर अँचरवा।
हम भागि जयबो[11] अब अपन नइहरवा ॥५॥
हमर नइहरवा में चंपा के कलिया।
आनि देहु[12] दुलहा त रहम[13] ससुररिया ॥६॥

●

[१४१]

[इस गीत में दुलहे को सीख दी गई है कि ससुराल में अनावश्यक आँखें नहीं मटकाने तथा लज्जा से सिर नीचे नहीं झुकाना। ऐसा करोगे तो औरतें लजालू समझेंगी। इसके अतिरिक्त दुलहे की आँख की उपमा आम की फाँक से, नाक की सुग्गे के ठोर से तथा दाँत की अनार के दाने से दी गई है।]

कवन साही अइसन[1] लाली दरवजवा, मानिक जड़ले केवाँड़ हे।
कवन दुलहा अइसन बड़ा दुलरूआ, खेलले पासा[2] जोड़ हे ॥१॥
कवन भँडुआ अइसन लाली दरवजवा, मानिक जड़ले[3] केवाँड़[4] हे।
कवन दुलहा अइसन बड़ा दुलरूआ, खेलले पासा जोड़ हे ॥२॥
अँखवा[5] जनि[6] मटकइह[7] दुलहा, धरती जनि लइह[8] डीठ हे।
देखन अइहें[9] ससुरारी के लोगवा, कइसन सुन्नर दमाद हे ॥३॥
अँखिया दुलरुआ के आमि[10] के फँकवाँ,[11] नकवा सुगवा के ठोर हे।
जइसन झलके अनार के दाना, ओइसन[12] दुलरूआ के दाँत हे ॥३॥

●

---

७. काँपती है। ८. छोटी, सुकमार। ९. भर लिए। १०. पसीना। ११. भाग जाऊंगी। १२. ला दो। १३. रहूँगी।

१. ऐसा। २. जूआ। ३. जड़े हुए। ४. किवाड़। ५. आँखें। ६. मत। ७. मटकाना। ८. लाना, देना। ९. आयेंगे। १०. आम के। ११. फाँकें। १२. वैसा।

[१४२]

[दुलहा अपनी दुलहन के लिए लहँगा खरीदने जाता है। दूसरे दिन घर लौटने पर उसकी गृहिणी पूछती है कि 'आपने रात कहाँ गँवाई ?' दुलहे से यह सुनकर कि रात मैंने किसी बागीचे में काली कोयल के साथ गँवाई है, दुलहन कोयल को फँसाने के लिए पासी को आदेश देती है। पासी कोयल को फँसाने जाता है और कोयल छिपने लगती है। अंत में वह कहती है—"इस प्रकार हमें तंग करोगे, तो मैं आनंद-वन चली जाऊँगी, जहाँ दिन-भर आनंद से कूकती रहूँगी।" इस गीत में कोयल-रूपी प्रेमिका उसे धमकी देती है कि ज्यादा तंग करोगे, तो मैं अपने प्रेमी के साथ कहीं चली जाऊँगी, जहाँ आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करूँगी। अभी जो उन्हें पति के सहवास की भी सुविधा है, वह भी जाती रहेगी।]

लहँगा बेसाहन[1] चललन कवन दुलहा, पएँतर[2] भेल[3] भिनसार हे।
हँसि पूछे बिहँसि पूछे, सुगइ, कवन सुगइ, कहाँ परभु खेपिल[4] रात हे ॥१॥
आम तर[5] रसलों,[6] महुइआ[7] तर बसलों, चंपा तर खेपली रात हे।
काली कोइल कोरा[8] पइसि सुतलों, बड़ा सुखे खेपली रात हे ॥२॥
डाँढ़े डाँढ़े[9] पसिया[10] कोइल बझवले,[11] पाते पाते[12] कोइल छपाए[13] हे।
जइसन पसिया रे उदवसले,[14] हम जएबो आनंद बन हे।
ओहि रे आनंदबन अमरित फल खएबों, बोलबों[15] गहागही[16] बोल हे ॥३॥

●

[१४३]

दुलरइता बाबू के बगिया में सीतल हे छँहियाँ ॥१॥
खेलते धूपते गेली बेटी दुलरइती बेटी।
ए लपकि[1] धयल[2] छयला, दाहिन हे बँहियाँ ॥२॥
छोड़ू छैला, छोड़ू छैला, दाहिन हे बँहियाँ।
अहे टूटि जयतो संखा चूड़ी, मुरकि[3] जयतो हे बँहियाँ ॥३॥

---

१. खरीदने। २. पाँतर, प्रान्तर, दूर तक सुनसान मार्ग। ३. हो गया। ४. बिताई। ५. आम के नीचे। ६. आनंद मनाया, रस लिया। ७. महुए। ८. गोद में। ९. डाली-डाली पर। १०. पासी; एक जातिविशेष, व्याध, चिड़ीमार। ११. बझाया, फँसाया। १२. पत्ते-पत्ते पर। १३. छिपती है। १४. दुःख दिया, चैन से बसने नहीं दिया। १५. बोलूँगी। १६. गहगह, उल्लास से भरा हुआ।

१. लपककर। २. पकड़ा। ३. मोच आ जायगी।

टूटे देहु, टूटे देहु, संखा चूड़ी मेरौनियाँ[४] ।
अहे फेरू[५] से गढ़ाय देबो[६] , सोने केर हे कँगना ॥४॥
सभवा बइठल तुहूँ, ससुर दुलरइता बाबू ।
तोइर पूता दुलरइता बाबू, तोड़ल हे कँगना ॥५॥
होय दऽ[७] बिहान[८] पुतहू, पसरत[९] हे हटिया ।
अहे फेरू से गढ़ाय देबो, सोने केर हे कँगना ॥६॥

●

[१४४]

बाबा के दुलरुआ **कवन** बाबू हे ।
बन बीचे महल उठाइ माँगय हे ॥१॥
बन बीचे महल सजाइ माँगय हे ।
महल बीचे जंगला[१] कटाइ माँगय हे ॥२॥
महल बीचे सेजिया डसाइ माँगय हे ।
सासु जी के बेटिया सोलाइ[२] माँगय हे ॥३॥
हंसराज[३] घोड़ा दहेज माँगय हे ।
दुलरुआ सरवा[४] खवास[५] माँगय हे ॥४॥
छोटकी सरिया[६] लोकदिनियाँ[७] माँगय हे ॥५॥

●

[१४५]

[इस गीत में एक मधुर एवं व्यंग्यात्मक प्रसंग का वर्णन किया गया है। कसैली का भूखा दुलहा मालिन के बाग में जाकर कसैली तोड़ने लगता है। मालिन उसके दादा को उलाहना देने जाती है। दादा मालिन को समझाते हैं कि 'अब

---

४. और सभी चूड़ियों से मिलाकर पहनाई हुई चूड़ियाँ। [मिला० - मेराना = मिलाना; अथवा पाठ-भेद—मोर रनियाँ (?) = मेरी रानी (संबोधन)] ५. फिर से। ६. गढ़वा दूँगा। ७. होने दो। ८. सवेरा। ९. लग जायगा, फैल जायगा।

१. खिड़की। २. सुलाया हुआ। ३. घोड़े की एक विशेष जाति; लोकगीतों तथा लोककथाओं में श्रेष्ठ जाति के घोड़े का सूचक शब्द। ४. साला, पत्नी का भाई। ५. नौकर। ६. साली, पत्नी की बहन। ७. लोकदिनियाँ; लोकदिन—कन्या की विदाई के अवसर पर उसके साथ राह-टहल के लिए भेजी जानेवाली दाई। कहीं-कहीं वर के साथ भी लोकदिन के जाने का रिवाज है।

उसकी चढ़ती जवानी है। मना करने पर वह मान नहीं सकता। अगर वह बच्चा होता तो मैं उसे मना करता। कसैली की डाली तोड़ने में जो तुम्हें नुकसान होगा, वह मैं तुम्हें सोने-चाँदी के रूप में दे दूँगा। वह कसैली का भूखा है, उसे कसैली तोड़ने दो।' यहाँ कसैली का दुलहन के लिए व्यंजनात्मक प्रयोग हुआ है।]

मालिन के अँगना कसइलिया[१] के गछिया[२] रने बने[३] पसरल[४] डार[५] हे।
घर से बाहर भेले दुलहा दुलरइते दुलहा, तोड़ हइ[६] कसइलिया के डार हे ॥१॥
घर से बाहर भेले दादा दुलरइते दादा, मालिन ओलहन[७] देवे हे।
देखो बाबू साहब तोहरे[८] पोता[९] , तोड़े हे[१०] कसइलिया के डार हे ॥२॥
लड़िका रहइते मालिन बरजतियइ[११], छयला बरजलो न जाय गे।
देबो गे अगे मालिन डाला[१२] भर सोनमा, डाला भर रूपवा,
तोड़े दे कसइलिया के डार गे ॥३॥
हमरा दुलरइते दुलहा कसइलिया के भूखल, तोड़े हइ कसइलिया के डार गे ॥४॥

●

[१४६]

[दुलहन अपने भाई को पत्र लिखकर सूचित करती है कि चंपा के चोर (उसका दुलहा) को आप स्वयं सजा न देकर मुझे सौंप देंगे। वह बहुत कोमल है। उसे मैं अपने आँचल में बाँधकर रखूँगी, जिससे वह मुझपर लुभाया रहेगा।]

हँसि हँसि लिखथ[१] पाँती[२] बाँचहु[३] हो भइया।
चंपा के चोरवा[४] के दीहऽ[५] तूँ सजइया ॥१॥
रउदा[६] में रहतन जयतन रउदाइए।
घमा[७] में रहतन जयतन पिघलाइए ॥२॥
सरदी के मारे चोर जयतन सरदाइए।
अँचरा में बाँधब रहतन लोभाइए ॥३॥

●

---

१. कसैली। २. पेड़। ३. चारों तरफ। ४. फैल गया, पसर गया। ५. डाली। ६. तोड़ रहा है। ७. उलाहना। ८. आपके। ९. बेटे का बेटा, पौत्र। १०. है। ११. बरजता, मना करता। १२. बाँस की चिकनी कमचियों की बनी हुई गोलाकार टोकरी।

१. लिख रही है। २. पत्र, चिट्ठी। ३. पढ़ो। ४. चोर को। ५. देना। ६. धूप, रौद। ७. धूप, घाम।

[१४७]

[पत्नी ने स्वप्न देखा कि उसके पति को सिपाही ने पकड़कर बाँध दिया है। उसने सिपाही से अपने दुलहे को छोड़ देने का अनुरोध किया। सिपाही ने बदले में उसकी अमूल्य संपत्ति, उसके सतीत्व की ही, माँग की। वह पति के दुःख से छटपटाने लगी। इसी बीच उसकी आँखें खुल गईं, लेकिन पति के स्वप्नवाले दुःख को याद कर उसकी आँखें झरने लगीं! इस गीत में एक ऐसी पतिव्रता पत्नी का चित्रण किया गया है, जो स्वप्न में भी पति के दुःख का सहन नहीं कर सकती।]

आजु देखली हम एक रे सपनमा।
सूतल हली[1] हम अपन कोहबरिया ॥१॥
ओने से[2] अयलइ बाँके रे सिपहिया।
पकड़ि बाँधल मोरा पिया सुकमरिया ॥२॥
छोड़ूँ छोड़ूँ दुलहा हे हमरो सिपहिया।
बिहरे[3] मोरा देखि बजर के छतिया ॥३॥
जो तोहिं देहीं धानि वाला[4] रे जोबनमा।
छोड़िए देऊँ[5] तोहर पिया सुकमरिया ॥४॥
पिया देखि देखि मोरा बिहरे करेजवा।
नयना ढरे जइसे बरसे समनमा ॥५॥
टूटि गेलइ एतना में हमरा के नीनियाँ[6]।
झरे[7] रे लागल जइसे झहरे समनमा[8] ॥६॥

●

[१४८]

ननदी अँगनमा[1] चनन केरा[2] हे गछिया।
ताहि चढ़ि बोलय कगवा कुबोलिया ॥१॥
मारबउ[3] रे कगवा हम भरल बढ़निया[4]।
तोहरे कुबोली बोली पिया[5] गेल परदेसवा।
हमरा के छोड़ि गेल अपन कोहबरवा ॥२॥

१. थी। २. उधर से। ३. विदीर्ण हो रही है, फट रही है। ४. कम उम्र की, कमसिन। ५. छोड़ दो। ६. नींद। ७. झरने। ८. श्रावण का महीना।

१. आँगन में। २. का। ३. मारूँगा। ४. झाड़ू। ५. गया।

काहे लागी मारमें[6] गे भरल बढ़निया।
हमरे बोलिया औतन[7] पिया परदेसिया ॥३॥
तोहरे जे बोलिया औतन पिया परदेसिया।
दही भात मिठवा[8] खिलायम[9] सोने थरिया[10] ॥४॥
उड़ि उड़ि कगवा हे गेलइ नीम गछिया।
धम से पहुँची गेलइ पिया परदेसिया ॥५॥

●

[१४९]

[दुलहा दूर से थका-माँदा आया। प्रथम मिलन की रात में सो गया। दुलहन को उसके इस व्यवहार से हार्दिक दुःख हुआ। उसने अपनी माँ से दुलहे की मूर्खता और अपने दुर्भाग्य की शिकायत की। माँ ने दुलहे से रूठने और अन्यमनस्क रहने का कारण पूछा। दुलहे ने अपनी सास को उत्तर दिया कि मैं दूर से आने के कारण थका हुआ था, इसी कारण मेरा वैसा व्यवहार हुआ। अब मैं स्वस्थ हूँ। आज मैं दुलहन को मना लूँगा।]

भोर भेल[1] बेटी उठल अम्माँ आगे खड़ा भेल हे।
कउन पुर्बीला[2] अम्माँ चूक भेल, सामी[3] पड़ली[4] मूरख हे ॥१॥
किया बाबू, दान दहेज जौतुक[5] कुछ कम भेल हे।
किया बाबू, धिया हे कुमानुख[6], मुखहुँ न बोली बोले हे।
काहे मन थोड़[7] भेल हे ॥२॥
न सासु, दान दहेज जौतुक कुछ कम भेल हे।
न सासु, धिया हे कुमानुख, मुखहुँ न बोली बोले हे ॥३॥
अस्सी कोस से अयली रहिये[8] फेदायल[9] हे।
आजु हम धानि के संबोधब[10], धानि के मनायब हे ॥४॥

●

६. मारोगी। ७. आयेंगे। ८. मीठा, गुड़। ९. खिलाऊँगा। १०. थाली में।

१. हुआ। २. पूर्व जन्म। ३. स्वामी। ४. पाई। ५. यौतुक, विवाह के समय दुलहे या दुलहन को दिया जानेवाला दान-दहेज। ६. असभ्य, अशिष्ट। ७. थोड़ा, छोटा। ८. रास्ते का। ९. थका हुआ। [मिला०—फेनायल, फेन छूटना।] १०. मनाऊँगा, प्रबोधूँगा।

[१५०]

मोरा बाँके दुलहवा चलल[१] आवे ।
बिरदाबन से गभरूआ[२] चलल आवे ॥१॥
जब गभरू आयल हमर नगरिया हे ।
गहगह बाजन बजत आवे ॥२॥
जब गभरू आयल हमर मँड़उवा[३] हे ।
आजन बाजन गुँजन लागे ॥३॥
जब गभरू आयल हमरो कोहबरिया हे ।
बेला फूल मौरिया[४] धमकन लागे ॥४॥
काहाँ बितयलऽ[५] गभरू आजु दुपहरिया हे ।
कइसे कइसे गभरू चलल आवे ॥५॥
हम तो बितौलूँ[६] बाघे[७] में दुपहरिया हे ।
तोहरे[८] लोभे हम तो चलल आऊँ[९] ॥६॥
चलते चलते मोरा गोड़[१०] पिरायल[११] हे ।
हम तोहर बनल गुलाम आऊँ ॥७॥

[१५१]

बुंदली[१] हम मुट्ठी भर दौना[२] अरे दइया, कोड़बइ[३] हम कइसे ।
कोड़बइ हम सोने के खुरपिया[४] पटयबो[५] दौना कइसे ॥१॥
पटयबो हम दुधरा[६] के धरवा[७], अरे लोढ़बो[८] दौना कइसे ।
लोढ़बइ हम सोने के चँगेरिया, अरे इयवा[९] गाँथबइ हम कइसे ॥२॥
गाँथबइ हम रेशम के डोरिया, पेन्हैबो[१०] दौना कइसे ।
पेन्हैबो हम दुलरइतिन देइ के गरवा, देखबो दौना कइसे ॥३॥
सारी सरहज सब ढूका[११] लगलन, अरे दइवा देखहू न पउली[१२] ४॥

१. चला आ रहा है। २. वह स्वस्थ नवयुवक, जिसकी अभी मसें भींग रही हों। ३. मंडप पर। ४. मौर। ५. (तुमने) व्यतीत किया है। ६. (हमने) बिताया है, व्यतीत किया है। ७. बाग में। ८. तुम्हारे। ९. आ रहा हूँ। १०. पैर। ११. दर्द कर रहा है।

१. बोया। २. एक प्रकार का सुगंधित पौधा। ३. कोड़ूँगा। ४. खुरपी से। ५. पटाऊँगा। ६. दूध। ७. धार। ८. चुनूँगा, तोड़ूँगा। ९. माँ के लिए संबोधन-सूचक शब्द। कहीं-कहीं 'इया' दादी को भी कहते हैं। १०. पहनाऊँगा। ११. ढूका लगलन = ओट में छिपकर देखने या सुनने लगीं। १२. पाया।

[१५२]

[कोहबर-घर में साली, सलहज अगल-बगल में सोईं और सास दुलहे के पायताने। दुलहे ने पैर लग जाने के भय से उन्हें अलग सोने का आग्रह किया। सास ने दुलहे की माँ का संबंध माली से बतलाकर दुलहे से मजाक किया तथा कुछ गालियाँ दीं। दुलहे ने भी सास को उत्तर देते हुए कह दिया—'माली से मेरी माँ का संबंध नहीं है, वरन् आपका वह यार है।' सास दुलहे के इस व्यवहार से रुष्ट होकर उसे भला-बुरा कहने लगीं। कहीं-कहीं कोहबर में दुलहे के अतिरिक्त घर की औरतें भी सोती हैं।]

लीली घोड़िया बर असबरवा, हाथ सोबरन के साँट[१] हे सखी ।
राति देखल घर मोरे आयल, पेन्हि ओढ़ि धीय जमाइ[२] हे सखी ॥१॥
औंठी-पौंठी[३] सूतल सारी[४] सरहजबा[५], पोथानी[६] सूतल नीचे सास हे ।
ओते सुतूँ[७] ओते सुतूँ सासु पंडिताइन, लगि जयतो[८] पैरवा[९] के धूर हे ॥२॥
किया तोंहे हउ बाबू सात पाँच के जलमल, किया मलहोरिया[१०]
तोहर बाप हे ।
नइ हम हिअइ[११] सासु, सात पाँच के जलमल ।
हम हिअइ पंडितवा के पूत हे ।
मलहोरिया हइ[१२] रउरे लगवार[१३] हे ॥४॥
अइसन जमइया माइ हम न देखलूँ, रभसि रभसि[१४] पारे गारी हे ॥५॥

[१५३]

कोठे ऊपर में बनरा[१] सूतल हे ।
बनरा बोलावे लाड़ो[२] कइसे[३] आवे हे ।
अगे माइ, नया तोहर दुलहा भीरे[४] कइसे आवे हे ॥१॥
पायल के अवाज सुनि दादा जागथ[५] हे ।
अगे माइ, नया दुलहिनिया लाजे कइसे आवे हे ॥२॥

१. छड़ी। २. बेटी और जामाता। ३. किनारे पर, अगल-बगल में। ४. साली। ५. सलहज। ६. पायताने, बिछावन का वह भाग, जिधर पैर रहता है। ७. उधर सोओ, हटकर सोओ। ८. लग जायगी। ९. पैर। १०. माली। ११. हूँ। १२. है। १४. यार। १४. विहँस-विहँसकर। १५. देता है।

१. बंदरा, दुलहा। २. लाड़ली, दुलहन। ३. कैसे। ४. नजदीक, पास। ५. जग जायेंगे।

[१५४]

जेवनार]

[प्रस्तुत गीत भोजन करते समय गाया जाता है। इस गीत में खाद्य-पदार्थों के नाम गिनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त कृष्ण के रूप का भी वर्णन है।]

रुकमिनी जेवनार[1] बनाए, मकसूदन[2] जेमन[3] आए जी।
सोभित रतन जड़ाओ[4] कुंडल, मोर मकुट सिर छाजहि ॥१॥
केसर तिलक लिलार[5] सोभित, उर बयजन्तरी[6] माल हे।
बाँहें बिजाइठ[7], सोबरन बाला, अँगुरी अँगुठी सोहहिं ॥२॥
सेयाम रूप मँह पीयर बसतर, चकमक झकझक लागहिं।
कनक कंकन, चरन नेपुर, रूप काहाँ लौं बरनउँ ॥३॥
जिनकर रूप सरूप मुनिजन, मनहिं मन नित गावहिं।
झारि बिछौना, लाइ झारी[8], सब के पाँव धोवावहिं ॥४॥
कनक कलसबा, सुन्नर झारी, गिलास दय आगे धरयो।
अंजुल[9] जोरी विनय करि के, सभें के पाँत बइठावहि ॥५॥
कनक थारी में रुचिर ओदन[10], दाल फरक परोसहिं।
सुन्नर भोजन परसि परसि, घीउ[11] ऊपर ढरकावहिं ॥६॥
साग, बैंगन, अलुआ,[12] मूरी, कटहर, बड़हर परोसहिं।
अदरख, अमड़ा, अरु करइला, इमली चटनी लावहिं ॥७॥
कदुआ, ककड़ी अउर खीरा, राइ दही रहता[13] बनो।
बारा, बजका आउ तिलौरी, हरखि पापर देइ दियो ॥८॥
अदउरी, दनउरी आउर मेथौरी, हरखि दही आगे धरयो।
देइ अचमन[14] जल गँगा के, बाद सभे बीरा[15] दियो ॥९॥
खाइ बीरा हँसि हँसि बोलथि हरि रुकमिनी का चही[16]।
देऊँ परेम परगास हमरा, हाथ जोरि बिनति करी ॥१०॥

●

१. प्रीतिभोज। २. मधुसूदन, कृष्ण। ३. भोजन करने, खाने। ४. जड़ित। ५. ललाट। ६. वैजयंती। ७. बिजौठा, बाँह में पहनने का एक आभूषण। ८. पानी पिलाने तथा हाथ-मुंह धुलाने के काम में आनेवाला एक प्रकार का टोंटीदार बरतन। ९. अंजलि। १०. भात। ११. घी। १२. आलू। १३. रायता। १४. आचमन। हाथ-मुंह धुलाना। १५. बीड़ा। १६. क्या चाहिए ?

[१५५]

[इस गीत में राम-विवाह के अवसर पर भोजन करते समय नाना प्रकार की भोज्य-सामग्री को देने और आतिथ्य-सत्कार करने का वर्णन हुआ है। स्त्रियाँ राम-लक्ष्मण को गाली दे रही हैं, जिसे दोनों भाई आनन्दमग्न होकर सुन रहे हैं तथा खाद्य-पदार्थ की प्रशंसा कर रहे हैं।]

कहे जनकपुर के नारि राम से, चलहुँ भमन[1] हमारी कि हाँ जी।
आवल महल हमर रघुनन्नन, अति भाग हमारी कि हाँ जी ॥१॥
कंचन थारी कंचन केर झारी, लावल गंगाजल पानी कि हाँ जी।
चरन पखारि चरनोदक लीन्हे, है बड़ भाग हमारी कि हाँ जी ॥२॥
जे मन लागे सीरी राम ललाजी, देवे सखिन सभ[2] गारी कि हाँ जी।
जनकपुर के भाग[3] उदे[4] भेल, धन धन[5] भाग हमारी कि हाँ जी ॥३॥
बासमती[6] चाउर[7] के भात बनावल, मूँग रहड़[8] के दालि कि हाँ जी।
कटहर, बड़हर, सीम आउ लउका, करइला के भुँजिया बनाये कि हाँ जी ॥४॥
भाँजी, तोरइ, बैंगन आउ[9] आलू, सबके अचार परोसे कि हाँ जी।
बारा, बजका, दिनौरी, तिलौरी, आउ कोहड़उरी परोसे कि हाँ जी ॥५॥
भभरा, पतौड़ा, पापर, निमकी, सबहिं भाँति सजायो कि हाँ जी।
गारी गावत सभ मिलि नारी, राम रहल मुसकाइ, कि हाँ जी ॥६॥
राउर[10] पितु दसरथ हथ[11] गोरे, तूँ कइसे हो गेल कारे कि हाँ जी।
तोहर मइया बहुत छिनारी, तूँ परजलमल पूत कि हाँ जी ॥७॥
बहिनी तोर साधु संघे[12] इकसल,[13] फूआ के कउन ठेकाना कि हाँ जी।
सात पुस्त[14] तोर भेलन छिनारी, तुहूँ छिनार के पूत कि हाँ जी ॥८॥
गारी परम पियारी हइ रघुबर, सुनूँ सुनूँ परेम के गारी कि हाँ जी।
मुसुकत राम मुसुके भाइ लछुमन, धन धन भाग हमार कि हाँ जी ॥९॥
भोजन करि के किये अचमनियाँ, दीन्हें खरिका झारी कि हाँ जी।
पोंछ हाथ रेसम के रूमलिया, बइठल सेज सँभारि कि हाँ जी ॥१०॥
एतबर[15] उमर[16] हमारो जी नारी, नइ खायो ऐसो जेमनारी[17]
कि हाँ जी ॥११॥

●

१. भवन; घर। सब, सभी। ३. भाग्य। ४. उदय। ५. धन्य-धन्य। ६. एक प्रकार का महीन और सुगंधित चावल। ७. चावल। ८. अरहर। ९. और। १०. आपके। ११. हैं। १२. साथ में, संग में। १३. निकल गई। १४. पुश्त, पीढ़ी। १५. इतनी बड़ी। १६. उम्र। १७. जेवनार, भोजन।

[१५६]

उ जे पत्तल[1] परसले परास[2] के, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँड़ुग्रा सब जेवन[3] ग्राइ के,
गुंडा सब जेंवन ग्राइ के,
चलिका[4] सब परोसन ग्राइ के,
सखी सब मंगल गाइ के ॥१॥
उ जे भात परोसले बूक[5] से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँड़ुवा सब जेंवन ग्राइ के,
गुंडा सब जेंवन ग्राइ के,
चलिका सब परोसन ग्राइ के,
सखी सब मंगल गाइ के ॥२॥
उ जे दाल परोसले ढार[6] से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँड़ुग्रा सब जेंवन ग्राइ के,
गुंडा सब जेंवन ग्राइ के,
चलिका सब परोसन ग्राइ के,
सखी सब मंगल गाइ के ॥३॥
उ जे घीउ परोसले ढार से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँड़ुग्रा सब जेंवन ग्राइ के,
गुंडा सब जेंवन ग्राइ के,
चलिका सब परोसन ग्राइ के,
सखी सब मंगल गाइ के ॥४॥

१. पत्ता, भोज के समय पत्ते पर खिलाया जाता है। २. पलास। ३. भोजन करने। ४. छोटे-छोटे लड़के। ५. ग्रंजलि में भरकर। ६. ढालकर, धार गिराकर।

उ जे दही परोसले छेव[7] से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँड़ुग्रा सब जेंवन ग्राइ के,
गुंडा सब जेंवन ग्राइ के,
चलिका सब परोसन ग्राइ के,
सखी सब मंगल गाइ के ॥५॥
उ जे चिन्नी[8] परोसले मुट्ठी से, मोहन के मन भावे हो।
राधे जेंवनार बनाइ के,
रूकमिनी परसाद बनाइ के,
भँड़ुग्रा सब जेंवन ग्राइ के,
गुंडा सब जेंवन ग्राइ के,
चलिका सब परोसन ग्राइ के,
सखी सब मंगल गाइ के, ॥६॥

[१५७]

[इस गीत में कृष्ण और हलधर को राजसी भोजन करने तथा सुन्दर भोजन के लिए रुक्मिणी की प्रशंसा तथा रुक्मिणी द्वारा फिर से आने का आमंत्रण वर्णित है। रुक्मिणी के भाग्य की ब्रह्मा और नारद के द्वारा प्रशंसा भी की गई है।]

ग्राज सुदिन दिन जदुपत ग्रायल कि हाँ जी।
गंगाजल से पाँव पखारल[1], चनन पीढ़ा[2] बिछावल, कि हाँ जी ॥१॥
झारी के झारी गँगाजल पानी, सोने के कलस धरावल[3], कि हाँ जी।
बामे हलधर दाहिन जदुपत, सभ गोवारन[4] सँघ ग्रावल[5], कि हाँ जी ॥२॥
नारद ग्रावल बेनु बजवात, बरम्हा वेद उचारे, कि हाँ जी।
सभ सुन्नरि सभ गारी गावत, मुसकत सीरी गिरधारी, कि हाँ जी ॥३॥
बसमती चाउर के भात बनावल, मूँग रहर के दाल, कि हाँ जी।
कटहर, बड़हर, कद्दू, करइला, बैंगन के तरकारी, कि हाँ जी ॥४॥
रतोग्रा, खटाइ, ग्रचार, मिठाई, चटनी खूब परोसे, कि हाँ जी।
बारा, पापड़, मूँग, तिलौरी ग्राउर दनौरी बनावल, कि हाँ जी ॥५॥

७. जमे हुए दही से एक बार की काटी हुई परत। ८. चीनी।

१. प्रक्षालन किया, धोया। २. काठ का बना बैठने का ग्रासन। ३. रखवाया। ४. ग्वाले। ५. ग्राये।

बजका[६], बजुकी आउर पतोड़ा, सबहे भाँति बनावल, कि हाँ जी।
ऊपर से ढारल[७] घीउ[८] के चभारो[९], धमधम धमके रसोइ, कि हाँ जी ॥६॥
पंखा जे डोलवथि रुकमिनी नारी, आजु भोजन भल पावल, कि हाँ जी।
ऊपर दही आउ[१०] चीनी बिछावल, लौंग सोपाड़ी[११] खिलाइ, कि हाँ जी ॥७॥
जेमन[१२] बइठल जदुपत, हलधर, जेमत[१३] हय मुसकाइ, कि हाँ जी।
जेमिए जुमुए[१४] जदुपत आचमन कयलन, झारी गंगाजल पानी, कि हाँ जी ॥८॥
पौढ़ल[१५] सेज पोंछल मुँह रेसम, रुकमिनी चौर[१६] डोलावे, कि हाँ जी।
बड़ रे भाग[१७] से जदुपत आवल, धन धन भाग हमारो, कि हाँ जी ॥९॥
फिनु[१८] आयब इही[१९] मोर डगरिया, करूँ अंगेया[२०] अंगीकारे[२१] कि हाँ जी।
नारद गावत, बरम्हा गूनत[२२] धन रुकमिनी तोर भागे, कि हाँ जी ॥१०॥

●

[१५८]

[लड़के के पिता द्वारा सुरुचि-सम्पन्न रसोई के लिए लड़की के पिता की प्रशंसा इस गीत में की गई है।]

दुअरे अवइते[१] समधी लवँग गमकल[२] हे।
मड़वा अवइते कपुसार हे[३]।
धन धन रसोइया तोरा कवन साही।
समधी अइले जेवनार हे ॥१॥
दुअरे अवइते समधी लवँग गमकल हे।
मड़वा अवइते कपुसार हे।
धन धन रसोइया तोरा कवन साही।
समधी अइले जेवनार हे ॥२॥

●

---

६. आलू, लौकी आदि का पतला, चिपटा टुकड़ा, जिसपर बेसन लपेटकर घी या तेल में तलते हैं। ७. ढाला, गिराया। ८. घी। ९. काफी मात्रा में देना, जिससे रसोई भींग जाय। १०. और। ११. सुपारी, कसैली। १२. खाने। १३. खा रहे हैं। १४. खा-पीकर। १५. लेट गये। १६. चंवर, सुरा गाय की पूँछ के बालों का गुच्छा, जो दुलहे या बड़े पुरुषों के मुँह पर डुलाये जाते हैं। १७. भाग्य। १८. पुनः, फिर। १९. इस। २०. आज्ञा, भोजन के लिए निमंत्रण। २१. अंगीकार, स्वीकार। २२. विचार रहे हैं।

१. आते ही। २. मँहका। ३. उत्कृष्ट कोटि का एक सुगंधित चावल।

[१५९]

[इस गीत में समधी के मुँह, मूँछ, दाँत, दाढ़ी, पेट और टाँग की भद्दी उपमा देकर, उनका मजाक उड़ाया गया है। भोजन के समय समधी (लड़के के पिता) को गीतों में गाली देने की प्रथा प्रचलित है।]

समधी भँड़ुआ के मुँहवा कैसन[१] लगेला[२]।
जैसन बानर के मुँहवा ओएसन[३] लागेला।
जैसन लँगुर[४] के मुहँवा ओएसन लागेला ॥१॥
समधी भँड़ुआ के मोछवा[५] कैसन लागेला, हे कैसन लागेला।
जैसन बोतुआ[६] के पुछिया[७] ओएसन लागेला ॥२॥
समधी भँड़ुआ के दँतवा कैसन लागेला।
जैसन खुड़पी[८] के नोखवा[९] ओएसन लागेला ॥३॥
समधी भँड़ुआ के दढ़िया[१०] कैसन लागेला।
जैसन फेदवा[११] के झोंटवा[१२], ओएसन लागेला ॥४॥
समधी भँड़ुआ के पेटवा कैसन लागेला।
जैसन भतवा[१३] के हँड़िया, ओएसन लागेला ॥५॥
समधी भँड़ुआ के टँगवा कैसन लागेला।
जैसन फौंड़ा[१४] के लकड़ी, ओएसन लागेला ॥६॥

●

[१६०]

गोबर से लिपलूँ[१] अँगना, हरगोबिन लाल।
बिछवा[२] रेंगल[३] जाय हे, हरगोबिन लाल ॥१॥
ओने से[४] अयलन दुलरइतिन छिनरो हे, हरगोबिन लाल।
काट लेलक[५] छिनरो के बिछवा हे, हरगोबिन लाल ॥२॥

---

१. कैसा। २. 'लागेला' भोजपुरी प्रयोग है, लेकिन पश्चिम मगही क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है। मगही में 'लागेला' की जगह पर 'लागऽ हइ' होना चाहिए। ३. वैसा। ४. लंगूर, हनुमान, बंदर। ५. मूँछ। ६. विना बधिया किया हुआ बकरा। ७. पूँछ। ८. खुरपी, घास गढ़ने या मिट्टी खोदने का लोहे का एक प्रकार का औजार। ९. नोंक। १०. दाढ़ी। ११. ताड़ का फल। १२. केश-गुच्छ। १३. भात। १४. फावड़ा।

१. लिपा-पुता। २. बिच्छू। ३. रेंगता हुआ। ४. उधर से। ५. लिया।

कउन बइदा[६] के बोलाऊँ हे, हरगोबिन लाल।
कउन ओझा के गुनाऊँ हे, हरगोबिन लाल ॥३॥
ओने से अयलन कवन रसिया हे, हरगोबिन लाल।
जरा एक[७] जगहा[८] देखाऊँ हे, हरगोबिन लाल ॥४॥
कइसे के जगहा देखाऊँ हे, हरगोबिन लाल।
लहँगा में बिछवा समायल[९] हे, हरगोबिन लाल ॥५॥

●

(१६१)

कठउती पर के गीत]

[कठउती पर के गीत विवाह के अवसर पर गाये जाते हैं। गाते समय एक व्यक्ति काठ की कठौत उलटकर उस पर राख रखकर डंडों से घिसता है, जिससे एक प्रकार की मधुर-ध्वनि निकलती है। यह क्रिया एक तरह के वाद्य का काम करती है। इसी आधार पर इसका नामकरण भी हुआ है।

इस गीत में दुलहन अपने ससुर, भसुर, देवर आदि के पास खबर भेजती है कि 'मुझे जल्दी ही मायके से बुलवा लें। सभी कुछ दिनों तक मन मारकर मायके में ही रहने का परामर्श देते हैं। अन्त में वह अपने पति को भी बुलाने के लिए सूचित करती है। पति बिगड़कर खबर भेज देता है कि 'जाओ, तुम वहीं मायके में दूसरा पति कर लो।' इस पर पत्नी भी रंज में आकर संदेश भेज देती है कि तुम्हारे जैसे को तो मैं यहाँ अपना गुलाम रखूँगी। इस गीत में पति-पत्नी के प्रणय-कलह का उल्लेख हुआ है।]

कही पेठाएम[१] ससुर जी से,
झट दिना[२] गवना करावऽ अगहन में।
डेरा पड़ल हइ[३] राजा बघिअन[४] में,
झूलन[५] पड़ल हइ राजा बघिअन में ॥१॥
कही पेठाएम बारी दुलहिन जी से,
थोड़ा दिन गम खालऽ नइहर में।
डेड़ा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥२॥

---

६. वैद्य। ७. थोड़ा-सा। ८. जगह। ९. घुस गया।

१. खबर भेजूँगी। २. जल्दी, तत्काल। ३. है। ४. बाग में। ५. झूला।

कही पठाएम भइँसुर[६] जी से,
झट दिना गवना करावऽ अगहन में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥३॥
कही पेठाएम बारी भावह[७] जी से,
थोड़ा दिन गम खालऽ नइहर में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥४॥
कही पेठाएम देवर जी से,
झट दिना गवना करावऽ अगहन में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥५॥
कही पेठाएम बारी भउजी जी से,
थोड़ा दिन गम खालऽ नइहर में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥६॥
कही पेठाएम सइँया जी से,
झट दिना गवना करावऽ अगहन में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥७॥
कही पेठाएम बारी धनि जी से,
दोसर खसम करलऽ नइहर में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥८॥
कही पेठाएम सामी जी से,
तोरा अइसन गुलाम रखम[८] नइहर में।
डेरा पड़ल राजा के बघिअन में,
झूलन पड़ल राजा के बघिअन में ॥९॥

●

---

६. भसुर, पति का बड़ा भाई। ७. छोटे भाई की पत्नी। ८. रखूँगी।

[१६२]

डोमकछ]

['डोमकछ' एक नृत्य-रूपक है। जिसमें औरतें ही सम्मिलित होती हैं। परिवार के सभी पुरुष विवाहोत्सव (बरात) में सम्मिलित होने के लिए चले जाते हैं। घर पर चोरों का भय रहता है, इसलिए स्त्रियाँ जागकर रात व्यतीत करने के लिए 'डोमकछ' का अभिनय करती हैं। इस अभिनय में कई पात्र होते हैं, जिनमें 'जलुआ' नामक पात्र का विवाह होता है। स्त्रियाँ पुरुषों-जैसे कपड़े पहनकर इस अभिनय में भाग लेती हैं।

इस गीत में चूड़ी बेचनेवाली से कोई साँवली-सलोनी नायिका चूड़ी का मोल-तोल कर रही है। साथ ही मोल-भाव में पति के बाँकेपन का भी परिचय दिया गया है]

कहाँ के ऊजे लामू[1] लहेरिया[2]।
झुलनियाँ वाली तोर[3] चूड़ी कते में[4] बिकाऊ ?॥१॥
हमरो जे चुड़िया साँवरो[5] लच्छ[6] रूपइया।
तोर बहियाँ घूमि घूमि जाय।
झुलनियाँ वाली तोर चूड़ी कते में बिकाऊ ?॥२॥
हमरो जे पियवा साँवरो बड़ रँगरसिया।
बने बने[7] बँसिया बजावे।
झुलनियाँ वाली तोर चूड़ी कते में बिकाऊ ?॥३॥

●

[१६३]

कउने बाबू के मड़वा लगल फुलवरिया हे।
कउने देइ[1] के कोहबर नाचहइ[2] मलहोरिया[3] हे।
आजु सुदिनमा दिनमा नाचइ मलहोरिया हे ॥१॥

●

१. लम्बा। २. चूड़ी बेचनेवाला, लहेरी। ३. तुम्हारी। ४. कितने में। ५. साँवली, श्याम वर्ण की। ६. लाख। ७. वन-वन में।

१. देवी। २. नाच रहा है। ३. माली।

[१६४]

वैवाहिक झूमर]

[प्रस्तुत गीत में नायिका अपनी सभी प्रिय बहनों को ही नहीं, वरन् अपने पति को भी बदलने को तैयार है, लेकिन वह हरे रंग की बूटेदार चादर को नहीं बदल सकती।]

कँगना भी बदलूँ, पहुँची भी बदलूँ, पिया बदल कोई लेवे।
चदरिया न बदलूँ, हमर[1] हरिअर[2] चद्दर बुटेदार, चदरिया न बदलूँ ॥१॥
झाँझ[3] भी बदलूँ, लरछा[4] भी बदलूँ, पिया बदल कोई लेवे।
चदरिआ न बदलूँ, हमर हरिअर चद्दर बुटेदार, चदरिआ न बदलूँ ॥२॥
कंठा भी बदलूँ, हयकल[5] भी बदलूँ, पिया बदल कोई लेवे।
चदरिया न बदलूँ, हमर हरिअर चद्दर बुटेदार, चदरिआ न बदलूँ ॥३॥

●

[१६५]

[इस गीत में पति-पत्नी के सुखमय जीवन का स्पष्ट उल्लेख है। पत्नी द्वारा पति से विभिन्न सामग्री के साथ जल्द ही जाड़े की रात में लौटने का अनुरोध करने पर पति उत्तर देता है—'तुम्हारी तरह सुघड़ गृहिणी को मैं जाड़े के दिनों में कैसे त्याग सकता हूँ ?' जाड़े की लम्बी रातों के लिए पत्नी का मनुहार और पति का आश्वासन दोनों में दाम्पत्य-प्रणय की सीमा उद्वेलित हो रही है।]

टिकवा[1] जे लइह[2] राजा, बचवा[3] लगाइ[4] हो।
टिकुली जे लइह राजा, चमके लिलार हो।
जलदी[5] लउटिह[6] राजा, जड़वा[7] के दिनवाँ हो ॥१॥
हँथवा[8] के फरहर[9] धनि, मुँहवाँ के लाएक[10] हो।
से हो[11] कइसे तेजब धनि, जड़वा के दिनवाँ हो।
से हो कइसे तेजब धनि जड़वा के रतवा हो ॥२॥

१. हमारी। २. हरे रंग की। ३. पैर का एक आभूषण। ४. एक प्रकार का आभूषण। ५. गले में पहना जानेवाला एक आभूषण।

१. मँगटीका। २. लाना। ३. झबिया या घुँघरूदार झालर। ४. लगाकर। ५. जल्द ही। ६. लौटना। ७. जाड़ा। ८. हाथ। ९. चुस्त, तत्पर। १०. सज्जन, गुणवान्। ११. उसे।

कंठवा जे लइह राजा, सिकड़ी लगाइ हो।
टिकुली जे लइह राजा, चमके लिलार हो।
जलदी लउटिह राजा, जड़वा के दिनवाँ हो ॥३॥
हँथवा के फरहर धनि, मुँहवाँ के लाएक हो।
से हो कइसे तेजब धनि, जड़वा के दिनवाँ हो।
से हो कइसे तेजब धनि, जड़वा के रतवा हो ॥४॥

●

[१६६]

मथझक्का]

[लड़की की माँ अपनी दासी तथा सेवकों के द्वारा अपने समधी के घर, संपत्ति और बरात सजाने के संबंध में जानकारी प्राप्त करती है। फिर, विवाह के बाद 'मथझक्का' की विधि आरंभ होती है। अभी तक लड़की के बाल खुले हैं। इस विधि के बाद ही उसके बाल बाँधे जायेंगे। दुलहा पान का बीड़ा दुलहन की ओर फेंकता है। दुलहन मन मारे बैठी है, अपने पति की प्यारी और पिता की दुलारी उसे स्वीकार नहीं करती। दुलहे के पूछने पर दुलहन उसके पिता, चाचा, भाई आदि के चारित्रिक दुर्गुणों का उल्लेख करते हुए उसके रँगीलेपन का भी जिक्र कर देती है। वह उसपर विश्वास करना नहीं चाहती। दुलहन प्रारम्भ से ही दुलहे पर अपना आधिपत्य जमा लेना चाहती है।]

अगे, अगे चेरी बेटी, तोंहु[1] देखि आहु[2] गे माइ।
कइसन[3] समधी बाबू, महला उठावे गे माइ।
इँटवा चुनिए चुनि[4] महला उठावे गे माइ।
चुनमे[5] चुनेटल[6] चारों घटिया बनावे गे माइ ॥१॥
अरे, अरे हजमा, तोंहुँ देखि आहु गे माइ।
कइसन समधी भँड़ुआ, सजे बरियात गे माइ।
धोइले[7] धोइले कपड़ा, रँगल बतीसो दाँत गे माइ।
छैले छैले गभरू[8] सजल बरियात गे माइ ॥२॥

---

१. तुम। २. आओ। ३. कैसा। ४. चुन-चुनकर। ५. चूने से; पत्थर, कंकड़, सीप आदि को फूँककर बनाया गया तीक्ष्ण क्षार, जो पलस्तर, सफेदी करने आदि के काम आता है। ६. चूना लगाया हुआ। ७. धुले हुए। ८. वह स्वस्थ नवयुवक, जिसकी अभी मसें भींग रही हों।

बइठल समधी बाबू जाजिम बिछाय गे माइ।
जँघिया दुलरइतिन बेटी लट छिटकावे गे माइ।
बीड़वा[9] जे फेंकलन दुलहा, बीड़वो न लेथिन[10] गे माइ।
हँसथिन न बोलथिन, दुलहिन मुँहमो न खोलथिन गे माइ ॥३॥
किनकर[11] गुमानी[12] धनि, मुँहमो न बोले गे माइ।
किनखर गुमानी बेटी, बीड़वो न लेइ[13] गे माइ।
परभु के गुमानी धनि, मुँहमो न बोले गे माइ।
बाबा के दुलरइतिन बेटी, बीड़वो न लेइ गे माइ ॥४॥
बाबा तोर देखलूँ दुलहा, टट्टर[14] घर खाड़ा गे माइ।
भइया तोर देखलूँ लोकदिनियाँ[15] संघे साथे गे माइ।
चाचा तोर देखलूँ तमोलिन के पास गे माइ।
कइसे के करियो[16] दुलहा तोहर बिसवास गे माइ।
तुहूँ त हकहु[17] दुलहा बड़ रँगरसिया[18] गे माइ ॥५॥

●

[१६७]

[इस गीत में कम उम्र के लड़के को खोजने के कारण दुःखी बेटी को उसके पिता के द्वारा सांत्वना देने का उल्लेख है। बेटी को सांत्वना देते हुए उसका पिता कहता है—"बेटी, मैंने तो उत्तम कुल देखकर तुम्हारे लिए लड़का खोजा, उसकी उम्र की ओर मैंने ध्यान नहीं दिया। जिस प्रकार ककड़ी की खेती की जाती है, तो पता नहीं चलता कि ककड़ी का स्वाद मीठा है या तीता। उसी प्रकार मैंने तो लड़के के घर और खानदान की ओर ध्यान दिया। लड़का कैसा है, इस ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया। सोने को डाहकर उसकी जाँच कर ली जाती है। रूपा को डाहा नहीं जाता। जैसे कुएँ को उड़ाहकर साफ कर दिया जाता है, लेकिन समुद्र को उड़ाहा नहीं जाता; वैसे ही अगर तुम बेटा रहती, तो तुम्हारा दूसरा विवाह कर देता, बेटी की दूसरी शादी नहीं की जा सकती। अब तो भाग्य के भरोसे ही रहना है।" दोनों के प्रश्नोत्तर अपनी जगह पर उचित हैं। लड़की की दृष्टि केवल योग्य पति पर रहती है, लेकिन उसके पिता को तो सब कुछ देखना पड़ता है। लड़की के पिता का तर्क भी सबल है।]

---

९. पान का बीड़ा। १० लेती है। ११. किसका। १२. घमंडी। १३. लेती है। १४. बाँस की फट्ठियों की दीवार। १५. नववधू के साथ जानेवाली दासी। १६. करूँ। १७. हो। १८. रंगीला।

सामन[1] भदोइया[2] के निसि अधिरतिया, मलका मलके[3] सारी रात हे।
बिजली चमके चहुँ ओर हे।

खाट छोड़िए भुइयाँ[4] सुतली दुलरइतिन बेटी, रोइ रोइ कयल[5] बिहान[6] हे ॥१॥
दुअरे से अयलन दादा दुलरइता दादा, बेटी से पूछे साधु बात[7] हे।
कउन संकटिया[8] तोरा आयल गे बेटी, रोइ रोइ कयल बिहान हे ॥२॥
हमरा सुरतिया जो दादा तोरे न सोहाये, खोजी देलऽ लड़िका दमाद हे।
हमर करम बराबर गे बेटी, जानो धरम तोहार हे ॥३॥
उतम कुल बेटी तोहरा बिआहलूँ[9], देखलूँ छोट न बड़ हे।
पूरब खेत बेटी ककड़ी जे बुनलूँ[10], ककड़ी के भतिया[11] सोहामन हे ॥४॥
न जानू बेटी गे तीता कि मीठा, कइसन ककड़ी सवाद[12] हे।
सोनमा रहइत बेटी तोहरा डहइती[13] रूपवा डहलो न जाय हे ॥५॥
कुइयाँ[14] रहइत बेटी फिनु से[15] उढ़ाहती[16], समुदर उढ़ाहलो न जाय हे।
बेटा रहइत बेटी फिनु से बियाहती, बेटी बियाहलो न जाय हे ॥६॥

●

[१९८]

बेटी-विदाई]

[अबोध बालिका से विवाह करके दुलहा उसे अपने घर लाता है। दुलहन के पूछने पर कि मैं किसके साथ अब खेलूँगी, किसके साथ बैठूँगी और किसकी शरण में मुझे रखोगे?' दुलहा उसे सांत्वना देते हुए कहता है कि मेरी बहन, भाभी और माँ हैं। तुम्हें इन लोगों से कोई अभाव नहीं खटकेगा। फिर, वह अपनी माँ से बहू को अपनी बेटी के समान समझने का अनुरोध करता है। माँ कहती है—'यह असंभव है। बेटी का दुलार पतोहू कैसे प्राप्त कर सकती है?']

खेलते रहली सुपली मउनिया[1], आइ परल **कवन** लाल दुलहा।
किए[2] धानि खेलब हे सुपली मउनिया, किय धानि चलब[3] हे हमर देसवा ॥१॥

---

१. सावन, श्रावण। २. भादो। ३. मलका मलके=बिजली चमक रही है। ४. जमीन, पृथ्वी। ५. किया। ६. सवेरा। ७. अच्छी बात, कुशल-समाचार। ८. संकट। ९. विवाह किया। १०. बोया। ११. बतिया। १२. स्वाद। १३. डहवाता, जलवाता, तपवाता। १४. कुआँ। १५. फिर से। १६. कुएँ से पानी निकालकर मिट्टी आदि गंदगी साफ करवाता।

१. सुपली मउनिया=सुपेली (छोटा सूप) और मउनी, ताड़ के पत्ते, सींक या मूँज का बना हुआ छोटी कटोरी के आकार का दोना। २. क्या। ३. चलोगी।

कवन हटिया कवन बटिया, कवन नगरिया लिआइ जयबऽ[4]।
जहाँ नहीं हटिया, जहाँ नहीं बटिया, पटना नगरिया लिआइ जयबो ॥२॥
केकरा[5] सँगे उठबइ हे, केकरा सँगे बइठबइ, केकरा ठेहुनिया लगाइ[6] देबऽ।
दीदी सँगे उठिहऽ[7] हे भउजी सँगे बैठिहऽ, मइया ठेहुनिया लगाइ देबो ॥३॥
जैसन जनिहे मइया अपन धियवा, ओयसहिं जनिहे मइया हमर धनिया।
ओलती[8] के पनिया बड़ेड़ी[9] नहीं जइहें, धिया के दुलार पुतोह नहीं पइहें ॥४॥

●

[१९९]

बेरहिं बेरहिं[1] तोरा बरजों[2] **कवन** दुलहा, बन बिरिदा[3] जनि जाहु हे।
बन बिरिदा एक देव बरिसल[4], भींजि जइहें[5] चन्नन तोहार हे ॥१॥
हाँथी भींजल, घोड़ा भींजल, भींजल लोक बरियात हे।
हँथिया उपरे भींजल **कवन** दुलहा, चन्नन भरले[6] लिलार हे ॥२॥
डाँड़ी[7] भींजल, डोरी भींजल, भींजल सबजी ओहार हे।
डँड़िया भीतरे भींजल **कवन** सुगइ, सेनुर भरले लिलार हे ॥३॥
झिहिर झिहिर नद्रिया बहतु हैं, ओहि[8] में कवन सुगइ नेहाय हे।
हँथिया उपर बोलल **कवन** दुलहा, हरवा[9] दहि मति[10] जाय हे ॥४॥
ई हरवा मोरा ऐरिन बैरिन, ई हरवा मोरा परान के अधार हे।
ई हरवा मोरा बाबा के हलइ[11], ई हरवा मोरा परान के अधार हे ॥५॥
अपन मउरिया सम्हारहु[12] ए दुलहा, घामा[13] लगत कुम्हलाए हे ॥६॥

●

---

४. ले जाओगे। ५. किसके। ६. केकरा ठेहुनिया लगाइ देबो=किसके घुटने से लगा दोगे, किसकी जाँघ पर बैठा दोगे, किसकी शरण में रखोगे। ७. उठना। ८. ढालुवें छप्पर का किनारा, जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है, ओरी। ९. मकान के दोनों छाजन के बीच का ऊपरवाला भाग [बड़ेरी < वडभि या वलभि]।

१. बार-बार। २. मना करता हूँ। ३. वृन्दावन। ४. बरसते हैं। ५. भींग जायगा। ६. भरे हुए। ७. पालकी। ८. उसमें। ९. हार, माला। १०. दह न जाय, बह न जाय। ११. है। १२. सँभालो। १३. धूप, घाम।

[१७०]

[पिता ने घर से काफी दूर किसी धनी घर में अपनी लड़की की शादी कर दी। लड़की को यह पसंद नहीं। वह कहती है—"मेरे पिता धन के लोभी हैं। उन्होंने धन को देखकर मेरी शादी घर से दूर सात-सात नदियों के पार तो कर दी, लेकिन यह नहीं सोचा कि इतनी दूर जाने पर मुझे घर का समाचार कैसे और किसके द्वारा मिलेगा? सबसे बड़ी बात तो यह है कि 'संदेश' का आना-जाना तथा माँ से मिलना कैसे होगा?" पिता ने लड़की को आश्वासन दिया कि घबड़ाओ नहीं, समाचार तथा संदेश का भी आना-जाना होगा, तुम लौटकर आओगी और अपनी माँ से मिलोगी भी। इस गीत में अपने मायके के प्रति लड़की के मोह तथा विछोह-जनित दुःख का वर्णन हुआ है।]

बावा हो धन लोभित[1], धनवे[2] लोभाइ[3] गेल।
सातो नदिया पार कयलऽ[4]।
केहिं[5] अइहें[6] केहिं जइहें, सनेस[7] पहुँचइहें।
कउन भइया बाट बहुरयतन, अम्मा से भेंट होयतन[9] हे ॥१॥
नउआ[10] अयतन, बरिया[11] जयतन, सनेस पहुँचयतन हे।
कवन भइया बाट बहुरयतन, अम्मा से मिलन होयतन हे ॥२॥

●

[१७१]

कहवाँ के डँड़िया[1] कुनली[2], अहो डँड़िया कुनली।
कहवाँ में लगले ओहार[3] चढ़हु[4] धनि डाँडि, चेतहु[5] गिरहि[6] आपन हे ॥१॥
कवन पुर के डँड़िया कुनली, अहो डँड़िया कुनली।
कवन पुर में लगले ओहार, चढ़हु धनि डाँरि, चेतहु गिरहि आपन हे ॥२॥
गोड़ लागों, पइयाँ परों, अजी सइयाँ ठाकुर हे।
बाबा के पोखरवा[7] डाँड़ि बिलमावहु[8], अम्मा से भेंट करम[9] हे ॥३॥

---

१. लोभी। २. धन पर। ३. लुब्ध हो गये। ४. कर दिया। ५. कौन। ६. आयेंगे। ७. संदेश, उपहार के रूप में संबंधी के यहाँ मिठाई, फल, कपड़े, सिंदूर, चूड़ी आदि भेजी जानेवाली चीजें। ८. गये हुए रास्ते से फिर लौटा लायेंगे। ९. होगी। १०. नाई। ११. बारी, एक जातिविशेष।

१. डोली, पालकी। २. पालकी में लगनेवाला टेढ़ा बाँस। ३. पालकी के ऊपर डाला जानेवाला परदा। ४. चढ़ो। ५. चेतो, सँभालो। ६. गृह, घर। ७. पोखरे पर। ८. ठहराओ, रोको। ९. करूँगी।

कइसे में डाँरि बिलमायब, अहे धनि सुन्नर हे।
तोर बाबा दहेजवा के सोंच में, अम्मा बिसमादल[10] हे ॥४॥
रँचिएक[11] डाँडि बिलमावहु, अजी सइयाँ ठाकुर हे।
भेंटे देहु चाची हमार, सासु जे आपन हे ॥५॥
कइसे में डाँड़ि बिलमाऊँ, अहे धनि सुन्नर हे।
बरवा[12] पकवइत[13] चाची बिसमादल हे।
तिलक गिनइते चच्चा बिसमादल हे ॥६॥
रँचिएक डाँड़ि बिलमावहु, अजी सँइया ठाकुर हे।
भेंटे देहु भउजी हमार, सरहज आपन हे ॥७॥
कइसे में डाँड़ि बिलमाऊँ, अहे धनि सुन्नर हे।
पटवा[14] फड़इते भउजी बिसमादल हे।
भँउरिया[15] घुमइते भइया बिसमादल हे ॥८॥

●

[१७२]

[बेटी के विवाह में होनेवाले खर्च आदि के कारण चिन्तित पिता को बेटी समझाते हुए कहती है कि अगर आपको मेरे कारण ऐसी तकलीफ है, तो मुझे कुएँ में क्यों नहीं ढकेल देते कि आपकी बला टल जाती। 'इस पर पिता का उत्तर कितना मार्मिक और स्वाभाविक है कि ऐसा करते समय मेरा कलेजा फटने लगता है।' इसमें बेटी-विवाह के कारण पिता की दयनीय अवस्था और बेटी के प्रति पिता के उत्कट स्नेह का उत्कृष्ट वर्णन हुआ है।]

सिमरी[1] के दिअरी[2] हे झलमल लउकल[3] हे, लउकल दुनियाँ संसार हे।
सेहो सुनि बेटी के बाबा मनहिं बेदिल[4] भेलन, ठोकि देलन[5] बजर केवार[6] हे ॥१॥
अपना रसोइया[7] से बाहर भेलि कवन बेटी, सुनऽ बाबा बचन हमार हे।
खोलु, खोलु, बाबा हो बजर केवँरिया, अहो बाबा, साजन छेकले[8] दुआर हे ॥२॥

---

१०. विषण्ण, उदास। ११. रंच-मात्र, क्षण-भर। १२. बाड़ा (दही-बाड़ा)। १३. पकाते हुए। १४. पटवा फड़इते = पाटी फाड़ते हुए, माँग फाड़ते हुए, बाल सँवारते हुए। १५. भाँमर घूमते हुए।

१. सेमल (यहाँ सेमल की रूई से बनी बत्ती से तात्पर्य है)। २. दीपक। ३. दिखाई देता है। ४. उदास, बेचैन, बेमन। ५. ठोक दिये, बंद कर दिये। ६. किवाड़। ७. रसोईघर। ८. रोक दिये।

कइसे में खोलूँ बेटी बजरा केवँरिया हे, आजु मोरा अकिल हेरायल[९] हे।
बहिआँ[१०] धरइते जी बाबा, कुइआँ भँसिअइतऽ[११], छुटि जाइत
धिआ के संताप हे ॥३॥

जँघिआ भरोसे गे बेटी धिआ जलमवली, मुँह सूखे[१२] कइली दुलार हे।
बहियाँ धरइते गे बेटी, छाती मोरा फाटल, कुइआँ भँसवलो न जाय हे ॥४॥

●

[१७३]

समदन]

[प्रस्तुत गीत में बेटी की विदाई के समय लड़की को ससुरालवालों के साथ सुन्दर व्यवहार करने की सीख दी जा रही है तथा ननद की विदाई से भाभी बहुत खिन्न है कि उसका घर सूना कर वह जा रही है और जिस घर में वह पली-बढ़ी, उसी घर के लिए अब वह पाहुन बन गई। पिता विदा करके लौट आया है, इसपर बेटी कहती है कि वे मुझे मेरे स्वामी को सौंपकर स्वयं लौटकर घर चले गये। यह गीत बहुत मार्मिक है।]

कोइ सखि माथा बन्हावे[१], कोइ सखि उबटन हे।
कोइ सखि चीर सँम्हारे, कोइ रे समुझावत हे ॥१॥
सासु के बन्दिहऽ[२] पाँव, जेठानी बात मानिहऽ[३] हे।
ननदी के करिहऽ पिरीत[४], देवर कोर[५] राखिहऽ[६] हे ॥२॥
भउजी जे बाँन्हथिन खोँइछा[७], अँचरा बिलमावथि[८] हे।
आज भवन मोरा सून[९] भेल, ननद भेलन पाहुन हे ॥३॥
बाबा जे हथिन[१०] निरमोहिया, त हिरिदिया[११] कठोर भेल हे।
हमरा के सौंपलन रघुनंनन, अपना पलटि[१२] घर हे ॥४॥

●

---

९. खो गया, भूल गया। १०. बाहें। ११. गिरा देते, ढकेल देते। १२. सुख से।

१. सिर के बाल गूँथती है। २. वंदना करना, प्रणाम करना। ३. मानना। ४. प्यार, प्रेम, प्रीति। ५. गोद में। ६. रखना। ७. विदाई के समय महिलाओं के आँचल में अक्षत, हल्दी, दूब के साथ द्रव्यादि बाँधना। ८. ठहराती हैं। ९. सूना। १०. हैं। ११. हृदय। १२. लौट गये।

[१७४]

[इस गीत में बेटी-विदाई के समय माँ-बाप तो दुःखी हैं, लेकिन भाभी को खुशी है। उसके ऐसे व्यवहार से ननद का दुःखी होना स्वाभाविक है। ननद-भाभी का आपसी मनोमालिन्य सर्व-विदित है। घर में आने पर बहू देखती है कि सास-ससुर के प्यार की अधिकारिणी उसकी ननद है, इसलिए ननद से मनोमालिन्य स्वाभाविक है। इस गीत में ननद का यह कहना कितना मार्मिक है—

"का तोरा भउजी हे नोन हाथ देली, न देली पउती पेहान हे।
का तोरा भउजी हे चूल्हा चउका रोकली, काहे कहल दूर जाहु हे ॥"]

केकर[१] रोवले गँगा बही गेल, केकर रोवले समुन्दर हे।
केकर रोवले भिजलइ चदरिया, केकर अँखिया न लोर[२] हे ॥१॥
अम्माँ के रोवले गँगा बही गेल, बाबूजी के रोवले समुन्दर हे।
भइया के रोवले भिजले चदरिया, भउजी के अँखिया न लोर हे ॥२॥*
कवन कहल बेटी रोज रोज अइहें[३], कवन कहले छव मास हे।
कवन कहले भउजी काज परोजन[४], कवन कहले दूरि जाहु[५] हे ॥३॥
अम्माँ कहले बेटी रोज रोज अइहें, बाबूजी कहले छव मास हे।
भइया कहले बहिनी काज परोजन, भउजी कहलन दूरि जाहु हे ॥४॥
का तोरा भउजी हे नोन[६] हाथ देलीं, न देली पउती[७] पेहान[८] हे।
का तोरा भउजी हे चूल्हा चउका रोकली, काहे कहल दूरि जाहु हे ॥५॥

●

[१७५]

बेटा-पतोह-परिछन]

[इस गीत में विवाह के बाद घर लौटने पर दुलहे-दुलहन को परिछने और दुलहे द्वारा अपनी ससुराल की प्रशंसा करने का उल्लेख है।]

---

१. किसके। २. आँसू। ३. आना। ४. उत्सव, समारोह, कार्य-विशेष पर। ५. जाओ। ६. नमक। ७. सींक की बनी हुई ढक्कनदार पिटारी। ८. ढक्कन।

* इन पंक्तियों से मिलता-जुलता एक पंजाबी लोकगीत है—

माँ रोंदी दी अँगिया भिज्ज गयी, प्यू रोये दरया बहे।
मेरा बीर रोये, सारा जग रोये, मेरी भाभियाँ मन चाव होय ॥

(अर्थात्, रोते-रोते माँ की अँगिया भींग गई, पिता के रोने से नदियाँ बह गईं, भाई को रोता देखकर संसार रो रहा है, परन्तु भाभियों के मन प्रसन्न हैं।)

अयलन[१] रुकमिन जदुराई हे, परछों[२] बर नारी।
नगरी में पड़लो[३] हंकार[४] हे, परछों बर नारी ॥१॥
कंचन थारी सजाऊँ हे, परछों बर नारी।
मानिक दियरा बराऊँ हे, परछों बर नारी ॥२॥
दस पाँच आगे पाछे चललन परिछे, गीत मधुर रस गावे हे।
रुकमिन हथिन[५] चान[६] के जोतिया[७], बाल गोबिंदा[८] सुकुमार हे ॥३॥
काहे तों हहु[९] हरि नीने[१०] अलसायल, काहे हहु मनबेदिल हे।
का तोर सासू नइ किछ देलन, का सरहज तोर अबोध हे ॥४॥
नइ मोरा सासु हे नइ किछु देलन, नइ मोर सरहज अबोध हे।
मोर सासु हथिन लछमिनियाँ, सरहज मोर कुलमंती[११] हे।
मोर ससुरार न भोराय[१२] हे, परिछों बर नारी ॥५॥

●

[१७६]

[इस गीत में, घर में सुलच्छणा बहू के आने पर विभिन्न विधियों के सम्पन्न करने की चर्चा आई है और लड़के के पिता के भाग्य की सराहना भी की गई है।]

सोने के पालकी छतर ओढ़इले।
ताहि चढ़ि बहुआ आयो, सुलच्छन आयो ॥१॥
धन-धन भाग तोरा **कवन** साही।
बेटा पुतोह घर आयो, बहुआ सुलच्छन आयो ॥२॥
काँचहिं[१] बाँस के डाला[२] बिनवलों[३]।
बहुआ के पावों ढरायो[४], बहुआ सुलच्छन आयो ॥३॥

---

१. आई। २. परिछन की विधि सम्पन्न करो। ३. पड़ गया। ४. निमंत्रण। ५. हैं। ६. चाँद। ७. ज्योति। ८. बालक गोविंद, कृष्ण। ९. हो। १०. नींद से। ११. कुलवती, कुलीन। १२. भूलता।

१. कच्चे। २. बाँस की कमचियों का बुना हुआ गोलाकार और चिकना टोकरा। ३. बुनवाया। ४. पावों ढरायो = पाँव रखवाया। विवाह के पश्चात् दुलहन के पहले-पहल ससुराल आने पर उसे डोली (पालकी) से निकालकर बाँस के डाले में पैर रखवाते हुए कोहबर तक ले जाया जाता है। वह जमीन पर पैर नहीं रख सकती। कोहबर में चुमावन आदि की विधि सम्पन्न करने पर उसे पति के साथ दही-चीनी खिलाने की प्रथा है।

धन धन भाग तोरा **कवन** साही।
बेटा पुतोह घर आयो, बहुआ सुलच्छन आयो ॥४॥
कोरे[५] नदियवा[६] में दहिया जमवलों।
बहुआ के सिर धरायो, बहुआ सुलच्छन आयो ॥५॥
धन-धन भाग तोरा, **कवन** साही।
बेटा-पुतोह घर आयो, बहुआ सुलच्छन आयो ॥६॥

●

[१७७]

नहवावन]

[दुलहे-दुलहन को किसी की बुरी नजर से बचाने के लिए एक विशेष प्रकार के टोटके का प्रयोग करने का उल्लेख इस गीत में हुआ है।]

राइ[१] जमाइन[२] दादी निहूछे[३] देखियो रे कोइ नजरी न लागे।
सँभरियो[४] रे कोइ नजरी न लागे ॥१॥
राइ जमाइन मइया निहूछे, देखियो रे कोइ नजरी न लागे।
सँभरियो रे कोइ नजरी न लागे ॥२॥
राइ जमाइन चाची निहूछे, देखियो रे कोइ नजरी न लागे।
सँभरियो रे कोइ नजरी न लागे ॥३॥
राइ जमाइन भउजी निहूछे, देखियो रे कोइ नजरी न लागे।
सँभरियो रे कोइ नजरी न लागे ॥४॥*

●

---

५. जिसका अभी व्यवहार नहीं किया गया हो, जिस पर पानी न पड़ा है। ६. नदिया, मिट्टी का गोलाकार बरतन।

१. छोटी सरसों, जो कुछ बैंगनी रंग की होती है। २. अजवायन, एक प्रसिद्ध पौधा; जिसके दाने दवा और मसाले के काम में आते हैं। ३. निछावर करती हैं, एक प्रकार का टोटका [न्यासावर्त्त]। ४. सँभालना।

*यह गीत बिहार के दूसरे क्षेत्रों में भी प्रचलित है।

[१७८]

गौना]

[शिवजी रंगीन धोती पहनकर तथा बहुत-सी सामग्री के साथ सज-धजकर ससुराल से आये और ससुरालवालों की बड़ी प्रशंसा की। गौरी अपने मायके की प्रशंसा से फूली न समाईं। शिवजी द्वारा लाई हुई गठरी को उन्होंने सँभालकर रखते हुए कहा—'पहले तो आप मेरे मायके की हमेशा शिकायत किया करते थे, सब दिन दोष निकालते रहते थे, लेकिन आप वहाँ गये क्यों?' शिवजी ने कहा—'मेरी ससुरालवाले गंगाजल की तरह पवित्र तथा कमल के फूल की तरह सुंदर और सुवासित हैं, मैं वहाँ बराबर जाऊँगा।]

कहमाँ गमौलँ[1] तोहूँ एता[2] दिन सिवजी, पियरी[3] जनेउआ कहाँ पावल[4] हे।
गेलियो[5] हम गेलियो गउरा तोहरो नइहरवा, बराम्हन रचल धमार[6] हे।
एता दिन हमें गउरी सासुर[7] गमउली[8], सुखे[9] सुखे गेल ससुरार हे ॥१॥
तुहूँ गमौलऽ सिउजी अइसे से ओइसे, नयना काजर कहाँ पाव[10] जी।
गेलियो हम गउरा हे तोहरो नइहरवा, सरहजवा रचल धमार हे।
ओहु जे[11] सरहोजिया हे उमिर के[12] काँचल[13], दिहलन कजरा लगाय हे ॥२॥
तोहूँ जे हकऽ[14] सिउजी अइसे से ओइसे, पियर धोतिया कहाँ पाव जी।
गेलियो से गेलियो गउरी तोहरो नइहरवा, सरवा[15] रचल धमार हे।
सरहजवा हथी गउरी काँचे से बुधिया[16], देलन धोतिया रँगाय हे ॥३॥
कहमाँ गमवलऽ सिउजी मास पखवरवा[17], पउआँ[18] कहाँ भराव जी।
गेलियो हम गेलियो गउरा तोहरो नइहरवा, नउआ[19] रचल धमार हे।
नउआ जे हकइ[20] गउरा ओहु छोट जतिया[21], भरि देलक[22] हमरा के पाँव हे ॥४॥
कहमाँ से अयलऽ सिउजी एता मोटरी[23] लेके[24], कहमाँ पयलऽ[25] कलेउ[26] हे।
गेलियो जे हम गउरा तोहरो नइहरवा से, सासुजी देलन सजाय हे।
एक खइँचा[27] देलन गउरा पुआ[28] पकमनमा, दुइ खइँचा लाइ[29] मिठाइ हे ॥५॥

---

१. बिताया। २. इतना। ३. पीले रंग। ४. पाया। ५. गये (थे)। ६. उछल-कूद। ७. ससुराल में। ८. गँवाया, बिताया। ९. सुख से। १०. पाता। ११. वह। १२. उम्र। १३. कच्ची, कमसिन। १४. हो। १५. साला। १६. बुद्धि। १७. पखवारा, पक्ष। १८. पउआँ भराव = पैर में महावर लगवाया। १९. नाई। २०. है। २१. छोटी जाति का। २२. दिया। २३. गठरी। २४. लेकर। २५. पाये, किये। २६. दिन का भोजन। २७. दौरा, बाँस का बना टोकरा। २८. आटे, मैदे आदि का बनाया जानेवाला एक प्रसिद्ध पकवान, जो तेल या घी में पकाया जाता है। २९. धान के चावल को भूनकर गुड़ के पाक में बनाया जानेवाला प्रसिद्ध पकवान।

एतना जे सुनलन गउरा गेंठरी उठवलन, धरि देलन कोठिया[30] के साँधे[31] हे।
हमर नइहरवा सिउजी सब दिन उरेहल[32], काहे गेलऽ[33] ससुरार हे ॥६॥
सास ससुरवा गउरा हथी गँगाजलिया[34], सार[35] सरहज कमल फूल हे।
ससुरा के लोग हथी लाइ मिठइया, रोज जायब ससुरार हे ॥७॥

●

[१७९]

[बेटी-विदाई के समय लड़की का पिता सोचता है कि मेरे घर के चाँद को दूसरा लिये जा रहा है। वह अपने दामाद से केवल दस दिनों के लिए बेटी को रहने देने का आग्रह करता है। लेकिन, दामाद रूखा-सा जवाब देता है कि आपको अगर अपनी बेटी से इतना प्यार था, तो आपने उसका विवाह मेरे साथ क्यों किया?]

कहाँ के चँदवा[1] कहाँ चलल जाय, मोरे परान हरी।
कहाँ के दुलहा गवन[2] कयले जाय, मोरे परान हरी ॥१॥
पुरुब के चँदवा पछिम चलल जाय, मोर परान हरी।
कवन पुर के दुलहा गवना कयले जाय, मोर परान हरी ॥२॥
सभवा बइठल बाबा मिनती[3] करे, मोर परान हरी।
दिन दस रहे देहु[4] धियवा हमार, मोर परान हरी ॥३॥
जब तोरा अहो ससुर धियवा पियार, मोर परान हरी।
काहे लागि तिलक चढ़वलऽ हमार, मोर परान हरी ॥४॥

●

[१८०]

[प्रस्तुत गीत में गौने की तैयारी तथा उसकी विधि संपन्न करने का उल्लेख है।]

सोरही गइया के गोबरे आँगन गहागहो लीपल हे।
गजमोती[1] चउका पुरायम[2] त राम अइहें दोंगा[3] करे हे ॥१॥

---

३०. अन्न रखने के लिए मिट्टी का ऊँचा, गोला या चौकोर, ढक्कनदार बनाया गया घेरा। ३१. कंधे पर। ३२. शिकायत की, आलोचना की, दोष निकालते रहे। ३३. गये। ३४. गंगाजल की तरह पवित्र। ३५. साला।

१. चंदा। २. गौना। ३. विनती। ४. रहने दो।

१. गजमुक्ता। २. चउका पुरायम = चौका पूरना; चौका—आटे आदि की लकीरों से बनाया हुआ चौकोर चित्र, जिसपर विवाह के समय दुलहे को बैठाया जाता है। ३. द्विरागमन।

लालिय[४] पट केर जाजिम, झारि[५] बिछायम[६] हे।
काटब खरही[७] के बाँस त कोहबर बनायम[८] हे ॥२॥
चनन खाट बिनायम[९] झालर लगायम हे।
मानिक दियरा बरायम, राम अइहें दोंगा करे हे ॥३॥
केकर सोभहे पगड़िया, त केकर चुनरिया सोभे हे।
रामजी के सोभहे पगड़िया, त सिया के चुनर सोभे हे।
जोड़े जोड़े होवहे[१०] मिलान[११], लगन अगुआयल[१२] हे ॥४॥

●

[१८१]

[सुंदर दुलहा आकर सलहज से अपनी पत्नी का द्विरागमन कर देने का अनुरोध करता है। सलहज कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करने का आग्रह करती है और कहती है कि 'कुछ दिनों में वह पूर्ण युवती हो जायगी, अभी तो वह कमसिन है। फाल्गुन के महीने में निश्चित तिथि पर तुम आना, विदा कर दूँगी।' दुलहा निश्चित समय पर आता है और अपनी पत्नी को विदा कराकर ले चलता है। रास्ते में पालकी किसी बाग में रखवाकर धूप गँवा लेने का भी वह अनुरोध करता है।]

पुरुबा के अवलन[१] एक गो[२] मोसाफिर से, बइठी गेलन हमरो अँगना,
रे गोरिया।
कउन तूँ हहु[३] सुन्नर, कहमाँ तूँ जाहु[४] से, केकर तूँ खोजहूँ मकनमा,
रे गोरिया ॥१॥
हम हिओ[५] तोहर सरहज, बारे ननदोसिया से, करि दहु[६] ननद के गमनमा,
रे गोरिया।
हमर ननद हथिन[७] बारी सुकमरिया[८] से, कइसे करियो तोहरो गमनमा
रे गोरिया ॥२॥

---

४. लाल। ५. झाड़कर। ६. बिछाऊँगा। ७. खड़, एक प्रकार की घास। ८. बनाऊँगा। ९. बुनवाऊँगा। १०. हो रहा है। ११. वर-पक्ष के व्यक्ति के साथ कन्या-पक्ष के संबंधवाले व्यक्ति का आपस में आलिंगन-बद्ध होकर मिलना। वर-पक्ष की ओर से कन्या-पक्षवाले को पान-सुपारी आदि तथा कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्षवाले को यथाशक्ति वस्त्र, द्रव्यादि दिये जाते हैं। १२. लग्न आगे आ गया।

१. आये। २. एक। ३. हो। ४. जाओ। ५. हूँ। ६. कर दो। ७. है। ८. कम-उम्र की और सुकुमारी।

रहु रहु मोरा ननदोसिया पहुनमा से, होवे दहु ननद जुवनिया[९],
रे गोरिया।
करि देबो तोरा ननदोसिया गवनमा से, होवे दहु छतिया नवरँगिया[१०],
रे गोरिया ॥३॥
आवे दहु, आवे दहु मास रे फगुनमा से, करि देबो तोहरो गमनमा,
रे गोरिया।
एकारसी[११] अइहऽ[१२] ननदोसिया जे हमरा से, दोआरसी[१३] के करब
मरजदवा[१४] रे गोरिया।
तेरोदसी[१५] के करबो बिदइया[१६], रे गोरिया ॥४॥
एक कोस गेलइ डारी[१७], दोसर कोस गेलइ से, तेसरे[१८] डँड़िया पइसी[१९]
पूछे एक बतिया[२०], रे गोरिया।
बघिया[२१] में डँड़िया के भेलइ दुपहरिया[२२] से, रसे रसे गरमी गँवावहु[२३],
रे गोरिया ॥५॥

●

[१८२]

दोंगा]

[ननद अपनी प्यारी भाभी से अनुरोध करती है कि मेरे भैया से कहकर मेरे ससुराल जाने का दिन निश्चित करा दो। वह दहेज में कोई चीज नहीं लेना चाहती, केवल सिर का सिंदूर और सुहाग की माँग करती है। इस गीत में पति-मिलन की उत्कट-अभिलाषा तथा काम-विह्वला युवती के मनोभावों का चित्रण हुआ है।]

अरजी बरजी[१] करइ छोटकी ननदिया।
आइ रे गेलइ इहमा[२], मास रे फगुनमा[३] ॥१॥
जो तोंहें जइहऽ भउजी, अपन कोहबरवा।
भइया से कहि मोरा, रखिहऽ नेअरवा[४] ॥२॥

---

९. युवती, जवान। १०. नारंगी-सदृश। ११. एकादशी (तिथि)। १२. आना। १३. द्वादशी। १४. कन्या के यहाँ बरात पहुँचने के दूसरे दिन। उस दिन बरात वहीं रुक जाती है और तीसरे दिन वहाँ से विदा होती है। १५. त्रयोदशी। १६. विदाई। १७. पालकी। १८. तीसरे। १९. प्रवेश करके। २०. बात। २१. बाग। २२. दोपहर। २३. बिताओ।

१. अरजी-बरजी = प्रार्थना। २. यहाँ। ३. फाल्गुन। ४. ससुराल जाने के लिए दिन निश्चित करना।

नहीं माँगू थारी[५] लोटा, नहीं माँगू धनमा।
एक हम माँगू भउजी, सिर के सेनुरबा।
एक हम माँगू भउजी, तोहरो सोहगबा ॥

●

[१८३]

विसर्जन]

[प्रस्तुत गीत में दुलहे-दुलहन के लिए वस्त्रादि तैयार कराने और दोनों को आशीर्वाद देने का वर्णन है ।]

लाल सूइ लाल डोरा, लाल दरजी बोलाइ[१] के।
जुग जुग जियथी[२] दुलहा दुलरइता दुलहा।
जिनकर जामा[३] सिलामहिं[४] ॥१॥
लाल सूइ लाल डोरा, लाल दरजी बोलाइ के।
जुग जुग जियथिन दुलहिन दुलरइतिन दुलहिन।
जिनकर लहँगा सिलामहिं ॥२॥

●

---

५. थाली।

१. बुलाकर। २. जीवित रहें। ३. दुलहे को पहनाया जानेवाला अंगरखा, जिसका नीचे का भाग घेरादार तथा ऊपर की काट बगलबंदी-जैसी होती है। ४. सिलवाऊँगा।

मुस्लिम-संस्कार-गीत

(विवाह)

[१]

[मुस्लिम-परिवारों में भी हिन्दू-परिवारों की तरह ही विवाहादि संस्कारों के कार्य संपन्न होते हैं। केवल भाषा और स्थानीय रीति-रिवाज सम्बन्धी मान्यताओं में अन्तर होता है।

इस गीत में दुलहे को शान से रहने तथा ससुराल में मिली चीजों को मंत्र पढ़कर ग्रहण करने की सीख दी गई है।]

दादा तुम्हारे हजारी हाँ जी बाबू, सीना तान के चलिहो[1]।
हजरिया बने[2] सीना तान के चलिहो ॥१॥
सहूरे[3] का माली जोगी, हाँ जी बाबू, सेहरा[4] पढ़ के[5] बँधिहो[6] ॥२॥
सहूरे का दरजी जोगी, हाँ जी बाबू, जोड़ा[7] पढ़ के पेन्हिहो[8]।
सो लाले बने, जोड़ा पढ़ के पेन्हिहो ॥३॥
नाना तुम्हारे हजारी हाँ जी बाबू, सीना तान के चलिहो।
हजरिया बने सीना तान के चलिहो ॥४॥
सहूरे का तँबोली[9] जोगी हाँ जी बाबू, बीरा[10] पढ़ के चब्हियो[11]।
हजरिया बने सीना तान के चलिहो ॥५॥
अब्बा तुम्हारे हजारी हाँ जी बाबू, सीना तान के चलिहो।
सहूरे का साला जोगी हाँ जी बाबू, लाड़ो[12] पढ़ के लइहो[13]।
हजरिया बने लाड़ो पढ़ के लइयो ॥६॥

---

१. चलना। २. दुलहा। ३. ससुराल। ४. फूलों या गोटों आदि की लड़ियाँ, जो दुलहन के सिर पर बाँधी जाती हैं और मुंह पर लटकती रहती हैं। ५. (मंत्र) पढ़कर। ६. बाँधना। ७. दुलहे को पहनाया जानेवाला कपड़ा, जिसके नीचे का भाग घाँघरदार तथा ऊपरवाला हिस्सा बगलबंदी की तरह होता है। ८. पहनना। ९. पान बेचनेवाली एक जाति, बरई, तंबोली। १० बीड़ा। ११. चाभना, चबाना। १२. लाड़ली, दुलहन। १३. लाना।

[२]

मोती बारे हैं, बेर बेर[1] मोती बारे हैं।
दादा के घोड़े चढ़ि आए नवसा[2] दुलहा।
दादी दरवाजे लगि खड़ी हैं, मोती बारे हैं ॥१॥
नाना के घोड़े चढ़ि आए नवसा दुलहा।
नाना के हाथी चढ़ि आए नवसा दुलहा।
नानी दरवाजे लगि खड़ी हैं, मोती बारे हैं ॥२॥
अब्बा के घोड़े चढ़ि आए नवसा दुलहा।
अम्माँ दरवाजे लगि खड़ी हैं, मोती बारे हैं ॥३॥
चाचा के घोड़े चढ़ि आए नवसा दुलहा।
चाची दरवाजे लगि खड़ी हैं मोती बारे हैं ॥४॥
भइया के घोड़े चढ़ि आए नवसा दुलहा।
भाभी दरवाजे लगि खड़ी हैं, मोती बारे हैं ॥५॥

●

[३]

[प्रस्तुत गीत में दुलहे को, ससुराल जाने पर वहाँ ढंग से चलने तथा गंभीर बने रहने की सीख दी गई है।]

बाबू हवले हवले[1] जइयो[2] ससुर के गलिया।
तुमरे सेहरे ऊपर खिली है, अनार कलिया।
अनार कलिया जी, गुलाब कलिया ॥१॥
बाबू हवले हवले जइयो, साले की गलिया।
तुमरे सेहरे पर फूली है, अनार कलिया।
बाबू लाड़ो[3] लेते अइयो[4] अब्बा की गलिया ॥२॥

●

[४]

दादा मियाँ लगाइन[1] घनी बगिया।
मेवा तोड़ तोड़ खइहे, मेरे लाल बने[2] ॥१॥
ससुर भँडुए की साँखरी[3] गलिया।
दामन मोड़ मोड़ चलिहो मेरे लाल बने ॥२॥

---

१. बार-बार। २. दुलहा।
१. धीरे-धीरे। २. जाना। ३. दुलहन। ४. आना।
१. लगाये। २. दुलहा। ३. संकीर्ण, पतली।

दादा मियाँ की ऊँची दलनियाँ[4]।
जहाँ सासु को नचइहो[5] मेरे लाल बने ॥३॥
बाबा मियाँ लगाइन घनी बगिया।
मेवा तोड़ तोड़ खइहो मेरे लाल बने ॥४॥
साले भँड़ुए की साँखरी गलिया।
दामन मोड़ मोड़ चलिहो मेरे लाल बने ॥५॥

●

[५]

[बरात जाने के लिए शाही नाव के लगने तथा दुलहे के पहनाने, सजाने आदि के लिए आवश्यक चीजें एकत्र करने का उल्लेख इस गीत में हुआ है।]

अरे ए मियाँ बँदरे[1], सहानी[2] नइया[3] लागी।
कोठे चढ़ि अम्माँ देखे जी, सहाना माली आया।
सहाना सेहरा लाया रे ॥१॥
अरे ए मियाँ बँदरे, नवेली नइया लागी।
अरी ए खेलवड़िये[4], सहानी नइया लागी ॥२॥
कोठे चढ़ि दादी देखें जी सहाना दरजी आया।
अरे ए मियाँ बँदरे, सहाना जोड़ा लाया रे, सहाना जोड़ा लाया ॥३॥
कोठे चढ़ि नानी देखें जी, सहाना तँमोली आया जी।
सहाना बीड़ा लाया जी, सहाना बीड़ा लाया।
अरे ए मियाँ बँदरे, सहाना बीड़ा लाया ॥४॥
कोठे चढ़ि अम्माँ देखें जी, सहाना डोला आया।
सहाना डोला आया जी, सहानी लाड़ो आई।
अरी ए मियाँ बँदरे, सहानी नइया आई ॥५॥

●

[६]

माँझा (उबटन)]

[विवाह के अवसर पर सोने-चाँदी की कटोरी में उबटन, तेल आदि रखकर माँझा (उबटन) की विधि सम्पन्न करने का उल्लेख इस गीत में हुआ है।]

---

४. दालान, बैठका। ५. नचाना।
१. दुलहा, बन्ना। २. लाल रंग की, राजसी। ३. नाव। ४. खिलाड़ी।

काहे[1] कटोरी तेरा उबटन हाँ जी बेटी, काहे कटोरी है तेल ।
सोने कटोरी है तेरा उबटन, और रूपे कटोरी है तेल ॥१॥
कौन लगावे तेरा उबटन, हाँ जी बेटी, कौन लगावे तेल ।
दादी लगावे उबटन हाँ जी बेटी, नानी लगावे तेल ॥२॥
सहानी लाड़ो[2] कौन लगावे तेल ।
अम्माँ, लगावे तेल हाँ जी लाड़ों, चाची लगावे तेल ॥३॥
बाली[3] भोली कौन लगावे तेल ।
हाँ जी बेटी, कौन लगावे उबटन, कौन लगावे तेल ॥४॥

[७]

मेहँदी]

[विवाह के दिन दुलहे और दुलहन को मेहँदी लगाने की विधि संपन्न की जाती है । इस गीत में, तलहत्थी में कलात्मक ढंग से मेहँदी रचाये जाने का उल्लेख हुआ है ।]

दादा लखिया[1] की बदशाही, सहानी[2] लाड़ो[3] के मेहँदी रचाई ॥१॥
नाना लखिया की बदशाही सहानी लाड़ो के हाथ मेहँदी लगाई ॥२॥
बाबा लखिया की बदशाही सहानी लाड़ो के हाथ मेहँदी रचाई ॥३॥
चाचा लखिया की बदशाही सहानी लाड़ो के हाथ मेहँदी रचाई ।
भइया लखिया की बदशाही साहानी लाड़ों के हाथ मेहँदी रचाई ॥४॥

●

[८]

[दुलहे-दुलहन को मेहँदी लगाने और उसे सुखाने का वर्णन इस गीत में हुआ है ।]

मेहँदी तोड़ने चली हैं अरूसा[1] बेटी, दुलहे ने पकड़ी है बाँह ।
दुलहा लगावें बाईं कानी अँगुलिया, मेरी लाड़ो लगावें
दोनों हाथ, मेहँदी मेरी रे ॥१॥
दुलहा सुखावें घड़ी रे पहरिया, मोरी लाड़ो सुखावें सारी रात ।
लगावे उमराव[2] मेहँदी मेरी रे, लगावे सरदार मेहँदी मेरी रे ॥२॥

●

---

१. किस चीज की । २. सहानी लाड़ो = शाहजादी लाड़ली, दुलहन । ३. कम उम्रवाली ।
१. लखपति । २. शाही, शाहजादी । ३. लाड़ली, दुलहन ।
१. दुलहन । २. सरदार, रईस ।

[९]

सहाना]

[विवाह के अवसर पर तीन दिनों तक 'सहाना' गाया जाता है । इस गीत में पतली कमर और लंबे बालोंवाली दुलहन को दुलहे द्वारा ले जाने तथा दादी और माँ के द्वारा दुलहन के मुँह को देखकर संतोष करने का उल्लेख है ।]

कहाँ का सवदागर[1] लिए जा है[2] जी अम्माँ ।
पतली कमरिया छुरिया[3] बाल है जी अम्माँ ।
अम्माँ, कहाँ का सवदागर लिए जा है जी अम्माँ ॥१॥
दादी सब दादी बीबी, मुख देखें हैं जी अम्माँ ।
घूँघट खोले हैं जी अम्माँ ।
पतली कमरिया छुरिया बाल है जी अम्माँ ।
अम्माँ, कहाँ का सवदागर लिए जा है जी अम्माँ ।
कहाँ का बनजारा[4] लिए जा है जी अम्माँ ॥२॥

●

[१०]

[दुलहा दुलहन को आश्वासन देता है कि हम दोनों अभिन्न हैं । तुम्हारे लिए मैं सब-कुछ करने को तैयार हूँ । दूर-दूर तक व्यापार करके मैं तुम्हारे उपयुक्त आभूषणों को लाऊँगा ।]

जो दिल तेरा सो मेरा रे नइहर वाली, मेरा रे अब्बा वाली ॥१॥
तेरे कारन लाड़ो दिल्ली भी जायेंगे ।
अरे, टीके का करु[1] बनिजार[2] रे नइहर वाली ।
मोतिये का करु बनिजार रे नइहर वाली ।
जो दिल तेरा सो, मेरा रे नइहर वाली, मेरा रे भइया वाली ॥२॥
तेरे कारन लाड़ो दिल्ली भी जायेंगे ।
अरे, बेसर[3] का करु बनिजार रे नइहर वाली ।
चुनिये[4] का करु बनिजार रे नइहर वाली ।
जो दिल तेरा सो मेरा रे नइहर वाली, मेरा रे भइया वाली ॥३॥

●

---

१. सौदागर, व्यापारी । २. जा रहा है । ३. चिकने और लंबे-लंबे । ४. व्यापारी ।
१. करूँगा । २. व्यापार । ३. नाक का प्रसिद्ध आभूषण । ४. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग ।

[११]

बागों की अजब बहार, सहाना बना बागों में उतरा।
सहाने बने का मैं सेहरा सँम्हारूँ, लाले बने का मैं सेहरा सँम्हारूँ।
लड़ियों की अजब बहार, बागों की अजब बहार ॥१॥
लाड़ो[1] का दुलहा बागों में उतरा, सहाने बने का मैं जोड़ा सँम्हारूँ।
जोड़े में लगे हीरा लाल, लाड़ो का बना बागों में उतरा ॥२॥
सहाने बने का मैं बीड़ा सँम्हारूँ, सुरखी[2] में लगे हीरा लाल।
लाड़ो का बना बागों में उतरा, सुरखी की अजब बहार।
केसरिया बना बागों में उतरा ॥३॥
सहाने बने की मैं लाड़ो सँम्हारूँ, घूँघट में लागे हीरे लाल।
लाड़ो का बना बागों में उतरा, सूरत की अजब बहार।
केसरिया बना बागों में उतरा ॥४॥

●

[१२]

बना सोया महाराज जगाये सखी।
तेरे सेहरे में लगी अनार की कली, हीरे लाल बड़ी ॥१॥
तेरे जोड़े[1] में लागी अनार की कली, कचनार की कली।
बना सोया महाराज जगाये सखी ॥२॥
तेरे बीड़े में लागी अनार की कली, कचनार की कली।
बना सोया महाराज जगाये सखी ॥३॥
मेरे लाड़ो में लागी अनार की कली, हीरे लाल जड़ी।
बना सोया महाराज जगाये सखी ॥४॥

●

[१३]

[इस गीत में दुलहे के आने तथा उसके द्वारा वस्त्राभूषण लाने की सूचना दुलहन को दी गई है।]

आया री लाड़ो सो तेरा बर[1] आया।
टीका[2] लाया री लाड़ो, मोतिया लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया ॥१॥

---

१. लाड़ली, दुलहन। २. लाली।

१. दुलहे के पहनने का कपड़ा, जिसका नीचे का भाग घांघरेदार और ऊपर की काट-बगलबंदी-जैसी होती है।

१. दुलहा। २. मँगटीका, एक आभूषणविशेष।

बेसर लाया री लाड़ो चुनिया[3] लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया।
आया री लाड़ो सो तेरा बना आया ॥२॥
बाली[4] लाया री लाड़ो, झुमका लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया ॥३॥
कँगन लाया री लाड़ो पहुँची[5] लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया ॥४॥
सूहा[6] लाया री लाड़ो छापा[7] लाया री।
आया री लाड़ो सो तेरा बर आया ॥५॥

●

[१४]

[दुलहन के सजे-सजाये रूप और वस्त्राभूषणों को देखकर दुलहे का उस पर मोहित हो जाने और वहाँ से उसके नहीं टलने के संकल्प का वर्णन इस गीत में हुआ है।]

अरी ए लाड़ो[1] अब ना जइहों, तेरा टीका[2] अजब अनमोल।
माँगे[3] लाड़ो के टीका सोभे, मोतिया लागे हीरे लाल।
ए गोरी अब ना जइहों, तेरा टीका अजब अनमोल ॥१॥
नाके लाड़ो के बेसर[4] सोभे, चुनिया[5] लागे हीरे लाल,
चुनिया अजब बहार।
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका बड़ा अनमोल ॥२॥
काने[6] लाड़ो के बाली[7] सोभे, झुमका लागे हीरे लाल।
झुमका अजब बहार।
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका गजब अनमोल ॥३॥
गले लाड़ो के माला सोभे, सिकड़ी लागे हीरे लाल।
सिकड़ी अजब बहार।
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरा टीका अजब अनमोल ॥४॥

---

३. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग। ४. कान में पहनने का गोलाकार आभूषण। ५. कलाई का एक आभूषण। ६. विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी। ७. छापेदार साड़ी।

१. लाड़ली दुलहन। २. मँगटीका, एक आभूषणविशेष। ३. माँग में। ४. नाक का एक आभूषण। ५. नग। ६. कान में। ७. कान का एक गोलाकार आभूषण।

जाने लाड़ो के सूहा[8] सोभे, छापा[9] अजब बहार।
घूँघट लगे हीरे लाल, घूँघट अजब बहार ॥५॥
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरी सूरत अजब अनमोल।
ए लाड़ो अब ना जइहों, तेरी अँखिया बड़ी अनमोल ॥६॥

●

[१५]

[प्रस्तुत गीत में वस्त्राभूषणों से सजी हुई दुलहन के शारीरिक सौंदर्य का वर्णन हुआ है।]

नइहर वाली लाड़ो माथे चाँद चमके।
अम्माँ वाली लाड़ो माथे चाँद चमके ॥१॥
माँगे लाड़ो के टीका सोभे, मोतिया की झलक देखा री लाड़ो।
अम्माँ पेयारी लाड़ो माथे चाँद चमके ॥२॥
नाके लाड़ो के बेसर सोभे, चुनिया[1] अजब बिराजे लाड़ो।
नथिया अजब बिराजे लाड़ो, माथे चाँद चमके ॥३॥
काने लाड़ो के बाली[2] सोभे, झुमके की झलक देखा री लाड़ो।
कनपासा[3] की झलक देखा री लाड़ो, माथे चाँद चमके ॥४॥
जाने[4] लाड़ो के सूहा[5] सोभे, छापे की झलक देखा री लाड़ो।
छापा अजब बिराजे लाड़ो, माथे चाँद चमके।
भइया पेयारी लाड़ो, माथे चाँद चमके ॥५॥

●

[१६]

[इस गीत में दुलहे से दुलहन के मनोवांछित वस्त्राभूषणों को नहीं लाने की शिकायत की गई है।]

माँगे[1] टीका लाड़ो[2] माँगे[3], ए वोही[4] रँग काहे[5] न लाये बने[6]।
अच्छी नइहर वाली माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने ॥१॥

---

८. विशेष प्रकार की छापेवाली लाल रंग की साड़ी। ९. छाप, छपाई।

१. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग। २. कान का गोलाकार एक आभूषण। ३. कान का एक आभूषण। ४. कमर में। ५. विशेष प्रकार की छापेवाली लाल रंग की साड़ी।

१. माँग में। २. लाड़ली दुलहन। ३. माँगती है। ४. उसी। ५. क्यों नहीं। ६. बन्ना, दुलहा।

नाको बेसर लाड़ो माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने।
अच्छी भइया पेयारी माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने ॥२॥
कानो बाली[7] लाड़ो माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने।
अच्छी अब्बा पेयारी माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने ॥३॥
हाथों कँगन लाड़ो माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने।
हाथों पहुँची[8] लाड़ो माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने।
अच्छी नइहर वाली माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने ॥४॥
जाने[9] सूहा[10] लाड़ो माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने।
अच्छी भइया पेयारी माँगे, वोही रँग काहे न लाये बने ॥५॥

●

[१७]

[इस गीत में दुलहन के शारीरिक सौंदर्य की उपमा शुभ्र चाँदनी से दी गई है तथा दुलहन को पलंग पर ही वस्त्राभूषणों को देने का निदेश दुलहे को किया गया है।]

पलँग ऊपर चाँदनी की जोत[1], मैं ना[2] रे जानो[3]।
नइहर वाली लाड़ो[4] है अनमोल, मैं ना रे जानो।
अम्माँ पेयारी लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥१॥
टीका हो तो पलँगे पर पहनइहो[5]।
पलँगे ऊपर चाँदी की जोत, मैं ना रे जानो।
नइहर वाली लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥२॥
बेसर हो तो पलँगे पर पहनइहो।
पलँगे ऊपर चाँदी की जोत, मैं ना रे जानो।
भइया पेयारी लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥३॥
बाली[6] हो तो पलँगे पर पहनइहो।
पलँगे ऊपर चाँदी की जोत, मैं ना रे जानो।
अब्बा पेयारी लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥४॥

---

७. कान का एक गोलाकार आभूषण। ८. कलाई का एक आभूषण। ९. कमर में। १०. लाल रंग की विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी।

१. ज्योति। २. नहीं। ३. जानता। ४. लाड़ली दुलहन। ५. पहनाना। ६. कान का एक गोलाकार आभूषण।

कँगन हो तो पलँगे पर पहनइहो।
पलँगे ऊपर चाँदी की जोत, मैं ना रे जानो।
अम्माँ पेयारी लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥५॥
अँगूठी हो तो पलँगे पर पहनइहो।
पलँगे ऊपर चाँदी की जोत, मैं ना रे जानो।
अम्माँ पेयारी लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥६॥
सूहा[7] हो तो पलँगे पर पहनइहो।
पलँगे ऊपर चाँदी की जोत, मैं ना रे जानो।
नइहर वाली लाड़ो है अनमोल, मैं ना रे जानो ॥७॥

●

[१८]

सेहरा]

ऐसे वैसे देस में लोभाना[1] मियाँ बँदरा[2]।
दान माँगे दुलहा, दहेज माँगे दुलहा।
छोटकी साली दहेज माँगे दुलहा ॥१॥
ऐसे वैसे देस में लोभाना मियाँ बँदरा।
दान माँगे दुलहा, दहेज माँगे दुलहा।
छोटका साला, दहेज माँगे दुलहा ॥२॥
कुटनिया[3] के देस में लोभाना मियाँ बँदरा।
छिनलिया[4] के देस में लोभाना मियाँ बँदरा ॥३॥

●

[१९]

[दुलहे को सजाने और उसके रूप की प्रशंसा करने का उल्लेख इस गीत में हुआ है।]

---

७. लाल रंग की विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी।

१. लुभा गया। २. प्यारे दुलहा। ३. कुट्टनी, किसी भोली-भाली स्त्री को बहका-फुसलाकर पर-पुरुष से मिलानेवाली। ४. छिनाल औरत [छिन्ना, छिन्नाला]।

खूब बनी तेरी अँखियाँ, हाँ रे बने आज की रतिया।
खूब बना तेरा सेहरा[1], हाँ रे बने आज की रतिया।
लरियाँ[2] लगाएँ सब सखियाँ, हाँ रे बने आज की रतिया ॥१॥
खूब बनी तेरी अँखिया, लाल बने आज की रतिया।
खूब सजा तेरा जोड़ा[3], हाँ रे बने आज की रतिया।
सनदल[4] लगाएँ सब सखियाँ, हाँ रे बने आज की रतिया ॥२॥
खूब बनी तेरी अँखियाँ, हाँ रे बने आज की रतिया।
खूब सजा तेरा बीड़ा[5], हाँ रे बने आज की रतिया।
सुरखी[6] लगाएँ सब सखियाँ, लाल बने आज की रतिया ॥३॥
खूब बनी तेरी लाड़ो, हाँ रे बने आज की रतिया।
घूँघट लगाएँ सब सखियाँ, लाल बने आज की रतिया।
खूब बनी तेरी अँखियाँ, हाँ रे बने आज की रतिया ॥४॥

●

[२०]

[इस गीत में दुलहे के रूप और वस्त्राभूषणों की प्रशंसा की गई है। साथ ही उसे आशीर्वाद देते हुए यह आशा प्रकट की गई है कि वह दुलहन को ले आयेगा।]

जुग जुग जियेगा, सो मेरा लाल बना।
लाड़ो[1] लावेगा[2], सो मेरा लाल बना ॥१॥
बने, मैं जानूँ सेहरे सजे।
सेहरे बीच बने[3] के लाल लगे।
लड़ियों बीच बने के लाल लगे।
सो लावेगा, लाड़ो लावेगा, मेरा लाल बना ॥२॥
बने मैं जानूँ जोड़े सजे।
जोड़े बीच बने के लाल लगे।
समले[4] बीच बने के लाल लगे ॥३॥

---

१. फूलों या गोटे आदि की लड़ियाँ, जो दुलहे और दुलहन के सिर पर बाँधी जाती हैं और मुँह पर लटकती रहती हैं; वह गाना, जो सेहरा बाँधने के समय गाया जाता है। २. लड़ियाँ, एक सीध में गुँथी, लगी हुई किसी चीज की माला। ३. दुलहे को पहनाया जानेवाला कपड़ा, जिसका नीचे का भाग घाँघरेदार और ऊपर की काट बगलबंदी-सी होती है। ४. चंदन। ५. पान की गिलौरी। ६. लाली।

१. लाड़ली दुलहन। २. लायेगा। ३. दुलहा। ४. पगड़ी।

बने मैं जानूँ बीड़े सजे।
सुरखी[४] बीच बने के लाल लगे।
लाड़ो लावेगा सो मेरा लाल बना, दुलहिन लावेगा ॥४॥
बने मैं जानूँ लाड़ो सजी।
घूंघट बीच बने के लाल लगे।
सूरत बीच बने के चाँद छुपे।
लाड़ो लावेगा, सो मेरा लाल बना, लाड़ो लावेगा ॥५॥

●

[२१]

परिछन]

[दुलहा वस्त्राभूषणों को लेकर दरवाजे पर खड़ा है। दुलहन किवाड़ बंद करके भीतर घर में है। बाहर जोरों की वर्षा हो रही है तथा बादल गरज रहे हैं। बिजली की चमक दुलहे के कलेजे को साल रही है। वह बार-बार दुलहन से किवाड़ खोलने का अनुरोध करता है तथा विभिन्न वस्त्राभूषणों का नाम ले-लेकर उसे प्रलोभन भी देता है।]

खोलो ना केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो।
बिजली चमके जियरा साले, मेरी लाड़ो।
दिलवा धड़के मेरी लाड़ो ॥१॥
तेरा टीका लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो न केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो ॥२॥
तेरा बेसर[१] लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो ना केवड़िया अंदर जाने दो जी लाड़ो ॥३॥
बादल गरजे, जियरा साले मेरी लाड़ो, दिलवा धड़के मेरी लाड़ो।
अंदर आने दो जी लाड़ो, खोलो न केवड़िया ॥४॥
तेरी बाली[२] लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो न केवड़िया अंदर आने दो जी लाड़ो ॥५॥
मेघवा[३] गरजे, जियरा धड़के मेरी लाड़ो।
अंदर आने दो जी लाड़ो, खोलो न केवड़िया ॥६॥

---

५. लाली।

१. नाक का एक आभूषण। २. कान का एक गोलाकार आभूषण। ३. बादल, मेघ।

तेरा कँगन लिए कबसे खड़ा मेरी लाड़ो।
खोलो ना केवड़िया अंदर आने दो जी लाड़ो ॥७॥
बिजली चमके, जियरा साले मेरी लाड़ो।
अंदर आने दो जी लाड़ो ॥८॥

●

[२२]

बाल-गुँथाई]

[सात सुहागिन स्त्रियों द्वारा सुगंधित मसालों को सिल पर पीसकर बेटी को घर से निकाला जाता है। गीत गाती हुई औरतें इन सुगंधित मसालों को बाल में लगाती हुई चोटी गूँथती हैं। इस विधि को 'मेहरी गुँथाई' भी कहते हैं। इस गीत में दुलहन के सँवारे हुए बालों की प्रशंसा की गई है।]

मैं तुझे पूछूँ लाड़ो बीबी, एके[१] बाल नव कँगही[२]।
किनने[३] तेरा बाल सँवारा है? ॥१॥
दादी जो मेरी कवन दादी बीबी, एके बाल नव कँगही।
वही दादी बाल सँवारा है ॥२॥
मैं तुझे पूछूँ लाड़ो बीबी, एके बाल नव कँगही।
किनने तेरा बाल सँवारा है? ॥३॥
नानी जो मेरी कवन नानी बीबी, एके बाल नव कँगही।
वही नानी बाल सँवारा है ॥४॥

●

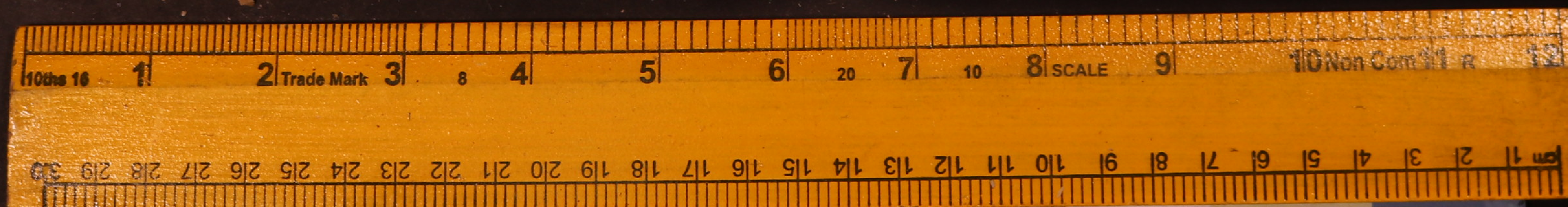
[२३]

[इस गीत में दुलहन के वस्त्राभूषणों की प्रशंसा की गई है तथा उसे बाल सँभालने का निदेश किया गया है।]

नइहर वाली लाड़ो बलवा अपन सँवार।
माँगो का टीका और सोभे मोतिया।
हाँ जी लाड़ो, बलवा अपन सँवार ॥१॥
अम्माँ प्यारी लाड़ो, बलवा अपन सँवार।
सहानी[१] लाड़ो बलवा अपन सँवार ॥२॥

---

१. एक। २. कंघी। ३. किसने।
१. शाहजादी।



नाकों में बेसर और सोभे चुनिया[२] ।
हाँ री लाड़ो बलवा अपन सँवार ।
भोली लाड़ो बलवा अपन सँवार ॥३॥
कानों में झुमका और सोभे बलिया[३] ।
हाँ री लाड़ो, बलवा अपन सँवार ॥४॥
जानो का सूहा[४] और सोभे छापा[५] ।
हाँ जी लाड़ो, बलवा अपन सँवार ॥५॥

●

[२४]

जोग]

[इस गीत में 'जोग' लादकर लाने का उल्लेख है। विवाह में दुलहे-दुलहन की रक्षा के लिए 'जोग माँगने' की विधि संपन्न की जाती है।]

दादा हमारे नयना जोगी[१] हैं री मइया ।
दादी हमारी मनमोहिनी री मइया ।
बलदी[२] लदाये[३] जोग लाद लायें जी ॥१॥
नाना हमारे नयना जोगी हैं री मइया ।
नानी हमारी मन मोहिनी री मइया ।
छकड़े[४] लदाये जोग लाईं री मइया ॥२॥
अब्बा हमारे नयना जोगी हैं री मइया ।
अम्माँ हमारी मन मोहिनी री मइया ।
छकड़े लदाये जोग लाईं री मइया ॥३॥
भइया हमारे नयना जोगी हैं री मइया ।
भाभी हमारी मनमोहिनी री मइया ।
गाड़ी लदाये जोग लाईं री मइया ॥४॥

●

२. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग। ३. बाली, कान का एक गोलाकार आभूषण। ४. लाल रंग की विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी। ५. छाप।

१. आँखों से ही देखकर जोग-टोना करनेवाले, जादू-टोना जाननेवाले। २. बैल पर। ३. लदवाकर। ४. सग्गड़, बैलगाड़ी।

[२५]

टोना]

[घर के सभी लोगों से कमसिन दुलहन के रक्षार्थ उसके सुंदर मुख पर टोना पढ़ देने का अनुरोध इस गीत में किया गया है।]

गोरे सुंदर मुख पर बारि के पढ़ डालो री टोना[१] ।
सुन बेटी के दादा, सुन बेटी के नाना ।
दादा गाफिल[२] मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना ।
नाना गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना ॥१॥
सुन बेटी के बाबा, सुन बेटी के चचा ।
बाबा, गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना ।
चाचा, गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना ॥२॥
गोरे सुंदर मुख पर बारि के पढ़ डालो री टोना ।
सुन बेटी के भइया, सुन बेटी के मामा ।
भइया गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना !
मामा गाफिल मत रहो, चैन से पढ़ डालो री टोना ।
गोरे सुंदर मुख पर बारि के पढ़ डालो री टोना ॥३॥

●

[२६]

[दुलहन के प्रति आसक्त रहने के लिए, घर की स्त्रियों द्वारा दुलहे पर टोना करने का उल्लेख इस गीत में हुआ है।]

रँगीला टोना दुलहे को लगेगा, छबीला टोना दुलहे को लगेगा ।
यह रे टोना दादी बीबी करेंगी, यह रँगीला टोना, सेहरे[१] में लगेगा ॥१॥
यह रे टोना नानी बीबी करेंगी, रँगीला टोना जोड़े[२] में लगेगा ।
छबीला टोना दुलहे को लगेगा ॥२॥

१. जादू, टोटका। २. बेखबर, असावधान।

१. फूलों या गोटे आदि की लड़ियाँ, जो दुलहे और दुलहन के सिर पर बाँधी जाती है और मुंह पर लटकती रहती हैं। २. दुलहे को पहनाया जानेवाला वह कपड़ा, जिसका नीचे का भाग घाँघरादार और ऊपर की काट बगलबंदी-जैसी होती है।

यह रे टोना अम्माँ बीबी करेंगी, रँगीला टोना बीड़े[3] में लगेगा।
छबीला टोना दुलहे को लगेगा ॥३॥
यह रे टोना भाभी बीबी करेंगी, रँगीला टोना मोंढ़े[4] में लगेगा।
छबीला टोना पलकों में लगेगा, रिझौना[5] टोना, दुलहे को लगेगा ॥४॥

●

[२७]

तुमको मैं टोना करूँगी रे, बाली[1] भोली का दुलहा ॥१॥
सेहरे में टोना भेजा, सेहरा बाँधि[2] आया रे, मेरा असला[3] दमदवा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, बाली भोली का दुलहा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरा नेवता[4] दमदवा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरा झुकता[5] दमदवा ॥२॥
जोड़े में टोना भेजा जोड़ा पेन्हि[6] आया रे, मेरा असला दमदवा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरा भोला दमदवा ॥३॥
मोजे में टोना भेजा, मोजा पेन्हि आया रे, मेरा नेवता दमदवा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, बाली भोली का दुलहा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरी लाड़ो का दुलहा।
तुझको मैं टोना करूँगी रे, मेरा दुलरा दमदवा ॥४॥

●

[२८]

[इस गीत में अपने दुलहे से टोना के बल पर विना आवश्यक सामग्री के घरेलू कार्य कराने का वर्णन हुआ है।]

छोटा टोना बड़ा लोना[1] गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना।
टोनवा बाबुल[2] जी के देस गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना ॥१॥
अपने बने से मैं पनियाँ भरइहों[3] रे।
बिन ऊभन[4] बिन डोल गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना।
टोनवा बाबुल जी के देसे गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना ॥२॥

---

३. पान की गिलौरी। ४. बाँस, बेंत आदि का बना तिपाई जैसा बैठने का आसन। ५. रिझानेवाला।

१. कमसिन। २. बाँधकर। ३. अच्छे खानदान का। ४. निमंत्रित, नम्र, शरीफ। ५. झुककर चलता हुआ। ६. पहनकर।

१. सुन्दर। २. बाबूजी, पिता। ३. भरवाऊँगी। ४. कुएँ से पानी निकालने के लिए डोल में बाँधी जानेवाली रस्सी।

अपने बने से मैं भात पकइहों[5] रे।
बिन हाँड़ी बिन डोइ[6] गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना।
सासु को काहे का मलोल[7] गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना ॥३॥
अपने बने से मैं धान कुटइहों[8] रे।
बिन उखली[9], बिन मूसल गे माई, मैं नहीं जानूँ टोना ॥४॥

●

[२९]

सोहाग]

[सुहाग की रात के आगमन पर दुलहन के वस्त्राभूषणों की प्रशंसा इस गीत में की गई है।]

आई सोहाग की रात सखी।
माँगे[1] लाड़ो के टीका सोभे, मोतिया की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात ॥१॥
नाक लाड़ों के बेसर सोभे, चुनिये[2] की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात ॥२॥
कानो लाड़ों के बाली[3] सोभे, झुमके की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात ॥३॥
गले लाड़ो के माला सोभे, हँसुली[4] की आई बहार।
बाहर सखी, आई सोहाग की रात ॥४॥
जाने[5] लाड़ो के सूहा[6] सोभे, छापे की आई बहार।
बहार सखी, आई सोहाग की रात ॥५॥

●

---

५. पकवाऊँगी। ६. काठ की कलछी। ७. मलाल। ८. कुटवाऊँगी। ९. ओखल।

१. माँग में। २. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग। ३. कान का गोलाकार आभूषण। ४. गले का एक अर्द्धचन्द्राकार आभूषण। ५. कमर में। ६. लाल रंग की विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी।

[३०]

[इस गीत में दुलहे द्वारा सुहाग के साथ वस्त्राभूषणों के लाये जाने की सूचना दुलहन को दी गई है ।]

तेरे दुलहे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ॥१॥
माँगो[1] का टीका बने ने लाया ।
मोतिये में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ॥२॥
नाको का बेसर बने ने लाया ।
चुनिये[2] में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ॥३॥
कानो[3] की बाली बने ने लाया,
झुमके में लाया सोहाग ।
तेरे नौसे[4] ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ॥४॥
गले का माला बने ने लाया ।
हँसुली में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ।
तेरे नौसे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ॥५॥
जानो[5] का सूहा[6] बने ने लाया ।
छापे में लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ।
तेरे नौसे ने लाया सोहाग, सोहागिन तेरे लिए ॥६॥

●

[३१]

[सुहाग माँगने के लिए दुलहन अपने संबंधियों तथा घरवालों के पास जाती है, जहाँ उसे टोना लग जाता है, जिसका उसे पता नहीं कि वह कैसे लगा है ।]

सोहाग माँगे गई बेटी, हजरत बीबी दरवाजे ।
बीबी देहु न सोहाग बाली[1] भोली का सोहाग ।
नइहर वाली का सोहाग रे ।
मैं ना जानूँ, टोना कैसे हो के[2] लगा ॥१॥

---

१. माँग, बालों को सँवारकर बनाई गई रेखा । २. छोटा नग । ३. कान का । ४. दुलहा । ५. कमर । ६. लाल रंग की विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी ।

१. कमसिन । २. होकर ।

बेली चमेली हो के लगा, दाना मरुआ[3] हो के लगा ।
सोने संदल[4] हो के लगा, मैं ना जानूँ ।
टोना कैसे होके लगा, मैं ना जानूँ ॥२॥
सोहाग माँगे गई बेटी, दादा दरवाजे ।
दादी देहु न सोहाग, बाली भोली का सोहाग ।
अच्छी लाड़ो का सोहाग रे ।
टोना कैसे होके लगा, मैं ना जानूँ ॥३॥
बाईं नैना होके लगा, दाहिने मोढ़े[5] होके लगा ।
मैं ना जानूँ, टोना कैसे होके लगा ॥४॥
सोहाग माँगे गई बेटी नाना दरवाजे ।
नानी देहु न सोहाग, अपनी लाड़ो का सोहाग ।
नइहर वाली का सोहाग रे ।
मैं ना जानूँ, टोना कैसे होके लगा ॥५॥
सोहाग माँगे गई बेटी अब्बा दरवाजे ।
अम्माँ देहु न सोहाग, बाली भोली का सोहाग ।
मैं ना जानूँ, टोना कैसे होके लगा ॥६॥

●

[३२]

कोहबर]

[इस गीत में दुलहन दुलहे से अलग हटकर सोने तथा पंखा झलने का अनुरोध करती है; क्योंकि विभिन्न प्रकार के आभूषणों और साज-शृङ्गारों से वह परेशान है तथा वह बेचैनी का अनुभव कर रही है । इसमें दुलहन के नाज-नखरे के साथ-साथ उसका अभिमान भी वर्णित है ।]

जरा बेनिया[1] डोलइहो[2] लाल, मुझे लागि गरमी ।
अलग होके सोइहो[3] लाल, मुझे लागि गरमी ।
करवट[4] होके सोइहो लाल, मुझे लागि गरमी ॥१॥

---

३. एक प्रकार का पौधा, जिसके पत्ते सुगन्धित होते हैं । ४. चंदन । ५. कुरते का वह अंश, जो कंधे पर बाँही से जुड़ा रहता है ।

१. पंखो । २. डुलाना । ३. सोना । ४. दाहिने या बायें बाजू लेटना; इस तरह लेटने की स्थिति ।

टीके की झलमल, मोतिये की गरमी।
जरा बेनिया डोलइहो लाल, मुझे लागि गरमी।
पयताने[५] होके सोइहो लाल, मुझे लागि गरमी ॥२॥
बेसर की झलमल, चुनिये की गरमी।
जरा बेनिया डोलइहो लाल, मुझे लागि गरमी।
जरा पंखा डोलइहो लाल, मुझे लागि गरमी ॥३॥
बाली की झलमल, झुमके की गरमी।
जरा बेनिया डोलइहो लाल, मुझे लागि गरमी।
सिरहाने[६] होके सोइहो लाल, मुझे लागि गरमी ॥४॥
कँगन की झलमल, पहुँची की गरमी।
करबट होके सोइहो लाल, मुझे लागि गरमी।
जरा बेनिया डोलइहो लाल, मुझे लागि गरमी ॥५॥
सूहे की झलमल, छापे की गरमी।
जरा बेनिया डोलइहो लाल, मुझे लागि गरमी।
लाड़ो के लागि गरमी ॥६॥

●

[३३]

[इस गीत में दुलहन दुलहे से बाजी लगा रही है कि अगर तुम जीत जाओगे, तो मैं तुम्हारी सेविका बनकर रहूँगी और मेरी जीत हुई, तो तुम्हें मेरे सेज का गुलाम बनकर रहना पड़ेगा। रात में दोनों आनंदपूर्वक सोये। सवेरा होने पर दुलहन ने दुलहे को जगाते हुए कहा—'अम्मा बाहर खड़ी इंतजार कर रही हैं, उठो।' दुलहे ने उत्तर दिया—'मैं तो तुम्हारे प्रेम-पाश में फँस गया, मैं नहीं उठता। अम्मा को बाहर खड़े-खड़े झख मारने दो।' दुलहन बार-बार दुलहे को भोला और नादान कह रही है, लेकिन उसका अल्हड़पन दुलहे के भोलेपन से भी बाजी मार लेता है।]

चंपे के पेड़ नीचे उतरे बने मियाँ[१]।
बाजी लगी दिलोजान, मैं बारि जाऊँ, मैं बारि जाऊँ।
दुलहा है भोला नादान, मैं बारि जाऊँ, मैं बारि जाऊँ ॥१॥

---

५. पलंग या खाट का वह भाग, जिधर पैर रहता है। ६. खाट या पलंग का वह हिस्सा, जिधर सिर रहता है।

१. प्यारे दुलहा।

हारूँ तो बने मियाँ बँदरी[१] मैं तेरी।
जीतूँ तो सेजिया गुलाम, मैं बारि जाऊँ।
बाजी लगी दिलोजान, मैं बारि जाऊँ ॥२॥
पलँगे की पट्टी टूटी, मोतियों की लर टूटी।
टूटी है पलँगे नेवार, मैं बारि जाऊँ।
दुलहा है भोला नादान, मैं बारि जाऊँ ॥३॥
उठ मियाँ बँदरे[२] हुआ है सवेरा।
अम्माँ खड़ी इँतजार, मैं बारि जाऊँ ॥४॥
मेरा तो दिल लाड़ो तुमसे लगा है।
अम्माँ खड़ी झख मार, मैं बारि जाऊँ।
दुलहा है भोला नादान, मैं बारि जाऊँ ॥५॥

●

[३४]

[दुलहन आनंदमग्न होकर अपनी माँ से अपने दुलहे के विषय में कहती है—'वह तो हँस-हँसकर मेरे बालों को सँवार रहा था तथा मेरे वस्त्राभूषणों को देखकर वह लुब्ध हो गया।]

हँस हँस के बाल सँवारे घूँघट खोले लाल बना।
अरी ए अम्माँ, मेरा टीका देख लोभाना[१] लाल बना।
अरी ए अम्माँ, मेरा मोतिया देख लोभाना लाल बना।
हँस हँस के बाल सँवारे, घूँघट खोले लाल बना ॥१॥
अरी ए अम्माँ, मेरा बेसर देख लोभाना, लाल बना।
अरी ए अम्माँ, मेरा चुनिया[२] देख लोभाना, लाल बना।
हँस हँस के बाल सँवारे, घूँघट खोले लाल बना ॥२॥
अरी ए अम्माँ, मेरा कँगन देख लोभाना, लाल बना।
अरी ए अम्माँ, मेरा पहुँची देख लोभाना, लाल बना।
हँस हँस के बाल सँवारे, घूँघट खोले लाल बना ॥३॥

---

१. सेविका। २. प्यारे दुलहा।

१. लुभा गया है। २. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग।

अरी ए अम्माँ, मेरा हँसुली देख लोभाना, लाल बना।
अरी ए अम्माँ, मेरा हरवा[३] देख लोभाना, लाल बना।
हँस हँस के बाल सँवारे, घूँघट खोले लाल बना ॥४॥
अरी ए अम्माँ, मेरा सूहा[४] देख लोभाना लाल बना।
अरी ए अम्माँ, मेरा छापा देख लोभाना, लाल बना ॥५॥
अरी ए अम्माँ, मेरी सूरत देख लोभाना, लाल बना।
हँस हँस के बाल सँवारे, घूँघट खोले लाल बना ॥६॥

●

[३५]

टूटी चंपा कलिया चुनेगा मियाँ बँदरा[१] लाल।
टीका मैला हो रे मोतिया न मैली हो लाल।
टूटी चंपा कलिया चुनेगा मियाँ बँदरा लाल ॥१॥
बेसर मैला हो रे, चुनिया[२] न मैली हो लाल।
टूटी चंपा कलिया, चुनेगा मियाँ बँदरा लाल ॥२॥
बाली मैली हो रे, झुमका न मैला हो लाल।
टूटी चंपा कलिया, चुनेगा मियाँ बँदरा लाल ॥३॥
सूहा[३] मैला हो रे, छापा न मैला हो लाल।
टूटी चंपा कलिया चुनेगा मियाँ बँदरा लाल ॥४॥

●

[३६]

[दुलहन अपने दुलहे से लाज के कारण बोलती नहीं। उसे स्त्रियाँ समझा रही हैं कि देखो, तुम्हारा प्यारा दुलहा तुम्हारे उलझे हुए वस्त्राभूषणों को अपने हाथ से कितने प्रेम से सुलझा रहा है, फिर भी तुम उससे नहीं बोलती।]

तुम काहे न बोलो अपने लाल से।
तेरा टीका जो उलझा लाड़ो माँग से।
तेरा दुलहा सुलझावे अपने हाथ से।
खेलवड़िया[१] सुलझावे अपने हाथ से ॥१॥

---

३. हार, माला, गले का एक आभूषण। ४. लाल रंग की विशेष छापेवाली साड़ी।
१. प्यारे दुलहा। २. छोटा नग। ३. विशेष प्रकार की छापेवाली लाल रंग की साड़ी।
१. खिलाड़ी।

तुम काहे न बोलो गेंदवा[२] लाल से।
तेरा बेसर जो उलझा लाड़ो नाक से।
तेरा दुलहा सुलझावे अपने हाथ से।
खेलवड़िया सुलझावे अपने हाथ से ॥२॥
तुम काहे न बोलो गेंदवा लाल से।
तेरा बाली जो उलझा लाड़ो कान से।
तेरा दुलहा छोड़ावे अपने हाथ से।
तेरा बनरा[३] छोड़ावे अपने हाथ से ॥३॥
तुम काहे न बोलो गेंदवा लाल से।
तेरा माला जो उलझा लाड़ो गले से।
तेरा दुलहा छोड़ावे अपने हाथ से ॥४॥
तुम काहे न बोलो गेंदवा लाल से।
तेरा सूहा[४] जो उलझा लाड़ो जान[५] से।
तेरा छापा जो उलझा लाड़ो जान से।
तेरा दुलहा सुलझावे अपने हाथ से।
तुम काहे न बोलो गेंदवा लाल से ॥५॥

●

[३७]

[दुलहन कंगन पहनना नहीं चाहती; क्योंकि उसे भय है कि उससे उसके प्यारे दुलहे को चोट लग जायगी। दुलहा उससे वह कीमती कंगन पहनने को बार-बार अनुरोध करता है, लेकिन वह तैयार नहीं है। दुलहा अन्त में कहता है कि तब रात में कंगन खोलकर रख दो और भोर में ही उसे पहन लो, लेकिन वह इसपर भी तैयार नहीं है।]

मियाँ बँदरे[१] को लागि जइहें[२] चोट रे।
कँगनवाँ मैं ना पेन्हूँ रे ॥१॥
ए नइहर वाली अस्सी मुहर का कँगना तुम्हारा।
पाँचे मोहर की है कील[३] रे, कँगनवाँ मैं ना पेन्हूँ रे ॥२॥

---

२. गेंद की तरह गोल-मटोल दुलहा। ३. दुलहा। ४. विशेष प्रकार की छापेवाली लाल रंग की साड़ी। ५. कमर से।
१. प्यारे दुलहे। २. लग जायगी। ३. कंगन के दोनों ओर के मुंह को जोड़नेवाला छोटा टुकड़ा।

ए नइहरवाली, कँगना तुम्हारा, राते उतारो।
भोरे पेन्ह रे, कँगनवाँ मैं ना पेन्हूँ रे।
मियाँ बँदरे को लागि जइहें चोट रे, कँगनवाँ मैं ना पेन्हूँ रे ॥३॥

●

[३८]

बेटी-बिदाई]

[इस गीत में बेटी अपने पिता से अनुरोध करती है कि आपने मेरा विवाह विदेश में क्यों कर दिया ? इतना ही नहीं, अपनी दीनता और असमर्थता प्रकट करती हुई वह अपने को बेले की कली और खूँटे की गाय भी बतलाती है। जिस प्रकार बेले की कली घर-घर माँगी जाती है तथा खूँटे की गाय को लोग जिधर हाँक देते हैं, उधर वह चली जाती है। उसके पिता भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार कर रहे हैं। इतना ही नहीं, वह अपनी अबोधता और बचपन का भी उल्लेख करती है तथा एक माता-पिता की दो सन्तानों—भाई-बहन—के साथ दो प्रकार के व्यवहार से भी वह बहुत चिन्तित है। भाई को तो वे घर का सारा राज-पाट दे रहे हैं तथा उसे विदेश में किसी को सौंप रहे हैं। यह गीत बहुत ही कारुणिक है।]

काहे बेयाही[1] बिदेस रे, लखिया[2] बाबुल[3] मोरे।
हम तो रे बाबुल बेले[4] की कलियाँ, घर घर माँगी जायँ रे।
लखिया बाबुल मोरे ॥१॥
हम तो रे बाबुल खूँटे की गइया।
जिधर हाँको हँक[5] जाय रे, लखिया बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे ॥२॥
ताको भरी[6] मैंने गुड़िया न छोड़ी।
छोड़ा सहेला[7] साथ रे, सुन बाबुल मोरे ॥३॥

१. विवाह किया। २. लखपति। ३. पिता। ४. एक सफेद रंग का सुगन्धित फूल। ५. चली जाऊँगी। ६. ताको भरी = कोई मिन्नत पूरी होने पर मस्जिद के ताकों में मिठाइयाँ रखना। ७. सहेली।

भइया को दिए हो बाबू, महला दुमहला[8]।
हमको दिए हो बिदेस रे, लखिया बाबुल मोरे ॥४॥
कोठे के नीचे पलकिया जो निकली।
बीरन[9] ने खाई पछार रे, सुन बाबुल मोरे।
काहे को बेयाही बिदेस रे, सुन बाबुल मोरे ॥५॥*

●

[३९]

[विदा के समय परिवार के शोक-विह्वल लोगों को सांत्वना देते हुए दुलहन कहती है– "दादा ने मुझे दूसरे को सौंपने के लिए वचन हार दिया। अब मैं दूसरे की हो गई तथा आपके घर के लिए तो अब मैं 'पाहुन' की तरह हूँ। मेरे लिए अब दुःख प्रकट करना उचित नहीं।"

बेटी की विदाई के समय एक लौकिक विधि सम्पन्न की जाती है, जिसमें दुलहे और दुलहन की अंजलि में चावल रखा जाता है। फिर, दोनों से पूछा जाता है—'किसका घर भर रहे हो ?' लड़का कहता है कि—'सास-ससुर का' और लड़की कहती है—'माँ-बाप का।' फिर, उस चावल को घर में छींट दिया जाता है।]

मेरी डोलिया लगी दरवाजे,
बाबुल[1] मैं तो पाहुनी[2] तेरी रे ॥१॥
छोड़ू दादू बीबी अँचला[3], दादा मियाँ ने हारा है बोल[4]।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे ॥२॥

८. दोतल्ला महल। ९. भाई।

* तुल०—एक पंजाबी लोकगीत का कुछ अंश—

"आले ते जाले बाबल गुड्डियाँ,
मेरे नई खेडूडन ते चाह होये।
माँ रोंदी दी अँगिया भिज्ज गयी,
प्यू रोये दरया बहे।
मेरा बीर रोये, सारा जग रोये,
मेरी भाभियाँ मन चाव होय।"

(हे पिता, मैं तो अभी नन्हीं हूँ। घर के कोनों में, दीवारों के आलों में, सभी जगह मेरी गुड़ियाँ रखी हैं। अभी मेरा गुड़िया खेलने का चाव कहाँ पूरा हुआ है ? मुझे अभी क्यों घर से निकाल दे रहे हो ? मैं घर छोड़कर जा रही हूँ। रोते-रोते माँ की अँगिया भींग गई, पिता के रोने से नदियाँ बह गईं, भाई को रोता देखकर संसार रो रहा है, परन्तु भाभियों के मन प्रसन्न हैं।)

१. बाबूजी। २. अतिथि [प्राघुणिक, प्राघुणिका (स्त्री)]। ३. आंचल। ४. वचनबद्ध हो चुके हैं, जबान हार चुके हैं।

छोड़ू अम्मा बीबी अँचला, अब्बा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे ॥३॥
छोड़ू चच्ची बीबी अँचला, चच्चा मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे ॥४॥
छोड़ू खाला[5] बीबी अँचला, खालू[6] मियाँ ने हारा है बोल।
बाबुल मैं तो पाहुनी तेरी रे ॥५॥

●

[४०]

चाल-चलाई]

[चाल-चलाई की विधि विवाह के चौथे दिन संपन्न की जाती है। उस दिन आँगन में दुलहे को बैठाकर उसके सामने दुलहन को, शृंगार करके तथा सेहरा पहनाकर, गीत गाते हुए घुमाया जाता है। दुलहन आँख बंद किये रहती है। इसी प्रकार कोहबर में उसे ले जाया जाता है।]

लाड़ो[1] को लाल बुलावे यह बाजूबन[2] झूमता।
सहाना[3] लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता।
हजरिया लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता ॥१॥
माँगों[4] टीका पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आवो।
लाड़ो को लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता ॥२॥
नाको बेसर पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आवो।
सहाना लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता ॥३॥
कानो बाली पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आवो।
हजरिया लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता ॥४॥
गले हार पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आवो।
लाड़ो को लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता ॥५॥
हाथों कँगन पेन्ह के तुम मेरी सेज पर चलि आवो।
लाड़ो को लाल बोलावे, यह बाजूबन झूमता ॥६॥

●

---

५. मौसी। ६. मौसा।

१. लाड़ली, दुलहन। २. बाजूबंद, बाँह पर पहनने का एक गहना, भुजबंद, केयूर। ३. शहाना, बादशाह के योग्य। ४. माँग में।

[४१]

[दुलहे के दिल में बसी तथा वस्त्राभूषणों से सजी दुलहन सामने खड़ी है, उससे उसकी आँखें भी लड़ गई हैं। ऐसी स्थिति में दुलहा उधर जाने में अपनी असमर्थता प्रकट करता है।]

अब कैसे जाऊँ लाड़ो[1], सामने खड़ी रे लाल।
माँगो टीका पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल ॥१॥
नाको बेसर पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल ॥२॥
कानो बाली पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, मन में बसी रे लाल ॥३॥
हाथों कँगन पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, अँखियाँ लड़ी रे लाल ॥४॥
गले माला पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, अँखिया लड़ी रे लाल ॥५॥
हाथों पहुँची[2] पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, दिल में बसी रे लाल ॥६॥
जान[3] सूहा[4] पेन्ह लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल।
अब कैसे जाऊँ लाड़ो, सामने खड़ी रे लाल ॥७॥

●

[४२]

[वस्त्राभूषणों से सजी हुई साँवली-सलोनी लम्बे बालोंवाली दुलहन से धीरे-धीरे चले आने का आग्रह इस गीत में किया गया है, जिससे उसका दिलरुबा दुलहा उसे देख सके।]

माँग लाड़ो टीका सोभे, मोतिये की बहार।
लाड़ो हवले[1] चलि आओ।
ए बोलावे दिलवर जान, लाड़ो हवले चलि आओ ॥१॥

---

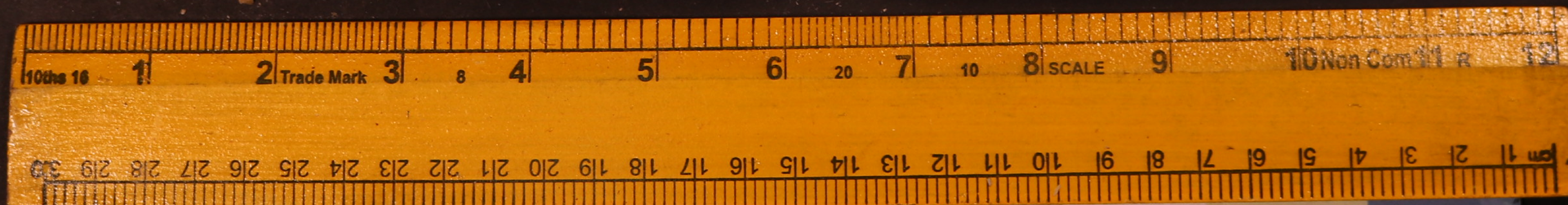
१. लाड़ली दुलहन। २. कलाई में पहनने का एक आभूषण। ३. कमर में। ४. विशेष प्रकार की छापेवाली लाल रंग की साड़ी।

१. धीरे से।

नाक लाड़ो बेसर सोभे, चुनिये[२] की बहार।
हवले चलि आओ, देखे दिलबर जान ॥२॥
कान लाड़ो बाली सोभे, झुमके की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार ॥३॥
गले लाड़ो माला सोभे, सिकड़ी की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे दिलवर जान ॥४॥
साँवली सलोनी लाड़ो, सर के लम्बे बाल।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे दिलवर जान ॥५॥
जान लाड़ो सूहा सोभे, छापे की बहार।
हवले चलि आओ लाड़ो, देखे आशिक जार ॥६॥

२. माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग।

मृत्यु-गीत



[१]

[यह निर्गुण शिवनारायणी संप्रदाय के चमारों में प्रचलित है, जो मृत्यु के बाद गाया जाता है। इस प्रकार के बहुतेरे निर्गुण कबीरदास के नाम से प्रचलित हैं। इनमें सखी, टिकुली, सिन्दूर और बालम के रूपक और दृष्टांत से इहलोक और परलोक का वर्णन किया गया है तथा आत्मा-परमात्मा के सम्बन्ध को इंगित किया गया है। यहाँ दस-पाँच सखियाँ इंद्रियाँ हैं तथा 'बजरिया', संसार है, जहाँ प्रिय-मिलन के लिए टिकुली और सिन्दूर-जैसी उपयोगी सामग्री की खोज और प्राप्ति होती है। सेज (मृत्यु-शय्या) पर बालम (परमात्मा) महँगा हो जाता है, किन्तु ससुरे (ससुराल—परलोक) में बालम (परमात्मा) की प्राप्ति (मुक्ति) सहज ही हो जायगी। सांसारिक एषणाओं की पूर्ति देवर, अर्थात् सत्संगी के के द्वारा होती है और बालम की प्राप्ति 'सतगुरु' के द्वारा।

इस प्रकार, सभी निर्गुण-गीतों में आत्मा-परमात्मा की चर्चा सांसारिक पदार्थों के दृष्टान्तों के द्वारा की गई है। कहीं-कहीं इस संसार से विदाई का अत्यन्त करुण और मार्मिक चित्रण मिलता है, तथापि जानेवाले को उस विदाई (मुक्ति) से कोई विषाद नहीं है, बल्कि अन्तस्तल में एक प्रसन्नता ही झलकती है, जो अपने प्रिय (परमात्मा)-मिलन की उत्कंठा का प्रतिफलन है। यह मृत्यु परिवर्त्तन और मिलन का संकेत-मात्र है।]

दस पाँच सखिया मिली, चलली बजरिया[१] रामा।
ओहि[२] ठइयाँ[३] टिकुली रे, भुलायल हो राम ॥१॥
कहमा[४] महँग[५] भेलइ[६] टिकुली सेनुरवा रामा।
कहमा महँग भेलइ, बालम हो राम ॥२॥
लिलरे[७] महँग भेलइ, टिकुली सेनुरवा रामा।
सेजिए महँग भेलइ, बालम हो राम ॥३॥
कहमा जो पयबइ[८] हम, टिकुली सेनुरवा रामा।
कहमा पयबइ अपन बालम हो राम ॥४॥

---

१. बाजार को। २. उसी। ३. जगह। ४. कहाँ। ५. महँगा। ६. हो गया, हुआ। ७. ललाट पर। ८. पाऊँगी।

बजरे[9] में पयबइ हम, टिकुली सेनुरवा रामा।
ससुरे पयबइ अप्पन बालम हो राम ॥५॥
के मोरा लाइ देतइ[10], टिकुली सेनुरवा रामा।
केरे मिलयतइ[11], अप्पन बालम हो राम ॥६॥
देओरा[12] मोरा लाइ देतन टिकुली सेनुरवा रामा।
सतगुरु मिला देतन बालम हो राम ॥७॥
कहत कबीर दास पद निरगुनियाँ हो रामा।
संत लोग लेहु न बिचारिय[13] हो राम ॥८॥

●

[२]

[यौवनवती स्वामी के घर आई है। उसे स्वामी पानी लाने को भेजता है और वह घड़ा लेकर कुएँ पर पहुँचती है, किन्तु वह वहाँ की रीति देखकर घबरा जाती है। वहाँ की भीड़ से उसका घड़ा फूट जाता है और बाँह टूट जाती है। इसमें यौवनवती आत्मा है, स्वामी परमात्मा। कुआँ संसार-चक्र है और 'भीर' आवागमन की भीड़। घड़ा शरीर है या कर्म-समूह। 'सोने की गेंडुरिया' का अभिप्राय है—मानव-योनि। स्वामी अगम घर में सोया है, अर्थात् अन्धकारावृत हृदय-मन्दिर में है और वह जगा नहीं पाती है, इसलिए ननद-रूपी बुद्धि से स्वामी को जगाने को कहती है; क्योंकि 'पाँच चोर'—पाँचों कर्मेन्द्रियाँ; रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द- घर में घुस आये हैं। इनसे प्राणों के बचाने की प्रार्थना है। इस संसार में इनसे बच पाना भी कठिन ही है; यद्यपि अज्ञान-निद्रा में सभी लोग सोये पड़े हैं, तथापि दुःखी कबीरदास जागरित हैं और नाम का जप कर रहे हैं। यहाँ सोना अज्ञानावस्था है तथा जागना विषयों के प्रति प्रबुद्ध रहना।]

नाया रे जोमन[1] सइयाँ लवलन[2], पनियाँ भेजल[3] हो राम।
सिर लेले सोने गेंड़ुरिया[4], गेड़ुर सिर गागर हो राम ॥१॥
देखलूँ हम कुइयाँ केरा[5] रीत[6], अकिल घबड़ायल हो राम।
कुइयाँ पर भेलइ बड़ा भीर, घयली[7] मोर टूटल हो राम।
का लेके होबइ[8] हजूर[9], बाँह मोर टूटल हो राम ॥२॥

---

९. बाजार में। १०. ला देगा। ११. मिलायगा। १२. देवर, पति का छोटा भाई। १३. विचार।

१. यौवन, जवानी। २. लाये। ३. पानी भरने के लिए। ४. गेंड़ुरी, इंडुरी; एक गोलाकार उपकरण, जिसे सिर पर रखकर, उसके ऊपर घड़े को रखा जाता है। ५. का, की। ६. रीति। ७. घड़ा। ८. होऊँगी। ९. सामने, सम्मुख।

सास मोर सूतलइ कोठरिया, ननद कोठा ऊपर हो राम।
सामी मोरा सूतलन अगम घर, कइसे उनखा[10] जगइती[11] हो राम ॥३॥
उठु-उठु ननदी अभागिन, भइया के जगावहु हो राम।
पाँच चोर घरबा में घूसल, परान के बचावहु हे राम ॥४॥
नहिं उठइ ननदी अभागिन, भइया के जगावइ हो राम।
पाँचो चोर घरवा में घूसल, नहीं परान बाँचत हो राम ॥५॥
सुखिया[12] हइ[13] संसार, सुखे रे नीन सोवहइ[14] हो राम।
दुखिया दास कबीर, हरि के नाम गावत हो राम ॥६॥

●

[३]

[इस गीत में मरणोपरान्त, आवागमन से रहित जीवात्मा की मोक्षावस्था का आदर्श अंकित किया गया है। इसमें 'मंदिल' मानव-शरीर है, जिसमें सांसारिक सुखों का भोग मिला है। वह शरीर आज चिताग्नि पर धधक रहा है, पुनः इस मानव-शरीर के पाने की बात अब नहीं रह गई है; क्योंकि वह जीव तो अब सर्वथा मुक्त हो गया।]

कउनी[1] जलम देलन, कउनी करम लिखलन।
कउनी भइया अवलन[2] लियामन[3] हो राम ॥१॥
रामजी जलम देलन, बरमा[4] जी करम लिखलन।
अहे अहे सखिया, जम[5] भइया, अवलन लियावन हो राम ॥२॥
एस कोस गेली रामा, दुइ कोस गेली राम।
अहे अहे सखि हे, घुरि फिरि ताकी[6] हक मंदिल हो राम ॥३॥
येही तो मंदिलवा मोरा, बड़ी सुख मिलल हो।
सेहो मंदिलवा अगिया[7] धधकइ हो राम ॥४॥
माता पिता रोवे लगलन, जड़ीबूटी देवन लगलन।
अहे अहे सखी हे, फिन[8] न मनुस चोला[9] पायम[10] हो राम ॥५॥

●

---

१०. उन्हें। ११. जगाती। १२. सुखी। १३. है। १४. सोता है।

१. कौन, किसने। २. आये। ३. लेने के लिए। ४. ब्रह्मा। ५. यम, यमराज। ६. देखता रहा। ७. आग में। ८. फिर। ९. शरीर। १०. पाऊँगा।

[४]

[इस गीत में 'गहँकी', 'हाट', 'पँचरँग', 'सौदागर' और 'मोजरा' ये सभी शब्द प्रतीकात्मक हैं, जो क्रमशः इस लोक में जनमनेवाले, संसार, पंचमेल सामग्री (पाप-पुण्य, भोग्य-अभोग्य), व्यापारी (संसार में पाप-पुण्य के लेन-देनकर्त्ता) और मोजरा (अपने कृत कर्म का लेखा-जोखा) के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ निर्गुण भावों का व्यापार होता है, गुरु की हाट लगती है और संत लोग नाम के ग्राहक हैं। इस हाट में पुण्य तराजू का फलक है। शम तराजू का डंडा है और उसमें ज्ञान का दसेरा बाँधकर रखा गया है। यहाँ यमराज के मोजरा माँगने और संतों के निर्गुण नाम के जप का हिसाब देने पर उसका माथा झुका देने का अभिप्राय है कि निर्गुण ब्रह्म के उपासकों के लिए मुक्ति को छोड़ दूसरा कोई (स्वर्ग, नरक आदि) भोग्य या अभोग्य नहीं है, जिसकी व्यवस्था यमराज करते हैं। हाट-बाजार और ग्राहक आदि के रूप कबीर के वचनों या साखियों में भी प्रयुक्त हुए हैं।]

संतन अयलन सम[१] गहँकी[२], गुरु हाट लगवलन हे।
भाव उठल पँचरँग के, सभे सौदागर हे।
हम बेपारी[३] निरगुन नाम के, हाटे चल न हो भाइ ॥१॥
सत सुकरीत[४] हइ पलना, सम देल गल[५] डंडी जी।
गेयान दसेरा[६] बान्ह के[७], पूरा करके रक्ख जी।
सौदा करे संतन चललन, आगे रोकइ जमराइ[८] ॥२॥
मोजरा[९] माँग हइ नाम के हो, हम तो बनिजारा।
हम तो बेपारी निरगुन नाम के हो, लाऊँ नाम के माला।
सतगुरु बसथिन सतलोक में हो, उनखर[१०] छबि देखहु भाइ॥३॥
देखि छबि जमवा[११] कायल भेल हो, मथवा देलक नेवाय।
कहल कबीर पुकार के हो सुनहु संत समाज।
जे जे सौदा करे नाम के हो, ओहि पूँजी हो भाइ ॥४॥

●

[५]

[यह निर्गुण कबीरदास के नाम से ही है। यह एक परम्परा-सी हो गई है कि कोई भी निर्गुण कबीरदास के नाम पर चल पड़ता है। इसमें 'पाँच नदिया' पाँच प्राणवायु हैं, किन्तु उनकी एक धारा प्राण-धारा है। उसके बीच

---

१. अंतःकरण और मन का संयम (शम)। २. ग्राहक। ३. व्यापारी। ४. सुकृति, सुकीर्त्ति। ५. दिया गया। ६. तराजू का पलड़ा, दस सेर का वजन। ७. बाँधकर। ८. यमराज। ९. हिसाब में लिया (या मिनहा किया) हुआ। १०. उनकी। ११. यम।

'कमल' नाभि का 'सहस्रार कमल' है, जो खिल गया है। प्राणायामादि यौगिक क्रियाओं से सहस्रार कमल खिलता है, योग की ऐसी मान्यता है। 'फूल लोढ़ना' संसार के अच्छे पदार्थों का चुनना है। 'बारी' संसार है। सारी (साड़ी) शरीर है। 'डोरी अटकल' का अर्थ भोग्य पदार्थों में फँसना है। उससे छुड़ानेवाला सद्गुरु को छोड़ दूसरा कोई नहीं है। फूलों से चँगेरी भरने का अर्थ है—अच्छे कार्यों से जीवन को सफल बनाना। सद्गुरु लिवाने आये, अर्थात् सांसारिक बन्धनों से छुड़ाकर परलोक ले जाने के लिए आये हैं। अपनी सखियों से 'अँचरवा' छुड़ाने का अभिप्राय है, अपने सगे-सम्बन्धियों से ममता त्याग कर अन्तिम विदाई लेना। इस प्रकार, इस गीत में भौतिक दृष्टान्तों से आध्यात्मिक भावों की अभिव्यक्ति की गई है।]

पाँच नदिया रामा, एक बहइ[१] धरवा रामा।
ताहि बीच कमल रे फुलायल हो राम ॥१॥
फूल लोढ़े गेली बारी[२], सारी[३] मोरा अटकल डारी।
गुरु बिनु केउ न[४] छोड़ावेइ[५] हो राम ॥२॥
फुलवा लोढ़िय लोढ़ि, भरली चँगेरिया[६] राम।
सतगुरु अयलन लियावन हो राम ॥३॥
छोड़ु छोड़ु संघ के सथिया, आझ[७] मोरे आँचरवा हो राम।
सतगुरु के सँघवा, अब हम जायब हो राम ॥४॥
कहत कबीर दास, पद निरगुनियाँ राम।
संत लोग लेहु न, विचारियऽ हो राम ॥५॥

●

[६]

[यहाँ प्रश्नोत्तर रूप में बताया गया है कि हंस (आत्मा) निर्गुण (परमात्मा) के पास से आया है और सगुण (संसार) में समा गया है। यहाँ आकर वह माया में लिपट गया है। इस गीत में भी पानी के लिए जाना, कुएँ पर जाकर घबराना आदि बातें गीत-संख्या २ के समान ही हैं। यहाँ चार व्यक्तियों के द्वारा खाट उठाने की बात अधिक है। बिहार के उत्तरी और पूर्वी भाग में मुरदा खाट पर ही उंठाया जाता है। उसके लिए अलग अरथी (रन्थी) नहीं बनती है, इसलिए यहाँ खाट उठाने की बात आई है।]

---

१. बहती है। २. घर से सटी हुई फुलवारी या वाटिका, जिसमें फल-फूल, साग-सब्जी की खेती होती है। ३. साड़ी। ४. कोई नहीं। ५. छुड़ाता है। ६. चंगेली (री), एक प्रकार की डलिया, जो सींकी की होती है। ७. आज।

कहमा रे हंसा[१] आवल,[२] कहमा समाएल[३] हो राम।
कउन गढ़ कयलक[४] मोकाम,[५] कहाँ रे लौटि जायत हो राम ॥१॥
निरगुन से हंसा आवल, सगुना समायल हो राम।
बिसरी गयल हरिनाम, माया में लपटायल हो राम ॥२॥
नया रे गवनमा के आवल, पनियाँ के[६] भेजल हो राम।
देखल कुइयाँ के रीत, से जिया घबड़ायल हो राम ॥३॥
डोलवो[७] न डोलहइ[८] इनरवा,[९] रसरिया[१०] त छूटल हो राम।
देखल कुइयाँ के रीत, हिरदा मोरा काँपे हो राम ॥४॥
सास ननद मोरा बयरिन,[११] गगरी फूटल हो राम।
का लेके[१२] होयबइ[१३] हजूर,[१४] से आजु नेह टूटल हो राम ॥५॥
सास मोरा सुतल अटरिया, ननद कोठा ऊपर हो राम।
सामी मोरा सुतलन अगमपुर, कइसे के जगायम[१५] हो राम ॥६॥
लटवा[१६] धुनिए धुनि[१७] माता रोवइ।
पटिया[१८] लगल बहिनी हो राम।
बहियाँ पकड़ि मइया रोवइ, से आज नेह टूटल हो राम ॥७॥
चारि जना खाट उठावल, मुरघट[१९] पहुँचावल हो राम।
जँगला[२०] से लकड़ी मँगावल, काया के छिपावल हो राम ॥८॥
दास कबीर निरगुन गावल, गाइ के सुनावल हो राम।
फिन[२१] नहीं अयबइ[२२] इ नगरिया।
मनुस चोला न पायम[२३] हो राम ॥९॥

---

१. हंस, जीव। २. आया। ३. समा गया, प्रवेश कर गया, घुस गया। ४. किया। ५. पड़ाव, ठहराव, विश्राम-स्थान। ६. पानी भरने के लिए। ७. डोल, पानी भरने का लोहे का एक बरतन। ८. डोलता है। ९. कुएँ में। १०. रस्सी। ११. बैरिन। १२. क्या लेकर। १३. होऊँगी। १४. सम्मुख। १५. जगाऊँगी। १६. लटें। १७. धुन-धुनकर। १८. खाट के ढाँचे के दाहिने-बायें लगाई जानेवाली वे लकड़ियाँ, जिनके मेल से रस्सी की बुनाई होती है। १९. श्मशानघाट (मुरदघट्टी)। २०. जंगल। २१. फिर। २२. आऊँगा। २३. पाऊँगा।

[७]

[यह भी निर्गुण धारा का ही एक गीत है। यहाँ भी आत्मा अपने 'बलम'—परमात्मा से मिलने के लिए आकुल है। उसकी सखी (अज्ञान आत्मा) ही एकमात्र सहचरी है, जो उसके हृदयगत भावों को जानने की आकांक्षा बनाये बैठी है। प्रेयसी का बाजूबन्द सोने का और 'टिकुली' चाँदी की है और उसकी नाक में प्रेम की 'नथिया' झमक रही है। वह अपनी सेज पर प्रेम का पंखा डुलाती हुई आधी रात तक अपने प्रियतम के पास रँगरेलियाँ मनाती रही। न जाने कैसे, जरा-सी आँख झपकी कि प्रियतम गायब हो गया। सवेरे उठी, तो बगल सूनी देखकर वह व्याकुल हो गई और चारों ओर खोजने लगी, किन्तु किसी ने उसका पता नहीं बतलाया। चलते-चलते रास्ते में 'सतगुरु' मिल गये और उन्होंने स्वामी का रास्ता ही नहीं दिखलाया, बल्कि दोनों को मिला भी दिया।

इस गीत में अपना भाव-निवेदन करनेवाली आत्मा है, दूसरी अज्ञान आत्मा उसकी सखी है, 'बलम' परमात्मा है और सतगुरु ज्ञानी गुरु हैं, जिन्होंने आत्मा को परमात्मा से मिला दिया। आधी रात आधे जीवन का उपलक्षण-मात्र है। आँख झँपने का अभिप्राय जीवन में परमात्म-भक्ति से हटकर प्रमाद में जा पड़ना है। उसी प्रमाद में परमात्मा विस्मृत होकर हृदय से अलग हो गया।]

अप्पन[१] बलेमु[२] जी के बुझा[३] लेबइ हे सखिया।
अप्पन सइयाँ जी के समुझा लेबइ हे सखिया ॥१॥
काहे के बाजुबन[४] काहे के टिकुली हे।
काहे के नथिया झमकयबइ[५] हे सखिया ॥२॥
सोने के बाजुबन, रूपे के टिकुलिया हे।
परेम[६] के नथिया झमकयबइ हे सखिया ॥३॥
कथि के सेजिया कथि के रे झालर।
कथि के बेनिया[७] डोलयबइ[८] हे सखिया ॥४॥
परेम के सेजिया, परेम के झालर।
परेम के बेनिया डोलयबइ हे सखिया ॥५॥
सोने रूप सइयाँ मोरा परेम पियासल।
हम धनि परेम पियासी हे सखिया ॥६॥

---

१. अपना। २. वल्लभ, स्वामी। ३. समझाकर अपने अनुकूल कर लूँगी। ४. बाजूबन्द, बाँह में पहनने का आभूषण-विशेष, भुजबन्द। ५. झमकाऊँगी। ६. प्रेम। ७. पंखा, [व्यजन]। ८. डुलाऊँगी।

अध राति ले[९] हम रँग रस बिलसली[१०]।
कउनी मोरा अँखिया झँपायल[११] हे सखिया ॥७॥
भोरे उठि देखली सइयाँ मोरा भागल।
सइयाँ के कहाँ जाइ खोजूँ हे सखिया ॥८॥
रने बने खोजलूँ राहे बाटे घुमलूँ।
कउन सइयाँ के बतावे हे सखिया ॥९॥
बटिया में मिलल सतगुरु हमरा।
ओहि सइयाँ से मिलवलन हे सखिया ॥१०॥

९. तक। १०. विलास किया। ११. झपकी आ गई, आँख मुँद गई।

मगही-शब्दावली

अ

पृ० पं०

२५ ३ अंकटी—छोटे-छोटे खराब दाने के साथ मिश्रित कंकड़ी अथवा एक प्रकार की घास (अंकरी) के बीज की दाल।

१३७ २० अंकवार—भुजपाश में पकड़कर गले मिलना, छाती से लगाना।

१२ ३ अंगन—आँगन।

१८ १४ अंगवा—अंग।

१४५ ८ अंगिया—कुरता, अंगरखा।

२२० ९ अंगेया—आज्ञा, भोजन के लिए निमंत्रण।

१३२ १२ अंजवारल—स्थान बनाना, खाली करना।

७५ ५ अंजौतन—आंजेगी।

१८० १६ अंतरा—दो गाँवों के बीच का सुनसान निर्जन मैदान।

११८ ११ अंइठल-जोंइठल—इठलाती-मदमाती।

१७७ ९ अइपन—पीसे हुए चावल में हल्दी मिलाकर तैयार किया गया घोल, जिससे चौका चित्रित किया जाता है।

२०३ ५ अइहा—आना।

२०१ ८ अउरी-झउरी—नोक-झोंक।

१८६ १२ अकलंक—कलंक, दोष।

पृ० पं०

५३ १२ अकारथ—व्यर्थ।

४४ १७ अछन-छछन—अधीर हो-होकर।

६७ १४ अछरंग—न छूटनेवाला दोष, लांछन।

१६ ९ / १८६ २३ } अजगूत—विचित्र, बेमेल।

१६ १४ अधिए—आधी।

१३ २० अभरन—आभूषण।

५७ १५ अमरस—खट्टा, षट्रस।

१६७ १२ अमरिया—अमारी, हौदा।

१३९ १५ अमलिए—अमल में, नशे में।

२०० ७ अमोद—सुगंध, सुरभि।

५७ १६ अयनमा—ऐना, दर्पण।

६२ १४ अरक—अर्क, रस।

३७ ९ अरजल—अर्जित किया हुआ।

२३९ २० अरजी-बरजी—प्रार्थना।

५० १४ अरपहुँ-डरपहुँ—न कहीं फेंको और न डरो।

३ २१ अरबे—अरब की संख्या।

१०३ ५ अरार—तट का ऊंचा भाग, कगार।

९५ ७ अरिजन—परिजन।

२४६ २० अरुसा—दुलहन।

८ २२ अलप—अल्प अथवा अत्यंत लप-लप पतलो।

५७ २२ अलफी-सलफी—साज-शृंगार।

पृ० पं०

१८ १६ अलरी—अलबेली।
२३ १३ } अलारी–पुचकार कर, अलबेली।
१३६ १ }
६६ २० } अलुरी—कुछ माँगने के लिए।
१४५ ८ } ,, —ममतापूर्वक मनावन और हठ करना।
१४८ ३ अवइथथुन—आ रही हैं।
६ १३ अवथुन—आवें।
१२१ ६ अवादे—आवास, ग्राम।
२८ १७ असगर—अकेले।
१७२ १५ असरे-पसरे—अगल-बगल।
२५८ ६ असला—अच्छे खानदान का।
५ २ असवार—सवार।
४८ २० अहियात—अविधवात्व,
७७ २ ,, अहिवात,
१५१ २१ ,, सौभाग्य।

आ

२०४ ३ आथिन—आ रहे हैं।
१५ २१ आन—दूसरा।
२०८ ८ आनि देहु—ला दो।
१६४ ६ आने—लाने।
२०८ १६ आमि—आम।
११७ १७ आरी—मेंड़, खेत की ऊँची हदबन्दी।
४२ १ आले—अच्छे-अच्छे,
१७८ २२ ,, हरे-हरे।
२२६ १७ आहु—आओ।

इ

४७ १७ इकसल—निकलीं।
२६ १७ ,, ,,
२१७ १६ ,, ,,
१४३ ६ इड़ोते—ओट में।
१८७ १० इ तो—यह तो।
३५ १२ इनखा—इनको।

पृ० पं०

४ ५ इयरी-पियरी—पीले रंग में रंगे वस्त्र।
२१४ १८ इयवा—माँ के लिए सम्बोधन-सूचक शब्द। कहीं-कहीं 'इया' दादी को भी कहा जाता है।
४७ १८ इरि-झिरि—मंद-मंद, झर-झर बहनेवाली वायु।
२३६ २१ इहमा—यहाँ।

उ

१४० १ उटकल—दबी-दबाई बात को उभाड़ना।
३५ १८ उगल रहे—उदित रहे, जगमगाता रहे।
१४६ १६ उगारब—उगाना, साफ करना।
२२८ १२ उड़ाहल—कुएँ से पानी निकालकर मिट्टी आदि गंदगी साफ करना।
११२ १२ उताहुल—उतावला,
११६ १० ,, उतावलेपन में जल्दीबाजी करने के लिए।
२०६ १५ उदवासल—दुःख दिया, चैन से बसने नहीं दिया।
१५० ४ उदेसवा—उद्देश्य, खोज में।
१०४ ७ उनखर—उनका।
१५० १४ उनारइ—ऊपर की ओर उठाना।
१६२ १८ उरेहल—चित्रित किया, बनाया।
७ १६ उहँवाँ—वहाँ, उस जगह।

ऊ

२५८ २१ ऊभन—कुएँ से पानी निकालने की रस्सी।

ए

२६ १८ एगो—एक।
२१७ २५ एतबर—इतना बड़ा।
४३ ८ एतवार—रविवार।

पृ० पं०

ऐ

८७ १३ ऐबो—आऊँगा।

ओ

२०८ २० ओइसन—वैसा।
१८८ २ ओछाई—बिछाना, फैलाना।
१० १६ ओटिया—उदर के नीचे पेड़ूवाला भाग।
१४० १३ ओठगाँइ—उठंगा दिया, किसी चीज के सहारे रख दिया।
४४ २७ ओढ़न—ओढ़ना।
२७ १३ ओदर—उदर।
१७५ ६ ओबर—घर का भीतरी भाग।
२४ १६ ओबरी—किसी कोठरी का अभ्यंतर भाग, जिसे 'चुहानी' भी कहते हैं।
२०४ १४ ओरझ—उलझ गया, झुक गया।
१४३ १२ ओरहन—उलहना, उपालम्भ।
१५ १७ ओरहन—अदवान, खाट को कसनेवाली पायताने की रस्सी।
४ १६ ओरियनि—छप्पर का अगला भाग, जहाँ से वर्षा का पानी टपकता है, ओलती।
३२ ३ ओरिया—छप्पर का अगला भाग, ओलती।
२२६ ६ ओलती—ढालुवें छप्पर का किनारा, जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है, ओरी।
१५१ १६ ओलरि गेल—लुढ़क गया।
३२ ४ ओलहन—उलाहना।
१७६ १६ ,, ,,
७१ १६ ओल्हाय—बरदास्त नहीं होना।
७२ ८ ,, ,,
१६१ ४ ओसरा—बरामदा, ओसारा [< उपशाला]।

पृ० पं०

२०३ ६ ओहरिया—ओहार, पालकी के ऊपर का परदा।
८१ ७ ओहरी—ओलती, देहरी।

औ

२१५ १० औंठी-पौंठी—किनारे पर, अगल-बगल में।
१३५ ८ औतइ—आयेगा।

क

१६ २० कउरी—कौड़ी।
१४७ ६ कचरल—कच-कच करके चबाना।
३ २० कटायम—कटाऊँगी।
४६ ६ कटोरनि—कटोरे-कटोरे।
१४६ १ कड़ुआइन—स्वाद में कड़ुवा।
१८ २ कनछेदन—कर्णवेध-संस्कार।
४७ २२ कपसि—सिसक-सिसककर।
२२० १४ कपुसार—उत्कृष्ट कोटि का सुगन्धित चावल।
१२८ १८ कयरा—केला।
१४० १७ कयला—किया।
१५ १० करइले जोगे—करैले की तरह।
४६ १५ करथ—करते हैं।
२४ २२ करुआ तेल—सरसों का तेल।
२४ १ कलीगर—कारीगर।
२३६ २१ कलेउ—दिन का भोजन।
१६८ १२ कसबी—नर्त्तकी, वेश्या।
१८० २२ कसमस—कसनेवाली।
२३६ १४ काँचल—कमसिन, कच्ची।
४७ २५ काँछ-कछौंटा—आँचल कमर में बाँधना, कच्छा कसना।
६५ ८ काजर पारल—काजल बनाना।
१६४ १३ कादो—कीचड़।
१४० ७ कान—काना।
१६७ १७ कानू—काँदो, रोओ।
११८ ७ कामर—कम्बल।

पृ० पं०

५६ १६ कामिन—कामिनी।
१७४ १७ कामिल—काबिल, होशियार।
१२४ १७ कार—काला।
१२४ १६ कार-कोयिलवा—काला-कलूटा।
१६२ ७ किनलन—खरीदा।
८७ ८ किरिया—शपथ।
१८६ ५ ,, ,,
१६३ १३ कीर—शपथ, किरिया, कसम।
२६५ २५ कील—कंगन के दोनों ओर के मुंह को जोड़नेवाला छोटा टुकड़ा।
२३० १६ कुनली—पालकी में लगनेवाला टेढ़ा बाँस।
६ ३ कुबोल—नहीं बोलने योग्य।
१६ १५ कुरखेत—जोता-कोड़ा खेत, कुरुक्षेत्र।
४३ १० ,, ,, ,,
६८ १ ,, ,, ,,
१३५ १६ कुरचइत—प्रसन्नता से कुलाँचे भरते हुए।
१२१ १० कुरीयवा—कुटिया।
६८ १ कुलिहा—बच्चों की टोपी, कनटोप।
२०५ ३ केचुअवा—कंचुकी।
५३ १८ केरवा—केला।
४२ ४ केवरिया—किवाड़।
८१ ५ कोठिल—कोठरी।
१४० ३ कोठिलवा—अन्न रखने की कोठी।
६८ १६ कोठी—अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना बखार।
२५ १ कोदइया—कोदो, एक प्रकार का कदन्न।
२१ २१ कोर—गोद।
१२६ ७ ,, ,,
२०० १६ कोरपिछुआ—सबसे छोटी संतान, जिसके बाद कोई संतान न हो।
१५ १६ कोरबा—गोद में।

पृ० पं०

२३५ ३ कोरा—वह वस्तु, जिसका अभी व्यवहार न हुआ हो, जिस पर पानी न पड़ा हो।
६१ १० कोसुम—कुसुम, एक पुष्पविशेष।

ख

२५ ७ खँखोरी—कड़ाही में जले हुए पदार्थ का अंश, जो खँरोचकर निकाला जाता है।
२३६ २३ खइंचा—दौरा, बाँस की कमाचियों का बना टोकरा।
१६१ १३ खइनी—खैनी, तम्बाकू का सूखा हुआ पत्ता, जो चूने के साथ रगड़कर खाया जाता है।
१४७ १० खरइ—एक प्रकार की घास।
१६३ १३ खरग—बड़े दाँत।
१२८ २० खरही—खर, एक प्रकार की घास।
१३३ १४ ,, ,,
४२ १३ खाके—राख।
१३७ २१ खानहु—खोदो।
६३ ७ खायम—खाऊँगा।
२०६ ११ खेपल—बिताया।
२०० १० खेम-कुसल—क्षेम-कुशल, कुशल-समाचार।
१४१ २२ खोंइछा—मोड़कर पात्र की तरह बनाया हुआ आँचल।
१७४ ७ ,, ,,
४२ ४ खोलहे—खोलता है।

ग

१६ ११ गंमवा—गाँव।
१० १५ / १२ ५ / ५० १ } गजओबर—बड़ा घर या कमरा, सौरीगृह। घर का भीतरी भाग। [मिला०—ओबरी=तंग और अंधेरी कोठरी। ओबरी < उपवटी < उपवड़ी > ओवड़ी > ओवरी > ओवर वा ओबर अथवा अवर अथवा < अपवरक = भीतरी घर, 'गर्भागारेऽपवरकः' —त्रिकांड]
१२३ ६ गजनवटा—स्त्री की पहनी हुई साड़ी के नीचे का भाग।
१५७ २१ गजहार—गजमुक्ता की माला।
४ १ गड़ी—नारियल।
१६० १७ गड़ुअवा—द्रव्य रखकर धरती में गड़ा हुआ पात्र।
७ १५ गनि—पटसन के मोटे टाट की बनी हुई बोरी या रुपये रखने का जालीदार थैला, गँजिया। [गनि < गोणी (संस्कृत), मिला०—गनी (Gunny—अं०)—कहा०—'कूदे गोन न कूदे तंगी'।]
११५ १६ गभरू—वह स्वस्थ नवयुवक,
१५१ २० जिसकी मसें भीग रही हों।
१५४ ११ ,, ,,
२२६ २४ ,, ,,
२३६ ११ गमउली—गँवाया, बिताया।
४२ १४ गरब सयँ—गर्व से।
४६ ८ गरान—ग्लानि।
८५ १० गरिया—गरी, नारियल।
२१ २० गरियाबए—गाली देती है।
४६ २२ गाजथि—गाजते हैं, गद्गद होते हैं।
११४ १० गामन—गाने।
४६ २४ गाय—गाकर।
३ २० गायम—गाऊँगी।
४६ २२ गावथि—गाती हैं।
४२ ७ गिरथाइन—घर-गृहस्थी संभालनेवाली (पत्नी)।
१४ ८ गिरिथाइन—गृहिणी।

पृ० पं०

८१ ६ गिलटावन—बदसूरत।
१६६ ३ गुरिहँथिये—गुरहत्थी-नामक विधि सम्पन्न करना। इस विधि में जेठ दुलहन को वस्त्राभूषण देता है। यह उसका अन्तिम स्पर्श होता है।
१०८ १६ गेंठ-जोड़ल—पति-पत्नी की चादरों के छोर में धान, दूब, हल्दी और द्रव्य आदि रखकर बाँधने की प्रक्रिया।
६६ १६ गेंठी खोलले—गाँठ खोले हुए, रुपये-पैसे देने में मुक्तहस्त।
२७४ २२ गेंड़ुरी—एक गोलाकार उपकरण, जिसे सिर पर रखकर, उसके ऊपर घड़े को रखा जाता है।
१७२ ५ गेड़ुआ—झारी, जलपात्र।
६८ १७ गेन्दरो—गुदड़ी, फटे-पुराने कपड़ों को सीकर बनाया गया बिछौना।
६५ ५ गोचर—अपनी गति के अनुसार चलते हुए किसी ग्रह का निश्चित काल तक भोग करना तथा ग्रह की राशिगत चाल।
१६ १७ गोड़ लागल—प्रणाम करना।
४६ २१ ,, चरण-वन्दना।
६५ ६ गोतिया—गोत्रवाले।
१३३ ८ ,, ,,
६५ ६ गोतिनी—पति के भाइयों की पत्नियाँ।
१४० ८ गोला—पीले और लाल रंग के रोमवाला।
२१ १६ गोसियायल—गुस्से में भर गया।

घ

४७ १६ घइला—घड़ा।
२३ १५ घउद—घौद।



पृ० पं०

६१ १० घउर—घौद, फलां का गुच्छा ।
६१ १७ घटाई—घोटकर ।
२११ १९ घममा—घाम, धूप ।
२७४ २४ घयली—घड़ा ।
१९७ १३ घर-घरुश्ररिया—घर में सुगृहिणी के रूप में ।
६३ १४ घरबारिन—घर का काम-काज सँभालनेवाली ।
१२ ३ घहरायल—मेघ के बरसने से घहर-घहर शब्द करना, प्रतिध्वनित हो उठना ।
८० २५ ,, ,,
१९५ २१ घामा—धूप ।
१८० १३ घामे—पसीने से ।
१२० १४ घियवा—घी ।
९८ ७ घिया—घी ।
१३२ १० घिउढारी—घृतढार । विवाह के अवसर पर घी ढालकर पूजा की जानेवाली एक विधि ।
२१ २० घुघुकावय—आँखें तरेरकर कोसती रहती है ।
१६६ १० घुरमइ—चक्कर काटता है ।
४२ १३ घुरि—लौटकर ।
५५ १४ घुरिए—लौटकर, घूम-फिरकर ।
१८० २३ घुरू—लौटो ।
१८९ ९ ,, ,,
१४४ २३ घोंघवा—शंख की जाति का एक कीड़ा ।
७२ १३ घोंटी—घुट्टी, जन्म-घुट्टी ।
१२४ १७ घोसहुँ—घोषणा करो, बार-बार पुकारो ।

च

४२ १ चउपरिया—वह मकान, जिसमें चारों तरफ से घर हो और बीच में आँगन हो ।
१६४ ११ ,, ,,
१२८ ७ चउमक—चतुर्मुख दीपक । कलश के ऊपर जो दीपक रखा जाता है, उसमें चारों ओर मुंह होते हैं और हर मुंह में बत्ती जलती है ।
१४७ १८ चउरा—चबूतरा ।
९६ १६ चउरा—चावल ।
९६ १६ चकरी—छोटा जाँता ।
१२७ ९ चढ़ावथी—चढ़ाते हैं ।
२५ १५ चधुराइन—चौधरानी, गाँव के मालिक की पत्नी ।
३० १७ चनमा—चन्द्रमा ।
२४३ १३ चब्हियो—चाभना, चबाना ।
१५ १५ चभइती—चाभने या चबाने के लिए देते ।
२०३ १४ चमुकवा—चौमुख, कलश के ऊपर का दीपक, जिसमें चारों ओर चार बत्तियाँ जला दी जाती हैं ।
८८ १७ चरुश्रा—चौड़े मुँहवाला मिट्टी का पात्र, जिसमें जच्चा के स्नान के लिए पानी गरम किया जाता है ।
२१८ ६ चलिका—छोटे-छोटे लड़के ।
१५१ ८ चारो गिरदा—चारों तरफ ।
३२ २० चिखती—चखती ।
१० १६ चिल्हकि—सूल की तरह रह-रह कर दर्द करना ।
८ १७ चुकवन—मिट्टी के छोटे पात्र या चुक्के में ।
१५१ ६, २२६ २० } चुनमें—चूने से ।
९० ११ चुनिया—बहुत छोटा नग ।
२४७ २३, २७० १ } चुनिये—माणिक या लाल का छोटा टुकड़ा, छोटा नग ।

पृ० पं०

१५१ ६ चुनेटल—चूने से पोता हुआ ।
१११ १६ चुमाय—चुमावन की विधि संपन्न करके ।
१४४ १९ चेल्हवा—एक छोटी, पतली और चंचल मछली ।
४५ ५ चौखंड—चार खंड ।

छ

११३ ५ छँहिर—छाया ।
२० १० छछन—अभाव-जनित अतृप्ति के बाद तृप्ति अथवा अत्यंत व्याकुल भाव से ।
४३ ८ छठ—षष्ठी-व्रत ।
५५ १४ छठिया—छठी, पुत्र-जन्म के छठे दिन की एक विधि ।
१४० ५ छनियाँ—छप्पर ।
१२५ ८ छरइह—छवाना, आच्छादन कराना ।
१५२ ७ छागल—पायल, पैर का एक आभूषण ।
२४९ ८ छापा—छापेदार साड़ी, छाप, छपाई ।
९८ ९ छिहुलाय—दर्द से बेचैन होकर चौंक उठना ।
२५ १२ छेदमवाँ—छदाम ।
२१९ १ छेव—जमे हुए दही से एक बार की काटी हुई परत ।

ज

२१० १० जँगला—खिड़की ।
१४२ ६ जउरे—साथ में ।
२७८ १२ जगायम—जगाऊँगी ।
११ ६ जड़इया—जाड़ा ।
१६१ १२ जनमतइ—जन्म लेगा ।
२७६ २१ जमवा—यम ।
१८२ १ जयतुक—सलामी, प्रणाम करने तथा किसी विधि को संपन्न करने के लिए द्रव्यादि लेना ।
१३३ १९ जयल—संतान, जायल ।
१३६ ९ जरउ—जल जाय ।
१६७ १२ जरद—पीले रंग का मखमल, जड़ीदार ।
१८६ १० जरि छाय—जलकर राख ।
४६ ९ जरि रोपली—जड़ रोप दिया, वंश बचा लिया ।
१८६ ६ जलबाय—अदृश्य ।
१७८ २५ जवरे—साथ में ।
१२० १३ जाग—यज्ञ ।
२१५ २१ जागथ—जग जायेंगे ।
१४ २० जानथू—जानती है ।
२५१ ८ जानो—कमर में ।
२४० ९ जामा—दुलहे को पहनाया जानेवाला विशेष प्रकार का अँगरखा ।
१७२ ११ जारे-जारे—जार-बेजार ।
१९८ १४ जाहथि—जा रहे हैं ।
१५० ४ जाहियो—जा रहे हैं ।
६१ १४ जाही—जाता हूँ ।
२४० ९ जियथि—जीवित रहें ।
२६ २ जीउ फरियायल—मिचली आने लगी ।
११४ ११ जीथिन—जीयेंगी ।
१० १२, ३६ ३ जुगवा—जूआ, बाजी लगाकर खेला जानेवाला एक खेल, द्यूत ।
१६१ १२ जुड़ी—नीचे, तले ।
१७४ ७ जुड़ी—जोड़ा ।
४७ २६ जुमल—पहुँच गई ।
४६ १८ जेववली—जेवनार कराया, भोजन कराया ।
४६ २४ जोखि—तौलकर ।



पृ० पं०

५६ १६ जोग—योग्य ।

१२६ १ जोड़ा—दुलहे को पहनाया जाने वाला वस्त्र, जिसका नीचे का भाग घाँघरादार होता है तथा कमर के ऊपर उसकी काट बगलबंदी के ढंग की होवी है ।

१४६ १२ जोरवा—दे० जोड़ा ।

१०८ १४ जोवा—यव, जौ ।

२१३ १५ जौतुक—यौतुक, विवाह के समय दुलहे या दुलहन को दिया जानेवाला दान-दहेज ।

१४६ ५ जौरे—साथ में ।

झ

१४५ १२ झँगरी—हरे चने की फली ।

१६१ ५ झँझवा—झाँझ, पैर का एक आभूषण ।

२८० २ झँपायल—झपकी आ गई ।

१६० १६ झउराय—झल्ला उठीं ।

१५० १७ झउराहा—झगड़ालू, हठी ।

२२२ २० झट दिना—जल्दी से ।

६४ १ झपसी—बूँदा-बाँदी के दिन ।

२३ १५ झबद—गुच्छा ।

६४ ४ झमँरायल—मुरझा जाना, श्याम वर्ण होना ।

१३२ १२ झमकइते—इठलाते हुए ।

१०७ २१ झरलन-झूरलन—झाड़-पोंछ किया ।

८५ २३ झलाही—हठीली अथवा झल्लानेवाली, झगड़ालू ।

८९ ७ ,, ,,

६६ ६ ,, ,,

१६० १३ झहर बदरी—झड़ी लगानेवाली बदली ।

१७३ १९ झाँपि-झूँपि—कपड़े से ढककर ।

४९ ६ झामर—झाँवर, मलिन ।

११६ ८ झारि—झाड़कर ।

पृ० पं०

१५९ ११ झालर—बूँदों की झड़ी लगानेवाला ।

१९० २१ झिगनी—एक प्रकार की तरकारी ।

१६४ १७ झिटकी—मिट्टी के बरतन या खपड़े का टुकड़ा, ठीकरा ।

२५८ ९ झुकता—झुककर चलता हुआ ।

१५३ २० झोर—झोल, शोरबा ।

६९ १७ झोराई—सफाई-धुलाई का पारिश्रमिक ।

ट

१७० १७ टटर—बाँस की फट्ठियों या एक

२२७ ९ प्रकार की घास की दीवार ।

१४ ३ टाटी फुरकावय—द्वार पर की टट्टी खड़खड़ाता अथवा खोलता है ।

६६ २ टिकवा—मँगटीका नामक सिर का एक आभूषण ।

३१ २४ टिकोरवा—आम का टिकोला, अमिया ।

६१ १९ टिपोर—तड़क-भड़क ।

४६ २२ टूअर—मातृ-पितृहीन ।

ठ

२७३ १८ ठइयाँ—जगह ।

३१ १ ठाढ़ा भेल—खड़ी हुई ।

७० १३ ठारा—खड़ा ।

१४१ २३ ठुनके—मान के साथ धीरे-धीरे रोना ।

६२ १३ ठोपे-ठोपे—बूँद-बूँद ।

ड

१६३ ८ डँठहर—डंटीदार ।

४२ १८ डँड़िया—एक प्रकार की पालकी ।

१३२ १५ ,, ,,

११८ ३ डँरवा—डाँड़, कमर, कटि ।

६३ १३ डँसायब—बिछाऊँगी ।

१७ १५ डँसावल—बिछाया ।

पृ० पं०

१३ २९ डगरिन—चमारिन, जो प्रसव कराने में निपुण होती है ।

११२ ११ डटारेबो—डंटी से युक्त पान ।

२०१ २४ डढ़िया—डाली ।

१११ १५ डलवा—बाँस की रँग-विरँगी पतली फट्ठियों या कमचियों को एक प्रकार से गूँथकर तथा विशेष प्रकार से उसे सजाकर बनाया हुआ गोलाकार टोकरा, जिसमे विवाह का सामान जाता है ।

१४७ ८ डसाइ—बिछाकर ।

२२८ ११ डहइती—डहवाता, जलवाता, तपवाता ।

२२९ ११ डाँड़ो—पालकी ।

२०९ १४ डाँढ़—डाली ।

१३ २७ डाँर—कमर ।

११८ ७ डाँसन—बिछौना ।

१७२ ६ डाढ़—डंटी, डाली ।

२३४ १८ डाला—बाँस की कमचियों का बना हुआ गोलाकार चिकना टोकरा ।

११६ १७ डिड़ियाय—चारो ओर डुगमुगी पीटना या रट लगाना ।

२८ १७ डेउढ़िया—देहली, ड्योढ़ी ।

२०३ ५ डेहुरिया—ड्योढ़ी, छोटी डाली ।

२५९ २ डोइ—काठ की कलछी ।

२७८ ७ डोल—पानी भरनेवाला लोहे का बरतन ।

ढ

२१८ १५ ढार—ढालकर, धार गिराकर ।

२१४ २१ ढूका लगल—ओट में छिपकर देखना या सुनना ।

१२ १५ ढेउआ—ताँबे का एक छोटा सिक्का, जिसका प्रचलन अब

पृ० पं०

नहीं है । यह एक पैसे के बराबर होता था ।

३४ १६ ढेरिया—ढेरी, राशि ।

त

२१ १७ तरबो—ताड़ की ।

१५४ ८ तलाओ—तालाब, जलाशय ।

२६६ २० ताकी भरी—कोई मिन्नत पूरी होने पर मस्जिद के ताकों में मिठाइयाँ रखना ।

१३० ५ तितलउका—तीता कद्दू ।

८८ २२ तिलरी—गले में पहनने का एक आभूषण ।

१३८ २१ तेजम—त्याग दूँगी, वार दूँगी ।

थ

१०७ १५ थलवा—थाला, आलवाल ।

द

१४६ २३ दँड़िया—पालकी ।

६१ १२ दँहजल—लथेड़ना, सहाना, परेशान करना ।

२९ १५ दउना—एक प्रकार का पौधा, जिसकी पत्तियों से उत्कट और कड़वी सुगंध आती है, दौना ।

८१ ३ दउरिया—दौरी ।

५० ४ दछिनमा—दक्षिणा ।

१५३ १५ ददिया सास—पत्नी की दादी ।

१४४ १४ दर से देवनियाँ—ड्योढ़ी के दीवान, राजदरबार के दीवान, मंत्री ।

९६ १६ दराएब—दलवाऊँगा ।

२८ १६ दरे—दलने ।

६१ १३ दरोजवा—दरवाजा ।

१९ ८ ,, ,,

६३ २ ,, ,,

११९ १५ दरोजे—दरवाजा ।

१५ ३ दलनवाँ—बाहर का बैठक

पृ० पं०

२७६ १६ दसेरा—तराजू का पलड़ा, दस सेर का वजन।
३४ १८ दह—झील।
५३ ११ ,, ,,
१४७ ५ दहकि—धड़कन बढ़े हृदय से।
१३० १७ दहादही—दहकनेवाला, चमकनेवाला, स्वच्छ।
१५६ ४ दाँवँन—दामन, आँचल।
६३ १५ दाबे—दावे से, अधिकार से।
७८ ४ दामन - दाबने के लिए।
२३१ १६ दिअरी—दीपक।
१४७ १४ दिमाग—घमंड से, अभिमान से।
७१ ३ दियरवो—दीवट, दीपाधार।
१७ १५ दियरा—दीपक।
१२४ ११ दुभिया—दूब।
२०० ४ ,, ,,
१४ ६ दुलरइता—दुलारा।
८ १६ दुलरइतिन—दुलारी।
१६६ १२ दुहरिया—दरवाजे पर।
१९७ २० दूसल—दोष लगाया।
९५ ७ देआदिन—गोतिनी; पति के भाइयों की पत्नियाँ।
७० २० देइ घालऽ—दे दो।
६५ ६ देओ—देवता।
१०८ ३ देखम—देखूँगा।
११३ १६ देहु गन—दे आओ।
१८३ २४ देहुन गल—दे आओ।
२३७ २० दोंगा—द्विरागमन।

ध

२५ ५ धँधउरा—चावल का बना लड्डू।
१३९ १२ धधकवलन—जलाया।
२५ १ धनइया—धान के चावल का भात।
५ ३ धनि—सौभाग्यशालिनी पत्नी।
२०७ २१ धमकऽ हइ—धमकता है।
१३२ १३ धमसायल—धूम-धाम से आना, धम्म से आना, अर्थात् एक-ब-एक आ जाना।
२३६ १० धमार—उछल-कूद।
१७५ १३ धयले—पकड़े हुए।
१४१ १६ धरन—छप्पर को धारण करनेवाली शहतीर।
१४२ ३ धरहु—धरो, रखो, बतलाओ।
१३९ २ धाँगना—रौंदना।
२०० ९ धाइ-धुइ—दौड़कर।
१६२ १४ धाइला—जा रहे हैं, दौड़ रहे हैं।
४९ १३ धामन—धावन, संदेशवाहक।
३५ २४ धिया—बेटी।
१४६ ४ धुमइला—धूमिल, मलिन, मैला।
१६० १२ धूपेकल्ला—कड़ी धूपवाले समय।
५७ २४ धूरी—धूल।
२०४ ७ धोबले—धोता है।
७८ ४ धोमन—धोने के लिए।

न

४८ ६ नगिचायल—नजदीक हुआ।
१ ५ १२ नजर खिरइह—नजर गड़ाना।
२०५ २० नजिके—नजदीक ही।
२३५ ३ नदियवा—मिट्टी का गोलाकार बरतन।
६१ १८ ननदोसी—ननद का पति।
१४५ ६ नन्हुआ—नन्हा, छोटा।
१७८ २२ नबि-नबि—झुक-झुक।
५२ २२ नयना—सुनयना नामक स्त्री।
५३ २२ नरकोरवा—नारियल के ऊपर के कड़े भाग को आधा काटकर बनाया गया पात्र, जिसमें दही, अचार आदि रखे जाते हैं।
२४४ २ नवसा—दुलहा।
५१ २० नहबावहु—स्नान कराओ।

पृ० पं०

५६ १७ नहाइ-धोवाइ—नहा-धोकर।
२७ ३ नाउन—हजामिन, नाइन।
१४५ १६ नाओ—लगाओ।
८७ २५ नाफे—नस।
१४४ १९ नावे—डालता है, लगाता है।
४७ २३ नावोड़िया—छोटी डोंगी।
७६ १७ निछावर—न्यासावर्त्त, निछावर की जानेवाली वस्तु, नेग, किसी वस्तु को किसी के सिर या शरीर के ऊपर से घुमाकर दान दे देना या कहीं रख देना या छोड़ देना।
३ १२ नियरायल—नजदीक आया।
१३८ २२ निसवा—नशा।
७६ १७ निहुछि—बलैया लेकर।
१५९ १४ निहुरि-निहुरि—झुक-झुककर।
२३५ १० निहूछे—निछावर करती है, एक प्रकार का टोटका।
२३९ २३ नेअरवा—ससुराल जाने के लिए दिन निश्चित करना।
१३७ १६ नेवतल—निमंत्रित।
२५८ ८ नेवता—निमंत्रित, नम्र, शरीफ।
१३४ ६ नेवले—नवाते हैं, झुकाते हैं।
२०६ २१ नेस देहु—जला दो।
४६ १९ नेहइली—स्नान किया।
१५७ २१ नेहलइया—स्नान कराई।
७७ १२ नेहलायम—स्नान कराऊँगी।
४८ ९ } नोन—नमक।
२३३ १६ }
१५७ ८ नोह—नख।
४९ १० नौबत—शहनाई।

प

४१ १८ पँजरवा—काँख और कमर के बीचवाला किनारे का भाग।
३७ १३ पंथ—पथ्य।
४ ४ पड़ँचा—पैंचा, हथफेर।
७७ १४ पइरवा—पैर।
११९ १ पइलवा—पइला, नापने का एक माप, जो सिधोरे के आकार का होता है। काठ का कटोरानुमा बरतन, जिसमें सिंदूर, सन आदि रखे जाते हैं।
७३ ४ पउअन—खाट के पाये में।
६४ १७ } पउती—कटोरे के आकार की बनी हुई ढक्कनदार सींक की पिटारी।
१९९ १३ }
२३३ १६ }
२०९ १० पएँतर—पाँतर, प्रांतर, दूर तक सुनसान रास्ता।
२३१ ६ पकवइत—पकाते हुए।
४३ १५ } पख—पक्ष, महीने का अर्द्ध भाग या पन्द्रह दिन।
४८ १५ }
३० १४ पभइतऽ—पैदा करतो।
७५ १९ पभैती—जन्म देती।
६७ १३ पठेरिया—एक जाति-विशेष, पटहेरी या पटहारी, जो धागे में आभूषण गूँथता है।
१४१ ९ पटवाँस—पटमौर। यह करीब चार अंगुल चौड़ा होता है तथा इसमें नीचे की ओर फूल बनाकर लटकाये जाते हैं। शादी-विवाह के अवसर पर इसे ललाट पर बाँधा जाता है।
२३१ ११ पटवा फड़इते—पाटी फाड़ते हुए माँग फाड़ते हुए, बाल सँवारते हुए।
४५ ८ पट्टुका—रेशमी वस्त्र।
२२ २३ पट्टुका-पटोर—चादर और गोटा-पाटा-जड़ा लहँगा।
१५० २० पटुर—पट, दुकूल, चादर।
१४ १६ पटोर—गोटा-पाटा-जड़ी रेशमी साड़ी।

पृ० पं०

११५ ६ पतरवा—पत्रा, पंचांग।

४६ २४ पमड़िया—पँवरिया, पुत्रोत्सव कि अवसर पर नाच-गान करनेवाली जाति।

२३४ १ परछों—परिछन की विधि संपन्न करो।

४३ १४ परदोस—प्रदोष व्रत; त्रयोदशी व्रत, जिसमें दिन-भर उपवास किया जाता है तथा सायंकाल शिव की पूजा की जाती है।

१६ ७ परबोधब—प्रबोधूँगा, समझाऊँगा।

५३ १२ परसंग—रति-क्रिया।

१०५ ३ परसवा—पलाश, किंशुक नामक वृक्ष।

१३६ २० परसे—परसना, परोसना, थाल में भोजन लगाना।

६८ २ परिछेबाल—परिछनेवाली।

१२६ ३ पलबिया—पल्लव।

१२ ७ पसँघ—पसँघी की आग, बच्चा पैदा होने के बाद सौरगृह के दरवाजे पर जलाकर रख दी जानेवाली आग, जो छठी के दिन तक लगातार जलती रहती है।

१६ २० पसवा—चौसर के खेलवाला पासा।

४८ १७ पहरू—पहरेदार।

२६६ १५ पहुँची—कलाई में पहनने का एक आभूषण।

२०१ १५ पहुना—पाहुन, कुटुम्ब, मेहमान।

७७ १३ पहेरायम—पहनाऊँगा।

२४ २३ पांइच—बदले में लेने के लिए जो वस्तु किसी को दी जाय।

४५ ७ पाँचो टुक—वस्त्रों के पाँच टुकड़े (खण्ड)—धोती, कुरता, टोपी, गमछी और चादर।

पृ० पं०

४२ १ पाटन—पाटा हुआ, कोठा।

४३ ६ पारथि—मिट्टी के बने शिवलिंग, पार्थिवेश्वर, जो शिवयज्ञ में शतरुद्र-पूजा के लिए बनाये जाते हैं।

२३४ १७ पावों ढराओ—पाँव रखवाया। विवाह के बाद दुलहन के पहले-पहल ससुराल आने पर उसे डोली (पालकी) से निकालकर बाँस के डाले में पैर रखवाते हुए कोहबर तक ले जाया जाता है। उस समय वह जमीन पर पैर नहीं रखती।

२७ १४ पासँघ—सौरीघर के द्वार पर अंगीठी में रखी आग, जो छठी तक जलती रहती है और इसमें लौंग आदि सुगंधित द्रव्य भी जलाये जाते हैं।

११४ १ पिठार—चावल के आटे का बनाया पीठा।

४२ ६ पितिआइन—चाची।

१४ ७ ,, ,,

१४४ १४ पितिया—पितृव्य, चाचा।

५२ ११ पियरिया—पीले रंग की साड़ी।

२० ११ पियरी—पीली साड़ी।

७५ १६ पिरकी—पान की पीक।

२१४ १३ पिरायल—दर्द कर रहा है।

४६ १५ पीढ़ा—पादपीठ, लकड़ी का बना ऊंचा आसन।

१२१ ८ पुछार—पूछ-ताछ। कुशल-समाचार की जानकारी प्राप्त करना।

४३ ७ पुतरवा—पुत्र।

१३४ ८ पुतवे पझइह—पुत्र-पुत्री (संतान) से परिपूर्ण रहना।

पृ० पं०

७१ १७ पुरतो—पूर्ण होगा।

२१३ १४ पुरबीला—पूर्व जन्म।

१२६ १४ }
१३३ ७ } पुरहर—कलश के ऊपर रखा जानेवाला पूर्णपात्र, जिसमें अरवा चावल या जौ भरा जाता है।

११४ ६ पुरावल—पूर्ण किया, भरा।

७२ ३ पेंच—लपेट, तह।

१० ८ पेट—गर्भ।

६८ १४ पेटारी—झाँपी, जो सींकी घास की बनाई जाती है। दे०-पउती।

१४० ३ पेहान—ढक्कन।

२३३ १६ ,, ,,

४२ १० पैरे ही पैरे—पाँव-पैदल।

१६३ ६ पैसारी—पंसारी; सिंदूर, नमक, हल्दी, विविध मसाले आदि बेचनेवाला बनिया।

२१५ १० पोथानी—पायताने, बिछावन का वह भाग, जिधर पैर रहता है।

३५ १० पोसाय—पालना, पोसना।

फ

२०८ १६ फंकवा—फाँकें।

२३ १५ फरलइ—फला।

७ १७ फरहर—चुस्त, तत्पर।

२२५ १६ ,, ,, ,,

१७७ १४ फरिछ—साफ, स्वच्छ।

२०४ १४ फरि फूरि—फल-फूलकर।

३ १३ फरियायल—मिचली आना।

५७ १६ ,, ,, ,,

२०४ २ फरे—फल से।

६६ १३ फलिया—सुजनी, साड़ी।

१६५ १८ फाँड़ा—धोती का वह हिस्सा, जो कमर में लपेटा जाता है।

५६ १७ फारल—फाड़ ली, संवार ली।

पृ० पं०

६७ १५ फुक्फा—बुआ का पति, पिता की बहन का पति।

२६ २० फुलुक—शिथिल, ढीला, मुलायम।

६७ १५ फूआ—पिता की बहन।

१६० १ फेड़—पेड़।

२२१ १२ फेदवा—ताड़ का फल।

२१३ २० फेदायल—थका हुआ।

५ ७ फेनु कै—फिर से।

१८४ ६ ,, ,,

१६६ ६ फेनो—फिर से।

५३ १२ फेर—फिर, पुनः।

११७ १६ फेरू—फेरो, हटाओ, लौटाओ।

ब

१८५ १५ बंउसल—मनाना।

१० ११ बंगला—दालान, बैठका।

२४५ १ बंदरा—दुलहा, बन्ना।

१० २० बंसराखन—वंशरक्षक।

२०६ २२ बंसहर—बाँस का घर, मंडप, कोहबर [वंशगृह]।

१३२ ५ बइठम—बैठूँगी।

३१ २४ बघिया—बाग।

२३६ १२ ,, ,,

२२५ १६ बचवा—झबिया या घुँघरूदार झालर।

१५८ ६ बछरवा—बछड़ा।

२७४ १ बजरे—बाजार में।

६४ ५ बजौलन—मारा।

६७ १४ बझयबइ—बझाऊंगी, फँसाऊंगी।

८ १८ बटियनि—रास्ते में।

२२६ ६ बड़ेड़ी—मकान के दोनों छाजन के बीच का ऊपरवाला भाग।

८६ १३ बड़ैतिन—श्रेष्ठा।

११२ १५ बढ़इता—श्रेष्ठ, बड़ा।

१६१ ११ बढ़नमा—बुहारन।

१६१ ६ बढ़निया—झाड़ू।

पृ० पं०

६७ १५ बढ़यतिन—श्रेष्ठा, पूज्या।

३६ १२ बधइया—खुशी में दिया जाने-वाला पुरस्कार।

२४३ ७ बने—दुलहा।

१४० २ बपहरा—पिता का घर।

१६७ १ बबुरी—बबूल की एक जाति।

१६ ५ बयसवा के भारी—गर्भवती।

२३१ ६ बरवा—बड़ा, दही-बाड़ा।

४६ २१ बरसथ—बरसते हैं।

१२ ४ बरसेला—बरसता है।

८० २२ बरहिया—बरही, पुत्र-जन्म के बाद बारहवें दिन होनेवाली एक विधि।

१७ १५ बरावल—जलवाया।

६५ ७ बरिजन—अड़ोस-पड़ोस के अन्य लोग; बड़िजनि यानी बड़ी ननद आदि अपने से बड़े सम्बन्धी।

१६३ १० बरिया—बारी, तमोली, पान का व्यापार करनेवाली एक जाति।

६६ ४ }
१०३ ५ } बरुआ—कुँवारा, उपनयन-योग्य बालक।

४७ ६ बलइए से—बला से।

३५ १० बलका—बालक।

२५६ १३ बलदी—बैल पर।

१५२ ४ बलवा—बाला, कलाई में पहना जानेवाला कड़ा।

२७ ७ बलु—बल्कि।

२५ २ }
३७ १७ } बसमतिया—बासमती चावल, जो महीन और सुगन्धित होता है।

१२७ ११ बसेर—वासस्थान।

१५ २१ बहर—बाहर।

१७६ १६ बहरी—बाहर।

१५ १ बहारइत—बुहारती हुई।

३२ ६ ,, ,,

५७ १२ बाघ—बाग।

१५६ ११ ,, ,,

१६६ १ ,, ,,

१६१ १० बाढ़ी—बुहारकर।

१२० १४ बात—बत्ती, वत्तिका।

१२६ ५ बारबइ—जलाऊँगी।

१२० ३ बारिय भोरे—कम उम्र की भोली-भाली।

२३० १४ बारी—एक जाति-विशेष।

८ २१ बारी—कम उम्र की।

२८ २२ ,, ,,

८ १६ बारी-भोरी—कमसिन और भोली-भाली।

२६ ४ बाला—बाजुक, छोटा।

२५१ ३ बाली—कान का एक गोलाकार आभूषण।

१४० ७ बावाँ—बायाँ।

४४ २७ बासन—वस्त्र, पहनावा।

१६५ ६ बिगबो—फेकूँगा।

१३ १६ बिछिया—पैर का एक आभूषण।

२१६ ७ बिजाइठ—बिजौठा, बाँह में पहनने का एक आभूषण।

१३२ १० बिजुबन—बीहड़ बन।

२३८ ३ बिनायम—बुनवाऊँगा।

३७ ४ बियतन—ब्यायेगी, जन्म देगी।

२७ १ बिरवा—पान का बीड़ा।

११८ १० ,, ,,

२७ २२ बिरही—वियोग पैदा करनेवाली।

२३२ १७ बिलमावथी—ठहराती है।

२५ १० }
२३१ २ } बिसमादल—विषाद से भरी, विस्मित, विषण्ण, उदास।

१२ १८ बिसमाधल—विषाद लेकर।

१८७ १६ बिहून—हीन।

६५ १३ बीरा—पान का बीड़ा, गिलौरी।

२१४ १५ बुंदली—बोया।

पृ० पं०

५१ १८ बुलइत—पैदल चलते हुए, घूमते हुए।

२१८ ८ बूक—अंजलि में भरकर।

६१ १३ बूझब—समझूँ-बूझूँगी, स्वागत-सत्कार करूँगी।

६० ७ बूबू—ननद के लिए प्यार का संबोधन।

१४५ ३ बेख—गाँव, घर या संपत्ति।

१५ १८ बेदनायली—वेदना से युक्त हुई।

१०७ ३ बेदियनि—वेदिका से।

१७ ५ बेनियाँ—छोटा पंखा।

१७५ ५ बेनुली—स्त्रियों के ललाट पर साटने के लिए काँच की बनी बिन्दी।

१६६ १० बेयागर—व्यग्र, बेचैन।

१२४ २१ बेरवा—कड़ा, बाला।

४३ १२ बेलपातर—बिल्वपत्र।

११ १ बेसरिया—नकबेसर, नाक का एक आभूषण।

१६६ १ बेसाहन—खरीदने के लिए।

१७५ १ बेसाहम—खरीदूँगा।

१२६ ६ }
१७४ १७ } बेसाहल—खरीदा, मोल लिया।

१७५ ६ बेसाहहु—खरीद लाओ।

१३५ १२ बोझियवा—बोझा ढोनेवाला सेवक।

२२१ ८ बोतू—बिना बधिया किया हुआ बकरा।

६ ८ बोदिल—नासमझ, बोदा।

४४ २५ बोरसी—आग जलाने की एक प्रकार की अँगीठी।

१३ २४ }
४१ १३ } बोलावथु—बुलाती हैं, बुला रही है।

१० १३ बोलाहट—बुलावा।

१०७ ५ बोली भितरायल—भरे गले से।

५४ १० बोलौलन—बुलाया।

१७६ ६ बौसावहु—मनाओ।

भ

२३१ १२ भँउरिया—भाँमर घूमते हुए।

१७ ६ भँउरे—भ्रमर।

२२८ ६ भतिया—बतिया, कुछ ही दिनों का लगा हुआ छोटा फल।

१० ७ भदोइया—भाद्र मास।

१५ ६ }
१३३ १६ }
१६५ १५ } भनसा—रसोईघर।

५७ १८ भरमइ—भ्रमण करता है।

१५५ ५ भरमल—भटक गया।

४४ २५ भरयतूँ—भरवाती।

१५ ११ भसम—धूल, राख।

१३८ ३ भाँड़हू—नष्ट-भ्रष्ट करो।

४२ १६ भाँड़े—हँसी के पात्र। एक प्रकार का बरतन, हाँड़ी।

११३ १८ भाँमर—भँवर, नदी का आवर्त्त।

६१ १७ भात-भतखाइया—भोज-भात।

२२३ ५ भावह—छोटे भाई की पत्नी।

२१५ २० भीरे—नजदीक, पास।

३५ १४ भुइयाँ—भूमि, जमीन।

४६ १२ ,, ,,

३ १८ भेवामन—भयावन, भयावनी।

२३४ ११ भोराय—भूलता।

म

१७० १ मँगन—उधार माँगकर लाया हुआ।

१८७ १५ मँगिया के जड़ल—सौभाग्यवती। माँग सुहाग अचल रहे।

१६१ ६ मउनी—बाँस की बनी छोटी डलिया।

१६४ ६ मएभा—सौतेली।

पृ० पं०

१६७ १२ मकुनी—विना दांतवाला छोटे कद का हाथी।

१५ १५ मगही ढोली—मगह में उत्पन्न प्रसिद्ध पान, जिसका एक परिमाण, जिसमें पान के दो सौ पत्ते होते हैं।

२०७ २३ मचकइह—मचकाना।

४ ३ मचोला—मचिया।

२०८ १७ मटकइह—मटकाना।

१२३ १४ मटिखनमा—मिट्टीवाली खान; वह गड्ढा, जिससे मिट्टी निकाली जाती है।

२४ १८ } मदागिन—महाभागिन, श्रेष्ठ,
१४१ १८ } आनन्दमग्न।

१६७ १८ मधुमछिया—मधुमक्खी।

११९ ५ मनाइन—गौरी की माँ मेनका, मैना। यहाँ सास के लिए प्रयुक्त।

७४ १८ मनौतन—मनौती करेंगी, पूजेंगी।

११७ २१ ममोरले—ममोड़ा, तहस-नहस कर दिया।

२३९ ८ मरजाद—कन्या के यहाँ बरात पहुँचने के दूसरे दिन। उस दिन बरात वहीं रुक जाती है और तीसरे दिन वहाँ से विदा होती है।

२६१ १ मरुआ—एक प्रकार का पौधा, जिसके पत्ते सुगन्धित होते हैं।

२२८ १ मलका—बिजली।

२२८ १ मलके—चमकती है।

९ ५ महाउत—महावत।

१८८ १ माँगि-चाँगि—भिक्षाटन करके।

१७५ १५ माथा बन्हावल—माथे का बाल बाँधना, जूड़ा बाँधना।

२३८ ७ मिलान—वर और कन्या-पक्ष के लोगों का आलिंगन-बद्ध होकर मिलना।

१०५ ४ मुँजिअ—मूँज की।

४५ ८ मुंदरिया—मुद्रिका, अँगूठी।

१९९ ७ मुरुक जइहें—मोच आ जायगी।

१०५ ९ मूँजवा—मूँज नामक घास, जिसके छिलके की रस्सी बाँटी जाती है और उपनयन के समय ब्रह्मचारी को जिसकी मेखला पहनाई जाती है।

१८ १ मूड़न—मुण्डन-संस्कार।

२७८ २ मोकाम—पड़ाव, ठहराव, विश्राम-स्थान।

२७६ १८ मोजरा—हिसाब में लिया या मिनहा किया हुआ।

२३६ २१ मोटरी—गठरी।

२६१ ८ मोढ़ा—कुरते का वह अंश, जो कंधे पर बाँही से जुड़ा रहता है।

१७५ १ मोरंग—नेपाल का पूर्वी जिला, जो बिहार के पूर्णियाँ जिले की सीमा से मिलता है।

य

११७ २१ येली—इलायची। बेली का अनुरणनात्मक प्रयोग।

र

२३१ ३ रँचिएक—रंचमात्र, क्षणभर। रचकर।

७५ १ रँधौतन—राँधेगी, सिद्ध करेगी।

३ १८ रइनी—रात।

१२६ ९ रइया—राय, एक उपाधि-विशेष।

११३ ४ रउद—धूप।

२११ १८ रउदा—धूप।

१५० १६ रउदाइल—धूप से आकुल।

४६ १४ रउरा—आप।

पृ० पं०

८ ३ रनबन—अरण्य, वन।

२१५ १७ रभसि-रभसि—विहँस-विहँसकर।

२०९ १२ रसलों—आनंद मनाया, रस लिया।

१७ ५ रसे-रसे—धीरे-धीरे।

२१६ १८ रइता—रायता।

२०८ ८ रहम—रहूँगी।

२५ ३ रहरी—अरहर।

२१३ २० रहिये—रास्ते का।

१३२ १९ राज गाजल—राजसी शोभा।

१८५ ६ रातुल—लाल।

१४५ १ रिखइया—ऋषि, यहाँ ऋद्धिमान् से तात्पर्य।

९९ २२ रिसिआय—रोष-युक्त होकर, क्रुद्ध होकर।

४६ २४ रूपवा—चाँदी।

६६ १६ रूसिनिया—रूठनेवाली।

१९७ १७ रोउ—रोओ।

१८१ २४ रोदना पसारे—रोने लगा।

५२ २० रोहन—रोहिणी, बलदेव की माँ।

ल

१६९ १७ लँवलक—लाँघ गया।

१४२ १५ लड़का—नादान या अबोध लड़का।

२८ २२ लउरी—लबरी, लहुरी, छोटी।

३७ १ ,, ,, ,, ,,

२१५ १६ लगवार—यार।

११६ ४ लछ—लाख।

७४ २ लट्ठुरिया—बालों के लटदार गुच्छे।

२२५ ७ लरछा—एक प्रकार का आभूषण।

४ ६ } लहँगा-पटोर—गोटा-पाटा से जड़ा हुआ रेशमी लहँगा
६१ १५ } और लहरानेवाली चादर।

७९ १० लहबर—लहलहाता हुआ, हरा-भरा।

९८ १७ लहरा पटोर—गोटा-पाटा चढ़ाई हुई लहराती हुई साड़ी और चादर।

१५८ ८ लहालही—हरी-भरी, लहलहाती हुई।

४५ ४ } लहुरा—प्यारा, लाड़ला, लघु,
२०० २२ } छोटा।

६३ १८ लहुरी—लाड़ली।

२३६ २३ लाइ—धान के चावल को भूनकर गुड़ के पाक में बनाया जाने-वाला एक प्रसिद्ध पकवान।

१७८ ११ लाड़ो—लाड़ली दुलहन।

२४४ २० ,, ,, ,,

१४५ १५ लाढ़ी—लाड़ला।

९६ ६ लाबर—माथे का केश।

२७५ १५ लियामन—लेने के लिए, विदा कराने के लिए।

६४ ८ लुतरी—चुगली, चिनगारी।

९८ १५ लुलुहा—कलाई के आगेवाला भाग।

१२६ १८ ,, ,, ,,

१५२ ४ ,, ,, ,,

५७ २४ लुहवा—लू, तप्त हवा का झोंका।

५३ २६ लेतन—लेंगे।

८५ १२ लेमू—नींबू।

१०८ १४ लेमुआ—नींबू।

६९ १० लेमो—लूँगा।

१९४ १३ लेसरि—लसारकर, सानकर।

२१० १५ } लोकदिन—कन्या की विदाई के अवसर पर उसके साथ राह-टहल के लिए भेजी जानेवाली दाई। कहीं-कहीं वर के साथ भी लोकदिन भेजने का रिवाज है।
२२७ १० }



पृ० पं०

१५८ १६ लोकूँ—जमीन पर गिरने से पहले ही थाम लूँ।

२२ १३ }
४५ २ } लोचन—संतान के जन्म के बाद नापित या कोई अन्य संदेशवाहक को फूल या काँसे के कटोरे में हल्दी, दूब, गुड़, अदरख और आम के पल्लव, इन मांगलिक द्रव्यों के साथ जन्म का शुभ-संवाद देने के लिए संबंधियों के यहाँ भेजना।

२५८ १८ लोना—सुन्दर।

४७ २२ लोर—आँसू।

१४६ २ ,, ,,

१६६ ४ ,, ,,

२३३ ९ ,, ,,

१७६ १८ लोर्हब—लोढ़ूँगी।

७६ १२ लौलक—लाया।

१३२ १७ लौलन—ले आये।

स

४६ २५ सँउसे—संपूर्ण, समग्र।

४७ १९ सँघतिया—संगी साथी।

४२ १५ संझा—पालकी का रंगीन और काम किया हुआ परदा। [संझा < संजफ, संजाफ (फा०) = गोटा, किनारी]

१२० ११ संझा—संध्या।

६८ १६ सइतल—सँजोकर रखा हुआ।

३५ २२ सउर—सौरगृह, सौरीघर।

६५ ४ ,, ,,

१० २२ सउरिया—प्रसूति-गृह, सौरीघर।

४९ १७ ,, ,,

१४ ७ सगर—सगा, साथ ही, सभी।

४२ ६ ,, ,,

१०८ १७ सगरो—सर्वत्र, सब जगह।

१९५ ९ ,, ,,

१११ १३ सगुन—विवाह का शकुन। यह विवाह का प्रारंभिक कृत्य है। इसमें कन्या-पक्षवाले वर को वस्त्राभूषण और द्रव्यादि देकर विवाह-सम्बन्ध को और भी दृढ बनाते हैं।

१११ १३ सगुन—शुभ मुहूर्त्त।

१२९ १६ सतरंजी—सात रंगवाली दरी।

६८ १७ सनुक—संदूक।

१४० ६ सबुजी—सब्ज रंग की, साँवले रंग की।

२७६ १२ सम—अंतःकरण और मन का संयम (शम)।

११ १ समद—समदना, मनाना।

११ १ समनइया—सावनी समाँ।

१२ ३ समना—श्रावण मास।

१९ ११ ,, ,,

१८६ १३ समयतीं—प्रवेश कर जाती।

२५३ २३ समला—पगड़ी।

१३५ १४ समाघबइ—मनाऊँगी।

४५ १० समायब—समा जाऊँगी, प्रवेश कर जाऊँगी।

१४४ २१ सरवा—साला, पत्नी का भाई।

१८५ १४ ,, ,,

२०१ १७ ,, ,,

१४२ १ सरहज—सलहज, साले की पत्नी।

१८५ १४ सरिया—जूआ, द्यूत।

७६ २२ सले-सले—धीरे-धीरे।

१३६ ५ सलेहर—सहेली।

१६५ १८ ,, ,,

९८ २ }
१३३ ८ } सवासिन—परिवार की लड़कियाँ, बहन, बेटी आदि।

१०४ १७ ससरि गेल—सरक गया, रेंग गया।

१७५ ४ सहत—सस्ता।

५१ २४ सहन—संपूर्ण, भरा-पूरा।

पृ० पं०

१० ७ सहनइया—शहनाई। सावन की रिमझिम, दादुर, मोर, पपीहा, झींगुर आदि की सम्मिलित ध्वनि के लिए शहनाई शब्द का प्रयोग किया गया है। सावनी समाँ।

२४५ ९ }
२५५ २४ } सहानी—शाहजादी, लाल रंग की, राजसी।

२४३ ८ सहूरे—ससुराल।

२९ १६ साँटी—छड़ी।

२३७ १ साँधे—कंधे पर।

४३ ७ साध—इच्छा।

११ ५ सामन—श्रावण मास।

४७ १७ ,, ,,

१९७ १८ साम बरन—श्याम वर्ण की, साँवले रंग की।

५३ २४ सामर—साँवला, श्यामल।

१८७ १७ सार—गोशाला।

१६ १७ सारी—जूआ-सार, जूआ, द्यूत।

१०५ १ साहिल—साही, एक जन्तु-विशेष, जिसका सारा शरीर तेज लंबे काँटों से ढका रहता है और जो जमीन में माँद बनाकर रहता है।

१४ ४ साही—शाही, उपाधि-विशेष।

१०४ १७ सिकियो—सींक भी।

४४ १८ सिखावत—शिक्षा देगी अथवा ढाढ़स बँधायेगी।

१६० १ सिन्होरबा—सिंघोरा, सिंदूरदान।

२३१ १९ सिमरो—सेमल, यहाँ सेमल की रूई की बत्ती से तात्पर्य है।

१८ १८ सिर साहेब—श्रेष्ठ, बड़ा साहब।

१६१ ९ }
१५ २१ } सिरहनमा—सिरहाना सिरहाने, खाट का वह भाग, जिधर सिर रहता है।

४६ ७ सिलि—सिल, सिलौट।

४४ १५ सीकियो—सींक भी।

४२ ११ सुखपाल—सुखपालिका, चंडोल, पालकी।

१४ १२ सुखपालक—सुखपालिका, चंडोल, पालकी।

८ १६ }
१९ १६ }
१९३ २ } सुगही—सुभगा, सुगृहिणी, सुहागिनी।

१० ८ सुगा-सुगइया—शुक-शुकी।

१३७ ५ सुघड़—सुन्दरी, सुगृहिणी;

१७७ ११ ,, ,,

१८२ १७ सुघवे—प्यार-भरा सम्बोधन, सुभगा।

४९ ८ सुजान—सुज्ञान।

२४८ ६ सुरखी—लाली।

१०८ १६ सुहवे—सुहागिन।

२४९ ८ सूहा—विशेष प्रकार की छापेवाली साड़ी।

१४२ १४ सेंतिए—मुफ्त में ही।

१५९ ८ सेकर—उसके।

४८ ६ सेकरो—उसको भी।

१७४ १६ सेनुरिया—सिंदूर बेचनेवाला।

२४३ ८ सेहरा—फूलों या गोटा आदि की लड़ियाँ, जो दुलहन के सिर पर बाँधी जाती है और जो मुँह पर लटकती रहती है।

१५९ १ सेहला—सेहरा, दुलहे के सिर पर पहनाये जानेवाला मौर, जो फूलों या गोटे की लड़ियों को गूँथकर बनाया जाता है और जिसकी लड़ियाँ मुँह पर झूलती रहती हैं।

६४ ५ सोंटा—डंडा।

२२ २७ सोंठउरवा—एक प्रकार का लड्डू।

११ १० सोंठउरा—जो सोंठ, चावल के आटे आदि से बनता है और



पृ० पं०

जो प्रसूति के खाने के लिए दिया जाता है। यह पड़ोसियों में भी बाँटा जाता है।
८१ ३ सोठाउर—दे० सोंठउरा।
२३ २१ सोनन—स्वर्ण के, सोने के।
२०७ १० सोनहर—स्वर्ण-खचित।
२२० ४ सोपाड़ी—सुपारी, कसैली।
२९ १६ सोबरन—स्वर्ण, सोना।
२७५ ७ सोवहइ—सोता है।
१७५ ९ सोहगइला—लकड़ी की कँगूरेदार छोटी डिबिया, जिसमें विवाह के समय सिंदूर भरकर दिया जाता है।
१२ ४ सोहामन—सुहावना।
१५२ १२ सोहार—शोभायमान, सुन्दर।

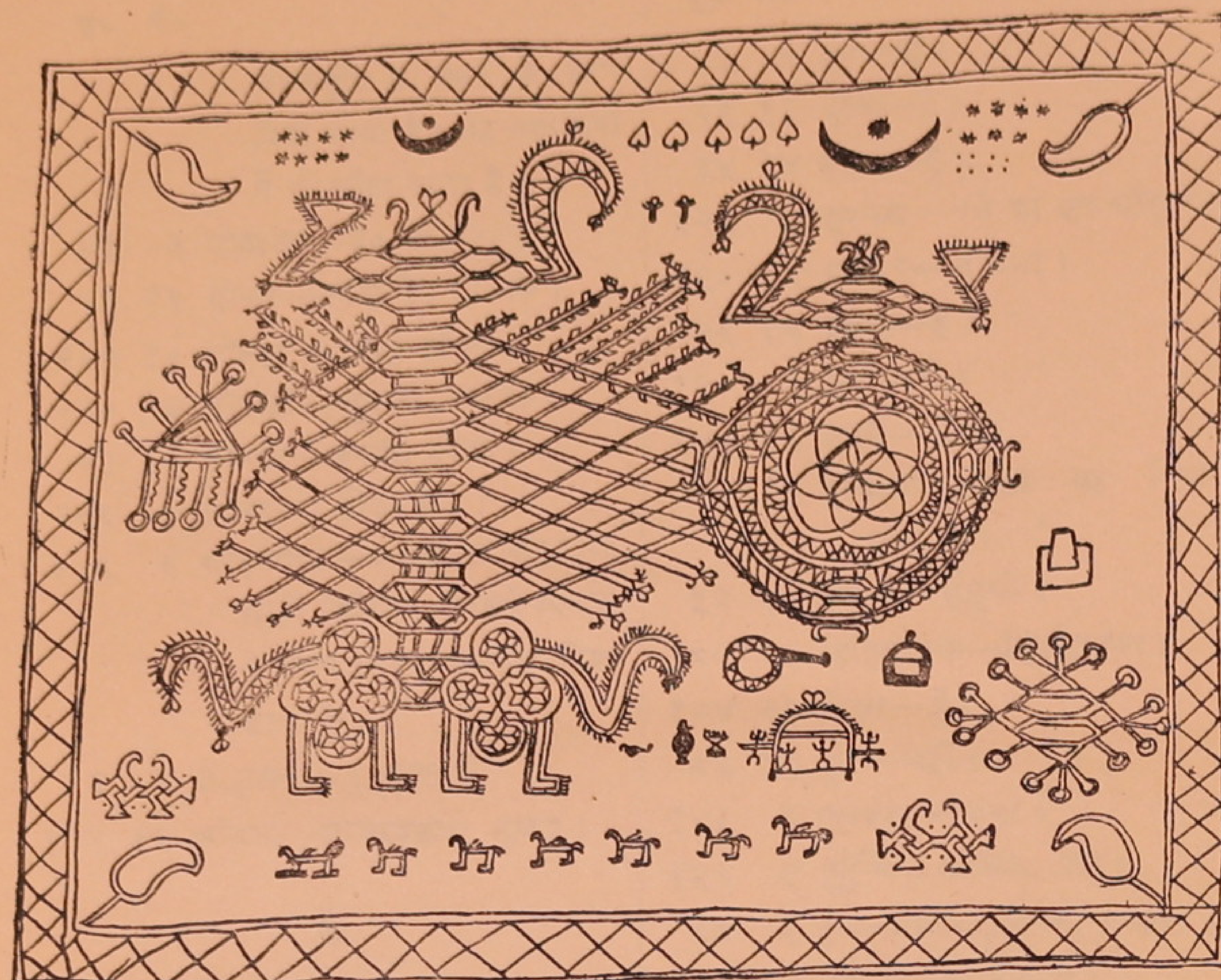
ह

९९ ४ हँकार—बुलावा, निमंत्रण।
४७ २३ हकइ—है।
१९२ १ ,, ,,
१९६ १३ हकइन—है।
१८४ २२ हका—हो।
१७३ २६ हको—हो।
२७८ १० हजूर—सम्मुख।

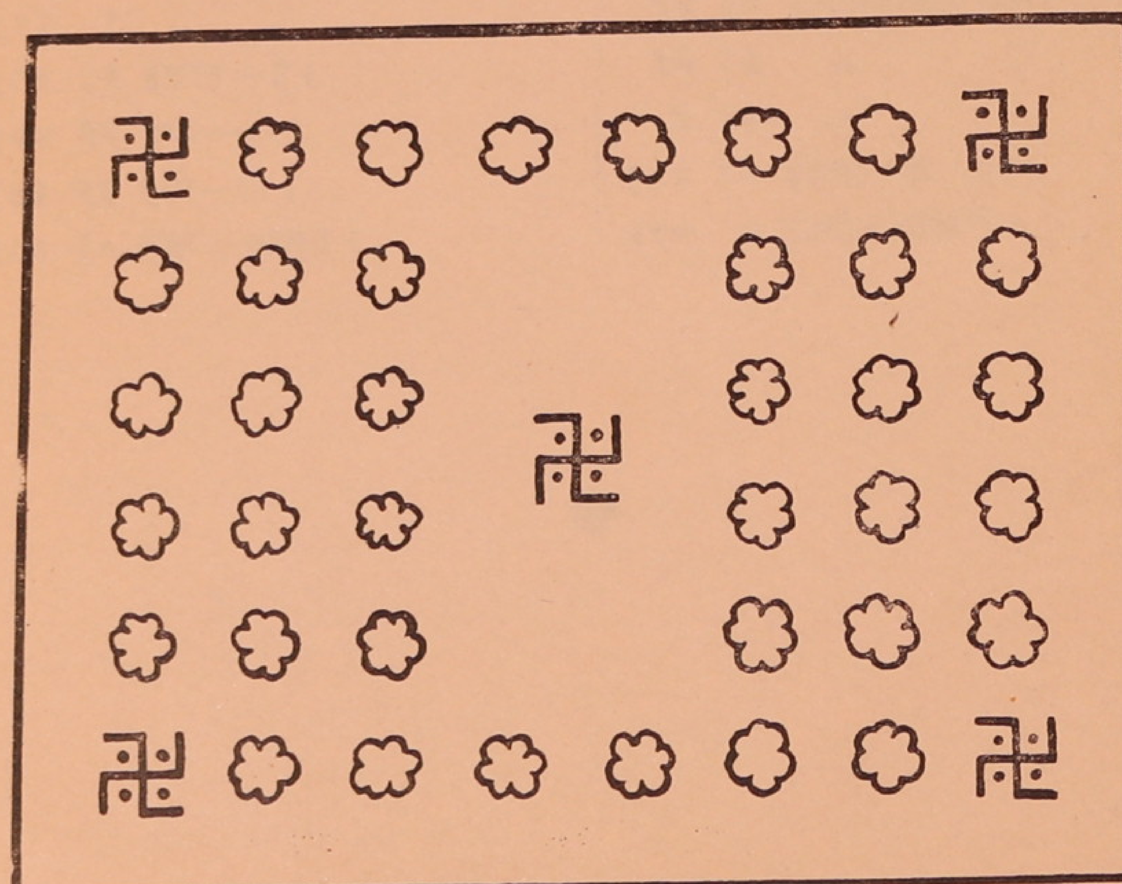
पृ० पं०

४३ ६ हथ—हैं।
२९ ११ हथि—है।
५४ १४ हथुन—हैं।
२२५ ९ हयकल—गले का एक आभूषण।
१९० १५ हरहोर—हंगामा।
२२९ १६ हलइ—है।
१६० ३ हला—थे।
२४४ १५ हवले—धीरे।
६६ १४ हाँसीबरे—हँसी या ठिठोली आती है।
५२ २० हाँसुल—हँसुली।
८० २५ हिंहिआयल—हिनहिनाया।
१८४ २१ हिओ—हूँ।
८५ १९ हुँएँ—वहीं।
१४९ ३ हुनकर—उनका।
१९६ ९ हुनुके—उनको, उन्हें।
५७ १ हूल—उलटी, वमन, मिचली।
११७ १७ हेंठे-हेंठे—नीचे-नीचे।
१९२ १० हेरवलें—भुलाया।
२४ १७ होरिलवा, होरिला—लड़का, पुत्र।
३३ १९ ,, ,,
३ १७ ,, ,,
१८६ १० होलइ—हो गई।
२३८ ७ होवहे—होता है।

कोहबर के चित्र



[श्रीमती शारदा देवी द्वारा अंकित]



[मगही क्षेत्र में कहीं-कहीं प्रचलित]

परिशिष्ट—१

कोहबर और छठी

कोहबर घर के उस कमरे के लिए व्यवहृत होता है, जिसमें विवाह के समय कुल-देवता का पूजन अथवा अन्य मंगल-कृत्य किये जाते हैं। विवाह के बाद वर-कन्या का प्रथम मिलन भी यहीं सम्पन्न होता है। यहीं उनका गठ-बन्धन भी खोला जाता है तथा दही-चीनी खिलाने का शकुन भी किया जाता है। वर और कन्या दोनों के ही घर पर कोहबर की व्यवस्था रहती है। कोहबर की प्रथा मगही, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, वज्जिका, कन्नौजी, अवधी तथा व्रज—इन सभी भाषा-क्षेत्रों में प्रचलित है। इस शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में बड़ी मजेदार अटकलें लगाई गई हैं। अवधी-कोश (रामाज्ञा द्विवेदी) में 'कोह (क्रोध)+बर', इस प्रकार इसकी व्युत्पत्ति की गई है और इसी के अनुसार अर्थ लगाया गया है, 'जहाँ वर कभी-कभी क्रोध करे और रूठे; विवाह में कई बार दूल्हा रूठता और मनाया जाता है।' हिन्दी-शब्दसागर में इसकी व्युत्पत्ति का निर्देश 'कोष्ठवर' से किया गया है, परन्तु संक्षिप्त हिन्दी-शब्दसागर के नये संस्करण में 'कोष्ठवर' को सन्दिग्ध माना गया है। कोष्ठ से कोठ हो सकता है, कोह नहीं। क्रोध से कोह तो व्युत्पन्न होता है, परन्तु अर्थ की दृष्टि से यह संगत नहीं प्रतीत होता। सम्भवतः, इस शब्द की व्युत्पत्ति 'कोशवाट' शब्द से है। कोश उस स्थान को कहते हैं, जहाँ रुपये-पैसे आदि कीमती चीजें रखी जाती हैं और वाट का अर्थ घर है। इसी वाट या वाटी शब्द से बँगला का बाड़ी और हिन्दी का फुलवाड़ी या फुलवारी शब्द बना है। बँगला में प्रायः कोहबर के ही अर्थ में 'वसुधरा' शब्द का व्यवहार होता है, जो कोशवाट के अर्थ से मेल खाता है। कोहबर के घर की अच्छी-से-अच्छी सजावट की जाती है। उसके बाहर के द्वार पर भी चित्रकारी की जाती है और अन्दर पूरब की दीवार पर एक विशेष प्रकार का भित्ति-चित्र तैयार किया जाता है। उस चित्र को भी लक्षणा द्वारा कोहबर ही कहते हैं। कोहबर के चित्र की रचना में कुल की प्रथा के अनुसार थोड़ा-बहुत अन्तर पाया जाता है, पर चाहे जिस रूप में हो, यह इन क्षेत्रों में सर्वत्र बनाया जाता है और प्रयत्न किया जाता है कि वह अधिक-से-अधिक सुन्दर बनाया जाय, जिससे घर की शोभा बढ़े। इस सम्बन्ध में मगही का यह गीत यहाँ उद्धृत किया जा सकता है—

केकर कोहबर लहालही, केकर कोहबर लाल हे।
केकर कोहबर कइसे उरेहल, एक चिरइयाँ दुइ मोर हे॥

इस आशय का गीत भोजपुरी-क्षेत्र में प्रचलित है—

कहँवा के कोहबर लाल गुलाल कहँवा के कोहबर रतन जड़ाई।
बाहर के कोहबर लाल गुलाल भीतर के कोहबर रतन जड़ाई॥

कोहबर का चित्र कुछ क्षेत्रों में गेरू से बनाया जाता है और कहीं-कहीं चावल और हल्दी से बने हुए एक प्रकार के अनुलेपन से, जिसे चौरेठा कहते हैं। मगही क्षेत्र में कोहबर का चित्र केकैया के फल से छाप देकर बनाते हैं। चारों कोनों और केन्द्र में स्वस्तिका अंकित की जाती है। नमूने के लिए कोहबर के चित्र देखें। यह चित्र एक आवश्यक मांगलिक 'यन्त्र' समझा जाता है, जो वर-कन्या की दाम्पत्य-प्रीति के स्थायित्व तथा सन्तानोत्पत्ति का साधन माना जाता है और इसी उद्देश्य से बनाया जाता है। प्राचीन प्रथाओं के उठते जाने के कारण आजकल परिवार में ऐसी महिलाएँ कम मिल पाती हैं, जो कोहबर के चित्र बना सकें। इसीलिए, प्रायः बड़ी-बूढ़ी स्त्रियों का ही आश्रय लेना पड़ता है।[1] परम्परा के अनुसार फूफी (पिता की बहन) या अपनी बहनें मिल-जुलकर इसे लिखती हैं और नहीं तो माता। यह आवश्यक है कि कोहबर के चित्र को वही स्त्रियाँ बनायें जो साधवा हों और वही कोहबर के गीत भी गा सकती हैं। क्वारी लड़कियाँ केवल अलंकरणवाली चीजें बना सकती हैं, जैसे डाल, पात आदि, पर कमल-पत्र, सिंधोरे, शिवा माई आदि के चित्र नहीं। यहाँ मैं कोहबर का एक चित्र दे रहा हूँ, जो मेरी पूजनीया माता श्रीमती शारदादेवी (अवस्था ८१ वर्ष) का बनाया हुआ है। उनकी कोहबर की चित्रकारी हमलोगों के कुटुम्ब में बहुत अच्छी समझी जाती है।

पाश्चात्य समीक्षकों ने कला को दो भागों में विभक्त किया है, ललित-कला तथा उपयोगी कला। परन्तु, भारतीय दृष्टि में कला की उपयोगिता और लालित्य में कोई विषमता नहीं है। कला जीवन का आवश्यक अंग मानी गई है और इसी आधार पर चौंसठ कलाओं की कल्पना की गई है। इसके अनुसार पान का बोड़ा लगाना और सेज सवाँरना भी एक कला है। विवाह के अवसर पर चौक पूरना अथवा कोहबर के चित्र बनाना भी हमारी एक कलात्मक चेतना का ही प्रदर्शन है, जिसके अन्तर्गत सामाजिक दृष्टि से कई भावनाएँ समाविष्ट हैं।

इस चित्र में बाईं ओर बाँस का पेड़ बना हुआ है, जो वंश-वृद्धि का द्योतक है। संस्कृत-काव्यों में भी वंश शब्द को लेकर कवियों ने प्रायः श्लेष के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। दाहिनी ओर कमल-पत्र (पुरइन) है, जो कभी जल में डूबता नहीं, बराबर लहलहाता रहता है। वह अखण्ड सौभाग्य तथा आनन्द का सूचक है। उसका अर्थ यह है कि वंश कभी डूबे नहीं, बराबर लहलहाता रहे और कमल के समान खिला रहे। बाँस की डालियों में फूल लगे हुए हैं और उनपर पक्षी बैठे हुए हैं। सबसे ऊपर मोर का चित्र है। दाईं ओर कमल-पत्र के ऊपर भी एक मोर का ही चित्र है। मोर के इन दोनों चित्रों को

१. अभी मैंने हाल में एक जगह देखा था कि इस रस्म की खानापुरी करने के लिए भित्ति-चित्र के बदले कागज पर ही कोहबर का चित्र बनाकर दीवार में चिपका दिया गया था। —सं०

'मोर-मयूर' कहते हैं। सम्भवतः, यह मिथुन-चित्र है। बाँस के पेड़ के नीचे हाथी का चित्र है, जिसका मुँह दाईं ओर है और पूँछ बाँईं ओर। बाँस के दाईं ओर सिरमौर या अलिमौर का चित्र है, जिसे विवाह के समय वर अपने सिर पर धारण करता है। इसी प्रकार कमल के पत्ते के दाईं ओर नीचे कोने में पटमौरी है, जिसे विवाह के समय कन्या अपने सिर पर धारण करती है। चित्र के नीचे दोनों ओर दो-दो पक्षियों के चित्र हैं, जिन्हें सलेहर कहते हैं। यह सलेहर शब्द सहेली शब्द का रूपान्तर जैसा मालूम होता है, परन्तु यह वस्तुतः एक विशेष प्रकार के पक्षी के लिए प्रयुक्त है, जिसे सगुनी [< शकुनी (सं०) = श्यामा पक्षी] भी कहते हैं। पश्चिमी अवधी में इसके लिए सुहेलिका शब्द प्रचलित है। इसे विवाह के अवसर पर कन्या को दिखाया जाता है। सलेहर शब्द सुहेलिया का रूपान्तर हो सकता है। शकुनी स्कन्द की एक मातृका का भी द्योतक है। ये पक्षिमिथुन वर-कन्या के संगी-साथियों के और साथ-ही-साथ उनके मंगलमय सम्बन्ध के संकेतक हैं। कमल-पत्र के नीचे पंखा, बड़ा सिंधोरा और उसकी बगल में थोड़ा ऊपर सिंगारदान है। हाथी की सूँड़ के नीचे की जगह में कजरौटा, लम्बी सिंधोरी और कंघी है। ये सारी चीजें कन्या के शृंगार के उपकरण हैं। चित्र के ऊपर दोनों ओर कुछ सितारे बने हुए हैं। दाईं ओर कुछ छोटे-छोटे सितारे भी दिखाये गये हैं। बाईं ओर चन्द्रमा का चित्र है, दाईं ओर सूर्य का। बीच में पाँच पान चित्रित हैं। उनके नीचे दो लौंग हैं। सूर्य, चन्द्र और तारे आकाश के द्योतक हैं, बाँस, कमल-पत्र तथा पक्षी मृत्युलोक के और हाथी पाताल-लोक का। इस प्रकार इसमें तीनों लोक अंकित हैं। चित्र के चारों ओर हाशिया बना हुआ है, जिसके चारों कोनों पर मंगलसूचक आम्र-पल्लव अंकित है।

इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण अंश है पालकी और उसके नीचे बनी हुई सात मूर्त्तियों के चित्र। पालकी के दोनों ओर दो कहार हैं और पालकी के भीतर राजा-रानी बैठे हुए हैं। इसकी कथा यों है—ये राजा-रानी किसी दूर यात्रा में निकले थे। रास्ते में इनका पुत्र मर गया, जिससे दुःखी होकर दोनों आर्त्तनाद कर रहे थे। बहुत समय के बाद आकाश-मार्ग में विमान पर जाती हुई शिवा माई आदि सात देवियों ने इनका रुदन सुना और द्रवीभूत होकर नीचे उतरीं तथा इनके दुःख का कारण पूछा। उन्होंने इनकी यह विह्वल दशा देखकर करुणा से निर्देश किया कि वे शिवा माई तथा उनकी छह सखियों की पूजा करें, तो उनकी सन्तान फिर लौट आ सकेगी। तदनुसार, राजा-रानी ने शिवा माई तथा इनकी सखियों की पूजा की और अपनी खोई हुई सन्तान पुनः प्राप्त की। देवियों ने पुत्र का वरदान देते समय यह शर्त्त लगा दी कि उन्हें अपने पुत्र के जन्म के छठे दिन या बारहवें दिन और ब्याह के अवसर पर भी छठी की पूजा करनी होगी।

इन सात मूर्त्तियों में जो बाँईं ओर की पहली मूर्त्ति है, वह शिवा माई की जान पड़ती है और जो अन्य छह मूर्त्तियाँ हैं, वे स्कंद की छह माताओं के चित्र हैं। इस प्रकार, यह सप्त मातृकाओं का चित्र सिद्ध होता है, जिनके नाम हैं—ब्राह्मी या ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐंद्री या इन्द्राणी और चामुण्डा या चंडिका। ये नाम वाराह तथा मार्कण्डेयपुराण में आये हैं। इन सात मातृकाओं की पूजा विवाह आदि शुभ अवसरों पर सबसे पहले होती है। सप्त मातृकाओं के नामों के क्रम में दूसरा नाम

माहेश्वरी का है, जब कि इस चित्र में माहेश्वरी की पर्यायवाचिनी (शिवा) को प्रधान स्थान दिया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि इस कथा का मूल स्रोत शाक्त अथवा शैव होगा।

इस सम्बन्ध में यहाँ इस बात का भी उल्लेख कर देना आवश्यक है कि इन सप्त मातृकाओं का चित्र नवजात शिशुओं को छठी के अवसर पर भी बनाया जाता है। छठी का चित्र कोहबर के चित्र से बिलकुल भिन्न होता है। उसमें मण्डप यानी घेरे का चित्र बना लेने के बाद सबसे पहले शिवा माई के प्रसंगवाला चित्र बीच में बनाया जाता है, जब कि कोहबर में सबसे पहले कलश के कुछ बिन्दु देकर फिर उन्हीं के अन्दाज से मण्डप (घेरा), फिर बाँस, कमल-पत्र आदि बनाये जाते हैं, उसके बाद और कुछ। सप्त मातृकाओं का चित्र सबके अन्त में बरात की द्वार-पूजा के समय और वर के यहाँ वधू-प्रवेश के समय नीचे के स्थान में बनाया जाता है। विवाह के बाद वर-कन्या सिर से चित्र को छूकर प्रणाम करते हैं, वर गाय का घी उँगली में लेकर इन सातों मूर्त्तियों को लगाता है और इन मूर्त्तियों का पूजन करता है और कन्या, जिस सिंदूर के सिंधोरे से उसका ब्याह होता है, उसी सिंधोरे के सिन्दूर को लेकर सातों मूर्त्तियों को टीका लगाती है। छठी में केवल बच्चे की माँ सिंदूर से टीका कर देती है, घी नहीं लगाया जाता। कोहबर और छठी के चित्र प्राय: शुभ मुहूर्त्त में हो प्रारम्भ किये जाते हैं।

मगही क्षेत्र में केकैया के फल की छाप से जो कोहबर का चित्र बनाया जाता है, उसकी कोई व्याख्या नहीं प्राप्त हो सकी है।

छठी का चित्र कहीं-कहीं गोबर से बनाया जाता है और कहीं-कहीं चौरेठे से। उसमें सप्त मातृकाओं के चित्र बीच में बनाये जाते हैं। उनके नीचे राजा-रानी की पालकी बनाई जाती है। उसमें भी चन्द्रमा, सूर्य, सिंधोरा, कजरौटा आदि बनाये जाते हैं; पर बाँस, कमल-पत्र, सखी-सलेहर, पटमौरी और सिरमौर नहीं अंकित किये जाते। छठी की पूजा बच्चों के जन्म के छठे या बारहवें या बीसवें दिन की जाती है। यदि किसी कारणवश यह पूजा तबतक न हो सके, तो फिर विवाह के समय करनी पड़ती है। सम्भवत:, इसी कारण विवाह के अवसर पर कोहबर में छठी का भी चित्र बनाना आवश्यक है। देवी-भागवत में निर्देश है कि बच्चों के जन्म के छठे या इक्कीसवें दिन पूजा की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्न-प्राशन तथा बच्चों के अन्य शुभ कार्यों में भी इस पूजा का करना विहित है।[१] कहीं-कहीं छठी के दिन दावात-कलम भी रखे जाते हैं और बच्चे को उसी दिन काजल लगाया जाता है। उस अवसर पर सोहर तथा देवी के गीत गाये जाते हैं, पर बिहार में देवी के गीत नहीं गाये जाते।

देवीभागवत के छियालीसवें अध्याय में षष्ठी देवी का उपाख्यान आया है। वह कथा यों है—स्वायंभुव मनु का पुत्र प्रियव्रत राजा हुआ। उसने विवाह नहीं किया और बराबर

१. (क) देवीभागवत, अ० ४६, श्लोक ४६-४७।
(ख) षष्ठी देवी के इस प्रकार के चित्रालेखन के उल्लेख अश्वघोष की प्रसिद्ध कृति सौन्दरनन्द (१-१५) और बाणभट्ट की कादम्बरी (पृ० २१६-१७, चौखंबा-संस्करण, १९५३ ई०) में भी मिलते हैं।

तपस्या में लीन रहा। पीछे ब्रह्मा की आज्ञा से उसने विवाह किया। फिर भी, उसे पुत्र नहीं हुआ, अत: कश्यप ने उसे पुत्रेष्टि-यज्ञ कराया। उसकी पत्नी मालिनी को मुनि ने यज्ञ-चरु दिया, जिसे खाकर उसने तुरन्त गर्भ धारण किया। वह देव-गर्भ बारह वर्षों तक उसके उदर में रहा। फिर उसने स्वर्ण-वर्ण का पुत्र प्रसव किया, जो मरा हुआ था। उसे देखकर सभी रोने लगे। रानी स्वयं मूर्च्छित हो गई। राजा अपने मृत पुत्र को लेकर श्मशान गये और उसे कलेजे से लगाकर रोने लगे। वे उसे किसी प्रकार छोड़ने को तैयार नहीं थे। दारुण शोक से उनका ज्ञान-योग खो गया। उसी अवसर पर उन्होंने मणि-रत्नादिकों से विभूषित शुद्ध स्फटिक के समान एक विमान देखा, जिसमें एक सुन्दर चंपकवर्ण, कृपामयी, योगसिद्ध, प्रखर सूर्य के समान तेजस्विनी देवी विराजमान थीं। बालक को भूमि में रखकर राजा ने उनकी पूजा की। परिचय पूछने पर देवी ने बताया कि दैत्य-ग्रस्त देवताओं के लिए वह प्राचीन काल में स्वयं सेना बन गई थी और उन्हें विजय प्रदान की थी। इसलिए, उनका नाम देवसेना पड़ा है। उन्होंने यह भी बताया कि मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूँ और स्कन्द से मेरा विवाह हुआ है। राजा को कर्म का महत्त्व बतलाकर और कर्त्तव्यपरायण होने का निर्देश करके उन्होंने बालक को ले लिया और उसे जिलाकर अपने साथ ले चलीं। राजा ने आर्त्त होकर पुन: स्तोत्र आदि से देवी को सन्तुष्ट किया। देवी ने कहा कि सब जगह मेरी पूजा कराकर स्वयं भी करना। इसे स्वीकार करो, तभी मैं तुम्हारे पुत्र को दूँगी। इसका नाम सुव्रत होगा और यह यशस्वी तथा प्रतापी होगा। राजा ने इसे स्वीकार किया। तब उसके पुत्र को उसे देकर देवी स्वर्ग चली गई। राजा अपने मन्त्री-सहित घर आया और सभी वृत्तान्त बताया, जिसे सुनकर पुरुष और स्त्रियाँ सभी प्रसन्न हुए। राजा प्रतिमास शुक्ल पक्ष की षष्ठी को देवी का पूजन, ब्राह्मण को दान तथा यत्नपूर्वक महोत्सव करने लगा।

षष्ठी की व्याख्या में बताया गया है कि वह प्रकृति का छठा अंश है और बालकों की अधिष्ठात्री देवी है, जो बालक और धात्री दोनों की रक्षा करनेवाली है। इस कथा के श्रवण के फल के विषय में[१] बताया गया है कि जो एक वर्ष इस कथा को सुने, उसे, यदि वह अपुत्र हो, तो चिरंजीवी पुत्र होगा। काकवन्ध्या या मृतवत्सा को भी इससे पुत्र की प्राप्ति होगी। जिनका पुत्र रोगयुक्त हो, ऐसे माता-पिता यदि इस कथा को सुनें, तो उनका बच्चा एक मास में रोग-मुक्त हो जायगा।

इस प्रकार, इस चित्र में शिवा माई की जो मूर्त्तियाँ अंकित हैं, उनका असाधारण महत्त्व सिद्ध होता है। कथा के रूपों में जो अन्तर है, उसकी ओर ध्यान देने पर यह उलझन

१. षष्ठ्यंशा प्रकृतेर्या च सा च षष्ठी प्रकीर्त्तिता।
बालकानामधिष्ठात्री विष्णुमाया च बालदा॥
मातृकासु च विख्याता देवसेनाभिधा च या।
प्राणाधिकप्रिया साध्वी स्कन्दभार्या च सुव्रता॥
आयु:प्रदा च बालानां धात्रीरक्षणकारिणी।
सततं शिशुपार्श्वस्था योगेन सिद्धयोगिनी॥
—देवीभागवत, अ० ४६, श्लो० ४-६।

पैदा हो जाती है कि ये जो स्कन्द की छह माताएँ हैं, उनमें स्कन्द-भार्या कहाँ से आ गई; क्योंकि इसे भी तो मातृकाओं के अन्तर्गत ही गिना गया है—पुराणों की कथाओं में ऐसी उलझनें एक नहीं, अनेक हैं, जिनकी व्याख्या के लिए उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है। इन प्रथाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि हमारे सांस्कृतिक जीवन में अबतक इन पौराणिक कथाओं का कितना अधिक प्रभाव है। हमारी अनेक लौकिक कथाएँ और सांस्कृतिक विधि-विधान पौराणिक कथाओं पर आश्रित हैं। पुराण अब भी हमारी लोक-संस्कृति के जागरूक प्रहरी हैं।

परिशिष्ट—२

दो विवाह-गीतों की स्वर-लिपि

साते हो घोड़वा गोसाईं सातो असवार
अगिलहिं घोड़वा देवा सुरुज असवार
घोड़वा चढ़ल देवा करथी पुकार
कउने अवासे बसे भगत हमार

ताल कहरवा—मात्रा ८

सा - म म म	मम गम म– गरे	नी सा गरे सा	सा –सा नी सा
सा ऽ ते हो	घोड़ वाहे गोऽ साईं	सा तो अऽ स	वा ऽर अ गि
×	०	×	०
गरे सागरे गसारे	सानि नि नि सा	गरे रे सा --	
लऽ होऽ घोड़ वाऽ	देव सु रु ज	अऽ स वा ऽर	
×	०	×	०

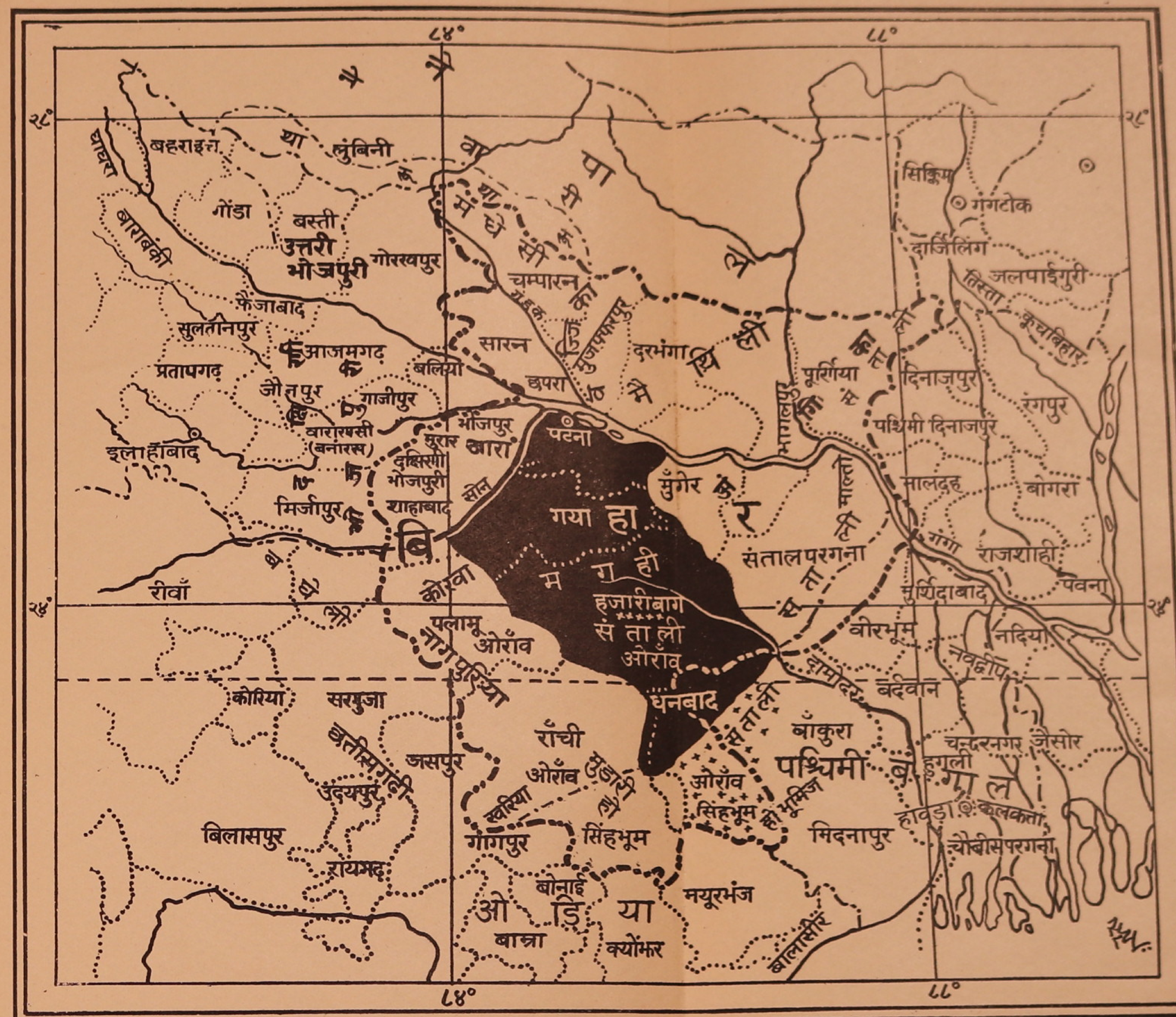


अहो सगुनि अहो सगुनि सगुने बिआह
मैं तो जनइती गे सगुनी होयतो बिआह
अरे काँचे बाँसे डलवा गे सगुनी रखती बिनाय

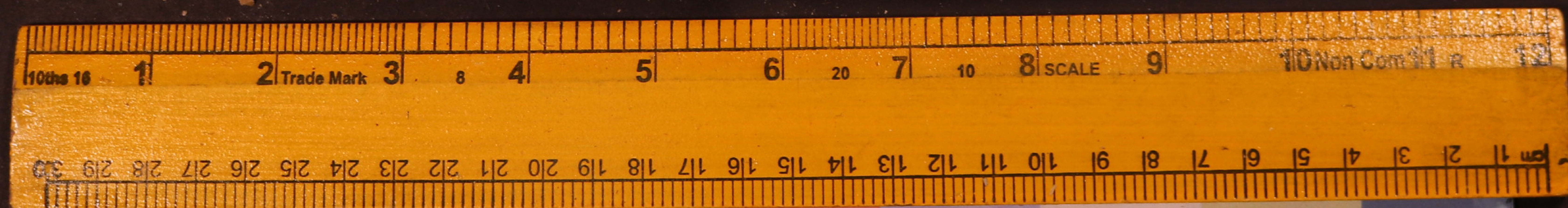
ताल चाचर—मात्रा ७

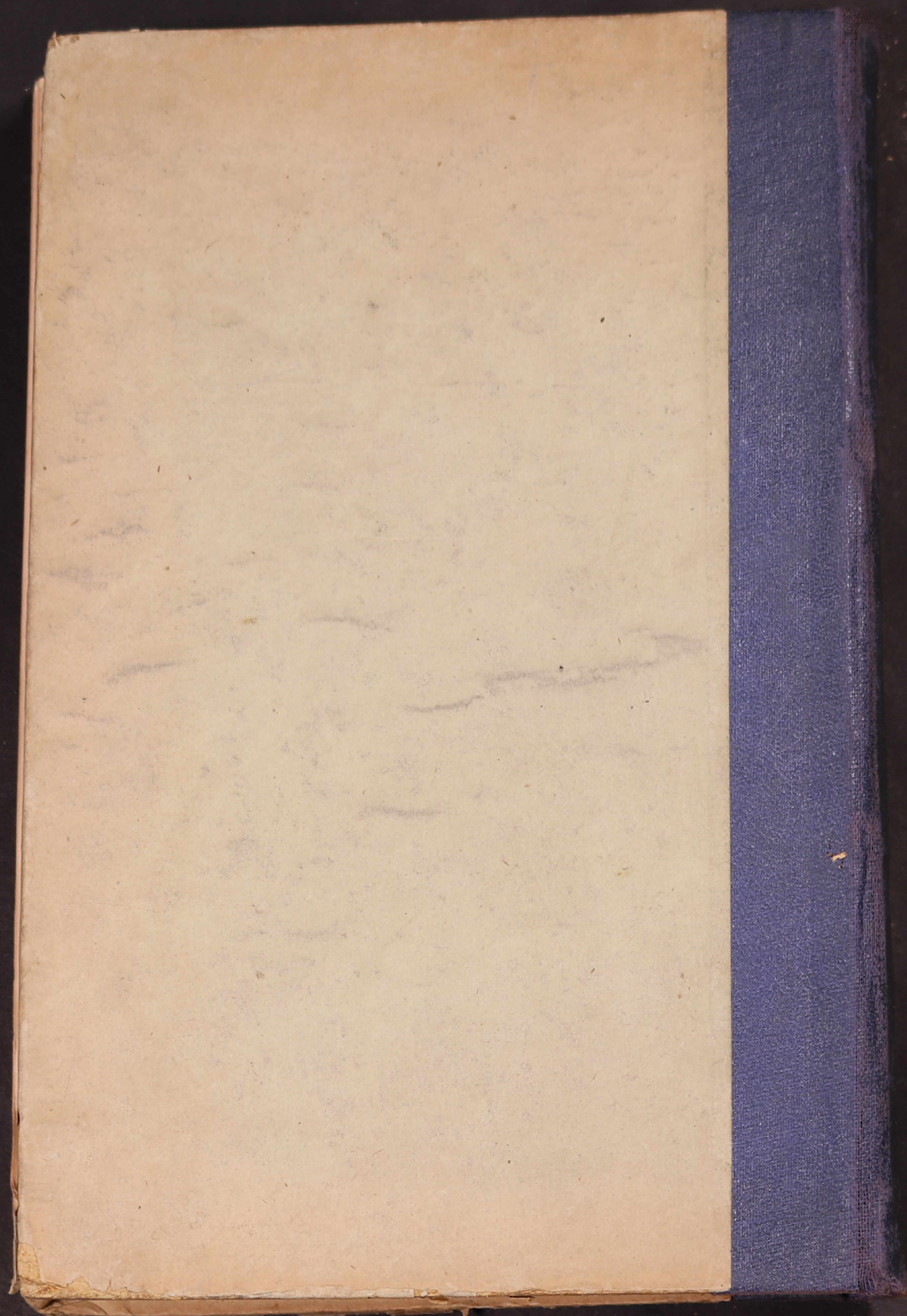
म म — अ हो ऽ ×	प म स गु २	ग — नी ऽ ३	रे सा — अ हो ऽ ×	रे सा स गु २	नि –– नि ऽ ३
नि नि — स गु ऽ ×	— — ऽ ऽ २	नि — ने ऽ ३	— — सा ऽ ऽ बि ×	सा — आ ऽ २	–– रे ऽ ह ३
सा — — मैं ऽ ऽ ×	म म तो ज २	म– म नइ ती ३	ग — — गे ऽ ऽ ×	म ग स गु २	ग रे नि ऽ ३
नि सा — हो य ऽ ×	— — ऽ ऽ २	ग — त ऽ ३	— — सा ऽ ऽ बि ×	सा — आ ऽ २	–– –– ऽ ह ३

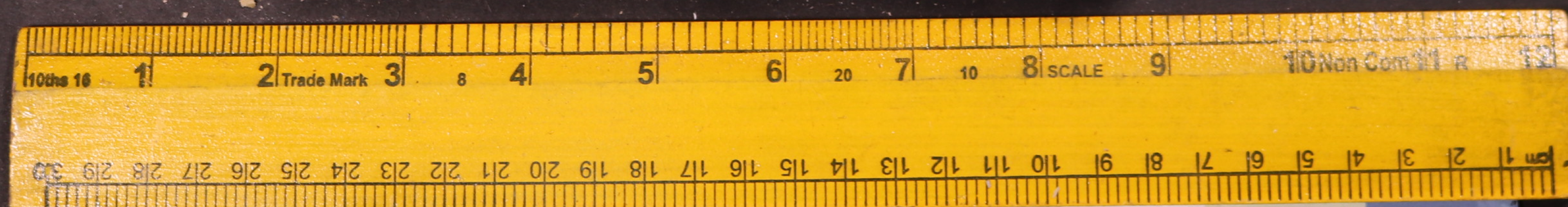
बिहार की अन्य बोलियों के साथ मगही बोली
का
मानचित्र




Trade Mark
SCALE


Trade Mark
SCALE
Non Com




10ths 16
Trade Mark
SCALE